बहुवचन

आधुनिक मैथिली साहित्य मे नवजागरण-सन्दर्भ

(आलोचना)

बहुवचन

(आधुनिक मैथिली साहित्य मे नवजागरण-सन्दर्भ)

तारानन्द वियोगी

किसुन संकल्प लोक
सुपौल

ISBN 987-81-932106-2-8

प्रकाशक	:	किसुन संकल्प लोक किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल–852131
कॉपीराइट ©	:	तारानन्द वियोगी
शब्दांकन	:	रघुनाथ मुखिया
प्रथम संस्करण	:	2015
मूल्य	:	500/–
मुद्रक	:	यूनिटेक ग्राफिक प्वॉइंट, नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032
पुस्तक प्राप्ति स्थान	:	• किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल–852131 • शेखर प्रकाशन, पोपुलर फर्मा के पीछे, न्यू मार्केट, पटना–800001

BAHUVACHAN (Maithili cirticism) ***by*** **TARANAND VIYOGI**

भूमिका

मात्र एक दू टा स्पष्टीकरण।

हरेक लेखकक दैनन्दिन अनुभव मे कहियो काल एहन बात जरूर सामने अबैत छै, जकरा कविता मे आ कि कोनो आन सृजनात्मक विधा मे कहब बेकार बुझा पड़ैत छै। से दू कारण सँ। एक तँ ई जे कथा-कविता हेबाक लेल जते नाद-गांभीर्य, जतेक तात्त्विकता हेबाक चाही, से नहि देखार पड़ैए। दोसर जे झाँपि क' गप करब उकडू बुझा पड़ैए। किछु साफ-साफ बात रहैत छै जकरा साफ-साफ बूझल जा सकैत अछि--एहन बात जखन हमरा संग होइए तँ हम आलोचना लिखैत छी। आलोचना लिखबाक हमर शैली अपनहि अछि, यद्यपि कि कहियो काल आचार्य लोकनिक मान रखबाक लेल हम विहित शैली मे सेहो लिखबाक प्रयास केने छी। से जे किछु। हम यदि तारानन्द वियोगी नामक लेखक छी तँ शैली तँ अवश्ये हमर अप्पन हेबाक चाही। एहि मे कोनो विशेष बात नहि छै। बात असल मे ई छै जे हमरा ओ सभ बात कहब, जे हम एहि किताब मे कहने छी, जरूरी किए लागि रहल अछि। ओहू मे एत्ते जरूरी जे बेर-बेर कहए पड़ि रहल अछि। अलग-अलग प्रकरण मे, अलग-अलग सन्दर्भ मे वैह बात, ओही जड़ि सँ निकलल बात कहए पड़ि रहल अछि। एकटा मत इहो भ' सकैत छै जे भाइ, हम तँ मैथिलीक सृजेता लेखक छी, हमरा तँ बस कथा-कविता-उपन्यास-संस्मरण लिखबा धरि अपना कें सीमित रखबाक चाही। आलोचनाक काज तँ आचार्य लोकनि-अध्यापक लोकनि पर छोड़ि देबाक चाही। मुदा, नहि

छोड़ल जा सकैत अछि। हम्मर चिन्ता हुनकर चिन्ता सँ मेल नहि खाइए। एहना स्थिति मे, जँ हम मिथिलाक एक लेखक छी, तँ मिथिला कें जरूर ई बूझल रहबाक चाही जे ओकरा समाजक एक लेखक कें कोन चिन्ता छै! ओकर अधिकारो बनै छै जे ओकरा सँ हम अपना कें नुका क' नहि राखी। दोसर, कर्त्तव्यो छै जे अपना समाजक एक सृजेताक चिन्ता कें ओ रेखांकित करय।

असल चिन्ता हमरा मैथिली कें ल' क' अछि। मैथिली साहित्यक विकास जाहि तरह सँ भेलैए, एकर हालत आइ हमरा शिकस्त बुझना जाइए। कारण छै। एखनुका समय बहुत तर्कशील समय थिक। अजुका पीढ़ी एहि बात कें बूझि रहल अछि जे बात मे जखन दम रहतै, तखने ओकर मतलब छै। तखने ओकर पात्रता हएत। ओ बात कें फड़िच्छ क' क' बूझ' चाहैए, आ दिलचस्प ढंग सँ बूझय चाहैए। नितान्त फालतू बात बुझेबाक लेल अहाँ मैथिली साहित्य नामक चीज लिखब, आ ताहि लेल हुनकर समर्थन चाहब, से आब नहि भ' सकैए। एम्हर, मैथिली साहित्यक जे वर्त्तमान पर्यावरण अछि, से अराजकता सँ भरल अछि। उत्साहक कतहु कोनो माहौल नहि छै। हरेक व्यक्ति प्रश्नांकित छथि। ककरो क्यो मोजर देबा लेल तैयार नहि छथि, कारण सभ अपने मोजर लेल झखै छथि। हुनको क्यो मानि नहि देलकनि-ए तँ ओ कोना द' सकै छथि। अकच्छ भ' जाइ छी कहुखन कें जे भाइ, अहाँ मैथिली साहित्य छी कि अतृप्त आत्मा सभक आकुल नर्त्तन? कठिन स्थिति लागै छै। नवयुवक चिन्तक सभ आबथि, अपन आत्मिक मोन के बात, दिलचस्प भाषा मे, अपन मैथिली मे कहथि, मैथिली हुनका संग ल' क' बढ़त--एहि तरहक बात सभ मोन मे आबैए। देखू। मानक मैथिली हो, ई एकदम अवान्तर बात छै। जे अजुका पीढ़ी लिखि देतै, से जँ महत्त्वपूर्ण मानल जाय दुनियाँ मे अपन खास कर्तृत्व कें ल' क', तँ ओकरा मैथिली मानि क' मैथिलीक इज्जत घटतै नहि, ओ बढ़बे करतै। विलक्षण जँ क्यो लिखता तँ लिखथु तँ पहिने! मैथिली तँ ओकरा मानले जायत, एहि सँ मैथिलीक माने बढ़तै। वैयाकरण लोकनि अपन व्याकरण कें शुद्ध क' लै जाइ जेता बाद मे! लिखथु तँ पहिने!

हम जखन अपन आलोचना लिखै छी आ कि कविते लिखै छी, तँ ककरा लेल लिखै छी? स्पष्ट बूझि लेल जाय जे हम अपन पाठकक लेल लिखै छी। हुनका हम पैघ स्थान दै छी। एखन, ई भूमिका लिखै काल सेहो हम हुनका साफ देखि रहल छियनि। हुनकर कोनो भौतिक रूप नहि छनि मुदा ओ भावना रूप मे हमरा संग जुड़ल छथि। हमरा जीवन मे हुनकर हएब हमरा बहुत आनन्दित करैत रहल अछि। होइए जे हमर 'हम' आ हमर विचार निरर्थक नहि अछि। पाठकक महत्त्व हमरा जीवन मे, आचार्यो लोकनि सँ बेसी अछि। आचार्य लोकनि तँ अपन परम्परा देलनि हमरा, हम तँ एकर विकासे क' रहल छी। आचार्य लोकनि आइ अपन प्रकृत रूप मे बूझल नहि जा सकै छथि। बूझल तँ ओ आजुके साहित्यकारक बाना मे जेता। कोनो भाषा-साहित्य तखनहि स्वतः मृत हुअए लगैत अछि, जखन ओ अपन आचार्ये लोकनि पर रुकि जाइए अथवा रोकि देबाक लेल दुराग्रह करैए। अहाँ के दादा के हाथी छलनि। से तँ बहुतो गोटेक दादा कें छलनि! आइ अहाँ कें की अछि? जिनगी आ पहचान तँ भेटै छै अद्यतनते सँ!

तँ, एहि स्थिति मे हमरा ई लागैए जे विविध क्षेत्रक, विविध भावभूमिक लोक कें आब' देल जाय मैथिली मे। आबथु। अपन ताकत देखाबथु। तें हमर ईहो आग्रह रहैत अछि जे आचार्य लोकनि अपन चिन्ता कें छोड़ि देथु। नवतुरिया पर अपन अहं कें लादथु नहि। मैथिली साहित्य जँ आगुओ जीयत तँ एकरा अपन कसौटी कें बदलैए पड़तै। उचित थिक जे विभिन्न अनुभाषा-रूप कें आबए दी। सुभाष भाइक शेफाली आ कि हिमांशु मैथिली मे ने किए लिखता जे हिन्दी मे लिखता आ कि लिखबाक सपना मोने मे राखने रहि जेता। (सन्दर्भ-डॉ सुभाष चन्द्र यादवक लेख 'पचपनियाँ मैथिली') हम गछब जे मधेपुरा जिलाक मैथिली-रूप ई छिऐ। जतय धरि लेखक जरूरी बुझता, आगू अपन भाषा कें मानकक हिसाब सँ चुस्त क' लेता--ई छूट देबाक चाही। हम दै छी। आचार्यो लोकनि कें द' देबाक चाहियनि। नै दै छथि, तकर असली डर हम बुझै छियनि जे भाषा-वैज्ञानिक सभक डर छियनि जे हमर मैथिली कें जे 'भाषा-गरिमा' छै, से एहि विविधता सँ समाप्त भ' जायत। पारम्परिक पुरातनपंथी जे भाषा-वैज्ञानिक लोकनि छथि, से एहन कहितो

छथि। चिन्ता वाजिब अछि। मुदा हमर सोचब अछि जे भाषा-वैज्ञानिकक डर सँ हम अपन साहित्यक प्रवाह कें मारि दी, एहि मे कोनो समझदारी नहि छै। इहो देखै छी जे मैथिली साहित्य पछिला एक सय साल मे एक्के जीवन-दर्शन कें एक्के जीवन शैली कें, एक्के भाषा-भंगिमा कें बारम्बार दोहरौलक अछि। एहि दुष्चक्र कें तोड़ब जरूरी छै। मैथिलीक प्रवाह बनल रहल, ई कोनो पैघ प्रोडक्ट द' सकल दुनियाँ कें आ बदललो युग मे ख्याति पौलक तँ आगू भाषा-वैज्ञानिक लोकनि अपन निकष मे सुधार क' लेताह। हुनका सभक निष्कर्ष हमेशा पश्चगामी होइत छनि। पास जँ क' गेलहुँ हम, तँ हमर इतिहास तँ ओ रस ल' क' लिखबे करता। सब दिन लिखैत रहला अछि। महावैयाकरण यास्कक देल स्थापना छनि--लोकं पृच्छ। शुद्ध की थिक, से 'लोक' कें पुछियनु।

ई सभ गप हम आइ कहि रहल छी, जखन कि हमर ई लेख पछिला दस साल मे, अलग-अलग समय पर, अलग-अलग परिस्थिति, अलग-अलग स्थान पर लिखल गेल अछि। मुदा, ओ सभ चिन्ता, ओ सभ विचार एखनहु दीप्त अछि, शोचनीय अछि, विचारणीय अछि। हम जनै छी जे हमर एहि किताबक पाठक सीमित लोक, वैह लोक सभ हेता, जनिका मैथिली साहित्य मे रुचि हेतनि आ एकर सुस्पष्ट पाठ देखबाक उत्सुकता हेतनि। ताहि मे कोनो हर्ज नहि। हम अपना दिस सँ एतबे क' सकै छी जे एहि सुस्पष्टता कें बनौने राखी। असल मे, हमर कहबाक मूल चेष्टा एतबे रहल अछि जे मैथिली साहित्य कें उत्साहित हेबाक चाही। मुर्दनी कें हँटाओल जेबाक चाही। ताहि मे भाषा कें जिंजीर नहि बन' देबाक चाही। विद्यापतियो अपना समय मे यैह केने छला। प्रचलित भाषा सँ नहि काज चललनि तँ अवहट्ठक खोज केलनि। ताहू सँ नहि चललनि तँ देसिल बयना पर आबि गेला। ई हमर परम्परा थिक। ई हमर उदात्त परम्परा थिक, जे सम्पूर्ण भारतीय साहित्य कें दीप्त केने छै आ एम्हर हमहीं सभ अन्हरिया मे कुहरि क' मरि रहल छी!

वर्ष 2005 मे हमर निबन्ध सभक पहिल संग्रह छपल छल--'कर्मधारय'। हम एहि बात सँ बहुत चकित भेलहुँ जे एहि किताब कें व्यापक पाठक-वर्ग भेटल जे एकरा पसंद केलनि। समीक्षा, पत्र, उल्लेख,

कॉल--एहि सभ सँ ईहो बुझबा जोग भेल जे निबन्ध सभ मे व्यक्त हमर विचार, विमर्शक लेल उत्प्रेरकक काज केलक। बहुतो लोक, पैघ-पैघो लोक एहन देखेलाह जे हमर विचारक उपयोग अपन लेख मे वा अपन भाषण मे करैत पाओल गेलाह। से बिना नामोल्लेख कयने। नामोल्लेखक हम अपेक्षो नहि करैत छी। एहि ठाम पैघत्व जड़ता सँ प्राप्त होइत छैक। विचारस्रोतक उल्लेख कयने सँ जड़ता टुटबाक डर रहैत छैक आ ताहि सँ पैघत्व विलीन भ' सकैत अछि। से किएक होअओ? हुनकर जड़ता तोड़ब हमर लेखनक उद्देश्यो नहि अछि। हुनका प्रति सम्बोधितो हम नहि छी। हुनकर तगमा के हमरा खांहिसो नहि अछि। तें, अपन लेखन मे हुनका लोकनिक पसन्द-नापसन्द के हम कोनो खियालो नहि करैत छी। हमरा लगैत अछि जे निष्ठापूर्वक कएल गेल कोनो लेखन अनिवार्य रूप सँ भविष्य कें सम्बोधित होइत अछि, अतीत कें नहि। तें जँ एकटा जागरूक आ व्यापक पाठक-वर्ग हमरा भेटैत अछि, आ ओहि ठाम हमर विचार अगिला विमर्शक लेल जगह बना पाबैए तँ से हमरा लेल परिपूर्णतः पर्याप्त अछि। 2005क बाद हमर एक किताब रामकथाक मैथिली पाठ पर आएल, एक किताब मण्डन मिश्र पर आएल, मुदा निबन्ध सभक कोनो संग्रह नहि आबि सकल छल, जे आब अहाँक हाथ मे अछि। मयंक (हमर ग्रामीण मित्र मयंक कुमार मिश्र) एकर नाम 'बहुवचन' राखलनि अछि। ओकरो नाम वैह 'कर्मधारय' राखने छला। हमर सोचब अछि जे बहुलतावादी वस्तुनिष्ठता मैथिली साहित्यक नीकतर भविष्यक लेल अनिवार्य थिक। हम अपन अध्ययनक क्रम मे पेलहुँ अछि जे पछिला 100 बर्खक मैथिली नवजागरण, जकरा अन्तर्गत आधुनिकता, नवता आ समकालीनता अन्तर्भुक्त अछि--एहि नवजागरणक सेहो यैह रुझान छैक, सैह सन्देश छैक। एही अर्थ मे एकरा 'बहुवचन' कहब सार्थक बुझा पड़ैए। एहि संग्रह मे संकलित लेख सभक बारे मे अलग सँ किछु कहबाक आवश्यकता हमरा नहि बुझाइत अछि। ई लेख सभ स्वयं अपना बारे मे कहि सकत।

ई किताब छपि क' अहाँक हाथ धरि पहुँचल, तकर सम्पूर्ण श्रेय मित्र केदार कानन आ रमण कुमार सिंह कें छनि। ताहि अर्थ मे एक

बेर फेर कहब जे ई किताब हमरे टा नहि, हुनको दुनू गोटेक छियनि। एकरा कम्पोज केलनि अछि युवा कवि-मित्र रघुनाथ मुखिया। एहि क्रम मे एकहक टा लेख कें गम्भीरता सँ ओ पढ़बो केलनि अछि आ विमर्शो केलनि अछि। एहि किताबक अपन एहि प्रथम पाठक कें हम नमस्कार करै छियनि।

महिषी
12.11.2015

--तारानन्द वियोगी

अनुक्रम

व्याप्ति

वितान

पसार

निरन्त

व्याप्ति

“ आइ एक बेर फेर मिथिला मे नवजागरण घटित हेबाक परिस्थिति हमरा सभक समक्ष अछि। जे हम सभ आइ धरि नहि क’ सकल छी, तकरा तँ भरोस राखी जे आगुओ क’ लेब, मुदा पछिला सबा सय बरख मे जे हम सभ क’ चुकल छी, तकरा तँ नहिञे टा नष्ट होइ लेल देबाक चाही। जेना आधुनिक मैथिली साहित्य। जेना आधुनिक गद्य-लेखन। तकर प्राणवन्त भाषा। ताहि मे अभिव्यक्त बुद्धिवाद। तकर यथार्थ-बोध। गति-प्रगतिक प्रति पक्षधरता। आ एहि सभ कथूक वाहक मैथिली भाषा। मानि लेल जे आइ ई अत्यन्त सीमाबद्ध भ’ गेल अछि आ मधेपुराक दलित आ अररियाक मुसलमानक यथार्थ वहन करबाक क्षमता एकरा मे नहि रहि गेल छै। मुदा, ई मानि लेबा सँ पहिने एक बेर जाँच किए नहि क’ लेल जाय जे एहि क्षमताक अभाव ककरा मे छै? मैथिली मे आ कि हमरा सभ मे? हम सभ जँ जाग्रत अवस्था मे आबि जाइ तँ ‘मानक मैथिली’ आ ‘आनक मैथिली’क ओझरी कें सोझरा सकै छी।”

नवजागरण आ मैथिली जागरण

आइ मैथिली संविधानक अष्टम अनुसूची मे शामिल भाषा थिक। हमरा सभक पूर्वज कतेको साहित्यकार आ संस्कृतिकर्मी (जनिका आमतौर पर आन्दोलनी कहल जाइत छनि) एहि दिन कें देखबाक सेहन्ता लेने मरि गेलाह। ओ लोकनि जँ बुझि सकैत होथि तँ बुझैत हेताह जे हम सभ बहुत भाग्यशाली छी जे आइ एहि दिन कें देखि रहल छिऐक जे हमरा सभक भाषा भारतीय राष्ट्र द्वारा नामांकित-अनुमोदित भेल अछि। मुदा हमरा सभक दुर्भाग्य तँ एहि सँ भारी अछि। एहन समय मे मैथिली भारतीय भाषाक रूप मे अंगीकृत भेल अछि, जखन भारतीय भाषाक उपवने उजाड़बा पर बिर्त्त दैत्य सामने ठाढ़ अछि।

भाषा होइत अछि अपन संस्कृतिक वाहक। एक खास भूभाग जकर अपन लोक होइ, ओकर अपन समान दुख-सुख, समान अर्थशास्त्र होइ, अपन समान संस्कृति होइ आ एहि सभ कथूक वाहक होइ छै भाषा। बहुतो लोक मिथिलाक परिकल्पना एक राष्ट्रीय इकाइक रूप मे केलनि अछि, तकर पक्ष मे अनेक तथ्य रखलनि अछि। मिथिलाक ठीक-ठीक मूल्यांकनो सही रूप मे तखनहि भ' सकैत अछि, यद्यपि कि एकर अनेक जटिलता आ सीमा छैक। खण्ड-खण्ड मे बँटल मिथिलाक संस्कृति कें एकीकृत क' क' जँ देखी तँ मैथिल संस्कृतिक मूल इष्ट की थिक? एक सुन्दर मनुक्खक कामना, (जकरा विद्यापति 'सुपुरुष' कहलनि) जकरा मे विद्या, व्यक्तित्व आ श्रम-सामर्थ्य होइक। ताही संस्कृतिक वाहक मैथिली भाषा थिक, एकर साहित्य, तमाम तोड़-पछाड़क बादो, ओही मनुक्खक संधान मे लागल रहल अछि।

एखन धरि भाषाक पहचान ओकर संस्कृति, ओकर साहित्य आ ओकर लोक कें ल' क' होइत रहलै अछि। आब संकट भारी अछि जे भाषाक पहचान ओकर 'पावर' आ 'मार्केट' कें ल' क' भ' रहल अछि। भूमण्डलीकृत एहि समय मे, ने हम पावर मे सर्वोपरि छी ने मार्केट मे। जे सर्वोपरि अछि से हमरा सभ कें गछाड़ने चलि आबि रहल अछि। ओकर पावर आ मार्केट तँ आबिए रहल अछि, ताही लागल ओकर संस्कृति सेहो चलि आबि रहल अछि। एहि संस्कृति मे दीक्षित हेबाक लेल सेहो उपकरि क' मार्केट कें अपना घर आन' पड़ैत छैक। से आनल जा रहल अछि। मार्केट एतै तँ 'घर' उजड़बे करतै! से घर उजड़ि रहल अछि। समाज उजड़ि रहल अछि। भाषा आ संस्कृति उजड़ि रहल अछि। राजनीति एहि नव संस्कृतिक स्वागत मे लहालोट भेल अछि। कारण, राजनीति कें चाहिऐक विकास, आ से पावर आ मार्केट मे देखबाक चलन छैक।

एहना स्थिति मे मैथिली-जागरण पर विमर्श करब बहुत अर्थपूर्ण अछि। एहि मुद्दाक प्रासंगिकता मैथिली-संसारक लेल तँ छैके, भारतीय भाषा-संस्कृति आ विश्व-भाषा-संस्कृति सँ जुड़ल हरेक ओहि सम्वेदनशील समुदायक लेल सेहो अछि जे मनुक्ख कें 'उपभोक्ता' आ संस्कृति कें 'बाजार' बनाएल जेबाक विरुद्ध छथि आ तकर प्रतिकार क' रहल छथि।

मैथिली जागरणक अर्थ-विस्तार पर कने ध्यान देल जाय। सांस्कृतिक अध्ययनक सन्दर्भ मे, हमरा बुझने, 'जागरण'क अर्थ थिक--आस्थाक दिशा-परिवर्त्तन। समुदाय-विशेषक कोनो आस्था-विश्वास जे आइ धरि निरवरोध चलि आबि रहल छल, तकरा एक भिन्न दिशा मे नियोजित कएल जाएब, जे कि युग-परिवर्त्तनक क्रम मे सकारात्मक डेग साबित होइत होइ, तकरा कहल जाएत जागरण। एहि अर्थ मे ई सामूहिक चेतनाक स्फुटीकरण सेहो थिक। आ, जहाँधरि मैथिली जागरणक प्रश्न अछि, हम एहिठाम पण्डित गोविन्द झाक एक वचन उद्धृत करब। एक ठाम ओ कहैत छथि- *'मुगल कालक आरम्भहि सँ मिथिला मे साहित्य केवल साक्षर अभिजात वर्गक वस्तु भ' गेल आ एहि वर्गक प्रेरणास्रोत ने लोकजीवन रहलैक, ने लोकसाहित्य आ ने लोकधर्म। ओकर आँखि एकमात्र संस्कृत साहित्य आ वेदमूलक सनातन धर्म पर रहलैक। एक दिस जँ अभिजातवर्ग एहि मे*

ओझराएल रहल तँ दोसर दिस शेषवर्ग साक्षरता सँ सर्वथा दूर अपन पृथक लोक-संस्कृति, लोकधर्म आ लोक-साहित्य मे डूबल रहल।' एहि तथ्यपरक वचनक सूत्र पकड़िक' आगू बढ़ैत हम कहब जे लोक-संस्कृति, लोक-धर्म आ लोक-साहित्य कें व्यापक रूपें प्रतिष्ठापित कएल जाएब जँ मैथिली जागरणक एक पक्ष थिक तँ दोसर पक्ष संस्कृतक समानान्तर वा प्रतिस्थान-स्वरूप मैथिलीक विकसित हएब थिक।

एकर प्रभाव कें अकानबाक हेतु हम विगत दू शताब्दी (1801 ई. सँ 2001 ई. धरि) दिस उनटि क' तकबाक अनुरोध करब। सभ गोटे जनैत छी जे एहि भूभागक भाषाक अर्थ मे 'मैथिली' शब्दक प्रयोग पहिल बेर कोलब्रुक 1801 ई. मे केलनि। ताहि सँ पहिने अथवा तकर बादो एकरा 'तिरहुतिया' कहल जाइक। अस्सी बरस धरि पोथी मे बन्न रहलाक बाद ई शब्द 'मैथिली' ग्रियर्सन द्वारा व्यापक रूप सँ प्रचलन मे आनल गेल, यद्यपि कि बहुतो विशिष्ट लोक कें ई शब्द तखनहुँ ओरिआइत नहि छलनि, एतय धरि जे चन्दा झा-समेत एकरा 'मिथिलाभाषा' कहलनि। दोसर दिस, 1901 ईस्वी जखन शुरू भेल तँ एहि जागरणक सूत्रपात भ' चुकल छलैक। एकर मुख्य परिणाम जँ साहित्यिके विकास कें मानी तँ तैयो 1901 ई. सँ 2000 ई. क बीच सम्पन्न भेल विशाल काज कें साक्षात देखल जा सकैछ। आइ मैथिली भारतीय संविधान द्वारा अंगीकृत अछि आ आइ हमरा लोकनि कहैत छी जे एकरा कोनोटा भारतीय भाषा-साहित्यक समकक्ष राखल जा सकैत अछि।

उनैसम शताब्दीक उत्तरार्ध, ओ कालखण्ड थिक जहिया मैथिलीक प्रतिष्ठापन भ' सकलैक। एहि जागरणक पृष्ठभूमि आ प्रेरक तत्त्वक जँ चर्चा हमरालोकनि करी तँ ई रोचक तँ हेबे करत, उपयोगी सेहो हएत। एहि मादे विचार करैत बहुतो विद्वान लोकनि मिथिला मे कोरट लागब, अंग्रेजक सम्पर्क, अंग्रेजी शिक्षाक प्रभाव आदि-आदि कें मैथिली जागरणक कारण आ प्रेरणा बतबैत छथि। मुदा, किछु गोटे कें से उचित नहि प्रतीत होइत छनि। कोर्ट ऑफ वार्ड्सक प्रशासनाधीन मिथिला मे, 1873 क अकाल मे जे प्रशासन अभूतपूर्व राहत-कार्यक्रम चलौने रहए ताहि सँ अंग्रेज जातिक प्रति, मिथिला मे, थोड़ेक सहानुभूति उत्पन्न भेल छलैक अवश्य,

मुदा से जागरणक कारण बनि सकय, ततेक पर्याप्त नहि छल। तहिना, सभ गोटे अवगत छी जे अंग्रेजीक प्रत्यक्ष प्रभाव तँ मैथिली साहित्य पर 1930 क बादे आबि क' देखाब दैत अछि।

पृष्ठभूमि आ कारण पर चर्चा सँ पहिने जागरणक अन्तर्सम्बन्ध पर एक दृष्टि देब सेहो जरूरी छैक। हमरा बुझने, मैथिली-जागरणक तीन फेज छैक आ से एक-दोसराक संग गहराइ सँ जुड़ल अछि। एक जागरण कें हमरा लोकनि विद्यापतिक समय घटित होइत देखि सकैत छी, जकरा ओ 'देसिल बयना'क नाम देलनि। दोसर जागरण चन्दा झाक कालक, जाहि पर तँ चर्चा करैए लेल छी। आ तेसर जागरण निज आजुक, जकर हमरा लोकनि कें खगता अछि। ई तीनू एक दोसराक संग कोना जुड़ल छैक, तकरा देखबाक लेल कने हमरा लोकनि चन्दा झाक काल मे चली।

सभ गोटे अवगत छी जे विद्यापति-गीतक भाषा कें ल' क' भारी विवाद छल आ बंगाली लोकनिक दाबेदारी प्रबल छलनि। उनैसम शताब्दीक प्रायः छठम-सातम दशक मे एक बंगालिए विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय द्वारा पहिल बेर ई तथ्य निरूपित कएल गेल जे वस्तुतः विद्यापति-गीतक भाषा बंगला नहि थिक, मैथिली थिक। आठम दशक मे अनेक खोजी विद्वान लोकनि यथा मि. बीम्स, डॉ. ग्रियर्सन, महामहोपाध्याय डॉ. हरप्रसाद शास्त्री, रमेशचन्द्र दत्त आदि एहि तथ्यक समर्थन क' देलनि। मैथिली कें विद्यापति भेटि गेलथिन। एहि विवाद मे मिथिलाक निधोख जीत भेल। एहि सँ जे अभूतपूर्व उत्साहक लहरि उठल, से मौथिली जागरणक वातावरण बनेबा मे कृतकार्य भेल। ध्यान रखबाक थिक जे एहि निर्णय-प्रसंगक प्रथम प्रभाव तँ ग्रियर्सन पर पड़ल, जनिकर लेखन एकरा एक व्यापक आयाम प्रदान केलक। 1877 सँ 1880 क बीच ग्रियर्सनक पोस्टिंग मधुबनी हएब मिथिला-वासीलोकनि मे प्रेरणा-ग्रहण कें आरो तीव्र बनौलक। हुनकर लेखन-उपस्थापनक जे प्रभाव मिथिलाक तत्कालीन शिक्षित समाज पर पड़ल छल, तकर विवरण डॉ. जयदेव मिश्र एहि शब्द मे दैत छथि- *'हिनका लोकनि कें तहिना आनन्द भेलनि जेना कोनो नव आविष्कार भेल हो। ओ सभ सोचलनि जे जखन सात समुद्र पारक विदेशी कें एहि मे सौन्दर्य भेटि सकैत छैक तँ एहि मे अवश्ये अन्तर्निहित श्रेष्ठता*

छैक। ग्रियर्सनक उदाहरण एकटा क्षितिज कें अनावृत्त क' देलक जे जतबहि नव छल, ततबहि आकर्षक।' एवम्प्रकारें एक एहन उत्साहमय वातावरण बनलैक जे मिथिलाक शिक्षित समाज मे अपन लोक-संस्कृति, लोक-धर्म, आ लोक-साहित्यक संग जुड़बाक परिस्थिति उत्पन्न केलक।

एहि घटना कें घटित भेना सबा सय बरस भ' गेल। एहि सबा शताब्दी मे दुनियाँ कतेक तरक्की क' गेल, कोन तरहें लग-पास आबि गेल, से नजरिक सोझां अछि। एहि सँ जे संस्कृति आ साहित्य पर संकट आएल अछि, सेहो समक्ष अछि। संस्कृति आ साहित्यक न्यूनतम पहिचान छिऐक ओकरा मे निहित मानवीयताक ऊष्मा, ताहि लेल 'बाजार' लग मे कोनो अवकाश नहि छैक। ई तँ एक बात। दोसर बात मुदा खासमखास मैथिलीक ऊपर लागू होइत अछि।

सभ गोटे जनैत छी जे मैथिली जागरणक पहिल पीढ़ी तथा तकर बादोक कैक पीढ़ी संस्कृत पण्डित लोकनिक पीढ़ी छलनि। ई लोकनि एक जागरण-प्रवृत्तिक वशीभूत मैथिली मे लिखब-पढ़ब शुरू केने छलाह। मैथिली लेखन कें एक संस्थाबद्ध स्वरूप प्रदान केने छलाह आ ओहि कलंक सँ मुक्ति दिस अग्रसर भेल छलाह, जकरा काञ्चीनाथ झा 'किरण' 'गोग्रास जकाँ' अपन भाखा मे किछु फुटकल लिखि देबाक जातीय प्रवृत्तिक रूप मे चिह्नित केलनि अछि। मुदा छलाह ओ लोकनि पण्डित-परम्पराक लोक। ओ लोकनि मूलतः अपन पण्डित-छविक कारणें समाज मे समादृत छलाह, मैथिली लेखकक रूप मे पहिचान तँ बहुत आगूक बात छलैक। हुनका लोकनि मे स्वतंत्र चेतना तथा नवाचार एवं लोकतांत्रिक मूल्यक प्रति ग्रहणशीलता अत्यन्त सीमाबद्ध छलनि। वैदिक-स्मार्त्त नैतिकताक ओ लोकनि अनुगामी रहथि आ परम्परित सनातन निष्ठा-विश्वास यथा वर्ण, श्रेणी, भाग्य, कर्मफल आदिक कायल रहथि। विशिष्टता हुनकर ई रहनि जे एहि सभ कथूक अछैत ओ लोकनि लोक-संस्कृति, लोक-धर्म तथा लोक-साहित्यक प्रति उन्मुखता ल' क' प्रकट भेल रहथि, ई बात भिन्न जे हुनकर ई 'लोक' सेहो सीमाबद्ध रहनि। एम्हर समाज तेजी सँ बदलि रहल छल। 1936 ई. मे, ई प्रश्न उपस्थित भेला पर जे की मैथिल-समाज पतन दिस अग्रसर अछि, डॉ. गंगानाथ झा 'मिथिलामोद' मे लिखने रहथि जे

नहि, मिथिलाक अधोगति कें 'अप्रसिद्ध' क' क' बुझबाक चाही। पचास बर्ख पहिने जेना घर-घर मे शालग्रामादिक पूजारूपी धार्मिक आचरण होइत छल, ताहि मे ह्रास भने भेल हो, मुदा 'धर्मंवद सत्यंचर' इत्यादि सामान्य धर्मक प्रतिपालन पहिने कम छल।' पहिने तँ 'फूसि बाजब बुधियारक विशिष्ट लक्षण बूझल जाइक, प्रताड़ण कए धन उपार्जन करब 'होशियारी'क चिह्न छलैक।' आदि-आदि।

अस्तु। हमरा कहबाक अछि जे आरम्भिक पीढ़ीक लेखन मे सकारात्मक लोकतत्त्वक संग-संग प्रतिगामी तत्त्व सेहो अछि। जेना, चन्दा झाक कविता मे अंग्रेजी राज मे महगी आ अनाचार सँ त्रस्त जनजीवनक मुखर चित्र आएल छनि मुदा ओतहि ईहो आएल अछि जे 'दैव जे ललाट लेख के सकैछ टारि' अर्थात एहि नरक सँ बहरेबाक कोनो रस्ता नहि छैक। जेना-जेना युग आ समाज बदलल, तेना-तेना कविताक कथ्य आ भंगिमा सेहो बदलल। उत्तरोत्तर जे पीढ़ी आएल से बोध आ सम्वेदना मे अधिकाधिक युगीन आ मानवीय होइत गेल। मुदा, किछु लोक एहन रहिये गेलाह जे 'दैव जे ललाट लेख' मे अटकले रहि गेलाह। हुनका लोकनिक दृष्टि मे वर्ण, श्रेणी, भाग्य, कर्मफल आदि ब्राह्मण-धर्मक सनातन विश्वास छल, आ मैथिली जें कि घोषित रूप सँ ब्राह्मणक भाषा छल, अनिवार्य रूप सँ एकरा एहि विश्वास धरि सीमाबद्ध हेबाक चाहैत छल। ई प्रतिगामिता एखनहु निघटि गेल हो, से बात नहि छैक। तें, मैथिलीक ऊपर ई द्वितीय संकट थिक जे एकर रस्ता छेकने ठाढ़ छैक। हमरा स्पष्ट लगैत अछि जे ई प्रतिगामिता ने तँ युगसम्मत अछि, ने मिथिला-समाजक प्रतिनिधित्वे करैत अछि। सभगोटे जनैत छी जे मैथिल महासभाक संरक्षक महाराज जान-प्राण अड़पिक' लोकतांत्रिकीकरणक विरोध केने रहथि। हमरा लोकनि मे सँ अनेको गोटे कतेको समाजार्थिक कारण सँ महाराजक प्रति आइयो भक्तिभावपूर्ण भ' सकैत छी मुदा तें की हमरा लोकनि ई आग्रह राखिक' युगक सामना क' सकब जे लोकतंत्र मैथिली संसारक लेल एक विरोधी मूल्य थिक! पछिला सवा सय बरख मे मैथिली-संसार एहि दुविधाक पूर्णतः समाधान क' लेने होअए, से हमरा नहि लगैत अछि आ तें आइ फेर आजुक मैथिली जागरणक खगता आरो बेसी प्रतीत होइत अछि।

जागरणक एक अनिवार्य तत्त्व थिक पुनर्मूल्यांकन। विद्यापतिक पुनर्मूल्यांकन कोना चन्दा झाक युग कें गहराइ धरि प्रभावित केलक, तकर विवरण पहिने देलहुँ अछि। आइ हमरा लोकनि कें प्रतीत होइत अछि जे ओहो मूल्यांकन सीमाबद्धे छल। आजुक युग विद्यापतिक पुनः पुनर्मूल्यांकनक बेगरता उत्पन्न केलक अछि। आइ हमरा लोकनि कें विद्यापतिक 'देसिल बयना' एक भाखा-विशेष सँ बेसी एक 'अवधारणा' प्रतीत होइत अछि, जाहि भीतर लोकधर्म, लोकसंस्कृति आ लोकसाहित्यक प्रति उन्मुखता प्रधान अछि। कालजयी साहित्य तँ अन्ततः छीहो वैह, जे सभ युग कें अपन-अपन सन्दर्भक हिसाबें अर्थपूर्ण लागैक। तें अक्सरहां हमर अनुरोध रहैत अछि जे पुनर्मूल्यांकनक एहि प्रयास सँ बुजुर्गलोकनि आहत नहि होथु, एकर अर्थवत्ता कें गमबाक प्रयास करथु। कारण, थिक ई अन्ततः अपन संस्कृतिक विकासे। अतीत तँ वर्त्तमान कें प्रभावित कयनहि रहैत छैक, दोसर दिस वर्त्तमानो अपना हिसाब सँ अतीत कें प्रभावित करैत अछि। कारण, ओकरा, अतीत मे जाक' अप्पन समाधान ताकबाक रहैत छैक। आजुक संकटक परिप्रेक्ष्य मे की विद्यापति लग कोनो समाधान नहि छनि? अवश्ये छनि। एहना मे, स्पष्ट अछि जे मैथिली जागरणक एक सूत्र जँ चन्दा झा लग जा क' जुड़ैत अछि तँ दोसर विद्यापति लग। आ तेसर निज आइ, हमरा सभ लग।

एवम्प्रकारें देखने मैथिली जागरणक जे किछु गुण-धर्म हमरा दृष्टिपटल पर आबि रहल अछि, तकरा मुख्यतः पाँच कोटिक्रम मे एहि प्रकारें राखल जा सकैत अछि-

(1) 'मैथिली जागरण' मे निहित 'जागरण'क मुख्य लक्षण रहल अछि--परम्परित आस्थाक दिशा-परिवर्त्तन। राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक कारण सभ सँ मैथिल जनता मे ई दिशा-परिवर्त्तन चेतनाक रूप मे प्रादुर्भूत भेल अछि, जकरा अपना-अपना युग मे, तत्कालीन प्रतिभाशाली रचनाकार लोकनि अभिव्यक्ति प्रदान केलनि। एहि दिशा-परिवर्त्तनक पाछू अपन सुनिश्चित आ सुचिन्तित जीवन-मूल्य छैक, जे हुनका लोकनिक समस्त रचना मे अन्तर्निहित अछि। मुदा, ई देखार होइत अछि अपन रूप-विधान द्वारा, जकर तीन टा विशेषता अकानल जा सकैत अछि- 1. सुस्थापित

काव्यशास्त्रीय बन्धनक प्रति आवश्यकतानुसार शिथिलभाव, जे कि नवीन काव्य-विषय तथा नवीन काव्य-रूपक भेस मे प्रकट भेल अछि। 2. अपन युगक आवश्यकतानुरूप नवीन आदर्शक खोज, तथा 3. नवीन रसिक-समुदायक खोज तथा नवरसज्ञताक आग्रह।

हमरा लोकनि अवगत छी जे विद्यापति शास्त्रविहित छान्दस ढर्रा कें त्यागि मुक्तक गीति-प्रकार कें अपन विधा बनौने छलाह जे कि रागताललयाश्रित छल। एहि नवीन प्रयोगक साहस भने हुनका संस्कृत कवि जयदेव सँ भेटल होउन, एकर आवश्यकता हुनका समक्ष ओ 'समाज' पैदा केने छल हेतनि, जकरा लेल हुनका लिखबाक छलनि। चर्यागीतक ढर्रा पर जे गीत ताहिकाल मे प्रचलन मे छल हएत, फॉर्म ओ तकरे ग्रहण केलनि जखन कि जीवन-मूल्य आ आदर्श अपन युगानुरूप लेलनि। पूर्वक गीत सभ कथन-भंगिमा मे रहस्यवादी तथा रुझान मे वैराग्यप्रशंसी छल, जखन कि सभ क्यो जनैत छी जे अनेको शताब्दीक बाद मिथिला मे अपन राज स्थापित भेल छल माने कि ब्राह्मण-धर्म वर्चस्व प्राप्त केने छल आ नव तरहें समाज कें संगठित करबाक लेल राग, आसक्ति आ उत्साहक बेगरता छलैक, वैराग्यक नहि। विद्यापतिक रचना मे हुनका युगक ई छाप स्पष्ट देखाब दैत अछि।

मुदा, एम्हर चन्दा झाक समय मे आबिक' हमरा लोकनि देखैत छी जे मुक्तक-गीत-रूप मे सँ रागताललय धीरे-धीरे घसकि जाइत अछि। ओकर छन्द एक विधान मे ग्रथित तँ अवश्य रहैत अछि, मुदा से अन्ततः यादृच्छिक होइछ। दोसर दिस देखैत छी जे चन्दा झाक युग कें महाकाव्य-रूप मे अभिव्यक्ति पेबाक खगता होइत छैक, आ तकर नायक राम बनैत छथि। शुद्ध क' क' ई युगबोध सँ जुड़ल मामला थिक। मुसलमानी शासन सँ ल' क' अंग्रेज-धरि द्वारा निर्देशित सामन्ती राज मे मिथिला-समाज जाहि हताशा, कुण्ठा, भय, भविष्यहीनता आदिक पराभव भोगि रहल छल, कहब आवश्यक नहि जे विद्यापतिकालीन आदर्श ल' क' एहि कालक 'युगीन' साहित्यक निर्माण नहि कएल जा सकैत छल।

आजुक सन्दर्भ पर विचार करी। एकैसम शताब्दीक एहि जटिल समय मे की चन्दा झाक आदर्श कें ल' क' युगक सामना कएल जा सकै छै। किछु गोटे करबा पर बिर्त छथि। मुदा, पक्का अछि जे नहि क' सकताह।

एक व्यक्तिक रूप मे हुनकर जिद तँ जीताजी चलि जेतनि। मनुक्खक औरदे कते होइ छै! मुदा, तकर जे प्रतिफल मैथिली पर पड़त, ताहि कारणें मैथिली जे उजड़ती, तकर की हेतै?

समयक माँग थिक जे नव-नव युग-सत्य कें, नव-नव भाव, विषय, यथार्थ आ तकर चुनौती कें साहित्य मे आबए देल जाय, आनल जाय। नव जँ किछु अबैत छैक तँ भने हम ओहि सँ असहमत होइ, मुदा ओकरा प्रति एक लोकतांत्रिक सहिष्णुता हेबाक चाही। विमति आ असहमति कें बर्दाश्त करब परिपक्व समाजक पहिचान होइ छै। सैह बात भाषा-साहित्यक संग सेहो होइ छै। मैथिली परिपक्व होथि, से सोचबो कते गोटे कें असह्य होइ छनि। मुश्किल ई अछि जे ई लोकनि 'महाजन' छथि। हिनके चलल पंथ 'पंथ' कहा सकैए। एहना हाल मे बूड़त के? मैथिलिए कि ने?

वर्ष 1991-92 मे, ई प्रश्न उपस्थित भेला पर जे सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य तँ निरन्तर ऊर्ध्वगामी आ मुखर अछि, किन्तु मैथिली साहित्य किएक दिनानुदिन बौक होइत चलि जा रहल अछि, वरेण्य चिन्तक साहित्यकार धूमकेतु 'आंजुर' मे लिखने छला--*'मैथिली साहित्य जे सामाजिक सन्दर्भ मे पछुआ गेल अछि, तकर सभ सँ पैघ ओजह मैथिली संग आचार्य लोकनिक ओ पाखण्डपूर्ण आत्मवंचना थिक जे सभ परम्पराक प्रारम्भ अपने सँ मानैत अछि आ मैथिली-सेवीक ओ स्वार्थी प्रपंच थिक जे मैथिली कें क्लासिकल भाषा बनौने राख' चाहैत अछि। मोगलानी मैथिलीक ई एहन व्यथा-कथा थिक, जाहि पर अविलम्ब ध्यान देल जेबाक चाही। कारण, निर्मम आत्मालोचनाक अभाव मे दिशा धूमिल होइत छैक आ गति स्वतः थकमकाइत छैक।'* युगीन हेबा लेल सोच तँ बदलैए पड़त।

(2) 'मैथिली जागरण' मे निहित 'मैथिली' केवल भाषाक बोधक नहि, अपितु जनसंस्कृति, जनधर्म आ जनसाहित्यक समन्वित रूप थिक। वेदक समानान्तर ई 'लोक'क प्रतिष्ठापन थिक। हमरा लगैत अछि जे बीसम शताब्दी मे बदलल परिस्थिति आ परिवेशक परिप्रेक्ष्य मे एकरा धर्मक संग-संग राजनीति आ शिक्षाक माध्यम सेहो हेबाक चाहैत छल। से नहि भेल, तकरा पाछू कोन तरहें सामन्ती सोच, सामन्तवादी राजनीति आ

अर्थव्यवस्था जिम्मेदार अछि, से सभ गोटेक समक्ष स्पष्ट अछि। ईहो कारण थिक जे मैथिली जागरण कें हम अद्यावधि असमाप्त मानै छी।

(३) मैथिली जागरण अपन व्यापकता मे, कोनो एक कालखण्ड मे सीमित घटना नहि थिक अपितु एक प्रक्रिया थिक जे गतिहत प्राचीनताक विरुद्ध नवीनताक हस्तक्षेप, जड़ताक विरुद्ध चेतनाक हस्तक्षेप थिक। बदलल देश-काल-परिस्थितिक अनुसार ई अपन चिन्तन-धारा कें नवीकृत करबाक प्रयास सेहो थिक। हमरा लोकनि देखैत छी जे कवीश्वर चन्दा झा मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक प्रवर्त्तक (आ कदाचित प्रतिष्ठापक सेहो)क रूप मे प्रतिष्ठित छथि। दोसर दिस, महाकवि विद्यापति कें आचार्य रमानाथ झा 'कैक अर्थ मे आधुनिक' तँ बतबैते छथि, अन्यान्य विचारक लोकनि (यथा डॉ. रामविलास शर्मा) आधुनिकताक कतेको लक्षण हुनका मे पबैत छथि। तें आइ, ई दुनू, अलग-अलग कारण सँ हमरा सभक लेल प्रासंगिक छथि।

प्रासंगिक छथि मतलब की? मतलब ई जे हमरा सभक जे समस्या अछि, तकर समाधानक सूझ हम सभ हिनका सँ पाबि सकै छी।

एकटा दृष्टान्त दैत छी। विद्यापति 'अवहट्ठ' आ 'देसिल' भाषा चलौलनि। कहियो सोचि क' देखलिऐए जे आखिर जरूरति की भेलनि हुनका जे राजदरबार मे रहैत, प्रतिष्ठित पण्डित आ शास्त्रवेत्ता भेलाक अछैत हुनका ई निर्णय लिय' पड़लनि! एकर जरूरति उत्पन्न केने छल ओ युग, ओहि युगक यथार्थ, ओहि युगक संदेश। पण्डित लोकनि एकरा बूझि नहि पाबि रहल छला, ने बुझए चाहैत रहथि। शास्त्रक मार्ग सँ एकर निस्तार नहि भ' सकै छलै। तें।

हरेक भाषाक अपन आभामण्डल होइ छै, जकर निर्माण ओ स्वयं (माने ओकर साहित्यकार) करै छै। ठीक तहिना ओकर सीमा सेहो होइ छै, जकर निर्माण सेहो ओ अपने करैत अछि। हरेक भाषा मे हर बात नहि कहल जा सकैत अछि। कोनो यथार्थ कें अपना कें उद्घाटित, स्फुटित करबाक लेल ओकरा अप्पन-सन भाषा चाहिऐक। की अहाँ कें लगैत अछि जे आचार्य रमानाथ झाक बनाओल मानक मैथिली मे मधेपुरा जिलाक दलितक आ कि अररिया जिलाक मुसलमानक यथार्थ उतारल जा सकैत अछि? किछु

गोटे कहताह जे हँ, किए ने उतारल जा सकैत अछि, जरूर उतारल जा सकैत अछि। ई लोकनि मैथिलीक वैह 'आचार्य' लोकनि आ 'मैथिली-सेवी' लोकनि छथि। हिनकर सभक यैह सोच छनि जे जाबे ओ जीबै छथि ताबेटा सँ ने मतलब! हुनका मुइलाक बाद की हएत, तकर चिन्ता ओ किए करथु? जाहि भोज मे निमंत्रण नहि, ताहि मे पाड़ा मरओ!

मैथिलीक फाटक बन्न अछि। ओम्हर क्यो अंगिका चला रहल छथि, क्यो वज्जिका चला रहल छथि। एखन धरि चलि नहि पाबि रहल अछि, से भिन्न बात। मुदा आगुओ एहिना रहतैक, से अहाँ कोन बल पर कहि सकै छी?

एहना स्थिति मे, नवजागरणक पहिल आ दोसर चरण सँ सबक ल' क' हमरा लोकनि आजुक समस्याक समाधान पाबी, तकर आवश्यकता अछि। विद्यापति आइयो हमरा काज आबि सकै छथि, तें ओ प्रासंगिक छथि।

(4) मैथिली जागरण, अपन प्रकृति मे, गतानुगतिकताक विरुद्ध स्वतंत्र आ युगीन चिन्तनक आग्रह थिक। प्रायः सभ गोटे सहमत हएब जे अधिकांश मैथिल बुद्धिजीवी अपन कौशल मे भने अग्रगामी होथु, नव क्षितिजक उद्घाटन मे, नवीन स्वर-सन्धान मे पश्चगामिए बनल रहबा मे संतुष्ट रहलाह अछि। पण्डित गोविन्द झा अपन वार्धक्य-दृष्टिक सन्दर्भ मे जे रूपक व्यवहार केलनि अछि--पाछू दिस आँखि निकलि एबाक रूपक- से कहबाक चाही जे मैथिल बुद्धिजीवी लोकनिक ई युग-युगव्यापी जातीय रूपक थिक। एहना मे स्वाभाविके कहल जाएत जे नवजागरण सँ प्राप्त मूल्य आ पाथेयक उचित संवर्धन हमरा लोकनि नहि क' सकलहुँ।

महाकवि विद्यापतिक युगान्तरकारी अवदान कें परवर्ती मध्ययुगक रचनाकार लोकनि कोन रूप मे विकसित केलनि? सक्रिय परिवर्त्तनकामी तत्त्व सभ कें छोड़ि देल गेल आ लेल गेल कुल्लम दू वस्तु--विषयक स्तर पर राधाकृष्ण, आ रूपक स्तर पर रागताललयाश्रित गीत-विधा। बदलैत युगक परबाहि केने बिना एही दुनूक झालि मिथिला मे सैकड़ो बरस धरि बाजैत रहल। हताश, कुण्ठित आ भयग्रस्त समाज कें प्रेमातुर कृष्णक बदला रक्षक राजा रामक खगता छलैक। ओ लोक कें आकृष्ट केलथिन।

राम एला तँ अपना संग अवधी भाषा लेने एलाह। रूप बदलि क' कृष्णो जँ एलाह तँ ब्रजभाषा लेने। रामलीला मण्डली आएल। पारसी थियेटर आएल। खड़ीबोलीक 'काहे कुहे' घर-घर मे पहुँचल। ई युगानुरूप छल। साहेबराम दास आ लक्ष्मीनाथ गोसाँइ-सन जागन्त रचनाकार मुख्यतः मैथिली मे किएक नहि लिखलनि, ताहि पर विचार हेबाक चाही। पूर्ववर्ती जागरण सँ प्राप्त मूल्य आ पाथेयक उचित संवर्धनक अभाव मे मैथिलीक मेला जे उसरि गेल छल, अथवा एहि मे युगीन अनुभूतिक अभिव्यक्तिक सामर्थ्य जे नहि बचि सकल छल, की तकरे जिम्मेवार नहि मानल जाएत? उन्नैसम शताब्दीक आरम्भ मे जे वर्नाकुलर स्कूल बनल, ताहि मे मैथिली कें स्थान किएक नहि देल गेल? अथवा, उनैसम शताब्दीक चारिम चरण मे आबि क' महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह राजकाजक भाषाक रूप मे मैथिली कें स्थान किएक नहि देलथिन? स्थान तँ ओ नहिञे दीतथिन कारण ओ अंग्रेज सरकारक निर्देश पर काज क' रहल छलाह आ अंग्रेज कें हिन्दू-मुसलमान कें विभक्त करबाक लेल हिन्दी-उर्दू कें साम्प्रदायिक हथियार बनेबाक रहैक। जँ अहाँ हिन्दू छी आ अहाँक प्रजो हिन्दुए थिक तँ हिन्दी कें प्रश्रय देब अहाँक बाध्यता थिक। ऊपर सँ एहि पर राष्ट्रीयताक लेबुल साटि देल गेलैक। ध्यान रखबाक चाही जे मूल बात हिन्दी कें प्रश्रय देब नहि छल, उर्दू-फारसी कें निष्कासित करब छल। मुदा जँ मैथिली अपन दाबीदारी राखितय तँ की अहाँ कें लगैत अछि जे अपन पात्रता साबित क' सकितय? किएक, ताहि पर विचार हेबाक चाही।

एहना स्थिति मे, चन्दा झाक द्वारा 'मिथिला भाषा रामायण'क रचना कएल जाएब कोनो साधारण घटना नहि छल। ई उसरल मेला कें फेर सँ बसेबाक तुल्य छल। अपन युगक अनुरूप अपन चिन्तन-धारा कें नवीकृत करब छल। ई मैथिलीक पात्रता सिद्ध करब छल आ ततबे टा नहि, भविष्यक लेल सुस्पष्ट मूल्य आ पाथेय सौंपब छल।

चन्दा झाक लेखन मे भविष्यक लेल दिशानिर्देश सँ भरल पुरल युगबोध अछि मुदा तकरा संग-संग ब्राह्मण-धर्मक सनातन विश्वास सभ सेहो अछि आ महाकाव्यक रूप-रचना सेहो अछि। हमरा लोकनि देखि रहल छी जे मैथिली मे ब्राह्मणधर्मक सनातन विश्वास कें पकड़िक' आइयो

काव्य-रचना भ' रहल अछि आ महाकाव्य सेहो लिखल जा रहल अछि। की एकरा एक बेर फेर मेला उसरबाक लक्षण मानल जाय? नहि, ई मात्र गतानुगतिक तत्त्व सभक उपस्थितिमात्रक बोधक थिक। चारि गोट प्रधान कारण हमरा देखार दैत अछि जकरा बदौलत मैथिली जागरण टिकाउ आ झमटगर भेल अछि, आ पछिला सय-सवा सय बर्ख मे एक सन्तोषजनक उपलब्धिस्तर धरि पहुँचल अछि। आगू यात्रा जारी छैक। ई कारण सभ थिक-

(i) मैथिल अस्मिताक उभार

(ii) पत्रकारिताक विकास

(iii) एक संस्थाबद्ध रचना-कर्मक रूप मे मैथिली लेखनक प्रतिष्ठा

(iv) युगबोध सँ दीप्त प्रतिभाशाली लेखक लोकनिक मैथिली लेखन-क्षेत्र मे सक्रियता

(5) पाँचम बिन्दु थिक जे मैथिली जागरणक तीनू फेज अपना मे अन्तर्सम्बद्ध अछि आ एक-दोसरा कें, प्रेरित-प्रभावित करैत आजुक सन्दर्भ मे परम प्रासंगिक बनैत अछि। चौदहम शताब्दीक जागरणक अपन उपलब्धि छलैक तँ सीमा सेहो छलैक जकरा उन्नैसम शताब्दी तोड़लक आ आइ एकैसम शताब्दी मे उक्त दुनू अपन-अपन उपलब्धि आ सीमाक संग उपस्थित अछि। विगत एक शताब्दी मे मैथिली साहित्य एतेक उन्नति एही दुआरे क' सकल जे विगत जागरणक जे दुर्लंघ्य देबाल सभ छलैक, तकरा तोड़लक, आ एहि सीमा-तोड़न-अभियान मे कमोबेश निरन्तरता सेहो रहलैक। हरिमोहन झा, यात्री, किरण आ राजकमल चौधरी एहि मे उल्लेख्य रूप सँ अग्रणी रहलाह, जाहि दुआरे हिनका लोकनि कें हम शताब्दीक सूत्रधार मानैत छियनि।

मुदा, हम साफ-साफ कहए चाहैत छी जे ई सूत्रधारिता अन्ततः विगत शताब्दीक सूत्रधारिता थिक। आइ एकैसम शताब्दीक एहि 'भूमण्डीकृत' समय मे अपन अस्मिता बचौने राखि सकबाक जे महाभीषण चुनौती हमरा लोकनि पर अछि, कदाचित अपन प्रकृत रूप मे ई लोकनि हमर बहुत कम मदति क' सकैत छथि। मार्ग एक्के टा अछि जे गतानुगतिक नहि भ' क' पुनर्मूल्यांकन करी आ अपना युगक हेतु गुण-सूत्र बहार क' तकर विकास

करी। हमरा लगैत अछि जे सम्भवतः एही टा दृष्टिञे देखने मैथिली जागरण पर विमर्श करबाक किछु सार्थकता भ' सकैत अछि।

भारतीय इतिहास मे उन्नैसम शताब्दी कें नवजागरणक काल कहल जाइत छैक। इतिहासकार लोकनिक प्रायः आम राय छनि जे मिथिला मे ई शताब्दी फोंक चलि गेल, एतय कोनो नवजागरणक सुगबुगी नहि देखल गेल। मध्य भारत अंग्रेजक विरुद्ध संग्राम मे उतरि पड़ल छल, मिथिला ताहि मे नहि छल। महाराष्ट्र ब्राह्मणवादक विरुद्ध दलित-उभार कें ल' क' देदीप्यमान छल, मिथिला ताहू मे नहि। आन्ध्रप्रदेश आ गुजरात शिक्षा आ धार्मिक सुधार कें अपन लक्ष्य बनाक' युग बदलि रहल छल, मिथिला ताहू मे नहि। भारतीय नवजागरणक सामान्य एजेण्डा छल--बुद्धिवाद, जखन कि एतय हमरा लोकनि देखैत छी जे तमाम बुद्धिवादिताक अछैत महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह समुद्र-लंघनक हिम्मति नहि जुटा सकल छलाह, जखन कि ओ एक प्रगतिशील आ राष्ट्रवादी नायक मानल जाइत छलाह। जखन सौंसे देश भिन्न-भिन्न अन्तर्धाराक अन्तर्गत संस्कृताइजेशनक निर्णायक दौर सँ गुजरि रहल छल, एतय जनउ धारण केनिहार गोप लोकनिक विरुद्ध प्रबल वैचारिक-दैहिक संग्राम लड़ल जा रहल छल। तते खण्ड-पखण्ड समाज छल जे कनीय श्रेणीक ब्राह्मणे लोकनिक संस्कृताइजेशन सम्पन्न नहि भ' सकल छल, जे कि अंग्रेजी राजक बदौलत अरजल धन सँ बिकौआ कें आनि उच्च श्रेणी अरजबाक हबस मे अपस्यांत छल। एहना मे ल' द' क' हमरा लोकनि लग एक्के टा 'मैथिली' अछि, जकरा नवजागरणक अवदान मानि क' गौरन्वान्वित भ' सकैत छी। भारतक अनेक क्षेत्र एहनो अछि जतय उन्नैसम शताब्दी तँ के कहए जे बीसम शताब्दीक पाँच-छव दशक बितलाक बादो धरि नवजागरणक कोनो लक्षण देखार नहि भेल। मिथिला ताहि सँ आगू अछि। अपन मैथिली जागरण कें ई एक निरन्तरता प्रदान क' सकल, से एकरा आरो आगू क' दैत छैक। मुदा तें 'मैथिली जागरण' कें 'मिथिला जागरण'क रूप मे पेश कएल जाय, तकर संगति हम नहि देखैत छी। वस्तुतः मिथिला जागरणक समय तँ आइ आएल अछि आ एहि मे मैथिली जागरण एक निर्णायक आ बहुव्यापी भूमिका निमाहि सकैत अछि।

मिथिला समाज आ मैथिली भाषा-साहित्यक सन्दर्भ मे देखी तँ मैथिली जागरणक एहि भूमिका कें चारि भिन्न-भिन्न स्वरूप मे परखल जा सकैत अछि--

(क) सामाजिक भूमिका

1. भारतीयता तथा मैथिल राष्ट्रीयताक बीच सन्तुलन

जखन हम कहैत छी जे एहि दुनू राष्ट्रीयताक बीच सन्तुलन मैथिली जागरणक देन थिक तँ एकर तात्पर्य अछि जे पहिने एकर अभाव छल। सभ गोटे जनैत छी जे मिथिलाक समाज बहुत विरोधाभासी समाज थिक। ई विरोधाभास, सभ सँ स्पष्ट देखार पड़ैत छैक-सामाजिक प्रवृत्तिक सन्दर्भ मे। 'आर्यावर्त'क आदर्श सभदिन सँ एकर कमजोरी रहलैक अछि। जे कोनो बाहरी तत्त्व आर्य-आदर्श आ ब्राह्मणधर्म सँ अनुमोदित देखार पड़ैत हो तकरा सँ झट प्रभावित भ' जेबाक प्रवृत्ति एतहुक समाज मे निरन्तर रहल अछि। मुदा दोसर दिस आंतरिक रूप सँ सामाजिक सन्दर्भ मे यैह समाज, अपना मे खण्ड-खण्ड बँटल रहत। वैह आर्य-आदर्श वा भारतीय राष्ट्रीयता एकरा अपना मे सेहो जोड़ि दैक, से नहि भ' पबैत अछि। फल होइत अछि जे भारतीयताक समक्ष मैथिलत्व कें तिलांजलि द' देबा मे एकरा कनिञो संकोच नहि होइछ। मिथिला मे हिन्दीक प्रवेश, एतय ओकर प्रसार आ अन्ततः सौंसे मैथिली समाज कें आइ द्विभाषी बनि जाएब एकर एक दृष्टान्त थिक। ई सम्मोहन जागरण-कालक साहित्यकारो मे देखार पड़ैत अछि। अपन साम्प्रदायिक नीति कें अंजाम दैत बंगालक लेफ्टिनेन्ट गवर्नर एशली ईडेन जखन बिहार प्रान्तक समस्त कचहरी मे हिन्दीक प्रयोग कें बाध्यकारी बनौलक तँ तकर प्रशंसा मे 'मिथिला तत्त्वविमर्श'क लेखक महामहोपाध्याय परमेश्वर झा लिखलनि- *'यद्यपि ई छोटा लाट साहेब अनेक कार्य देशोपकारार्थ कयलें छलाह परन्तु सभ सँ अधिक उपकार एहि लोकक ई कयलन्हि जे सन् 1881 ई.क 1 जनवरीसँ बिहारक कचहरी सभमे हिन्दी*

जारी करौलन्हि।' 'एहि लोकक' माने किनकर? मैथिलक आ हिन्दुक? आ से हिन्दुत्व कोन? उर्दू-फारसीक विरोध मे हिन्दीक संग आएल हिन्दुत्व। मैथिली कें मटियामेट करैत हिन्दुत्व।

अस्तु! विद्यापतिक स्वप्नद्रष्टा व्यक्तित्वक आकलन करैत प्रायः आचार्य रमानाथ झा कतहु ई बात लिखने छथि जे ओ (विद्यापति) एहि तथ्य सँ अवगत छलाह जे समाज कें जोड़िक' रखबा मे, भविष्य मे, 'भाषा' अधिक प्रभावी हएत, धर्म नहि। मिथिलाक चिन्तक-समाज विद्यापतिक परम्पराक निर्वाह आ विकास नहि क' सकलाह। ई एक तथ्य थिक, एहि पर खौंझेबाक नहि चाही।

हमरा लगैत अछि जे आधुनिक अर्थ मे 'मैथिल राष्ट्रीयता'क उदय मैथिली जागरणक एक परिणाम थिक। मैथिली एकर धुरी बनल, कारण उनैसम शताब्दी अबैत-अबैत एहन आन कोनो धुरी नहि बचि सकल छल। एहि क्षेत्रक निजता 'मैथिली'मे प्रकट भेल। तहिया, जे क्यो जागरूक लोक छलाह, कोनो जातिक, कोनो वर्गक, सभ मे मैथिलीक प्रति ई निजत्वभाव छल, से प्रतीत होइत अछि। एकर दृष्टान्त हमरा लोकनि मैथिल महासभाक प्रसंग मे देखि सकैत छी। ब्राह्मण आ कर्णकायस्थक जातीय संगठन मैथिल महासभा जखन मैथिली कें 'अपन' अस्मिता घोषित केलक, तँ एहि भाषेक आधार पर गोपजातिक दिस सँ अरजी दाबी पेश कएल गेल जे हमहूँ सभ मैथिले थिकहुँ, हमरो लोकनि कें मैथिल महासभा मे प्रवेश भेटय। मुदा कहब आवश्यक नहि जे एहि मांग कें बहुत अवमाननापूर्वक अस्वीकृत कएल गेल। मुरहोक पण्डित यदुनाथ झा, जे अपन राष्ट्रीयताक भावनावश समस्त समाज कें 'मैथिली'क सूत्र मे एकताबद्ध करबाक एक स्वप्नद्रष्टा रहथि आ गोपसमाज कें एहि दिस प्रेरित करबाक काज केने छलाह, हुनका उपहासपूर्वक 'यदुवर' (अर्थात यादववंशक श्रेष्ठ पुरुष) कहल गेलनि। 1915 ई.क 'मिथिला मोद'क उद्‌गार 100मे पण्डित जीबछ मिश्र लिखलनि- *'आबहु जँ महासभाक धुरन्धर कार्यसंचालकगण विनीत हमर प्रार्थना बुझथि तँ 'गेलो पानि बान्ही आरि' एहि लोकोक्तिक अनुसार शान्त भावें अपन दोष मानि मिथिलास्थ आन-आन सभा (एकर अर्थ जातीय संगठन बुझबाक चाही) काँ मैथिल महासभामध्य मिलाए चारूवर्णक उक्त सभा कै*

सकथि, तँ अतिहर्ष छल। अगत्या मिथिलाभाषा काँ विश्वविद्यालय मे उचित स्थान ओ स्वत्व भेटबाक शुभकामना सँ आन सभा द्वारा पृथको प्रार्थनापत्र पठबाए मिथिलाक मंगलकामी बनथु। अन्यथा अकृतकार्य भेला सँ हमहि नहि किन्तु मैथिल सँ अतिरिक्तो जाति उपहास कै कहतन्हि जे की औ! मिथिलाभाषा चलल!!' हम निवेदन करब जे मैथिली जागरणक सन्दर्भ सँ प्रेरित एहि लेखकक कथन मे कतेक स्पष्ट अस्मिता-बोध छैक, तकरा परखल जाय।

मुदा, सामन्ती गठजोड़ कहियो समाज कें एक नहि होब' देलक। स्वतंत्रताक बादो धरि लगातार एकरा जारी देखि सकैत छिऐक। 3 अगस्त 1953 कें 'मिथिला' मे डॉ. लक्ष्मण झा लिखलनि- *'आशा छल महासभाक कर्णधार लोकनि सहरसा मे एहि बेर महासभाक दुआरि सभक हेतु खोलि एकरा आओर सबल बनौता। से नहि भेल, ई दुखक विषय। मिथिलाप्रान्तक विषय मे, ब्राह्मण ओ कायस्थक अतिरिक्त आन वर्णक लोक जे सशंकित छथि तकर एक प्रबल कारण अछि मैथिल महासभाक ब्राह्मण-कायस्थगत सदस्यता। समस्त मिथिला कें एक क्षेत्र मे बान्हक हेतु तें मैथिल महासभा कें सभ वर्णक, सभ वर्गक संस्था मे परिणत करब बड़ सहायक होइत।'*

एहि ठाम हमरा लोकनि देखि सकैत छी मैथिल राष्ट्रीयताक उदय भेलाक बादो एकर विकास किऐ नहि भ' सकल आ भाषाधार प्रान्तक रूप मे एकरा मान्यता किएक नहि भेटि सकलैक, यद्यपि कि एकर आनो कारण छल, आ एहि ठामक भाषा किऐक सभ दिन अबडेरले रहि गेलैक!

2. मिथिला-विषयक चिन्तनाक अस्मिता-विमर्शक रूप मे विकास

कवीश्वर चन्दा झाक विषय मे आचार्य रमानाथ लिखलनि अछि जे *'हुनक जीवन केवल मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक प्रसंग अनुसंधान करैत, एकरे चर्चा करैत, एकरे भावना करैत बीतल छलनि।'* हम ध्यान दियाब' चाहब जे हुनक ई अनुसन्धान कोन अनुसन्धान छल? की वैह जे मिथिलाक चिन्तक लोकनि मीमांसा, नव्यन्याय आदि कें ल' क' युग-युग सँ करैत आएल छलाह? नहि, ई अस्मिताक अनुसन्धान छल। आधुनिक युग मे

आबिक' अपन भविष्यक लेल आधारशिला ताकब एकर लक्ष्य छल। ओना, आचार्य रमानाथे झा ईहो स्पष्ट केलनि अछि जे 'कवीश्वरक आविर्भाव समुचित समय मे नहि भेल' छल। ई अस्मिताक अन्वेषण, एक आधुनिक मूल्य छल, आ तहिया वर्चस्वशाली प्रभुवर्ग एकरा समर्थन देबाक 'होश' मे नहि आएल छलाह।

चन्दा झाक अनुसन्धानविषयक समस्त पोथा लुप्त भ' गेल, यद्यपि कि एकर लिखित विवरण भेटैत छैक जे कोन महाशय किनकर आज्ञा सँ किनका-किनका कै-कै टा पोथा देलथिन। मुदा, चन्दा झाक प्रयास कें आगू हमरा लोकनि बेस मोल भेटैत देखैत छी। हुनकर सोच आगू निरन्तर कार्यरूप लैत जाइत अछि, से भने ओ मैथिलीतर भाषा मे किए ने अभिलिखित कएल गेल हो। आगू अनेको एहन चिन्तक सभ होइत छथि जे संस्थागत अन्तर्विरोध सँ बचबाक लेल मैथिली सँ तँ कात केने रहैत छथि मुदा मिथिला हुनक अस्मिता बनल रहैत छनि आ आन-आन भाषा मे ओ अपन 'अस्मिता-विमर्श' करैत छथि। से, हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे मिथिला कें ल' क' कएल गेल अस्मिता-विमर्श भने ओ अंग्रेजिए मे किएक ने लिखल गेल हो, अनिवार्य रूप सँ मैथिली जागरणहि सँ अभिप्रेरित अछि। हमरा लोकनि ईहो देखि सकैत छी जे अपन अस्मिताक अन्वेषण स्पष्ट रूप सँ मैथिल राष्ट्रीयताक उदय संग जुड़ल छैक। हम कहब जे जाहि ठाम भारतीयताक नाम पर चलल वस्तु सभ लग आत्यन्तिक रूपें समर्पित हेबाक 'बेहोश' प्रवृत्ति हो, ओतए मैथिल राष्ट्रीयताक उदये स्वयं मे दुनूक बीच--भारतीयता आ मैथिल राष्ट्रीयताक बीच--सन्तुलन कायम करब थिक।

(ख) भाषा-साहित्यगत भूमिका

1. भाषाक रूप मे मैथिलीक अपन व्यक्तित्व स्थापित हएब

साहित्य मे व्यवहृत होइबला भाषाक सम्बन्ध मे विद्यापतिक दृष्टिकोण बहुत साफ छलनि। तकरा ओ अपन 'देसिल बयना'क अवधारणाक रूप

मे प्रस्तुत केने छथि। मुदा, आगू हमरा लोकनि एहि मामला मे भीषण गतिहतता देखैत छी। एकर कारण भेल जे विद्यापतिक परम्परा आगू नहि बढ़ि सकल, लोक राधा-कृष्णे मे आ गीतिबद्ध काव्यरूपे मे ओझराएल रहि गेलाह। आधुनिक मैथिली, विद्यापतिक भाषा सँ भिन्न रूपक छल तँ आवश्यक छलैक जे एकर 'अपन व्यक्तित्व' एकर साहित्य मे उभरि क' अबैक। सभ गोटे अवगत छी जे एहि व्यक्तित्वक पहिल आलेखन कवि मनबोध केलनि। एही लेल हुनका मान देलो जाइत छनि। मुदा, हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे मनबोधक प्रयोग सेहो अपन ठोस परम्परा चन्दे झाक युग मे आबिक' कायम क' सकल।

भाषा, अनिवार्य रूप सँ अपन प्रयोक्ताक जीवन-मूल्य, व्यक्तित्व, नेंत आ भाव-दशा सँ प्रभावित होइत छैक। जें कि परवर्त्ती रचनाकार लोकनि मे जागरण-धर्मी चेतने नहि छलनि, तें एहना ठाम ठेठ मैथिलीक ठाठ देखार पड़बाक प्रश्ने कहाँ उठैत? सभ कथू शास्त्रसम्मत होइक, से अनिवार्य छल। लोकसम्मत होएब के सेहो कोनो मूल्य छैक, ई बोध तँ आखिर अस्मिते विमर्श सँ उपजि सकैत छैक। डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण' जखन आधुनिक युगक प्रवर्त्तक फतूर कवि कें मानबाक अर्जीदाबी पेश करैत छथि तँ प्रायः एहने प्रकारक अपेक्षा रखैत छथि जे कि हुनका चन्दा झा मे पूरा होइत नहि देखाइत छनि। मुदा, हम कहए चाहब जे चन्दा झा मे ई चीज छलनि अवश्य। ओ 'व्यक्तित्ववान मैथिली' लिखि सकथि, से व्यक्तित्व आ जीवन-मूल्य पौने छलाह। मुदा, राज्य-सेवा मे रहलाक कारण ओ एहन लोक सभ सँ घेराएल रहथि, जतए एहि गुणक मोल नहि छलैक आ जतए एकरा लेल प्रशंसा आ प्रोत्साहन सेहो नहि भेटि सकैत छलनि। से प्रोत्साहन प्रायः फतूरो कवि कें नहि भेटि सकल हेतनि नहि तँ ओ आरो लिखितथि। प्रोत्साहन रामायण लिखबा लेल छलैक। मुदा ध्यान रखबाक थिक जे 'चन्द्ररामायण'क जे बड़का महत्व छैक से एकर भाषा ल' क' छैक। व्यक्तित्ववान भाषा। एही कारणें प्रायः एकर प्रकाशन विलम्बित भेल हएत।

अंग्रेजी-सामन्ती युगक अपन यथार्थ चित्रित करैत एक पद मे चन्दा झा कहैत छथि-

गैया जगतक मैया हे भोला कटय कसैया हाथ
हाकिम भेल निरदैया हे भोला कतय लगायब माथ
बरसा नहि भेल सरसा हे भोला अरसा कय गेल मेह
रतिया दिन दुरगतिया हे भोला जन-तन-जिवन सन्देह
मुखिया बड़-बड़ सुखिया हे भोला अन्नक दुखिया डोल
के सह कान कनखिया हे भोला सुखिया बिरुना टोल

यद्यपि चन्दा झाक जे अपन सीमा छनि, सेहो एहि ठाम देखार होइत अछि मुदा आम लोकक दशा-दिशा कें, आम लोकेक भाषा मे, ओकरे अभिव्यक्ति शैली मे प्रकट करबाक जे एतय सहजता छैक, सैह भाषाक व्यक्तित्व देखबैत छैक। की अहाँ कें 'गैया जगतक मैया' लिखब आ कि 'रतिया दिन दुरगतिया' लिखब--सेहो पहिल-पहिल बेर--आसान बात बुझाइत अछि? एहि ठाम तँ 'रात्रिन्दिवा' लिखबाक परिपाटी रहल छल, बहुत भेल तँ 'दिवारात्रि' कहि लिय' वा 'अहर्निश'। मुदा ई की भेल? 'रतिया दिन दुरगतिया'? यैह मैथिलीक व्यक्तित्व थिकैक, से हमरा लगैत अछि, जकरा दाबि क' राखल गेल छल, मुदा जकरा आब स्फुटित हेबाक छलैक।

मुदा दोसर दिस अपन ईहो दुर्भाग्य देखै छी जे गतानुगतिक सम्प्रदाय चन्दा झा सँ सेहो दुइए टा वस्तु ग्रहण करैक लेल तैयार भेलाह- (1.) विषय-वस्तुक स्तर पर 'राम' अथवा हुनके-सन महिमाशाली आर कथू। स्मरण राखी जे आचार्य रमानाथ झा एहि सम्पूर्ण आधुनिक साहित्यक कालखण्ड कें 'रामयुग' कहैत छथि। आ, (2.) काव्य-रूपक स्तर पर महाकाव्य अथवा रागतालमुक्त छन्द। भाषाक व्यक्तित्वक एहि मे कोनो अतिरिक्त मोजर नहि रहल। स्थिति तँ एहन भेटैत अछि जे आगू यात्री जी जखन अपन एक रचना मे प्रसंगवश अपन 'बाप' कें 'मूर्ख' कहलनि तँ हुनक स्नेही मित्र सुमनजी बहुत-बहुत आहत भेलाह आ प्रायः सभ दिनुका लेल यात्रीजी हुनका नजरि सँ खसि पड़लथिन। हुनक कहब छलनि जे हर हाल मे बाप कें 'पिता' लिखल जेबाक चाही आ मूर्ख कें 'निरक्षर'। अस्तु एक बेर फेर हम मोन पाड़ि देब' चाहब जे मैथिली जागरणक खगता एक बेर फेर आइयो अछि।

(२) परिपाटी सँ हँटिक' नव दिशाक सन्धान

शुरुहे मे हम कहने छलहुँ जे जागरणक प्रवृत्ति होइत छैक--आस्थाक दिशा-परिवर्त्तन। प्रक्रिया तँ ई घटित होइत छैक लोक-चेतनाक तल पर, मुदा एकर स्पष्ट झलक तत्कालीन साहित्य मे देखल जा सकैत अछि। भारतीय नवजागरणक धुरी छल--बुद्धिवाद, ईहो चर्चा पहिने भेल अछि। हमरा लोकनि देखैत छी मैथिली जागरण-कालक रचना सभ मे एहि बुद्धिवादक झलक देखार पड़ैत छैक यद्यपि कि ओकरा पर्याप्त नहि कहल जा सकैछ। ईश्वर-सत्ता तथा शास्त्रज्ञ-वर्चस्वक प्रति सन्देहक भाव एकर एक लक्षण थिक। फतूर कविक 'कवित्त अकाली' मे एक दिस जतए देवराज इन्द्र कें धिक्कार कहल गेलनि अछि, ओतहि ओहि युगक महान देवता श्रीराम कें लज्जित होइत देखाओल गेल अछि। शास्त्रज्ञ पढुआ सभक खबरि एहि शब्द मे लेल गेल अछि-

जोतिष पढ़ि-पढ़ि जे जन अएला साधि-साधि भूगोल।
रेखागणित बीजसँ ओआकिफ तनिकहु कच्ची बोल।।

आगू चलिक' हरिमोहन झाक लेखन मे हमरा लोकनि अपन परम्पराक नकारात्मक तत्त्व सभ कें प्रश्नांकित करबाक प्रवृत्ति देखैत छी। एहि लेल हुनका लेखनक बेस महत्त्वो छनि। हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे ई गुण वस्तुतः जागरण-कालीन रचनाक मूल्य थिक, जकर साफ-साफ मुदा पर्याप्त नहि, अभिव्यक्ति चन्दा झाक पद सभ मे सेहो भेल अछि। तकरा स्थान पर सकारात्मक युगीन मूल्य कें तकबाक उद्यम सेहो ततय छैक। अपन देस आ तकर संस्कृतिक संवर्धनक स्वर ओतय मुखर छैक। ओहि काल मे देस-गौरव आ देश-दशा विषयक पद सभक प्रचुरता सँ लिखल जाएब एहि प्रवृत्ति दिस संकेत करैत अछि। *'लिखल जाय मिथिला इतिहास, नहि हो तहिमे शिथिल प्रयास'*-ई एक एहन काव्य-पंक्ति थिक, जकरा ओहि कालक साहित्यिक परिवेश कें बुझबाक लेल एक सूत्र अथवा एक नाराक रूप मे व्यवहृत कयल जा सकैत अछि।

स्पष्ट रूप सँ ई प्राचीन-मध्यकालीन काव्य-परिपाटी सँ अलग हँटिक' नव दिशाक सन्धान करब छल। एकर देखार प्रभाव साहित्यक भाषा पर

पड़ल। लेखकक सरोकार सँ ओकर भाषा मे लसि अबैत छैक। से लसि चन्दा झाक भाषा मे खूब देखार पड़ैत छनि। फतूर कविक भाषा मे जे ऊष्मा आ गतिमयता छैक, सेहो यैह थिक।

अनेको अनेक कारण सँ चन्दा झा भक्ति-विषयक काव्य-रचना बेसी केलनि। अपन जीवन मे भेटल त्रास कें कम करबाक लेल ई हुनक साधन-स्वरूप छल। एहन कविता, जाहि मे हुनक काव्य-प्रवृत्ति प्रकट भ' सकैक, से संख्या मे तँ कम अवश्य अछि, मुदा विविधता सँ परिपूर्ण अछि। अकाल, बाढ़ि, महामारी, महगी, अपराध, भ्रष्टाचार, अनीति, दमन, पूंजीवादक अमानुषिकता, समाजक किंकर्त्तव्य-विमूढ़ता, नेतृत्वकारी वर्गक कर्त्तव्यहीनता आदि-आदि अनेक समकालीन विषय पर हुनकर कविता सभ छनि। एक दिस जँ ओ शिश्नजीवी समुदायक प्रतीक बोतू पर कविता लिखलनि अछि तँ दोसर दिस भोजनधर्मी ब्राह्मण, धर्मच्युत कुलीन सँ ल' क' पिंजरबद्ध सुग्गा धरि पर हुनकर कविता उपलब्ध अछि।

हमरा कहबाक अछि जे विषय-विस्तार भेला पर, तकर अभिव्यक्ति लेल सक्षम भाषाक खोज अनिवार्य रूप सँ होइत छैक। आधुनिक गद्य-लेखनक प्रवर्त्तन एकरे एक दृष्टान्त थिक। एहि संग-संग भाषाक सामर्थ्य जँ एक दिस बढ़ैत गेलैक तँ दोसर दिस अभिव्यक्ति-कौशल मे सेहो उत्तरोत्तर परिष्कार होइत गेलैक। हमरा ईहो कहबाक अछि जे आइ फेर नवजागरण घटित हेबाक परिस्थिति हमरा सभक आगू अछि। जे हम सभ नहि क' सकल छी, तकरा तँ मानि ली जे आगुओ क' लेब, मुदा जे हम सभ क' चुकल छी, तकरा तँ नष्ट नहिञे टा होइ लेल देबाक चाही। जेना आधुनिक मैथिली साहित्य। आधुनिक गद्य-लेखन। तकर प्राणवन्त भाषा। ताहि मे व्यक्त बुद्धिवाद। तकर यथार्थ-बोध। गति-प्रगतिक प्रति पक्षधरता। एहि सभ कथूक वाहक थिक मैथिली साहित्य। मानि लेल जे ई आइ अत्यन्त सीमाबद्ध भ' गेल अछि आ मधेपुराक दलित आ अररियाक मुसलमानक यथार्थ वहन करबाक क्षमता एकरा मे नहि रहि गेल छै। मुदा, ई मानि लेबा सँ पहिने एक बेर जाँच किए नहि क' लेल जाय जे एहि क्षमताक अभाव ककरा मे छै? मैथिली मे आ कि हमरा सभ मे? हम सभ जँ जाग्रत अवस्था मे आबी तँ 'मानक मैथिली' आ 'आनक मैथिली'क ओझरी कें सोझरा सकै छी।

एवम्प्रकारें मैथिली जागरणक एक रूपरेखा हम अहाँक सोझां रखलहुँ। आवश्यक छल जे उपर्युक्त बिन्दु सभ कें सुविस्तृत व्याख्या आ प्रचुर दृष्टान्त सभक द्वारा स्पष्ट कएल जाइत, मुदा विस्तार-भय सँ से सम्भव नहि भ' सकल अछि। मूल बात जे हमरा कहबाक छल से ई जे उन्नैसम शताब्दीक मैथिली जागरण, चौदहम शताब्दीक जागरण सँ अन्तर्सम्बद्ध भ' क' भविष्यक लेल एक आधारशिला तैयार केने छल। एकरे बदौलत मैथिली आइ मिथिलाक सुस्पष्ट अस्मिताक रूप मे विकसित भेल अछि आ मैथिल राष्ट्रीयताक इंगित बनिक' उभरल अछि। मुदा, एहि मैथिली जागरणक अपन स्पष्ट सीमा सभ छलैक, जकरा कारण ई मिथिला जागरणक रूप मे विस्फुटित नहि भ' सकल। हम पहिनहि कहलहुँ अछि जे मिथिला जागरणक समय तँ आइ आएल अछि। आजुक मण्डीवादी समयक जे दवाब देसिल संस्कृति आ भाषा पर छैक, से सभक सोझाँ अछि। एहना मे, हमरा-सन लोक यैह कामना करत जे ई मैथिली जागरण आइ मिथिला जागरणक रूप मे उभार पाबय--एहि सँ अपन अस्मिताक रक्षा तँ हेबे करत, भारतीय साहित्य आ संस्कृति कें सेहो हम सभ विकल्पक एक अवधारणा द' सकबैक, जेना हमर विद्यापति अपना युग मे देने छलाह। ई काज तँ मुदा सभक जागने हेतै। अहाँ जागबै तँ हमरो जागल पेबै।

(2008)

मिथिला मे नवजागरणक किछु सन्दर्भ

हमरा लोकनि जानैत छी जे उन्नैसम शताब्दी कें, भारतक इतिहास मे नवजागरणक शताब्दी कहल जाइत छैक। किछु इतिहासकार अवश्य एहि मे संकोच करैत देखल जाइत छथि आ ओ लोकनि एकरा समाजसुधार, राष्ट्रीय चेतनाक उभार आदि-आदि नाम दैत छथि। किछु गोटें कें 'नवजागरण' कहने पक्षपाती हेबाक खतरा बुझाइत छनि जखन कि अकादमिक अध्ययन कें निष्पक्ष आ तटस्थ हेबाक चाही। तकर अछैत 'नवजागरण' शब्द आब पूर्ण प्रचलन मे आबि गेल छैक। हम जेना कि बूझि पबैत छी, नवजागरण कहल गेल अछि--एक युग सँ दोसर युग, जे कि आइ अछि आ जैह कि विधेय थिक, मे संक्रमणक अर्थ मे। जें कि व्यापक समाज-मानस कें आलोड़ित-परिवर्तित करबाक ई परिस्थिति बनौलक, तें नवजागरण। एकर तात्पर्य आस्थाक दिशा-परिवर्त्तन सेहो बुझबाक चाही। जे कोनो हमर आस्था-विश्वास चलि आबि रहल छल पूर्व सँ, तकरा एक भिन्न दिशा मे नियोजित करब, जे कि बादक युगक हिसाबें सकारात्मक साबित भेल। जँ हम कही जे जागरणक अर्थ, सामाजिक सन्दर्भ मे, सामूहिक चेतनाक स्फुटीकरण थिक तँ संभवतः किनको एतराज नहि हएत। मुदा, एतराज तँ हमरा अपने अछि ओहि साहित्यकार लोकनिक मान्यता पर जे मानैत छथि जे क्यो एक विशिष्ट पुरुष, कवि वा समाज-सुधारक चेतनाक जन्मदाता होइत छथि, ओही महापुरुष सँ चेतना प्राप्त क' क' समाज आगू बढ़ैत अछि। होइत अछि वस्तुतः एकर उनटा। चेतना जन्मैत अछि समाज मे आ महापुरुष लोकनि ओकर

(चेतनाक) अभिव्यक्ति-मात्र होइत छथि। ओ चेतनाक शृंगार थिकाह--प्रायः ताहि अर्थ मे। अस्तु।

तखन, हमरा लोकनि ईहो देखैत छी जे एही शताब्दी मे 1857क विद्रोह भेल रहैक। एक दिस जँ ई विश्वक एहन पहिल सिपाही-विद्रोह रहए जाहि मे सेनाक सवा लाख सिपाही अपने सरकारक विरुद्ध ठाढ़ भ' गेल तँ दोसर दिस ईहो जे बदलाक कार्रवाइ मे अंग्रेज सरकार बाइस लाख आम जनताक हत्या केलक। हत्याक तरीका एते निर्मम आ बर्बर, जकर जोड़ा इतिहास मे कम्मे हएत। आइ एहि संग्राम कें विदेशी दासताक प्रति आमजनक 'महायुद्ध' कहल जाइत छैक आ पबैत छी जे एहि महायुद्ध पर जते सामग्री एखन धरि लिखल गेल अछि आ आइयो लिखल जा रहल अछि, से कदाचित द्वितीय विश्वयुद्धक बाद दोसर नम्बर पर एकरे राखल जाएत--एकर अछैत जे एहि प्रसंगक 90 प्रतिशत दस्तावेज अंग्रेज सरकार नष्ट क' देने छल। सौंसे भारत एहि सँ दलमलित छल तँ मिथिला पर एकर प्रभाव नहि पड़ल हेतै, से कोना कहल जाएत? हमरा इलाका मे तँ किम्वदन्ती प्रसिद्ध अछि जे लक्ष्मीनाथ गोसाँइ कें एही संग्राम मे अंग्रेज सरकार भीतर केने रहनि आ ओ अपन योगबल सँ जेल सँ बहरा गेल रहथि वा हुनकर शिष्य जॉन क्रिश्चियन जमानतदार बनिक' हुनका छोड़बौने छलथिन। एम्हर समस्तीपुर इलाकाक बारे मे पढ़ल अछि जे युद्धक बाद, ओम्हर गाम-गाम मे प्रचार भ' गेलै जे कम्पनीक राज खतम भ' गेल, आब देश आजाद अछि। एहि प्रचार कें गलत साबित करबाक लेल तिरहुतक मजिस्ट्रेट डम्पियर, स्वयं अपना नेतृत्व मे सेना ल' क' कूच केने रहए आ जानि नहि कतेक हजार लोकक खून क' क' आपस घुरल रहय। सेहो खून कोना? बीच गाम पर गाछ मे लटका फाँसी द' क'; मूड़ी कटबा क'; अंग-भंग क' क', कुट्टी काटि कुकूर कें खुआ क' आदि-आदि। अनुमान कएल जाय जे आमलोकक मानस पर केहन गँहीर छाप पड़ल हेतै एहि दृश्य सभक!

मुदा हमरा लोकनि देखैत छी जे सरकार-सरकार प्रायः एक होइत छै, तें मिथिला सरकार (महाराज महेश्वर सिंह) अपन सक्क भरि अंग्रेज सरकार कें, विद्रोहक सफाया करैक लेल सहयोग केने रहथि। विवरण

भेटैत अछि जे हुनका द्वारा 19 टा हाथी, 100 चुनौटा सिपाही, 16 टा कसगर घोड़सवार आ ऊपर सँ दू टा ऊँट कम्पनी सरकार कें प्रदान कयल गेल छल। कहब आवश्यक नहि जे अपन प्रजा पर महाराजक जबर्दस्त धाख छलनि। राजसत्ताक संग-संग धर्म-सत्ता सेहो हुनका हाथ मे छलनि आ एहि ठामक जनता धर्मप्राण मानल जाइत छल।

नवजागरणक मामला मे मिथिलाक केस-स्टडी करबाक प्रसंग मे एकटा जटिलता आओर हमरा सभ कें भेटैत अछि। कोर्ट ऑफ वार्ड्स (1860-1880) प्रशासन-अवधि मे, सन् 1873 ई. मे मिथिला मे बड़ भारी अकाल पड़लै। एहि भीषण विपत्तिक समय मे अंग्रेज सरकार अभूतपूर्व राहत-व्यवस्था चलौलक। फतूर कविक कवित्त मे एकर सुव्यवस्थित वर्णन भेलैक अछि। चन्दा झा तथा परमेश्वर झा सेहो एहि मादे लिखलनि अछि। एहि सभ मे एहि सुव्यवस्थाक प्रशंसा भेलैक अछि। एकरा अतिरिक्त, 1857 क बाद जे रेल, डाक आ तारक व्यवस्था प्रवर्तित कयल गेल--तकर सकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़लैक, यद्यपि कि एकरा पाछू जे अंग्रेजी सत्ताक इष्ट रहैक सेहो रचनाकार लोकनिक दृष्टि सँ नुकाएल नहि रहलनि। रेल पर लिखल अपन एक कविता मे चन्दा झा कहने रहथि--*'भारत-भूमि अन्न को ढोती यह कुरीति, नहि रीति भली।'* हिन्दी मे लिखल, चन्दा झाक उक्त अप्रकाशित समुच्चा कविता एहि तरहें अछि--

जब रेल चली
कोउ वाहन न समान बली।
हाथी हिम्मत जहाँ न घोड़ी, साँढ़िन गति बिचली
जीवत लोक विमान मे बैठे देखे पृथ्वी सकल भली।
शीत गरम श्रम अंग न व्यापे लांघ पहाड़-पहाड़ भली
जोर जंगली कंगली कीन्ही छकित भयो छिति गाँह छली।
ज्वालामुखी सखी लखि पड़ती निशिवासर तुझ हृदय जली
भारत-भूमि अन्न को ढोती यह कुरीति, नहि नीति भली।

तहिना, अंग्रेजी शासन मे विधि-व्यवस्थाक स्थिति मे सुधार भेलैक, अपराधक दर घटलैक, आमलोक भयमुक्त शान्तिकालक अनुभव केलक।

एहू तथ्यक विवरण हमरा लोकनि कें चन्दा झाक लेखन मे भेटैत अछि। अंग्रेजक प्रशंसा करैत एक पदमे ओ कहैत छथि--*'राजा अंग्रेज कयल नीतिक निधान।'* आदि-आदि।

प्रशासनिक दस्तावेज आ एहि रचना सभ सँ सूचना भेटैत अछि जे आमलोक पर एकर सभक बहुत प्रशंसात्मक प्रभाव पड़ल रहैक आ समाज मे अंग्रेजी सत्ताक प्रति आस्था बढ़ल रहैक। आगामी महराजलोकनि एहि भाव कें सबल करबाक उद्यम सेहो करैत रहलथिन। तें हरसट्ठे प्रतिरोधक संस्कृति विकसित हेबाक प्रवृत्ति ने हम अपन मुख्यधाराक समाज मे देखि पबैत छी आ ने एतुक्का साहित्य मे। प्रतिरोधी संस्कृति जाहि अपरधारा मे छल, तकरा मुँह मे बोल भनें होअय, हाथ मे कलम नहि छल। 'मिथिला का इतिहास'क लेखक रामप्रकाश शर्मा लिखलनि अछि जे 1857क संग्राम मे बिहार (आरा)क प्रभाव जे मिथिलाक आमलोकक स्मृति पर पड़ल छल, तकर एक बानगी चरबाह सभक एक खेलक रूप मे प्रसिद्ध अछि, जाहि मे चरबाहक एक दल पुछैत छैक--

अमर सिंह के कमर टूटलनि, कुमर सिंह के बाँहि
पुछियनु ग' दलभंजन सिंहसँ अब लड़ता कि नाँहि?

एहि पर दोसर दल उतारा दैत छैक--

हाथी बेचब घोड़ा बेचब सिपाही कें खियाएब
लड़ब नै तँ करब की, हँसी की कराएब?

तँ, दोसर दिस पूर्णियाँ जिलाक सुदूर देहातमे कबड्डी खेलैत काल पढ़ल जायबला बोल मे एहि पदक प्रयोग आइ धरि प्रचलित रहबाक चर्चा डॉ. रत्नेश्वर मिश्र करैत छथि--*'चल कबड्डी आरा, सुलतानगंज कें मारा।'* एहि पदमे सुल्तानगंज जीति लेबाक पछाति अंग्रेज सँ आरा जितबाक मंशा प्रकट कएल गेल छैक, जे कि 1857क घटना थिक।

मुदा तें कहल जाय जे एकर प्रभाव युग बदलबा पर नहि पड़लै, से नहि। श्रेण्य साहित्य मे एकर अभिव्यक्ति बहुत बाद मे आबिक' भेल। सामाजिक परिवेशक पद्धतिबद्ध अध्ययन द्वारा एकरो बहुत ठीक सँ बूझल जा सकैत अछि। कुल मिलाक' मिथिला समाज मे अंग्रेजी सत्ताक प्रति मिलल-जुलल भाव रहैक, थोड़ेक आक्रोशो आ थोड़ेक

प्रशंसो। ई प्रशंसा-भाव मात्र भयजनित रहैक अथवा महाराजक धाखवश, सेहो नहि कहल जा सकैत अछि। गुणग्राहकताक जे मानदण्ड रहैक मिथिला समाजक, तदनुसार अंग्रेजी शासन कें पास मार्क अवश्य देल गेल छल। ओना, गुणग्राहकताक ई मानदण्ड सामन्ती मनोवृत्ति द्वारा अनुकूलित छल जाहि मे सम्भ्रान्त मैथिल प्रजाक परजीवी सोच स्पष्टे देखार छल, जकरा कदाचित एहि लोकोक्ति मे अकानल जा सकैत अछि- *'खाय कहय खा ली एक लाख तकरो, बैसय कहय बैसि ली एक लाख तकरो।'* अथवा--*'जय जगदीश पचे पचीस, जे दियय दही-चूड़ा तकरे दीस।'* अस्तु। एकरा गुण कही आ कि दोष कही--मिथिला-समाजक बुद्धिजीवी समूह सभ दिन व्यक्तिगत लाभ आ प्राप्तियेक आधार पर गुणग्राहक होइत रहलाह। लाख अन्यायी होथु क्यो, जँ हमरा लेल ओ लाभकर छथि तँ ओ नीक छथि। 'ब्रह्मोत्तर' सँ ल' क' 'चौअनिया खोरिस' धरि तँ आखिर एही समर्थनक सरंजाम छल। हमरा लोकनि आगू जे अंग्रेजी सत्ताक प्रति विद्रोह-भाव बढ़ैत जाइत देखैत छिऐक अथवा सामाजिक सत्ता आ धर्मसत्ता कें जे चुनौती भेटब शुरू भ' जाइत छैक, से वस्तुतः एही नवजागरण-चेतनाक परिणाम थिक, यद्यपि कि एकरा मिथिला मे पल्लवित-पुष्पित हेबा मे आन क्षेत्रक अपेक्षा बहुत बेसी देरी लगलैक।

अपना ओतय सामान्यतया मानल जाइत रहल अछि जे नवजागरण वा कि मैथिली जागरण अंग्रेज जाति आ अंग्रेजी भाषाक प्रभाव सँ आएल। एहि मान्यता मे 'प्रभाव'क अर्थ 'अनुकरण करब' सँ ल' क' 'प्रेरित हएब' धरि मानल जाइछ। एम्हर जे तथ्य हमरा लोकनिक समक्ष अछि से वस्तुस्थितिक एक भिन्न पक्ष दिस संकेत करैत अछि। सभ गोटे अवगत छी जे मिथिला मे प्रथम अंग्रेजी स्कूल 1880 मे स्थापित भेल। बहुतो दिन धरि बुद्धिजीवी समाज मे एकरा विरुद्ध खण्डन-मण्डन, वाद-विवाद चलैत रहल। बहुतो दिन धरि समाज असमंजस मे रहल। ओम्हर, अंग्रेजी शिक्षाक प्रसारक गति सेहो टुकधुम रहल। अंग्रेजी-शिक्षित लोक कें एकरा पचाब' मे सेहो समय लगलैक। एवम्प्रकारें, मिथिलाक साहित्य पर, अंग्रेजीक प्रभाव पड़ल देखाब दैक, से समय अयबा मे

पचास वर्ष लगलैक। आलोचक लोकनि ठीक लक्ष्य केलनि अछि जे मैथिली साहित्य पर अंग्रेजीक प्रभाव 1930 ई.क बादे देखार भेल अछि। तें मैथिली जागरणक पृष्ठभूमि मे प्रत्यक्ष रूप सँ अंग्रेजीक प्रभाव ताकब निरर्थक थिक। दोसर मान्यता अछि अंग्रेज जाति सँ प्रभावित हेबाक--ई विचारणीय तँ अवश्य अछि किन्तु संश्लिष्ट अछि। हमरा लोकनि कें मोन रखबाक चाही जे मुसलमान जकाँ अंग्रेज जाति समाजक अंग बनि जेबा लेल नहि आएल छल। ओ सर्वदा अपना कें भिन्न आ पैघ मानैत छल आ सैह ओकरा सभ दिन मानैत रहबाक छलै। ओकरा सभक छवि अहंकारी, निरंकुश आ विधर्मी जातिक रूप मे छलै। जमीन्दार लोकनि आम लोकक खून चूसथि, मुदा अंग्रेज सदैव जमीन्दारेक पक्ष लैत छल, समाज ओकरा सँ दबैत छल, भय मानैत छल। एहि मनोभावक एक चित्र चन्दा झाक एकटा हिन्दी कविता मे आएल अछि। ई बात भिन्न जे एहि कविता मे आक्रोश अथवा प्रतिरोध ताकब निरर्थक थिक। उनटे तकरा बदला समर्थनक स्वर देखार पड़ि सकैत अछि, मुदा सेहो अभिधे धरि। कविता अपन मूल आशय मे अवश्ये जागरणधर्मी अछि। चन्दा झा कहैत छथि--

विचारो बाबू, राजा है अंगरेज।
चलो ऐन ओ न्यायधरम से करो मिजाज न तेज।
कितना अन्यायी को दीन्हों कालापानी भेज।
रक्षा-दक्षा पुलिस खड़ी है सदा रखो परहेज।
भनत चन्द्र शेखी दुख देती खाती गुपुत करेज।।

मुदा एकटा गुण धरि ओहि जाति मे जबर्दस्त रहैक। ओकर चिन्तन-पद्धति भौतिकतावादी छल। ओ शास्त्रक आगू मे शिल्प कें महत्त्व दै बला जाति छल। ओकर यैह चिन्तन-पद्धति ओकर जीवन-शैली सँ ल' क' शासन-प्रणाली धरि देखल जा सकैत छल। एकरे दम पर ओ भारतीय संस्कृति, धर्म आ मर्यादाक खिल्ली उड़ा सकैत छल। एकरे आधारशिला पर ओ प्राच्यविद्याक 'सही व्याख्या' करबाक दम्भ क' सकैत छल। अंग्रेज जातिक प्राच्यविद्या सम्बन्धी 'इंजीनियरिंग' कें विख्यात विचारक एडवर्ड सईद नीक जकाँ देखार केने छथि। से मुदा

भिन्न बात। मैथिली जागरणक सन्दर्भ ल' क' देखी तँ मिथिला, जॉर्ज ग्रियर्सनक रूप मे, अंग्रेज जातिक एक सर्वथा भिन्न रूप देखलक। ग्रियर्सनक मादे सोचैत छी तँ पबैत छी जे अनुसन्धानकर्त्ता स्वभावक ओ अंग्रेज ऑफिसर मिथिलाक संस्कृति, भाषा आ साहित्य पर मुग्ध भ' उठल छल तथा एकर सौन्दर्य आ महत्व कें प्रतिष्ठित करबा मे अपन जीवनक एक बेस अवधि लगा देने छल। हुनक कएल काज एहि ठामक लोक कें चकबिदोर लगौलक। अपन वस्तुक प्रति लोक गर्व करब सिखलक। एही गर्व सँ उत्तरोत्तर लेखन-कार्यक आवश्यकता आ उद्यम उत्पन्न भेल। एहना मे, हमरा प्रतीत होइत अछि जे मैथिली-जागरण-प्रसंग मे भूमिका व्यक्तिवाची रूप सँ ग्रियर्सनक बेसी छनि, अंग्रेज जातिक कम। तें ई सम्बन्ध संश्लिष्ट अछि।

मुदा, दोसर हिसाबें हमरा लोकनि विचार करी तँ एकटा आर दृष्टिकोण उपलब्ध होइत अछि। ई दृष्टि थिक तथ्य कें एहि रूप मे बुझबाक जे नवजागरणक आएब मिथिलाक संस्कृतिक स्वाभाविक विकास छल। मैथिलीक जे प्रथम जागरण भेल छल तकर नायक रहथि विद्यापति। मिथिला मे तँ हुनक व्याप्ति रहबे करय, सम्पूर्ण पूर्वाञ्चल कें ओ व्याप्त केने रहथि। मिथिला मे हुनक अटूट परम्परा काएम भ' चुकल छल। एक बात नहि बिसरबाक थिक जे विद्यापतिक गीत भने शृंगारिक आ लोकाचार-परक हो, मुदा ओकरा पावनता प्राप्त छलैक कारण ओहि मे राधाकृष्ण छला, गौरी-शंकर छला, भगवती छली। एम्हर, मुसलमानी आ अंग्रेजी शासन-कालक मिथिला-समाज पर जे जमीन्दारी शोषणक आतंक काएम भेलै, से लोकक धर्म-धारणाजन्य आस्था-केन्द्र कें प्रभावित केलकै। आब राधाकृष्णक प्रेमासिक्त गीत सँ समाजक काज नहि चलि सकैत छलै।

मिथिला मे रामभक्ति भने सत्ता द्वारा प्रायोजित भेल होउक--पाओल गेल जे लोक एकरा स्वीकारो केलक। तुलसीदासक रामायण गाम-गाम मे प्रचलित होअए लागल। विद्यापतिक कृष्ण भावाकुल प्रेमी छला, तनिका स्थान पर वत्सल, रक्षक आ ताड़नहार राम सामने एला। अवधी आ ब्रजभाषाक संग मैथिलीक मिश्रण सँ सधुक्कड़ी भाषाक विकास भेल।

रामलीला आ पारसी थियेटर चलन मे आबि गेल। समाजक मान्यता मे सेहो अनेक परिवर्त्तन भेल। एहना स्थिति मे, इतिहास-बोधक संग भाषा-संस्कृति कें बूझ’बला लोक मे सक्रियता आ चेतनता आएब एक स्वाभाविक प्रक्रियाक परिणति छल। ग्रियर्सनक गुणग्राहकता एहि प्रक्रिया कें तेज केलक, से धरि अवश्य कहल जा सकैत अछि।

एहि हिसाबें देखी तँ चन्दा झाक भूमिका कमोबेश ओही तरहक देखार दैत अछि, जेहन अपना समय मे ज्योतिरीश्वरक छलनि। विशृंखलित मैथिली चेतना कें ओ एक मंच प्रदान क’ रहल छला। तकरा पृष्ठभूमि मे ओहि कालक सामाजिक-राजनीतिक स्थिति छलैक जे समाज कें अपन आस्थाक केन्द्र-बिन्दु बदलबाक लेल बाध्य क’ रहल छलैक। एही प्रकारक काज चन्दा झाक समक्ष छलनि। दुनू गोटे अपना-अपना तरहें ‘पर’ कें मान देबाक ओकालति क’ रहल छला--ज्योतिरीश्वर जँ ब्राह्मणेतर जन-संस्कृति कें अनुशासन प्रदान क’ रहल छला तँ चन्दा झा मैथिलेतर धर्म-धारणा आ चिन्तन पद्धति कें अभिसिक्त क’ रहल छला। आस्थाक केन्द्र बिन्दुक परिवर्त्तित हेबाक जे संकल्पना हम सुरुहे मे रखलहुँ से दुनू ठाम देखल जा सकैत अछि। तखन ई बात ध्यान राखब आवश्यक जे चन्दा झाक युगीन सोच आ कर्त्तव्य-क्षेत्र अत्यन्त व्यापक छलनि एकरा पाछू नवजागरणक ठोस तत्त्व छलैक, आ तें एकर परिणतियो भिन्न भेल।

मुदा, मिथिला मे नवजागरण, एतुक्का संस्कृतिक स्वाभाविक विकास छल--एहि तथ्यक पुष्टि लेल पर्याप्त सामग्री हमरा सभ लग उपलब्ध नहि अछि। हमरा लोकनि आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसॉफिकल सोसाइटी आदिक मादे आवश्यकता सँ बेसी सोचैत रहल छी। मानसिक रूप सँ भारतक इतिहास पर पूर्णतः निर्भर भ’ गेल छी, बिना एहि बिन्दु कें अख्यासने जे भारतक इतिहास मे मिथिलाक इतिहास कतेक-कोना छैक। हमरा लोकनिक ‘देस’ मे जे धर्म-सुधारक भेलाह, सामाजिक आचार-व्यवहार मे नवाचारक आग्रही भेलाह--हुनका लोकनि कें तत्कालीन राजसत्ता आ धर्मसत्ता मान नहिञे देलक, हमहूँ लोकनि हुनका कतियौनहि रहलहुँ आ तत्कालीन समाज पर पड़ल हुनका लोकनिक प्रभाव दिस सँ आँखि मुनने रहलहुँ। हमर विश्वास अछि जे एहि तथ्यक खोज

केने सँ मैथिल संस्कृतिक स्वाभाविक विकासक रूप मे नवजागरण कें चिह्नित कएल जा सकैत छैक। एकाध टा दृष्टान्त हम एतए राख' चाहैत छी।

अठारह-उनैसम शताब्दी मे विख्यात आध्यात्मिक गुरु लक्ष्मीनाथ गोसाँइ भेल छला। हुनक जन्म कोशी-क्षेत्र मे 1787 मे भेल रहनि आ निधन 1872 मे। ओ निविष्ट कुलक मैथिल ब्राह्मण रहथि आ तत्कालीन वैष्णव-भक्ति-सम्बद्ध नाथ-सम्प्रदाय मे दीक्षित भ' क' संन्यासी भ' गेल रहथि। मिथिला आ नेपालक दर्जन सँ बेसी गाम मे ओ अपन कुटी बनौने रहथि। ओतुक्का लोक मे हुनका प्रति अनन्य आस्था आ सम्मान छलनि। हुनकर मान्यता सभ पर जँ ध्यान दी तँ अद्‌भुत रूप सँ नवजागरणक तत्त्व हुनका मे देखाब दैत अछि। ओ जातिप्रथाक विरोध केलनि, धार्मिक वाह्याडम्बर, सामाजिक रूढ़ि, अपकर्षक लोकाचार--एहि सभ कथूक वर्जन करैत ओ एक एहन मानवतावादी समाजक अवधारणा प्रस्तुत केलनि जाहि मे सभ क्योक लेल स्थान छल। हुनक एक शिष्य जँ राजाराम शास्त्री (प्रयाग) छलथिन तँ दोसर मोहम्मद गौस खाँ (मुंगेर); हुनक एक उत्तराधिकारी जँ रघुवर झा (तरौनी) भेलथिन तँ दोसर क्रिश्चियन जॉन (बरियाही कोठी)। मने सभ जाति, सभ धर्म बराबर। नवाचारक आग्रही हेबाक अछैत जँ व्यापक समाज हुनका सम्मान देलकनि आ मन्दिर स्थापित क' पुजलकनि, तँ कोना नहि मानल जाय जे आमजन नवजागरणक चेतना सँ अनुप्राणित छल। ऊपर कहबे केलहुँ जे किम्वदन्ती अछि जे 1857 क विद्रोह मे कम्पनी सरकार हुनका गिरफ्तार केने रहनि। किएक केने हेतनि? किछु तँ छल हएत हुनका मे जे अंग्रेज सरकार कें सूट नहि करैत हेतै। आर्य समाजक संस्थापक स्वामी दयानन्दक मादे सेहो सूचना भेटैत अछि जे विद्रोहक अवधि मे ओ तीन बर्ख धरि अवध-प्रान्तक आम लोक कें अंग्रेजक विरुद्ध गोलबन्द करै मे लागल रहल छलाह। हमर अनुमान अछि जे मिथिला मे एहन अनेक लोक भेलाह जे विभिन्न मुद्दा कें ल' क' अलग-अलग क्षेत्र मे नवजागरणक काज केलनि। जेना, कोशिएक इलाका मे अठारहम शताब्दी मे कारू खिरहरि भेला जे पशु-रक्षा कें मुद्दा बनाक' जनसंगठन

काएम केलनि (एहि ठाम मोन पाड़ी चन्दा झाक पद--*'गैया जगतक मैया हे भोला कटय कसैया हाथ। हाकिम भेल निरदैया हे भोला कतय लगायब माथ।)* एक दिस जँ ओ तांत्रिक पतनशील कर्मकाण्डक विरुद्ध संघर्ष केलनि तँ दोसर दिस धर्म पर बर्बर वर्चस्वक विरुद्ध लड़लाह। हुनका पर काज हएब एखन बाँकी अछि।

ई तँ भेल एहन लोकक वृत्तान्त, जनिका महापुरुष मानल गेलनि। एम्हर, अठारहम शताब्दीक उत्तरार्ध मे आमलोकक जे स्थिति छल, तकरा बहुत दारुण कहल जा सकैत अछि। एहू सम्बन्ध मे एखन धरि बहुत कमे काज भ' पौलैक अछि आ तकरो एक छोटे अंश हम देखि सकल छी। देखैत छी कोर्ट ऑफ वाड्र्सक प्रशासनावधि मे भने जते सुधार-कार्य भेल होउक, आगू महगी, शोषण आ असुरक्षाक स्थिति बढ़िते चलि गेल। चन्दा झाक पद सभ मे एकर झलक देखि सकैत छी। एक ठाम ओ लिखैत छथि-

सुखि देखैछि दूइ गोल चोर ओ भिखारि।
बहुत खर्च बाढ़ि बन्धु-बन्धु बीच मारि।।

महगीक वर्णन करैत ओ कहैत छथि --

मरीच भाव अन्न भेट, से जनेर गोट।
उपायहीन लोककें सुखाय गेल भोट।।

दूध ओ दही नहीं स्वकण्ठ कें सुखाउ।
अन्न ई महार्घ तँ जनेर कीनि खाउ।।

कचहरी आ तहसीलदार मे व्याप्त भ्रष्टाचारक व्यंग्य-चित्र चन्द झाक एहि अप्रकाशित हिन्दी कविता मे देखल जा सकैत अछि--

पटु पटवारी धरमधुज तहसिलदार अमीन
सत्य धर्मव्रत जगत को इनको दया अधीन।
इनको दया अधीन तीन वंचक नहि होता
कहीं न लेता घूस, स्वामि को सत्व न खोता।
भनत चन्द्र यह सुखी सदा पर-वित्त-विहारी
कपट न कागज लिखत होत जो पटु पटवारी।

तहिना, अंग्रेज जबाना मे सम्पन्न केडेस्ट्रल सर्वे मे जमीन हथियेबाक, विपन्न लोक कें आर अधिक विपन्न क' देबाक जे अभियान चलल छल, तकरा बारे में चन्दा झा अपन एक पद मे कहैत छथि--

घर-घर चिन्ता अन्न को कौन सुने दुख कान
ता पै बन्दोवस्त नव भयो चहत भगवान
भनत चन्द्र आनन्द कहाँ जिब काँपत थर-थर
भजन-भाव को छोड़ नाप की चर्चा घर-घर।

एहिठाम महँगी, भ्रष्टाचार आ शोषणक चित्र साफ-साफ देखल जा सकैछ। मोन रखबाक थिक जे चन्दा झा राजदरबारक लोक छला, जकर बनाओल तन्त्र द्वारा शोषण होइत छल, तें हुनकर कविता मे शोषण आ अन्यायक साफ-साफ चित्र नहि भेटत। एकर आकलन, इतिहासकार आ समाजशास्त्री लोकनि मिथिला-विषयक अपन अध्ययन सभ मे जे प्रस्तुत केलनि अछि, तकरा आधार पर कर' पड़त। बन्धु-बन्धुक बीच मारि भेला पर मामला कचहरी पहुँचैत छलैक। कचहरी कम्पनी सरकार द्वारा बनाओल कानूनक आधार पर फैसला करैक। मामला किए कचहरी जाइत छल? कारण छलै जे समाज टूटि रहल छल। प्राचीने काल सँ चलि आबि रहल ग्रामीण पंचायत-व्यवस्था छिन्न-भिन्न भ' गेल छल। बाहुबली आ अपकर्मी लोक एकर परवाहि नहि करैत छल। 1836 ई. मे राजा राम मोहन राय लिखने छला जे *'गाम गाम कचहरीक दलाल पसरि गेलैक अछि, ओ सभ बड़ चतुर होइए, ओकर सभक एक विशिष्ट वर्ग बनि गेलैक अछि। ओ सभ किसान कें आतंकित केने रहैए--लोक कें मुकदमेबाजी दिस प्रेरित करैए--ककरो जिता सकैए, ककरो हरा सकैए।'* भ्रष्टाचारक जे स्थिति छलै, तकर वर्णन तँ चन्दा झा सेहो केने छथि। लगान-वसूलीक लेल पदस्थापित जे हाकिम होअए, सैह न्यायाधीश सेहो होइत छल, जखन कि सभ झंझटिक जड़ि मे ई लगान-वसूली आ बेगारे छल। सहज स्वाभाविक छल जे जमीन्दारक अनहित हो, एहन फैसला हाकिम लोकनि नहि द' सकैत रहथि। फैज अहमद फैजक एक पद ओहि कालखण्डक मिथिला पर पूरेपूरी लागू भ' सकैत छलैक--

बने हैं अहले-हबश मुद्दई भी मुंसिफ भी
किसे वकील करें किससे मुंसफी चाहें।

अंग्रेजी राजक न्याय-व्यवस्था पर व्यंग्य करैत चन्दा झाक ई अप्रकाशित हिन्दी कविता देखल जा सकैत अछि--

कचहरी देवी, सोच है तेरा नाम।
अन्यायी को दण्ड देती हो नाहीं करे सलाम
जो कोई नीति रीति से चलता वाको सुख परिणाम।
कारागार मे सोइ जात है, करत व्यर्थ संग्राम
सत्वर पुलिस कैद कर लाती बन्धन लोहा चाम।
कहू को धन धाम ग्राम हाकिम करत लिलाम
कहीं बहस करता बारिस्टर लेता पूरा दाम।
जाको व्यसन बढ़ा लड़ने का परमेश्वर तहँ वाम
भनत चन्द्र कवि दण्डनीति को बारम्बार प्रणाम।

एक बेर प्रायः 1836 मे राजा राममोहन राय कें कम्पनी-सरकार द्वारा पूछल गेलनि जे 'गामक किसान सभ लग मे एहन कोनो उपाय छैक जे ओ सभ थोड़े पूँजी जमाक' पाबय', तँ ओ प्रतिवेदित केने छलथिन--*'किन्नहु नहि। जाहि साल फसिल नीक होइ छै, अन्न सस्त भ' जाइ छै, ताहि साल किसान कें अपन समुच्चा उपजा एहि दुआरे बेचि देब' पड़ैत छैक जे ओ जमीन्दारक लगान चुकता क' सकय आ तखन ओकरा मेहनत-मजूरी क' क' साल गुदस्त कर' पड़ैत छैक। जाहि साल फसिल कमजोर रहैत छैक, तहिया अन्नक अकाल पड़ल रहैत छैक, एहि स्थिति मे थोड़बे अनाज ओ अपना लग राखि पाबैए, जाहि मे ओकरा अपनो निमहब कठिन भेल रहैत छैक।'*[1]

अपन एक पद मे चन्दा झा 'रुपैया देवी'क स्तुति करैत कतेक गहन व्यंग्य करैत छथि, एहि ठाम देखि सकैत छी--

रुपैया देवी विनती करउँ प्रणाम।
सकल विरोध मूल है तुम ही, तुम मारण संग्राम
गोवध आदि अनर्थ करावे, तु ही बिचावे चाम।
तुम ही तार, रेल, कलमाता बारुद तोप तमाम
शहनशाह बल साहस तू है भनत चन्द्र कवि नाम।

अस्तु। देखैत छी जे आमलोकक जे स्थिति छल तकरा बहुत दारुण कहल जा सकैत अछि। जतबे जे उद्योग छल ताहू मे दिनानुदिन ह्रास भ' रहल छल आ कृषि-कर्म पर निर्भर लोकक प्रतिशत बढ़ले जा रहल छल।[2] युगीन परिस्थितिक कारण यजमानी वा पसारी-प्रथा (जाहिमे हजाम, बढ़इ, धोबि आदिक यजमानी चलैत छैक आ सालाना पारिश्रमिक भेटैत छैक) समाप्ति दिस अग्रसर भ' चलल छल।[3] दोसर दिस देखैत छी जे प्रतिरोधक संस्कृति सेहो नहुँ-नहुँ बढ़ि रहल छल। महाराजक सत्ता कें सेहो चुनौती भेट' लागल छल। अठारहम शताब्दीक आरम्भे मे कोशी अंचलक मैनेजर वीरू खबास कर पठाएब बन्न क' क' युद्धक घोषणा क' देने छलनि जनिका बहुत कठिनाइ सँ महाराज राघव सिंह परास्त केने छला।[4] निम्नवर्ग मे जातीय गठबन्ध आ एकता कायम होअय लागल छल। एकर एक पक्ष वीरू खबासक उपर्युक्त घटना मे देखल जा सकैत अछि तँ दोसरो पक्ष एहि समाज मे चालू संस्कृतीकरणक प्रक्रिया मे पाओल जा सकैत अछि। निम्नवर्गक अनेको जातिक लोक जनउ पहिरब शुरू क' देने छल आ कतेको पण्डित एकर समर्थन केने छलाह। एहि मुद्दा पर प्रबल सामाजिक संघर्ष भेल छलैक जकर प्रतिध्वनि तीन दशक आगू प्रकाशित होइबला मैथिली पत्रिका सभ, यथा 'मिथिलामोद' मे सेहो सुनल जा सकैत अछि। एकरो आरम्भ हमरा लोकनि कोशिएक अंचल सँ होइत देखैत छी।[5]

परिवेशक कठिनताक तँ माँग रहैक जे लोक मे आर्थिक संकटक विरुद्ध वर्गीय चेतनाक उदय हो, किन्तु मिथिला मे ई समय एबा मे बहुत देरी छल। तत्काल तँ लोक अपन सामाजिक समस्याक निराकरण क' लेब' चाहैत छल। एकर अभिव्यक्ति छल जातीय संगठन सभक निर्माण, जकर अंकुरण तँ मिथिला मे, संस्कृतिक स्वाभाविक विकासक रूप मे होइत देखाइत अछि, मुदा बाद मे अंग्रेजक प्रेरणा सँ एकरा औपचारिक मंच प्रदान कएल गेलैक।

(2008)

सन्दर्भ :

1. भारतीय साहित्य की भूमिका, रामविलास शर्मा, पृष्ठ-328 मे उद्धृत
2. विशेष सन्दर्भ लेल देखी, आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास, सव्यसाची भट्टाचार्य
3. उपनिवेशकालीन मिथिलाक गाम ओ निम्नवर्ग, डॉ. हेतुकर झा, पृष्ठ-30
4. विशेष विवरण लेल देखी-उपर्युक्त, पृष्ठ-15
5. विशेष विवरण लेल देखी-उपर्युक्त, पृष्ठ-15 तथा आधुनिक मैथिली साहित्यक भूमिका : डॉ. अमरनाथ झा

आधुनिकता आ चन्दा झा

मिथिला मे आधुनिकताक उदय सामान्यतः अंग्रेजी शासन एवं शिक्षा व्यवस्थाक प्रत्यक्ष प्रभावक पछाति मानल जाइछ। तहिना, मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक आरम्भ चन्दा (1831-1907) सँ मानल जाइछ, जे कि तत्सामयिक छलाह। एवम्क्रमें मिथिला मे आ मैथिली साहित्य मे आधुनिकता प्रायः संग-संग आएल, से विचारक लोकनिक मत छनि। समाजक संग-संग साहित्य मे सेहो कोनो युगबोध संग-संग उतरय, ई जीवन्त भाषा-साहित्यक एक लक्षण कहल जा सकैछ। मुदा, जेना कि हमरा लोकनि जानैत छी, आधुनिकताक उदय प्रथम-प्रथम दरभंगा राजघरानाक दरबार मे भेल छल आ से आधुनिकता मिथिलाक अन्तिम मनुक्खक खोपड़ि धरि पहुँचबाक अभिक्रमे मे एखनहुँ अछि। तें एहि बीचक मैथिली साहित्यक इतिहास अनेक साहित्यिक परिघटना, विविध आन्दोलन, अनेकानेक विचार प्रवृत्तिक चहल-पहल सँ भरल अछि। किछु इतिहासकार एहि बात पर आश्चर्य प्रकट केलनि अछि जे चन्दा झा आ सुकान्त सोम आ कि अविनाश कें एक्कहि धारा-आधुनिकताक अन्तर्गत कोना बूझल जा सकैत अछि। मुदा, ई प्रश्न अधिकतर हुनका लोकनि मे एक असमंजस जगा क' मात्र रहि गेल अछि। असमंजस ई जे साहित्य मे आधुनिकताक उदय चन्दा झा सँ मानल जाय कि नहि। समाधान ई प्रस्तुत कएल गेल अछि जे आधुनिकताक उदयकाल कें घीचि क' आर आगू (रोमांटिक काव्य-युगक आरम्भ सँ वा कि भारतक स्वतंत्रता सँ) ल' आनल गेल अछि। कहल जेबाक चाही जे ई वस्तुस्थितिक जटिल स्वरूपक सरलीकृत समाधान थिक। हमरा बुझने,

हेबाक ई चाही जे आधुनिक साहित्यक विविधतापूर्ण प्रवृत्ति सभ कें परिभाषित आ विश्लेषित करबाक चेष्टा कएल जाय आ ताहि द्वारा मिथिला मे आ मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक उत्तरोत्तर प्रसारक स्वभाव कें चीन्हल जाय। से एक बात।

दोसर जे मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक प्रवर्त्तन आ प्रतिष्ठापन संग-संग भेल आ कि अनेक-अनेक स्थिति-परिस्थितिक घात-प्रतिघातक सामना करैत ई बहुत आगाँ आबि क' प्रतिष्ठा प्राप्त क' सकल, सेहो इतिहासकार आ आलोचक लोकनिक बीच असमंजसक विषय होइत आएल अछि। हमरा लोकनि जानैत छी जे आचार्य रमानाथ झा, चन्दा झा कें आधुनिकताक प्रवर्त्तक तँ मानैत छथि मुदा प्रतिष्ठापक किन्नहुँ नहि। हुनका मतें एकर प्रतिष्ठापन भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' द्वारा बहुत आगाँ चलिक' कएल जा सकल। डॉ. भीमनाथ झा सम्पूर्ण काल-परिस्थिति कें देखैत रमानाथ झाक मत सँ सहमत नहि होइत छथि आ सतथ्य मानैत छथि जे एकर प्रवर्त्तन आ प्रतिष्ठापन संग-संग चन्दा झा द्वारा क्रियान्वित भेल। एहि दुनू गोटे सँ सर्वथा भिन्न मत डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क छनि जे चन्दा झा कें आधुनिकताक प्रतिष्ठापक मानबाक तँ कथे कोन जे एकर प्रवर्त्तको मानबा लेल तैयार नहि छथि। आ, तकर अनेक कारण ओ देखबैत छथि जे कि अपना जगह पर गंभीर अछि। कहब आवश्यक नहि जे आन समस्त इतिहासकार आ आलोचक एही तीनू मतक बीच अपन आग्रह रखैत छथि।

निज मैथिली भाषा आ साहित्यक सन्दर्भ मे आधुनिकताक लक्षण आ प्रतिमान की हो--ताहि पर अनेक लेखक-आलोचक अपन-अपन अभिमत प्रस्तुत केने छथि। ताहि सभ कें मिलाक' देखी तँ बेस विरोधाभासी चित्र बनैत अछि, तकर एक मनोरंजक आकलन डॉ. भीमनाथ झा अपन लेख 'आधुनिक मैथिली कविता' मे केने छथि आ तकर थोड़े बानगी डॉ. हरिमोहन मिश्रक पोथी मे सेहो आएल अछि। प्रश्न अछि जे एना किएक भेल अछि? किएक क्यो सुमनजी कें प्रशस्त आधुनिक मानैत छथि तँ दोसर दिस क्यो आन सुमनजीक तँ कोन कथा जे यात्रियो जी कें आधुनिक मानबा लेल तैयार नहि होइत छथि। हमरा प्रतीत होइत अछि जे एना करैत

लोक वस्तुतः आधुनिकता कें 'एक' प्रवृत्ति मानिक' चलैत छथि आ से मानबाक पाछू बेस आग्रहशील बनल रहैत छथि। वास्तविकता ई अछि जे आधुनिकता कोनो एक प्रवृत्ति नहि अपितु प्रवृत्ति-समुदाय थिक जकर पल्लवन-पुष्पन पछिला सय साल सँ होइत आएल अछि। जाहि कारणें सुमनजी आधुनिक छथि सेहो आधुनिकताक एक आरम्भिक प्रवृत्ति भ' सकैत अछि आ जाहि कारणें यात्रियो जी आधुनिक नहि छथि, सेहो आधुनिकताक एक परवर्त्ती प्रवृत्ति भ' सकैत अछि।

मुदा, ई तँ आगूक बात थिक। आधुनिकताक उदय-कालक परिस्थिति पर विचार करी तँ डा. किरणक ई आधार-कथन निर्धारक तत्त्वक बड़ स्पष्ट रूपरेखा सोझाँ रखैत अछि-*'भाषाक क्षेत्र मे आधुनिकताक अर्थ अन्यान्य भारतीय भाषा मे मानल गेल अछि--अंगरेज जाति जकाँ अपन मातृभाषा कें पवित्र मानब, अपन समस्त भाव-विचारक माध्यम बनाएब आ अपन भूमिक स्वाधीनता लेल जीवन अर्पित करबाक भावना कें प्रज्वलित करब।'* कहब आवश्यक नहि जे आन-आन भारतीय भाषा जकाँ मैथिली मे सेहो आधुनिकताक निर्धारक कमोबेश एकरे मानल जाएब मान्य, यद्यपि कि आदर्श जीवन-मूल्य आ प्रतिमानक अभाव मे अपन भूमिक स्वाधीनता लेल जीवन अर्पित करबाक भावना एतय परवान नहि चढ़ि सकल। अपन भाषा आ अपन संस्कृति कें श्रेण्य आसन पर प्रतिष्ठापित करब, ई आधुनिकताक एक एहन सुस्पष्ट प्रतिमान थिक जकरा कारण आचार्य रमानाथ झा महाकवि विद्यापतियो कें 'कैक अर्थमे आधुनिक' कहैत छथि, से नहि बिसरबाक थिक।

अस्तु। तत्कालीन परिस्थिति पर गौर करी तँ पबैत छी जे आधुनिकताक प्रयोक्ता चन्दा झा स्वयं अनेकानेक सीमाबद्धता सँ घेराएल छलाह। प्रथम तँ ओ अपने अंगरेजी ढंग सँ पढ़ल-लिखल नहि छलाह। दोसर जे पाश्चात्य प्रभाव जखन मिथिला मे अपन सकारात्मक रूप ल' क' प्रकट भेल, ओ अपन आयुक चालीस सँ बेसी बर्ख व्यतीत क' चुकल रहथि आ एहि कारणे परिपूर्ण ग्रहणशीलताक अवस्था कें पार क' गेल रहथि। ग्रियर्सनक शुरू कएल काज तहलका मचा देलक। जयदेव मिश्र अपन पुस्तक 'चन्दा झा' मे लिखलनि अछि जे मैथिल बद्धिजीवी लोकनि कें तहिया मैथिलीक

ई गरिमा आ ई सौन्दर्य, जकर संकलन ग्रियर्सन केने छलाह, कोनो नवीन आविष्कार जकाँ सम्मोहित आ आनन्दित केलकनि। एहि सँ आर जे किछु भेल हो, चन्दा झा सन सार्थक लोक मे आत्मविश्वास जगलनि। आत्मविश्वास एहि बातक जे अपन समस्त सोच-विचारक माध्यम ओ अपन मातृभाषा कें बना सकैत छथि।

चन्दा झाक एक स्पष्ट सीमा ई छलनि जे आधुनिक सन्दर्भ मे जकरा व्यवस्थित साहित्य-रचना कहल जाइत छैक, तकर स्पष्ट परिपाटी हुनका पूर्व परम्परा सँ नहि भेटल छलनि। जकरा मादे डॉ. किरण कहैत छथि जे *'मैथिली भाषा कें गोग्रास जकाँ किछु क' द' देबाक परम्परा ज्योतिरीश्वरे चला देलनि'।* सैह अन्ततः प्रचलित परिपाटी छल आ प्रबन्धपूर्वक मैथिली मे लिखल जाएब एक असम्भावित बात-सन छल।

भाषा सम्बन्धित तत्कालीन आधुनिकताक एक विडम्बनापूर्ण विरोधाभास सेहो हमरा लोकनि कें देखबा लेल भेटैए। एक आधुनिकता जँ चन्दा झाक छलनि, तँ एक भिन्न आधुनिकता राजा लक्ष्मीश्वर सिंहक छलनि। चन्दा झा जतय मैथिली कें समस्त भाव-विचारक माध्यमक रूप मे प्रतिष्ठित करबा लेल उत्तरोत्तर अधिक उद्यमशील होइत गेलाह, दोसर दिस लक्ष्मीश्वर सिंह छलाह जे मैथिली कें जतबा जे संरक्षण पूर्व सँ चलियो आबि रहल छल, तकरा पर कठोर वर्जना काएम क' देलनि। कामकाजी भाषाक रूप मे हिन्दीक अंगीकार सेहो आधुनिकतेक एक भिन्न रूप छल, से कहल जा सकैए। मुदा, ओहि भूमि, जाहि पर लक्ष्मीश्वर सिंह विराजमान छला, ओ लोक जकरा पर ओ शासन करैत छलाह, केर सन्दर्भ मे निस्सन्देह ई एक आत्मघाती डेग छल जे मैथिलीक अग्रिम विकासक डांड़ तोड़ि क' राखि देलक।

लक्ष्मीश्वर सिंहक स्थितिक तुलना चन्दा झा सँ करी तँ एकटा साम्य ई देखबा मे अबैत अछि जे मातृभाषा मैथिलीक अभिव्यक्ति-क्षमता आ समस्त भाव-विचारक संवहन लेल माध्यम-रूप मे प्रयुक्त हेबाक अनुकूलता कें ल' क' दुनू गोटेक मोन मे सन्देहक भाव छलनि। जौं-जौं चन्दा झा पर आधुनिकताक प्रभाव गाढ़ होइत गेल, हुनक ई सन्देह घटैत गेल। मुदा, एकर विपरीत लक्ष्मीश्वर सिंहक ई सन्देह ने मात्र अपना जगह पर काएम रहल अपितु एहि मे उत्तरोत्तर वृद्धिये भेलै। एहन प्रतीत होइत अछि जे

'स्वाधीन' मिथिलाक कोनो अवधारणा हुनका मनोमस्तिष्क मे नहि छल आ ओ दिल्ली आ यू. पी. सँ संस्कृति आयात क' क' मिथिला कें आधुनिक बनेबाक स्वप्नद्रष्टा छलाह। कोन पृष्ठभूमि मे ओ चन्दा झा कें रामायण लिखबा लेल नियुक्त केलखिन, तकर बहुत दृष्टिसम्पन्न आकलन मोहन भारद्वाज अपन लेख मे प्रस्तुत केलनि अछि। निस्सन्देह ईहो अन्ततः सांस्कृतिक आयात छल जकरा पाछू हुनक अपन स्वार्थ छलनि। अपन सभ काज लेल हिन्दी कें प्रश्रय देनिहार लक्ष्मीश्वर सिंह रामायण-लेखन लेल मैथिलीक चयन केलनि, तँ एकरा जार्ज ग्रियर्सनक, हुनका पर पड़ल नैतिक प्रभाव कहल जाएत। ई बात भिन्न जे चन्दा झा अपन प्रतिभा आ उद्यमक बदौलति एहि रामायण कें एहि हद धरि स्वीकृति-योग्य बना देलनि जे आगू व्यवस्थित मैथिली लेखनक ई आधारशिला साबित भेल। नहि तँ अंगरेज लोकनि द्वारा दीक्षित-अनुकूलित लक्ष्मीश्वर सिंहक आधुनिकता मे चन्दा झा लेल कतेक जगह छल आ ओ कतेक सुख सँ रहै छलाह, से सर्वजानित अछि।

तँ, हमरा लोकनि देखैत छी जे राजकीय संरक्षण सँ मैथिली कें वंचित कएल जाएब आ एहि मे व्यवस्थित लेखनक आरम्भ, दुनू प्रायः एक्के कालखण्डक घटना थिक। आगामी तमाम समय मे हमरा लोकनि मैथिली कें अपन अस्मिता लेल निरन्तर संघर्ष करैत देखैत छिऐक। कहल जेबाक चाही जे एहि संघर्षक बीज व्यवस्थित लेखनक आरम्भिके काल मे पड़ि गेल छल। एहि तरहें, ईहो कहल जेबाक चाही जे मैथिलीक सन्दर्भ मे अपन अस्मिता लेल संघर्षशील हएब, सेहो स्वयं मे आधुनिकताक एक लक्षण थिक।

संघर्षक सम्बन्ध मे ई एक तथ्य थिक जे जाहि व्यक्तिक जीवन मे संघर्ष रहैत छैक, सैह अन्ततः संघर्षशील चेतनाक विश्लेषण आ व्याप्तिक काज क' सकैत अछि। चन्दा झाक व्यक्तिगत जीवन मे दुखे-दुख, संघर्षे-संघर्ष छलनि, से सभ गोटे जनैत छी। आ अनेको संघर्ष हुनका 'कवि-स्वभाव' सँ जनमल छल। एहि तरहें, हम सभ देखैत छी जे हुनक व्यक्तिगतो संघर्ष द्विपक्षीय छल। हुनक आत्मसंघर्षक एक रूप हुनक एहि आत्मनिवेदन मे प्रकट भेल अछि-

भेलहुँ गरीब जीव जगतीतल पढ़ल-गुनल अछि थोर
नहि महिपाल विशाल विभव सब सकल जगत कर जोर
नहि हम बनिक धनिक कोटीश्वर दानि-सुयश नहि मोर
नहि हम नट भट नहि हम गायक नहि युवती-मन-चोर
नहि हम क्रूर शूर-जन-नाशक नहि मोर हृदय कठोर।।

एत' अपन दीनता आ अपन लघु सीमाक जे निवेदन चन्दा झा प्रस्तुत करैत छथि, ताहि मे निहित आधुनिकताक कैक गोट कोटि-क्रम अछि। एक तँ निज अप्पन आत्मसंघर्ष कें कविताक विषय बनाएब सैह आधुनिकता भेल, जे कि विद्यापति-काल सँ चल अबैत प्राचीन मैथिली कविता सँ भिन्न वस्तु थिक। दोसर, जखन ओ अपना कें नट, भट, गायक आ युवती-मन-चोर--एहि चारू प्रकार सँ भिन्न बतबैत छथि तँ स्मरण रखबाक थिक जे प्राचीनताक पक्षपाती कवि लोकनि एहि चारू मे सँ कोनो एक प्रकारक होइत आएल छलाह। ई हुनक कवि-व्यक्तित्वगत आधुनिकताक एक प्ररूप थिकनि। तेसर हमरा लोकनि जनैत छी आ आचार्य रमानाथ झा सेहो एहि विषय पर पर्याप्त लेखन केलनि अछि जे प्राचीन कविता राग-ताल-लयाश्रित होइत छल आ निश्चिते ओ गाएल जेबाक लेल लिखल जाइत छल। आब भने कवि स्वयं गायक होथि, जकर दृष्टान्त आधुनिको गेय कविताक कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि छथि, अथवा कविक कविता क्यो दोसर निविष्ट गायक प्रस्तुत करथि, जेना विद्यापतिक रचनाक गायन जयत कएल करथि। चन्दा झा जखन अपना कें 'गायक'क प्रकार सँ भिन्न बतबैत छथि तँ तकर अभिप्राय दुनू प्रकारक गेयता-विधानक निषेध बुझबाक चाही। चन्दा झाक आधुनिकताक चारिम लक्षण जे एतय देखाब दैत अछि से थिक--कविता मे उद्धृत विवरणक कोनो-ने-कोनो विशेष सन्दर्भ, अथवा सन्दर्भ-व्यक्तिक हएब। तात्पर्य जे कोनो बात ओ ओहिना कविक भावोद्वेग-वश नहि कहि जाइत छथि, तकरा पाछाँ एक निश्चित संकेत रहैत अछि। जखन चन्दा झा कहैत छथि--'नहि हम क्रूर शूर-जन-नाशक' तँ ई मात्र हुनक दीनताक अतिरेक कथन टा नहि थिक, ई हुनका कालक कोनो जमीन्दार, कोनो राजा वा राजकर्मचारीक विशेष सन्दर्भ थिक, जकरा लेल हुनक जीवन-प्रसंग कें आ हुनक स्थान-काल कें देखल जाएब आवश्यक अछि।

दोसर एक बात हम कहलहुँ जे ओ अपन कवि-स्वभावक कारण सँ सेहो अपन संघर्ष कें बढ़बैत रहैत छलाह, खतरा मोल लैत रहैत छलाह। कोन कवि-स्वभाव छल ई? निश्चिते 'नट-भट-गायक' बला प्राचीन कविक स्वभाव सँ भिन्न हुनक कवि-स्वभाव रहल हेतनि। युग-धर्म कें स्वीकार करबाक आवश्यकता आ सत्य आ तथ्य कें बिनु गोंगियौने कहि सकबाक साहस--ई हुनक कवि-स्वभाव छलनि, आ से आत्यन्तिक रूप सँ आधुनिकताक देन छल। ई कवि-स्वभाव प्राचीन आ आधुनिक कवि कें अलग-अलग चिन्हबाक लेल एक महत्वपूर्ण उपकरण थिक। एही कवि-स्वभावक बदौलति ओ ई कविता लिखि सकैत छलाह-

न्यायक भवन, कचहरी नाम
सभ अन्याय भरल एहि ठाम।

से, हमरा प्रतीत होइत अछि जे चन्दा झा निश्चित रूप सँ तत्कालीन समय आ समाजक परिप्रेक्ष्य मे एक एहेन व्यक्ति छलाह जे अपन चिन्तन मे समय आ समाज सँ आगू छलाह। बहुतो बात अछि, जकरा हुनका चिन्तन मे सूत्रबद्ध देखल जा सकैत अछि आ जे उत्तरोत्तर युग-परिवर्त्तनक प्रतिष्ठापन मे सहयोगी भेल। मिथिला-विषयक शोध आ अनुसन्धान कें ओ विधेय आ व्यावहारिक बनाक' चलन मे अनलनि। व्यवस्थित लेखन, जकर रूपरेखा निश्चिते श्रेण्य साहित्यक छल, केर सूत्रपात केलनि जकर भित्ति पर आजुक मैथिली साहित्यक सम्पूर्ण महल ठाढ़ अछि। मुदा, एकरा संगहि एक काज ओ आर केलनि। से थिक--श्रेण्यताक ताना-बाना मे लोकवादिता आ लोक-दृष्टिक आयोजन। साहित्य कें जे 'मर्यादा' ओ देलनि, से लोक-दृष्टि सँ अनुशासित छल। ई हुनक सभ सँ पैघ अवदान छियनि।

(2006)

जीवन झाक भाषा-चेतना

देखि पुरातन कवि-जन लेख, बूझिय कविता उक्ति विशेष।
मिथिला-भाषा सरल बिचाड़ि, पर-भाषा-सम्मेलन छाड़ि।
विरचल यज्वा जीवन शर्म, जे जानथि सब कविता-मर्म।

ई पंक्ति थिक 'सामवती-पुनर्जन्म' नाटकक प्रस्तावना के, जे रचनाक औचित्य-प्रतिपादनक लेल लिखल गेल अछि, मुदा जाहि सँ जीवन झाक भाषा-बोध आ साहित्य-बोधक सम्बन्ध मे सेहो हमरा लोकनि कें महत्त्वपूर्ण सूचना प्राप्त होइत अछि।

कविता की थिक? विशिष्ट प्रकारक उक्ति अर्थात् अभिव्यक्ति थिक, से बात हुनका प्राचीन अर्थात हुनका सँ पहिने भ' चुकल कवि लोकनिक रचना कें पढ़ने सँ ज्ञात भेलनि अछि। अर्थात ई बात ओ अपन संस्कारक रूप मे अर्जित केलनि अछि। 'मिथिलाभाषा' अर्थात मैथिली मे ओ किए लिखलनि? ध्यान रखबाक बात थिक जे उन्नैसम शताब्दीक अन्तोधरि मैथिलीक लेल 'मैथिली' शब्द प्रयोग नहि कएल जाइत छल। चन्दा झा मैथिली रामायण लिखलनि तँ ओकरो ओ 'मिथिला-भाषा' रामायण कहलथिन। से, मिथिला-भाषा मे जीवन झा एहि दुआरे लिखलनि जे बहुत विचार-विमर्शक बाद यैह भाषा हुनका 'सरल' अथवा 'सरस' बुझना गेलनि। से तते बुझना गेलनि जे दोसर कोनो भाषा मे लिखबाक प्रश्ने हुनका लग मे नहि रहलनि। से, यज्वालय घरानाक जीवन शर्मा, जे कविताक समस्त मर्म के ज्ञाता छथि, ई रचना क' रहलाह अछि।

मिथिला-भाषाक विशेषता-वाचनक लेल जीवन झा 'सरस' शब्दक प्रयोग केलनि अछि आ कि 'सरल' शब्दक ई जानबाक लेल हमरा लोकनि लग एक्के टा उपाय छथि--डॉ. रामदेव झा, जे मैथिली मे जीवन झाक साहित्यक उद्धारक आ प्रतिष्ठापक छथि। नाटकक मूल पाठ मे 'सरल' शब्द छपल अछि, जखन कि भूमिका मे जखन एक ठाम उक्त पंक्ति कें उद्धृत कएल गेल अछि तँ 'सरस' भ' गेल अछि। ई एक साधारण प्रूफक गलती सेहो भ' सकैत अछि। मुदा सोचबाक बात थिक जे अपन मूल रचना मे यदि जीवन झा 'सरल' शब्दक प्रयोग केने होथि तँ ई केहन अपूर्व मौलिक बात हएत आ हुनकर कला-बोध, साहित्यक हुनकर समझ के कते ठीक-ठीक आकलन भ' सकत। हमरा लगैत अछि जे हुनकर साहित्य सँ उभरि क' जे हुनकर व्यक्तित्व आ मनोविज्ञान हमरा लोकनिक समक्ष अबैए, तकरो सही-सही अभिव्यक्ति 'सरल' शब्दे सँ भ' सकैत अछि। मुदा, सभ कथूक अछैत, बेसी सम्भावना एही बातक अछि जे ओ 'सरल' नहि 'सरस' शब्दक प्रयोग केने हेताह, कारण 'देखि पुरातन कविजन लेख, बूझिय कविता उक्ति विशेष।' मिथिला-भाषा कें सरस कहबाक एक पुरातन रेबाज अछि, आ अनचोक्के जीवन झा शाब्दिक अभिव्यक्ति द्वारा, अर्थात अभिधा मे, तकर अतिक्रमण क' जेताह, एहि बातक सम्भावना कम अछि, यद्यपि कि व्यञ्जना मे खूबे अतिक्रमण ओ केने छथि।

उक्ति-विशेष कें कविता मानबाक रेबाज सेहो बहुत दिन सँ चलन मे अछि, लगधग एक हजार बरख सँ, जहिया सँ कि जन-भाषा मे कविता रचबाक चलन भेल, उक्ति-विशेष की भेल? वाग्वैचित्र्य? कथनक वक्रिमा? चमत्कारपूर्वक अपन बात कें कहब, जकरा अंदाज-ए-बयां कहल जाइत छैक- उक्ति-विशेष की मात्र रचना-शैली टा थिक आ कि कथ्यक संग सेहो एकर किछु लेनी-देनी छैक? उक्ति-विशेष मे काव्यत्व अबैत छैक मर्म कें जनबा सँ, जे कि कवि अपन हृदय द्वारा जनैत अछि, मुदा कविक हृदय मे ई मर्म कतए सँ अबैत छैक? प्रसंगवश एकटा शेर हमरा मोन पड़ि गेल अछि-

होठों पे आती है बात दिल से हफीज
दिल में बात कहाँ से आती है!

तात्पर्य जे रचनाकार अपना समाज के आ अपन समय के उपजा होइत छथि। जे व्यक्तित्व अपन मनोनिर्मिति सँ आ अपन संस्कार सँ ओ पेने रहैत छथि, संवेदनशीलताक जाहि स्तर सँ ओ परिपोषित भेल रहैत छथि, सैह हुनका द्वारा हुनक रचना मे प्रकट होइत अछि। से चाहे ओकरा उक्ति-विशेष कहिऐक आ कि रमणीयार्थ-प्रतिपादक!

जीवन झाक साहित्य पर विचार करबाक क्रम मे हुनकर जे सभ सँ पैघ अवदान, सभ सँ पैघ महत्त्व हमरा लोकनिक सामने अबैत अछि, से थिक हुनकर भाषा। अर्थात हुनका द्वारा प्रयुक्त मैथिली गद्य आ पद्यक ओ प्ररूप आ शिल्प, जाहि मे अपन नाटक सभ कें ओ निबद्ध केलनि। कोनहु साहित्यकार द्वारा प्रयोग कएल गेल भाषाक अध्ययन कैक दृष्टिकोण सँ कएल जा सकैत अछि। जेना व्याकरणिक दृष्टिकोण सँ ,अर्थात कोन प्रकारक शब्दावलिक कोन अनुपात मे ओ प्रयोग केलनि, ताहि सभ सँ हुनकर साहित्यक की प्रवृत्ति उभरिक' सामने अबैत अछि। क्रियापदक जे ओ प्रयोग केलनि अछि ताहि मे अधिकांश गत्यात्मक अछि आ कि स्थित्यात्मक, आ जे किछु अछि ताहि सँ हुनकर साहित्यक कोटिक्रम निर्धारित कएल जा सकैत अछि। तहिना, भाषा वैज्ञानिक अध्ययन भ' सकैत अछि, भाषा-भौगोलिक अध्ययन भ' सकैत अछि, विभिन्न क्षेत्र आ विभिन्न काल मे बाजल-लिखल जा रहल भाषाक बीच तुलनात्मक अध्ययन भ' सकैत अछि। ताहू सँ बेसी महत्त्वपूर्ण हएत जे एकर समाजशास्त्रीय अध्ययन कएल जाय। से अध्ययन विद्वान लोकनि केलनि अछि आ करताह। आ जँ नहि क' सकताह तँ जीवन झाक साहित्य भविष्य मे आब' बला एहन विद्वान लोकनिक प्रतीक्षा करत, ई बात अवश्य हम विश्वासक संग कहि सकैत छी। हमरा मुदा, किछु दोसर-दोसर बात सभ कें देखब बेसी रोचक लगैत अछि।

उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्ध जीवन झाक जीवन-काल छलनि। 1912 ई. मे हुनकर देहान्त भेलनि आ अनुमान कएल जाइत अछि जे 1848 मे ओ जन्म लेने हेताह। हमरा लोकनि अवगत छी जे ई ओ समय छल जखन भारतीय नवजागरण अपन शिखर उन्मेष पर छल। पहिने बहुतो लोक कें ई भ्रम छलनि जे नवजागरणक बसात भने सौंसे भारतवर्ष कें दोलायमान

क’ देने हो मुदा, मिथिला मे एकर कोनहु प्रभाव नहि पड़ल। अनेक विद्वान लोकनिक अध्ययन सँ आब ई बात स्पष्ट भ’ गेलैक अछि जे प्रतिगामी शासन-व्यवस्था आ जड़ीभूत सामाजिक जीवन-पद्धतिक बादो, मिथिला ने मात्र नवजागरणक अपन कार्रवाइ मे शामिल भेल अपितु नवजागरणक एक विशेष मॉडल सेहो बना सकल। कतोक बेर हमरा लोकनि आंशिक सत्य कें पूर्ण सत्य मानि लैत छी। जेना, आंशिक सत्य ई थिक जे दरभंगा महाराज 1857क विद्रोह मे कम्पनी-सरकार कें समर्थन आ सहायता देने छलथिन। मुदा, सत्यक दोसर अंश इहो थिक जे विद्रोहक बाद तिरहुत डिविजनक सैकड़ो क्रान्तिकारी कें अंग्रेज सरकार फाँसीक सजाइ देने छल। एहि पर किछु सामग्री एखन आएल अछि, किछु आएब बाँकी अछि। हमरा तँ एहन किछु साक्ष्य भेटैए जाहि सँ पता चलै छै जे मिथिलाक एक सन्तकवि लक्ष्मीनाथ गोसाँइ 1857क विद्रोह-काल मे भूमिगत रहि क’, गाम-गाम घूमि क’ अंग्रेजी सत्ताक विरुद्ध जन-जागरणक काज केने छलाह, ठीक-ठीक ओही अंदाज मे जेना अवधक क्षेत्र मे स्वामी दयानन्द सरस्वती केने छलाह। एहि सभ पर काज हएब एखन बाँकी छै, तखनहि नवजागरण मे मिथिलाक भूमिका पर एक पूर्ण सत्य हमरा लोकनिक सोझा आबि सकैत अछि। तें, हमरा लगैत अछि जे जीवन झा सनक रचनाकार, जे प्रत्यक्ष रूप सँ नवजागरणक पैरोकार ठहरैत छथि, हुनकर भाषा आ साहित्यक अध्ययन नवजागरण कें ध्यान मे राखि क’ कएल जाय। ई मानितहु हुनका लोकनिक प्रति हमरा पूर्ण श्रद्धा अछि जे व्याकरणिक अथवा काव्यशास्त्रीय दृष्टि सँ जीवन झाक भाषाक अध्ययन करैत छथि। अहाँ करू। जँ अहाँ ठीक-ठीक अध्ययन क’ सकलहुँ तँ अस्सल यथार्थ तँ अनावृत्त हेबे करत। आ, अस्सल यथार्थ थिक-नवजागरण।

मिथिलाक नवजागरण कें ‘मैथिली नवजागरण’ कहब हमरा बेसी प्रिय आ सही लगैत अछि। तकर कारण थिक जे मिथिलाक नवजागरणक एकटा रिजल्ट, एकटा देन हमरा लोकनिक हाथ मे अछि, आ से थिक आधुनिक मैथिली साहित्य। मोन पाड़ल जाय जे उन्नैसम शताब्दीक एही उत्तरार्द्धक समय मे ग्रियर्सन एकटा काल्पनिक भाषाक अवधारणा प्रकट केने छलाह--बिहारी भाषा, जे मैथिली, भोजपुरी आ मगही कें मिलाक’

बनल छल। आइ देखल जाय जे भोजपुरी आ मगहीक साहित्य कतए अछि आ मैथिली साहित्य कतए पहुँचि गेल! अहाँ कहि सकै छी जे मैथिली साहित्यक विकास विद्यापतिक बदौलति भेल। तखन, तुलसीदासक बदौलति अवधी साहित्यक विकास किए नहि भ' सकल? हमरा लगैत अछि जे विद्यापति पताका भेलाह एहि नवजागरणक आ आधुनिक मैथिली साहित्यक विकास नवजागरणक कारण भेल। एहि नवजागरणक तीन टा फेज हमरा लोकनि मिथिला मे देखै छी--आत्म-विश्वास, आत्म-संस्थापन आ आत्म-स्वीकार। आधुनिक मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा मे लिखल गेल रचना सभ मे हम एहि तीनू फेज कें अथवा एहि मे सँ कोनो एक वा दू कें क्रियाशील देखि सकै छी। जे चीज जाहि इतिहास आ परम्परा सँ चलि आबि रहल अछि, से ठीक अछि आ कि ठीक नहि अछि, एहि समालोचनात्मक दृष्टिकोण सँ सभ कथू कें देखब आरम्भ भ' गेल छल। समालोचनात्मक दृष्टि अर्थात बुद्धिवाद। एहि बुद्धिवाद कें मिथिला मे आ मैथिली साहित्य मे, सुधारवादक स्वरूप मे हमरा लोकनिक गतिशील देखैत छिऐक। एहि सभ विषयक अध्ययन मैथिली सँ बेसी आइ अंग्रजी आ हिन्दी मे भ' रहल छैक। हम एकरा व्याप्तिक बढ़ब मानै छी। मुदा, एकर एक घाटा हमरा लोकनि कें प्रत्यक्ष रूप सँ देखार भ' रहल अछि जे तत्कालीन मैथिली साहित्य, नजरि पर एबा सँ छूटि जा रहल अछि।

जीवन झाक रचना सँ उभरि क' जे हुनकर व्यक्तित्व बनै छनि, ताहि सँ ई स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे ओ सही अर्थ मे पढ़ल-लिखल, विचारवान प्रगतिशील लोक छलाह। हुनक जीवनक सम्बन्ध मे सुविस्तृत रूप सँ कोनहु निर्भ्रान्त विवरण नहि प्राप्त होइत अछि, जेना कि 'कविवर जीवन झा रचनावली'क सम्पादक-द्वय (श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आ डॉ. रामदेव झा) मे सँ एक डॉ. रामदेव झा कहैत छथि। जीवन झा पर डॉ. प्रेम शंकर सिंह मोनोग्राफ सेहो लिखलनि अछि मुदा ओ डॉ. रामदेव झा सँ आगू नहि जा सकलाह अछि, बरु पाछुए छथि। अस्तु। आत्म संस्थापन के तत्त्व जीवन झा मे बेस जगजियार देखार दैत अछि। ओ शुद्धतावाद के विरोध केलनि। पुरातनपंथी, कट्टरपंथी आदि-आदि जे कहि लियौ। बादो मे हमरा लोकनि देखैत छी जे ई शुद्धतावाद कोन तरहें मिथिला-समाज कें हलकान

केने रहलै (सन्दर्भक लेल स्वदेशी-बिलैंती-संघर्षक अध्ययन कएल जा सकैए।) दृष्टान्तक लेल हुनकर नाटक सभक फॉर्म (संरचना) कें देखल जाय। संस्कृत नाटक, रामलीला आ पारसी थियेटर--तीनू कें ओ एकमएक मिला देलथिन आ ताहि सभ के मिश्रण सँ 'मिथिला-भाषा-नाटक'क एक स्वरूप ठाढ़ केलनि। ओ सामाजिक जीवन सँ नायक-नायिका कें उठा क' प्रेम के कथा गढ़लनि आ से क' क' बहुतो रास सामाजिक कुरीति सभ कें देखार क' देलनि। अपन नायिकाक, अपन प्रेमीक प्रति प्रेमनिवेदन (विडम्बना थिक जे ओही प्रेमीक परिणीता पत्नी थिकी नायिका, मुदा बीच मे बिकौआ घराना आ कन्यादानी प्रथा आबि गेल छैक) से, ओहि प्रेम-निवेदन कें जीवन झा एहि शब्द मे, मंच पर, राग पीलू मे निबद्ध गीतक रूप मे, अभिव्यक्ति दैत छथि-

पड़ैए बूझि किछु ने, ध्यानमे हम भेल पागल छी।
चलै छी, ठाढ़ छी, बैसल छी, सूतल छी कि जागल छी।।
बुझा देमक तँ चाही कौखना अनजानकें कनिञे।
जे ई अपराध छौ तोहर, किए हमरासँ रूसल छी।।
कहै छी प्राण हमरा, तँ निबाहू प्रीत जा जीबी।
अहाँ निश्चिन्त छी तें की, अहाँ बिनु हम तँ बेकल छी।।

एहि गीतक सम्बन्ध मे हम जँ नहिञे कोनो टिप्पणी करी तँ सैह नीक। पचास गोटे सुनबै तँ पचास टा प्रतिकृति ठाढ़ हएत। सभ एक सँ एक अपूर्व। एहना मे हम अपन, एकटा व्याख्या मे एहि सौन्दर्य कें किए सीमित करी! सुन्दर भाषा मे रचित सुन्दर रचनाक यैह अपन विशेषता होइत छैक जे हरेक हृदय मे अपन प्रतिरूप ठाढ़ क' लैत अछि (रूपो रूपो प्रतिरूपो बभूव)। ऊपर जे हम उद्धृत केलहुँ से एक मुकम्मल गजल थिक। स्थापित तथ्य थिक जे जीवन झा मैथिलीक पहिल गजलकार थिकाह। मैथिली मे पछिला 100 वर्ष सँ गजल लिखल जा रहल अछि। हमहूँ तँ थोड़-थाड़ गजल लिखनहि छी। मुदा जीवन झाक भाषा मे जे प्रवाह छनि, रवानगी छनि, ठेठ देसी अंदाजे-बयां छनि- से एहि सँ आगू बढ़बाक तँ के कहए जे एतबो रवानगी आ अंदाजे-बयां आइयो कम्मे लोक मे छनि। गजलक जे पारखी पाठक/श्रोता हेता से आसानी सँ बूझि जेताह जे 'बुझा देमक तँ

चाही कौखना' मे गजलक मूल फारसी भाषा मे जे 'गुफ्तगू' के अदा छै, तकरा ठेठ मैथिली मे, समतूल अदाकारीक संग कते सुन्दर तरीका सँ एतय पेश कएल गेलैए।

चन्दा झा बिकौआ, कन्यादानी प्रथाक विरुद्ध रहथि। ओ स्त्री-शिक्षाक पैरोकार रहथि। जातीय उच्चताक नाम पर स्त्रीक संग अत्याचार के ओ प्रबल विरोधी रहथि। एहि सभ बात पर हुनकर नाटक सभ मे बाजाफ्ता दृश्य अछि। 'सुन्दर-संयोग' नाटकक नायक-नायिका छथि सुन्दर मिश्र आ सरला। 'नर्मदा-सागर' नाटकक नायिका नर्मदा एहि सुन्दर-सरलाक बेटी थिकी। सुन्दर मिश्र सरला-संगे प्रेम केने छला, से मुदा विवाहोत्तर प्रेम छल, नर्मदा विवाह-पूर्व प्रेम केलनि। ओहि युग मे, स्त्रीक प्रति एहन उदार नजरिया, ताहू मे एक पण्डितक; ई 'विशेष बात' कहल जेतै। जीवन झाक मनोनिर्मिति मे स्त्रीक लेल 'स्पेस' कते रहैक, तकरा अकानबाक लेल कने एहि शेर पर गौर कएल जाय-

कहै छी प्राण हमरा, तँ निबाहू प्रीत जा जीबी।
अहाँ निश्चिन्त छी तें की, अहाँ बिनु हम तँ बेकल छी।।

(जँ अहाँ हमरा सत्तमसत्त 'प्राण' कहै छी तँ जहिया धरि अहाँ जीयब तहिया धरि एकरा निबाहू, तखनहि तँ उचित, ई नहि उचित जे अहाँ निश्चिन्त बनल छी। अरे, अहाँक निश्चिन्तता कोन काजक, एम्हर हम तँ अहाँ बिनु बेकल छी। अहाँक निश्चिन्तता कोना उचित भ' सकैत अछि, हमरा बेकल रहैत!)

एहन-एहन स्थल पर आन सभ कथू कें देखबाक संग-संग मिथिला भाषाक जादू कें सेहो देखल जा सकैत अछि, जकर जादूगर थिकाह--जीवन झा।

एहन प्रतीत होइत अछि जे जीवन झा मूलतः रंगमंचक दृष्टिकोण सँ मैथिली मे रचना केलनि। संस्कृत मे आ मैथिली मे सेहो जे हुनकर रचना सभक मादे सूचना भेटैत अछि, ताहि सँ ई पता लगैत छैक जे ओ जहिया जे किछु लिखलनि से सोद्देश्य लिखलनि। कहियो, कोनो प्रसंगें, किछु लिखबाक खगता भेलनि--जेना पूजा-काल मे गेबाक लेल स्तुति वा भजन, भोरहरबा मे गेबाक लेल पराती, महाराजक कोनो उत्सव मे पढ़बाक लेल

अभिनन्दन पत्र एहने सन किछु। हुनका द्वारा महाकाव्य, संस्कृत मे, लिखल जेबाक सूचना सेहो भेटैत अछि, मुदा तकरो प्रवृत्ति सोद्देश्यतामूलक अछि। ओ अपन आश्रयदाता महाराजक प्रशस्ति मे से लिखलनि। नहि तँ, स्वायत्त रूप सँ प्रबन्धात्मक लेखनक कोनो उत्साह हुनका मे नहि कहियो देखल गेल। प्रबन्धात्मक ढंग सँ लिखबाक आयोजन ओ अपन मैथिली नाटके सभ मे केलनि। हमरा लगैत अछि जे प्रबन्धात्मक ढंगक बेगरता हुनका पड़लनि से मात्र अपन एही सेहन्ताक दुआरे जे अपन मातृभाषा मैथिली मे कोनो नाटक खेलेबाक हुनका बेगरता भेलनि। ई जानब रोचक हएत, मुदा से जनबाक कोनो उपाय नहि अछि, जे पहिल बेर जे महाराज प्रभुनारायण सिंह (काशी-नरेश, जिनकर दानाध्यक्ष जीवन झा रहथि)क प्रशाल मे 'सामवती पुनर्जन्म'क मंचन भेल छल हएत, ताहि मे जीवन झा अपने कोनो पार्ट (भूमिका) लेने छल हेताह कि नहि। हमर अनुमान अछि जे ओ पार्ट लेने हेताह, तते रंगमंचीय आभा सँ ओतप्रोत लोक ओ छलाह।

हमरा लगैत अछि जे रचना अहाँ कोन उद्देश्य सँ क' रहल छी, ओकर टारगेट के थिकाह, एहि बातक प्रभाव निश्चित रूप सँ रचनाक फॉर्म पर पड़ैत छै। आ, भाषा पर तँ अनिवार्य रूप सँ पड़िते छै। जीवन झा जें कि रंगमंचक लेल साहित्य लिखलनि तें भाषा-प्रयोग सँ सम्बन्धित हुनकर अन्तर्दृष्टि बहुत खुलि क' सामने आबि सकल। जँ ओ मंचित करबाक लेल नहि, मात्र पढ़बाक लेल नाटकक रचना केने रहितथि तँ भाषाक ई जादू नहि रचि पाबितथि। ओ अपन पात्र सभक आत्मा मे ढुकलाह आ जे पात्र जाहि तरहक भाषा अपन वास्तविक जीवन मे बजैत छल, तकरा सैह भाषा बजैत साहित्य मे उतारि अनलनि। ई बात नवजागरणधर्मी साहित्यक लेल एक स्वाभाविक आ आवश्यक बात छल। दोसर बात जे तकनीकी अर्थ मे जकरा 'प्रतिभाशाली' कहल जाय, अर्थात सदति नव-नव उन्मेष प्रकट कर'बला प्रज्ञा सँ युक्त व्यक्ति, ताहि अर्थ मे जीवन झा एक प्रतिभाशाली कलाकार छलाह, जे अनवसरो कें अवसर मे परिणत क' लैत छलाह। ओ पण्डित छलाह मुदा नवजागरणक बसात सँ परिपूरित। बौद्धिक तर्कसंगति हुनका मे रहनि आ निकृष्ट कें निकृष्ट कहबाक साहस सेहो। एकरा संग-संग हुनका मे भविष्य-दृष्टि सेहो छलनि।

'सामवती पुनर्जन्म' मे एक पात्र छथि बन्धुजीव। ओ संस्कृत नाटकक विदूषक वा देसी नाटकक बिपटा टाइप के पात्र छथि। एकरा जीवन झाक अकबाल कही जे बन्धुजीव कें बिपटा बना देलथिन जखन कि बन्धुजीव उच्च जातिक पांजिधारी थिकाह जे प्रत्येक वर्ष बिकाइ लेल तैयार पाओल जाइत छथि। कारण की तँ से देखी-

'सारस्वत - औ, तँ निश्चय फेरि विवाह करब?

बन्धुजीव - अपने पुछै छी तँऽ उत्तर कोना ने दिअ। अपन तते इच्छा नहि मुदा हमरा माइकें एहि पुतोहु पर असन्तोष रहै छनि।

सारस्वत - से किऐ?

बन्धुजीव - द्विरागमनमे वस्तुजात संग थोड़ देलक तेंऽ खौंझैत रहै छथि। हमहूँ भरि पेट खाएब से घरमे नहिऐं भऽ सकैए।'

जीवन झाक नाटकीय सम्वादक भाषा कतेक गत्वर छनि, आ कोन तरहें लिपि मे लिखल गेल वाक्य सेहो वाचिकक संग-संग आंगिक आ आहार्य भाषा संग जुड़ल रहैत छनि, तकरा देखबाक लेल फेर हम एही दृश्यक एक आर सम्वाद दिस ध्यान आकृष्ट करब।

सारस्वत आ वेदमित्र पजिआड़क ओतए जा रहलाह अछि।

'सारस्वत - बन्धुजीव हकासल-पियासल बिकाय ले अयलाहे से चलताह कि ने?

वेदमित्र - ओ बिकैले फिरैए। आइ देखितहि छलहुँ अछि, कतेक चूड़ा-दही खैलक अय। कतहु सूतल हएत। लोककें हसबितहि रहैए।'

वेदमित्र एहि ठाम चारि टा वाक्य बजैत छथि आ से चारू वाक्य कोन तरहें अलग-अलग भावाभिव्यक्तिक छैक, तकरा देखल जा सकैए। रंगमंच पर तँ पात्र अपन अभिनय द्वारा एहि समस्त भाव कें प्रकट क' देत, मुदा पाठ्य-माध्यम मे सेहो ई वाक्य सभ अपन-अपन भाव-भूमि के संकेत करैत देखाइए--ई भाषा-संरचना जीवन झाक विशेषता थिकनि।

हुनक कलाकारी कें देखबाक लेल एही दृश्यक एक आर सम्वाद-

पाग-फराठी लेने सारस्वतक खबास गोनरा मंच पर अबैत अछि। पाछू सँ बन्धुजीव अबैत छथि।

'बन्धुजीव - (गोनराक टीक पकड़िक') रौ! बहिंचो, तों काँचे नीन्दमे जगा किए देलेहें! (लात मारबाक अभिनय) इः बाप रौ बाप, पैर टूटल!

गोनरा - रहू बाबू! हमरा सक नइ ऐछ।

सारस्वत - हाँ! हाँ!! की थिक की थिक?

बन्धुजीव - हमरा सीरमसँ फराठी घिचलक से हमरा नींद टूटि गेल। हमरा से बिना सिरमे निन्ने ने होइए।

वेदमित्र - आ! अहाँकें सिरमाक कमी कोन?'

आ सैह बन्धुजीव, मुनि लोकनिक विदा होइत काल गोनरा कें कहै छथि- *''देख, हिनका सोझहिमे कहि दै छिऔक, नीकें पयर जतिहें। पाछाँ कह' लगै छें जे की अहाँक बहिया चाकर छिओं, ऐंठो त ने एको कौर नड़बै छी' से आब सहचेत रहिहें।'*

कहबाक लेल बहुत बात अछि। बन्धुजीवक पैर टुटबाक अभिनय मे दलित वर्गक प्रति जे अवज्ञा आ जुगुप्साक भाव छै; वेदमित्रक कथन मे जे व्यंग्य आ ताहि भीतर नुकाएल मन्यु छै, बन्धुजीवक सम्वाद मे जे हास्यास्पद जीवन जीबाक बेहोश उत्थरपन छै; से सभ देखबाक योग्य अछि। मजेदार बात ई जे ई सभ कथू भाषा मे अभिव्यक्त छै--लिखित भाषा मे, जकरा लेल अभिनय के अनिवार्यता नहि छै। दलित वर्गक प्रति हृदयहीन व्यवहार कें ओ मंच पर देखौलनि, जखन कि ई व्यवहार ताहि दिनक आचार-संहिता मे सर्वस्वीकृत छलैक। जीवन झा प्रश्न ठाढ़ केलनि जे एहि तरहक अमानवीय व्यवहार के करैत अछि! मने, बन्धुजीवे-सन कुल-पशु क' सकैत छथि। नाटककारक ई संकेत खूब नीक जकाँ स्फुट भ' सकल अछि।

जीवन झाक भाषाक संक्षिप्ते सही मुदा उपयोगी अध्ययन डॉ. रामदेव झा प्रस्तुत केलनि अछि। प्रमुख बात निम्नलिखित अछि-

1. जीवन झा भाषा-प्रयोग मे लोकधर्मिताक आश्रय विशेष लेलनि अछि। एही दुआरे हुनक शब्दावली, क्रियापद, वाक्य-विन्यास आदि एखनहु युग सँ बहुत आगू अछि।

2. क्रियापदक संक्षिप्त रूप यथा जाइ छी, गबै छी, लगै छलै आदि पहिल बेर वैह प्रयोग मे अनलनि।

3. संश्लिष्ट क्रियापद यथा पड़ैए, जाइए, होइए आदिक प्रयोग सर्वप्रथम जीवने झा आरम्भ केलनि।

4. संयुक्त क्रिया कें सटाक' लिखबाक प्रवृत्ति जीवन झा मे भेटैत अछि। तहिना विभक्ति कें शब्द सँ हटा क' लिखबाक चलन ओ शुरू केलनि, यद्यपि कि एहि मे कतोक अपवादो पाओल जाइत छनि।

5. विलम्बित अथवा दीर्घ अकारक हेतु विकारी 'ऽ' क प्रयोग पहिल-पहिल वैह चलन मे अनलनि, जकरा आगाँ चलि क' 'मैथिलहितसाधन' सँ ल' क' 'मिथिला मिहिर' धरि अपनौलक।

6. जीवन झाक नाटक मे किछु एहनो प्रयोग सभ अछि जे मध्यकाल मे प्रचलित छल परन्तु आब समाप्त भ' गेल अछि।

एही क्रम मे, प्रसंगवश, हम एकाध टा बात कहए चाहब। मैथिली मे आधुनिक गद्यक पहिल नमूना चन्दा झाक भेटैत अछि। ओहि गद्य कें आदर्श गद्य किन्नहु नहि मानल जा सकैत अछि कारण एक तँ ओ पण्डिताम सँ बोझिल बनल अछि, दोसर संस्कृत वाक्य-विन्यासक यथावत नकल करैत अछि। चन्दा झाक बाद गद्यक दोसर प्ररूप हमरा लोकनि कें जीवने झा लग मे भेटैत अछि। एकर बादे जाक' 'मैथिलहितसाधन' आ कि 'मिथिलामोद'क गद्य हमरा लोकनि लग मे अबैत अछि। जहिया ई दुनू पत्रिका छपब आरम्भ भेल (1905 ई.) ताहि सँ पहिनहि जीवन झा अपन प्रमुख कृति सभक रचना पूरा क' चुकल छलाह। एहना स्थिति मे, यदि हमरा लोकनि आधुनिक आदर्श गद्यक निर्माता 'मैथिलहितसाधन' आ 'मिथिलामोद' कें कहैत छिऐक तँ से सत्यक थोड़े अपलाप सन बुझना जाइत अछि। सत्यक ई अपलाप किए, तकर जड़ि तकबा दिस विद्वान लोकनिक नजरि जेबाक चाही।

जीवन झाक नाटक सभ मे किछु भाषा-प्रयोग कें देखिक' डॉ. रामदेव झा ई निष्कर्ष बहार केलनि जे ई प्रयोग सभ 'मध्यकाल' मे प्रचलित छल परन्तु आब समाप्त भ' गेल अछि।' हमरा लगैत अछि जे विषय-वस्तुक एतेक सामान्यीकरण उचित नहि थिक। व्यापक भाषा-भूगोलक आधार पर हमरा लोकनि कें एहि तथ्य कें देखबाक चाही। आब समाप्त भ' गेल अछि, मने कतए समाप्त भ' गेल अछि। लिखित साहित्य मे। हमरा

लोकनि कें विचारबाक चाही जे कहीं एहि दुआरे तँ समाप्त नहि भ' गेल जे लिखित भाषा मानकीकरणक गछाड़ मे फँसि गेल आ एक सीमित क्षेत्र मे बाजल जाइबला भाषेटा कें मानक मानल गेल आ साहित्य मे स्थान देल गेल। जँ एकरा बदला ई कहल जाय जे भाषा-भाषी क्षेत्रक जनभाषा सँ ई प्रयोग समाप्त भ' गेल तँ तखनहु प्रश्न उठैत छैक जे कोन जिलाक कोन इलाका सँ? हम तँ देखैत छी जे मधुबनी जिलाक क्षेत्र-विशेष सँ जे भाषा-प्रयोग समाप्त भ' गेल, सेहो सहरसा आ कि भागलपुर आ कि सीतामढ़ी मे चलन मे बनल अछि। हम ध्यान दियाब' चाहब जे जीवन झा समस्तीपुर जिलाक निवासी छलाह। पढ़ि-लिखिक' शिष्ट भाषा ओ भने अर्जित क' लेने होथु, मुदा नाटक लिखबा काल जखन पात्रानुकूल जन-भाषाक खगता हुनका पड़ल हेतनि तँ ओ अपन मातृभूमिए कें मोन पाड़ने हेताह आ ताही ठाम सँ भाषा प्ररूप उठाक' अनने हेताह। अस्तु। जीवन झा, मैथिलहित साधन आ मिथिलामोद अपन काज केलनि अतीत मे। मानकीकरणक प्रश्न बहुत आगू चलि क' एलैक। कतहु एहन तँ नहि जे 'निर्माता'क गौरव दैत काल मे, 'सुठाम'क बाशिन्दा नहि हेबाक दण्ड जीवन झा कें देल गेलनि!

जीवन झाक भाषा-चेतना पर जँ गप करै छी आ चाहै छी जे ई गप कोनो निष्पत्ति धरि पहुँचय तँ हमरा लोकनि कें भाषाक पुनर्मानकीकरण पर गम्भीरतापूर्वक काज कर' पड़त। ई काज जँ हमरा लोकनि क' सकलहुँ तँ मिथिलाक बहुतो सामाजिक, सांस्कृतिक आ राजनीतिक सेहो, संकटक समाधान बहार भ' सकत।

(2014)

नवजागरण आ हरिमोहन झाक साहित्य

मैथिली साहित्य मे, हरिमोहन झाक आविर्भाव एहन समय मे भेल छल, जखन परीक्षाक घड़ी उपस्थित छल। समाज नहुँ-नहुँ बदलि रहल छल आ साहित्य अपन सक्क भरि तकरा व्याख्यायित करबा मे लागल छल। मैथिली मे संस्थाबद्ध आ व्यवस्थित लेखन-परम्परा अर्द्ध-शताब्दी पूरा करबा पर आबि गेल छल। मैथिली गद्य अपन एक स्वरूप बना चुकल छल, जे सम्वेदनात्मक आ ज्ञानात्मक दुनू प्रकारक अभिव्यक्ति मे अपन सामर्थ्य देखा रहल छल। एम्हर, मैथिली पत्रकारिता अपन स्वायत्त छवि बना चुकल छल, जाहि मे हिन्दीक आश्रयक आवश्यकता नहि रहि गेल छलैक। कैक गोट उपन्यासो लिखल जा चुकल छल आ कथा सभ सेहो। मुदा परीक्षाक घड़ी दू अर्थ मे उपस्थित छल। एक तँ ई जे तत्कालीन रचनाकारक पीढ़ी अपन उच्चतम उदात्त स्वर प्रस्तुत क' चुकल छल, ओ लोकनि अपना युगक श्रेष्ठतम (द बेस्ट) अभिव्यक्त क' चुकल छलाह आ आब देखबाक छलैक जे मैथिली साहित्य आगाँ कोन बाट पकड़ैत अछि। आ दोसर ई जे नवजागरणक तत्त्व अपन एक फेज पूरा क' क' दोसर फेज मे प्रवेश क' रहल छल। मैथिली मे नवजागरणक सूत्रपात संस्कृतज्ञ पण्डित लोकनिक नेतृत्व मे भेल छल। पचास बर्ख मे ई अपन एक स्पष्ट परम्परा स्थापित क' चुकल रहय। एम्हर, अंग्रेजी शिक्षाक प्रसार बढ़' लागल छल। संस्कृत पढ़ल-लिखल रचनाकार वर्गक साहित्य आबि चुकल छल आ आब देखबाक रहैक जे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल रचनाकार नवजागरणक तत्त्व कें कोन तरहें आगू ल' जाइत छथि आ अपन परम्पराक विकास कोन रूप मे करैत छथि।

हरिमोहन झाक लेखन मैथिली साहित्यक एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अध्याय थिक। मिथिला-समाजक आत्मसंघर्षक ई एक अविस्मरणीय दस्तावेज थिक। उनैसम शताब्दी मे जे भारतक विभिन्न भाषा-क्षेत्र मे नवजागरणक हलचल मचल रहैक, तकर सुस्पष्ट प्रभाव आ विकास कोन तरहें मिथिला-समाज कें आन्दोलित आ समृद्ध केलक तकर आकलन हुनकर साहित्य सं कएल जा सकैत अछि।

हमरा लोकनि अवगत छी जे भारतीय नवजागरणक दू टा स्पष्ट धारा छल। एक दिस यूरोपीय आदर्श कें आधार बना क' अपन समाज कें पुनर्गठित आ चेतनासम्पन्न करबाक आग्रह छल, जकर अग्रणी राममोहन राय आदि भेलाह। तँ दोसर दिस, पुनरुत्थानवादी चेतनाक आविर्भाव भेल, जकर जड़ि वैदिक संस्कृति मे निहित मानल गेलैक आ जे अपन गौरवमय अतीत सँ सकारात्मक तत्त्व सभ कें ल' क' समाज कें पुनर्गठित आ चेतनासम्पन्न करबाक अभियान चलौलक आ जकर अगुआ स्वामी दयानन्द आदि भेलाह। सुनिश्चित रूप सँ मिथिला पर एहि पुनरुत्थानवादी चेतनाक गँहीर प्रभाव पड़लैक; यद्यपि कि स्वामी दयानन्द कें मिसियो भरि मानि देबा लेल ने तहियाक मैथिल पण्डित तैयार छलाह, ने महाराज।

मिथिलाक जातीय प्रबन्धन-कौशल सँ जे क्यो अवगत छथि, हुनका सभक समक्ष स्पष्ट हेतनि जे मिथिला पर जहिया कहियो कोनो विजातीय संकट आयल अछि, ई ओकर प्रतिकार मे युद्ध लड़बाक बदला अपन घरे कें मजगूत केलक अछि आ तकर सामना करैक लेल अपन सामाजिक प्रतिरोध-प्रणाली (इम्यून सिस्टम) कें सक्रियतर केलक अछि। एकर परिणाम आर भने जे किछु भेल होउक, हमरा लोकनि देखैत छी जे सुधारवादी धारा अपन वर्चस्व प्राप्त केने रहल अछि। हरिमोहन झाक साहित्य एहि सुधारवादी धाराक चरम उन्मेष थिक। ई बात भिन्न थिक जे मिथिलाक यथास्थितिवादी बौद्धिक समाज एकरो स्वीकार करबाक लेल तत्काल तैयार नहि भेल आ हरिमोहन झा कें 'हास्य रसावतार'क कोटि मे फिट कएल गेलनि आ हुनका पर गंभीर चर्चा सँ परहेज कएल गेलैक।

भारतीय नवजागरणक धुरी छल--बुद्धिवाद, से सभ क्यो जनैत छी। से चाहे यूरोपीय आदर्शक आधार पर समाज कें पुनर्गठित करबाक आग्रह

होउक आ कि वैदिक आदर्शक आधार पर, दुनू मे एहि बुद्धिवाद जोर पर छल। हमरा लोकनि अवगत छी जे मैथिली नवजागरणक प्रथम फेज के सुधारवादी धारा कें हरिमोहन झा समर्थन केलनि आ ओही लाइन कें ल' क' आगू बढ़लाह। अंग्रेजी-शिक्षित बौद्धिकक द्वारा देसिल परम्परा कें देल गेल ई प्रथम आ व्यापक समर्थन छल। मुदा, देखबाक थिक जे ई बुद्धिवाद, अपन प्रखर आ मुखर रूप ल' क' हरिमोहन झाक लेखन मे प्रकट भेल। वैवाहिक सुधार सँ ओ अपन लेखन-यात्रा शुरु केने छलाह, मुदा हुनक मूल इष्ट छलनि--सर्वांगीण सांस्कृतिक सुधार, जकर स्फुरण नहुँ-नहुँ हुनका लेखन मे तेज होइत गेल आ 'कन्यादान' लिखबाक थोड़बे दिनका बाद ओ 'प्रणम्य देवता' आ 'खट्टर ककाक तरंग' धरि आबि गेलाह। हरिमोहन झाक एहि लेखन-यात्रा मे मिथिला-समाजक आत्मसंघर्ष कें नीकें नां चीन्हल जा सकैत अछि आ बुद्धिवाद कें सेहो नहुँ-नहुँ जमीन पकड़ैत परखल जा सकैत अछि।

रूढ़ि आ निर्घेस कें चिन्हार आ देखार करबाक प्रवृत्ति हरिमोहन झाक साहित्यक प्रधान विशेषता थिक। एहि लेल ओ व्यंग्य कें अपन औजार बनौलनि। हुनका सँ अपेक्षा कएल जा सकैत छल जे एहि तमाम रूढ़िक विरुद्ध ओ प्रगतिक एक प्रतिमान ठाढ़ करितथि। ओ अंग्रेजी-शिक्षित वर्ग सँ अबैत छलाह तँ ई आशा कयल जा सकैत छल जे प्रतिमान क्यो अंगरेजिया बाबू होइतथि। मैथिल परम्पराक रूढ़ि केर ओ आलोचना केने रहथि तँ बहुतो लोक एकरा 'अंगरेजिया बाबू द्वारा सनातन संस्कृति पर आक्रमण'क रूप मे देखल करथि। मुदा हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे प्रगतिक ई प्रतिमान अंगरेजिया बाबू सेहो साबित नहि भ' सकलाह। एहि संस्कृतिक उत्थर प्रवृत्तिक सेहो ओ जमि क' आलोचना केलनि। एक दिस जँ रुढ़ि मे फँसल म्रियमाण सनातन संस्कृति छल तँ दोसर दिस जीवनक गंभीर मसला सभ कें हल करबाक इच्छाशक्ति सँ शून्य अंगरेजिया संस्कृति। आखिर रस्ता कतय छल? रस्ता दुनूक बीच मे छल। 'खट्टर ककाक तरंग' लिखलाक बाद हरिमोहन झा कोनो उपन्यास नहि लिखि सकलाह। एक व्यापक फलक कें ल' क' मैथिल समुदायक महागाथा-स्वरूप कोनो उपन्यास जँ ओ लिखि सकितथि तँ कदाचित् बीचक ओ रस्ता देखार

पड़ि सकैत छल। एखन ओ बीचक रस्ता कथाक प्रभाव मे निहित छैक। योगवाशिष्ठ मे एक प्रश्न-प्रसंग अबैत छैक जे ई संसार की थिक? उत्तर देल जाइछ जे कोनो मार्मिक कथा सुनि चुकलाक बाद श्रोताक ऊपर ओकर बचल-खुचल प्रभावक प्रभामण्डल थिक ई संसार। यैह बचल-खुचल प्रभाव बीचक रस्ता थिक, प्रगतिक प्रतिमान थिक--जे हरिमोहन झाक लेखन सँ उद्‌भूत होइछ। यैह हरिमोहन झाक मूल्यो थिकनि आ हुनकर सीमा सेहो।

हरिमोहन झाक व्यक्तित्व मे हमरा लोकनि समन्वय आ सम्मिश्रण के अनेको रंग देखि सकैत छी। एक दिस जतय संस्कृत परम्परा आ अंग्रेजी परम्पराक बीच समन्वयक मुखर प्रयास हुनका लेखन मे भेटैत अछि, ओतहि दोसर दिस प्राचीनता आ आधुनिकताक सेहो एक करिश्माई सम्मिश्रण हुनका लेखन मे पाबि सकैत छी। हुनक उपन्यासक बुच्ची दाइ अक्षर-बोध आ नागर संस्कृति सँ अनभिज्ञ होइतो 'ज्ञान' आ 'बुद्धि' मे कनेको कम नहि छथि--से हरिमोहन झा शब्द मे तँ कहनहि छथि, घटनावलिक द्वारा तकरा साबितो करैत छथि। बुच्ची दाइ पुरुष-वर्चस्व सँ कात देने आगू बढ़ैत अपन रस्ता निकालि लैत छथि, मुदा आन कतेको ठाम, जीवनक महाप्रश्न सभ कें उपस्थित करबाक उत्साह मे ओ स्त्री-पराधीनताक सनातन स्वर कें नांगट करैत सेहो भेटि जाइत छथि, जेना 'पाँच पत्र' मे। तहिना, मैथिल राष्ट्रीयता आ भारतीयताक समन्वयक सेहो अनेक सूत्र हुनक लेखन मे दृष्टिगत होइछ। तहिया राष्ट्रीय जागरणक एक प्रधान लक्ष्य छल--एकात्मता। आ से एकात्मता एहन जकर पृष्ठभूमि रूढ़ि वा विश्वास सँ नहि, बुद्धिवाद सँ निर्मित भेल होइक। हमरा लोकनि देखैत छी जे हरिमोहन झा निरन्तर एहन रूढ़ि सभक भंजन करैत छथि जे मैथिलक एकात्मता कें खण्डित करैत रहल अछि। राष्ट्रीय जनान्दोलनक समर्थनक स्वर प्रायः पहिल बेर हुनक लेखन मे सुनाइ पड़ैछ, जे कि मैथिलीक दुनिञा लेल एक नव वस्तु छल।

बीसम शताब्दीक तेसर दशक मे मैथिली साहित्य लग जे परीक्षाक घड़ी उपस्थित छल, तकर समाधान हरिमोहन झा अत्यन्त योग्यतापूर्वक केलनि। एहि तथ्य कें आरो अधिक विश्लेषित क' क' देखबाक बेगरता अछि। आलोचक लोकनि आम तौर पर हुनका सुधारवादी मानैत रहलाह

अछि आ हुनक महत्त्वक आरेखन एहि सन्दर्भ मे केलनि अछि जे पूर्व सँ चलि आबि रहल सुधारवाद कें ओ अपन सहमति प्रदान केलनि। ई बात हम पहिनहु कहलहुँ अछि। देखबाक थिक जे पूर्वक सुधारवाद सँ हरिमोहन झाक सुधारवाद कोन अर्थ मे भिन्न छल? पूर्वक रचनाकार लोकनि धर्मशास्त्रक सीमा मे रहिए क' सुधार चाहैत छलाह। एहि सीमा मे रहैत जतबा आधुनिकीकरण भ' सकौ, ततबे हुनका मान्य छलनि। एहि सीमा कें हरिमोहन झा तोड़लनि। ओ धर्मशास्त्र पर प्रहारात्मक रुख अपनौलनि। हुनका साहित्य मे बुद्धिवाद आ तर्कवादक सर्वोपरि मूल्य छनि। हुनक रुझान एहन सन छनि जेना जे तर्क नहि क' सकैछ से मूर्ख अछि, जे तर्क करैछ नहि से निःस्वत्व अछि आ जे तर्क करत नहि से आन्हर अछि। ई हुनका साहित्यक एक एहन प्रवृत्ति थिक जे मैथिली साहित्य कें साक्षात रूप सँ भारतीय नवजागरणक संग जोड़ैत अछि।

आवश्यकता अछि एहि बातक जे 'हास्यावतार'क चौखटि सँ बहार क' क' जागरण-दूतक रूप मे हुनका आंकबाक प्रयास कएल जाय। आइ जे सांस्कृतिक संकट उपस्थित अछि ताहि मे हुनक सर्वोपरि प्रासंगिकता एही सँ सिद्ध भ' सकत।

(2008)

मरणमुख सभ्यता मे चेतनाक प्रश्न

(एक)

समय बदलि गेल। देस-दुनियाँ बदलि गेल। लोकक जीवन-शैली आ समझ सेहो बदलि गेल। मिथिलाक बहुत रास पुरान चीज छुटि गेल आ नव-नव आबि गेल। समाज आ संस्कृतिक बीमारी सभ समाप्त भ' जाय, से तँ खैर संभव नहि छैक; ओ बदलि गेल। पहिने चेचक आ हैजा छल तँ आब कैंसर आ एड्स आबि गेल। चीज बाहरो सँ बदलि गेल आ भीतरो सँ। तें, समाजशास्त्री लोकनि कहैत छथि जे जाहि दुनियाँक चित्र 'कन्यादान-द्विरागमन' मे आयल अछि, से दुनियाँ आब नहि छैक। स्वयं हरिमोहन बाबू अपन जीबैत-जी देखि लेने रहथि जे ओ दुनियाँ बदलि गेल।

जाहि दुनियाँक चित्र हरिमोहन बाबू अपन उपन्यास मे देखौने रहथि, से दुनियाँ जे बदलि गेल तँ तकरा पाछाँ बहुत रास कारक-तत्त्व सभ सक्रिय रहैक। सभ सँ पैघ कारक-तत्त्व तँ छल--जीवनेच्छा, कारण देस-दुनिया जाहि हिसाब सँ बदलि रहल छल, मिथिलाक ब्राह्मण-समाज लेल ई आवश्यक छल जे यदि ओ जीबय चाहय, तँ ओकरा स्वयं कें बदल' पड़तै। बदलू ने तँ मरू। आ, मिथिलाक समाज मरय नहि चाहैत रहय। हरिमोहन बाबूक उपन्यासक सभ सँ पैघ विशेषता एहि बात मे निहित छैक जे ओ एक म्रियमाण सभ्यता मे जीवनेच्छाक अभीप्सा तेज कयलक।

मिथिला-समाजक रासि अदौ सँ बुद्धिजीवी वर्गक हाथ मे रहलैक अछि। ई बुद्धिजीवी होइत छलाह महामहोपाध्याय-उपाध्याय-आचार्य लोकनि।

जीवन मूल्यक प्रति हिनका लोकनिक एक निश्चित विश्वास छलनि आ तदनुरूप साँचा छलनि। विश्वास तँ ओहुनो घातक होइत अछि, श्रेयस्कर होइत अछि प्रयोग। मुदा, से प्रयोगसिद्ध जीवन-प्रक्रिया कते गोटे अपना सकैत अछि? आइ जकरा हमरालोकनि वैज्ञानिक युग कहि रहल छिऐक, ताहू मे तँ दस अरब मे सँ पौने दस अरब लोक विश्वासे पर जीबि रहल अछि--भने विश्वास धर्मशास्त्र-कर्मकाण्डक बदला वैज्ञानिक सिद्धान्त सभ पर, आविष्कार सभ पर कयल जाइत हो। मिथिलाक बुद्धिजीवी वर्ग लग एक दृढ़ विश्वास छल आ ताहि लेल एक सुचिन्तित सिद्धान्त छल, सुगठित प्रक्रिया छल। जेना लोक आदतिक गुलाम होइत अछि, तहिना सभ्यता विश्वासक गुलाम होइत अछि। कतोक बेर अपन एकान्त मे लोक कें लगैत छैक जे ओकर आदति ठीक नहि छैक, मुदा ओ तैयो वैह सभ करैत रहैत अछि, अपना कें बदलि नहि पबैत अछि। यैह बात सभ्यताक संग सेहो होइत छैक। तकर कारण थिक--आत्मविश्वासक अभाव।

विश्वास जतेक गहन भेल जाइत छैक, ताही अनुरूप गुलामीक बन्हन कसल जाइत छैक, आ ताही अनुपात मे आत्मविश्वासक क्षरण होइत जाइत छैक। बहुत युग बितलाक बाद एक दिन हमरा लोकनि आत्मविश्वासहीन समाज कें देखैत छी तँ सूत्र जोड़ब कठिन होइत रहैए जे की एकर गुलामी छैक आ से गुलामी कोन विश्वास सँ जनमलैक अछि? न्यों केर पजेबा जकाँ ई सभ चीज पतन केर खण्डहर तर मे नुकायल रहैत अछि।

समाजक जनता-जनार्दन अपन बुद्धिजीवी मार्गदर्शकक भरोस पर जीबैए आ निश्चिन्त बनल रहैए। बुद्धिजीवी वर्ग कें भान होइत रहैत छैक रहरहाँ जे *'तुम्हारे पाँव के नीचे कोई जमीन नहीं, कमाल ये है कि फिर भी तुम्हें यकीन नहीं'* मुदा ओ गुलाम अछि। परिवर्त्तन ओकरा वश मे नहि छैक। परिवर्त्तन सँ ओकरा घाटा सेहो छैक। वैकल्पिक दुनियाँक कोनो रूपरेखा जें कि ओकरा लग छैके नहि, ओ परिवर्त्तन सँ डेराइए। कारण, परिवर्त्तन जँ भेल तँ ओ ओकर नेतागिरी छिना जयतैक।

सभ युगक यैह खिस्सा थिक। एकैसम शताब्दीक एहि दुनियाँक सेहो यैह खिस्सा थिक। बदललैक अछि खाली वस्तु आ विश्वास, स्थिति आ विडम्बना नहि बदललैक अछि।

ई मोन रखबाक बात थिक जे जाहि साल दरभंगा-नरेश बिलैंत गेल छलाह, ओही साल कन्यादानक प्रकाशन भेल रहैक। मिथिलाक बुद्धिजीवी समाजक लेल ओ घनघोर संक्रान्ति-काल छल। सौंसे मिथिलाक पण्डित दू वर्ग मे विभाजित भ' गेल रहथि--देसी आ बिलैंती। सभ गोटेक अपन-अपन आग्रह-दुराग्रह छलनि, जे विभिन्न प्रकारक लाभ-लोभ सँ नियन्त्रित छल। मुदा, एहना समय मे जे वैकल्पिक दुनियाँक प्रस्ताव रखबाक जरूरति होइत छैक, तकर ऊहि की तँ किनकहु मे नहि छलनि, अथवा एतेक दूर धरि सोचबाक दृष्टिये नहि छलनि। से प्रस्ताव हरिमोहन बाबू दिस सँ राखल गेल। मिथिला कें जँ जीवित आ जीवन्त बनौने रखबाक छैक तँ तकर की उपाय--एही अनुसन्धान सँ जनमल प्रस्तावक नाम थिक-'कन्यादान--द्विरागमन'।

तें, जखन ई कहल जाइत छैक जे ई उपन्यास वैवाहिक समस्या पर लिखल गेल छैक तँ हमरा बुझाइए जे स्थितिक अगंभीर सरलीकरण कयल जाइत छैक। लगभग ओही तरहें जेना राजा जनकक दरबार मे जखन अष्टावक्र मुनि कें देखि क' दरबारी लोकनि हँसि देने रहनि (हुनक शारीरिक विकलांगता देखि क') तँ कहाँदन अष्टावक्र जनक सँ कहने रहथिन जे औ राजा जनक, अहाँक सभा तँ चमार सभक चौपाल थिक, जतय शरीरक चाम कें देखि क' व्यक्तित्वक निर्णय कयल जाइत छैक।

उपन्यासक नामे कन्यादान-द्विरागमन थिकैक, तखन एहि मे जँ वैवाहिक बात नहि रहत तँ की रहत? एतबा बातक निर्णय तँ ओहो लोकनि क' लेताह जे एकर नामे टा सुनने छथि, जेना अष्टावक्रक नामे सँ स्पष्ट छैक जे हुनक शरीर आठ ठाम सँ टेढ़ रहनि, माने 100 प्रतिशत विकलांग।

ई उपन्यास वस्तुतः मैथिल सभ्यताक गतिहत आ जड़ भ' जयबाक यावन्तो कारण (आ तकर निवारण सेहो) कें अपन कथ्य मे शामिल कयने अछि। ध्यान देबाक बात थिक जे हम 'कथानक' नहि कहि क' 'कथ्य' कहि रहल छी। कथानक मे तँ ओहुना प्रसंगात् बहुत रास बात कें शामिल कयल जा सकैए। हमरा स्पष्ट बुझाइत अछि जे बुच्ची दाइ आ सी. सी. मिश्राक विवाह आ द्विरागमनक प्रसंग मात्र एक कथानक थिक, उपन्यासक

सम्पूर्ण कथ्य नहि थिक। ठीक तहिना, जेना ककरो सम्पूर्ण घर जँ अग्निकाण्ड मे स्वाहा भ' जाय तँ चार मे खोंसल डाक्टरक पुरजा सेहो जरि जयतै।

लोकप्रिय साहित्यक समाजशास्त्र केर जे अध्येता लोकनि छथि, हुनका बेर-बेर ई समस्या परेशान करतनि जे एहि उपन्यासक कथानकक गति बहुत-बहुत कम छैक, तकर अछैतो ई उपन्यास किए एते लोकप्रिय भ' सकल। वस्तुतः लोकप्रिय साहित्य लेल ई गुण आवश्यक छैको, जकर एहि उपन्यास मे अभाव अछि। एहि मुद्दा पर तँ समीक्षक लोकनि विचार कयलनि अछि जे एहि अभावक पूर्त्ति हरिमोहन बाबू कोना कयलनि, मुदा ई प्रश्न एखनहु अछूत बनल अछि जे ई अभाव किए छैक?

ओना, एहि मादे जे कहल गेल अछि से गतिक अभाव केर पूर्त्ति हरिमोहन बाबू छोट-छोट मनोरंजक प्रसंग सभ सँ करैत छथि, जाहि मे हास्य-व्यंग्यक अद्‌भुत विन्यास भेलैक अछि, ईहो बात मामिलाक सरलीकरण थिक। उपन्यास-रचनाक विश्लेषक लोकनि साफ-साफ एहि बात सँ नासकार जयताह जे कथानकक गति कें मन्द क'क' हँसी-मजाकक प्रसंग कें विस्तार देल जाय तँ से उचित थिक। एना कयनें उपन्यासक मूल केन्द्र विशृंखल भ' जयतैक जे रचनाक उद्देश्य धरि कें खण्डित क' देत। दोसर बात, कथा-गतिक मन्द भेने पाठकक इन्वॉल्वमेन्ट टूटि जयतैक, जकर असरि दूतरफा हेतै--एक तँ ओकरा तृप्ति नहि भेटतै, दोसर प्रभावकारी तरीका सँ ओकरा लग कथ्यक संदेश नहि पहुँचि पौतै। हँसी-मजाक नीक चीज भ' सकैए मुदा एक सफल उपन्यास मे तकर कते धरि प्रयोग उचित, से तँ अवश्ये विचारणीय थिक। अभावपूर्त्तिक सम्बन्ध मे जे बात कहल गेल अछि, हमरा लगैए जे सैह जँ सत्य रहैत तँ एहि उपन्यास कें 'लोकप्रिय उपन्यास' तँ कदापि नहि होयबाक चाहैत छल।

विचारणीय थिक जे उपन्यास मे कथा-गतिक अभाव किए बुझाइत अछि? सही बात ई अछि जे उपन्यास मे ई अभाव वस्तुतः बुद्धिजीवी वर्ग सँ आयल पाठकक भ्रम थिक। ई भ्रम साधारण पाठक कें नहि छैक।

ई भ्रम एहि दुआरे उत्पन्न भेल जे उपन्यासक नाम 'कन्यादान-द्विरागमन' रहलाक कारण हमरा लोकनि एकरा वैवाहिक समस्याक उपन्यास बुझलिऐक

आ तखन हमरा लोकनि कें लागल जे ई तँ 'अढ़ाइ दिन मे पाभरि जमीन' चलबाक खिस्सा भ' रहल अछि। सौंसे 'कन्यादान' मे बुच्ची दाइ कतय-कतय छथि, मोन पाड़ल जाय, आ कथाक विकास मे हुनक कतेक योगदान छनि? सी. सी. मिश्राक प्रवेश कतय होइत अछि, आ कतय ओ टाट तोड़ि पड़ा जाइत छथि। आर बाँकी जे लोक सभ छथि से लोकनि कतेक अपन-अपन कथ्य आ व्यक्तित्वक कारण कथा-विकास कयलनि अछि आ कते बुच्ची दाइक बियाहक कारण--एहि सभ प्रसंग कें मोन पाड़ल जाय। बात बहुत साफ अछि जे कथ्य कोनो एकटा नहि अछि, आ जतेक जे छोट-छोट कथ्य सभ अछि, आ अन्ततः ओहि सागर मे जा क' मिलैत अछि, जे उपन्यासक केन्द्र-बिन्दु थिक--माने कि मैथिल समाजक गतिहत आ जड़ होयबाक कारण (आ निवारण) की?

भारतक शास्त्रीय आलोचना-पद्धतिक हिसाब सँ 'कन्यादान-द्विरागमन' एक महाकाव्य थिक, जकर रचना दू खण्ड मे कयल गेलैक अछि। दू खण्ड मे कयल गेलैए, ई बात गैरजरूरी; असली बात ई जे दूनू एक महाकाव्य थिक। ई बात बहुतो गोटे बहुतो ठाम लिखि गेलाह अछि। वस्तुतः जँ ई कहल जाय जे आधुनिक काल मे महाकाव्यक रचना गद्य मे होअय लागल अछि तँ तकर एक सटीक उदाहरण ई उपन्यास होयत। रामायण आ महाभारत हमरा लोकनिक जातीय महाकाव्य थिक। ओहि मे शास्त्रीय लक्षणक श्रेष्ठ निदर्शन भेटैत अछि। ई बहुतो रास अन्यान्य महाकाव्य सभक उपजीव्य सेहो थिक। एहि बात पर ध्यान देल जयबाक चाही जे रामायण-महाभारत मे मूलकथाक गति कतेक कम अछि। एक-एक उपकथा अपन सांगोपांगताक विकास कयने आगाँ बढ़ैत रहैत अछि आ तकर समाहार एक केन्द्रीय विषय-वस्तु लग जा क' होइत छैक। 'कन्यादान-द्विरागमन कें जखन हम आधुनिक कालक महाकाव्य कहैत छिऐक तँ से कहबाक पाछाँ बहत रास कारण हमरा लग अछि, मुदा ताहि सभ पर विचार करब एहि आलेख मे संभव नहि अछि। एहि ठाम मात्र हम ई इंगित करय चाहैत छी जे कथा-गतिक जे अभाव ('अभाव'क प्रयोग एहि ठाम 'ईषत्' अर्थ मे कयल गेल अछि, 'नञ' अर्थ मे नहि) एहि रचना मे भेटैत छैक, से वस्तुतः रचनाक महाकाव्यात्मक स्वभावक कारण भेटैत छैक।

'कन्यादान' आ 'द्विरागमन' कें बहुधा दू अलग-अलग उपन्यासक रूप मे एखन धरि चिह्नित कयल गेलैए। ओना सत्य ईहो जे स्वयं हरिमोहन बाबू सेहो 'द्विरागमन' कें 'कन्यादान'क द्वितीय भाग कहलनि आ समीक्षक लोकनि सेहो कथा-सूत्रक तर्कसंगत विकासक परिप्रेक्ष्य पकड़ि दुनूक विवेचन-विश्लेषण कयलनि। हमर ई विनम्र प्रस्ताव अछि जे वस्तुतः एहि दुनू नामक पोथी कें दू भिन्न रचना नहि मानि क' एक्कहि उपन्यासक दू अध्याय मानल जाय। कारण, हरिमोहन बाबू अपन एहि महाकाव्यात्मक स्वभावक रचना मे जे बात कहय चाहैत छथि, से वास्तव मे 'द्विरागमने'क अन्त मे जा क' अपन खिलावट प्राप्त करैत अछि। कथावस्तु कें आ कथाक नायक-नायिकादि कें मिथकीय स्वरूप आ पहिचान देब महाकाव्य-रचनाक एक आवश्यकता थिक। कथावस्तु मिथकीय चरित्र बनब' लगैए कन्यादानो मे, से ठीक, मुदा ओ अपन ठोस रूप द्विरागमन लग पहुँचिये क' काएम क' पबैए।

समकालीन समाजक कोनो चरित्र रचना मे आबि क' मिथकीय आकार ग्रहण क' लेअय, एहि लेल बहुत आवश्यक छैक जे सम्बन्धित चरित्रक जीवन सर्वांगीण रूप सँ रचना मे चित्रित भेल होइक। महाकाव्यक जे शास्त्रीय परिभाषा सभ देल गेल अछि ताहि मे 'जीवनक सर्वांगीण वर्णन' कें बहुत महत्त्व देल गेलैए। तहिना आधुनिक कालक उपन्यासक लक्षण निरूपित करैत सेहो एही बात कें जोर द' क' कहल गेल अछि। आब जँ हम एहि उपन्यास कें देखी आ ताकी जे बुच्ची दाइ आ सी. सी. मिश्राक जीवनक सर्वांगीण चित्रण की एहि रचना मे भेलैए तँ कदाचित हमरा निराश होअय पड़त। वस्तुतः जतबा वर्णन एहि नायक-नायिकाक भेलैए, तकरा सर्वांगीण तँ किन्नहुँ नहि कहल जा सकैए। से मुदा ने तँ हरिमोहन बाबूक इष्ट छलनि आ ने एहि उपन्यासक माँग थिक। ई उपन्यास वास्तव मे बुच्ची दाइ आ सी. सी. मिश्राक बारे मे नहि एहि खासमखास भूखण्ड मिथिला मे विद्यमान एक म्रियमाण सभ्यताक अन्तिम अवशेषक बारे मे अछि। उपन्यासक शैली जे ग्रहण कयने छथि हरिमोहन बाबू, सेहो एक कथा-भाषा सँ बेसी डोक्यूमेन्टेशन (दस्तावेजीकरण)क भाषा थिक। आ, जकरा कि 'जीवनक सर्वांगीण चित्रण' कहल गेलैक अछि, सेहो निश्चित

रूप सँ एहि सभ्यता-कथाहिक सन्दर्भ मे परखबाक चाही, कोनो पात्र वा चरित्रक सन्दर्भ मे नहि।

रचना-प्रकारक दृष्टि सँ जँ एहि उपन्यासक तुलना मे कोनो उपन्यासक नाम माँगल जाय, तँ फणीश्वरनाथ रेणुक उपन्यास 'मैला आंचल'क नाम लेब। (एहि दुनू उपन्यास मे प्रकारता-सामीप्यक अतिरिक्त आन कोनहु समानता नहि छैक, से कृपया ध्यातव्य) 'मैला आंचल' एक खास भूखण्ड मे एक खास कालखण्ड मे विद्यमान राग-द्वेष, प्रेम-भ्रातृत्व, मोह-लोभ, त्याग-बलिदान, धर्म-अधर्म, उतार-चढ़ावक कथा थिक, जकरा केन्द्रीय रूप सँ प्रेम-कथाक बाना मे प्रस्तुत कयल गेल छैक। ठीक एहिना जेना 'कन्यादान-द्विरागमन' मे एक खास भूखण्ड पर एक खास कालखण्ड मे विद्यमान एक खास सभ्यताक सर्वांगीण वर्णन भेल अछि। आ ताहि सभ सूत्र कें एक केन्द्रीय बाना मे गाँथि क' प्रस्तुत कयल गेल अछि आ ओ थिक-वैवाहिक कथा। 'मैला आंचल'क चित्र-फलक जें कि बहुत पैघ छैक, विस्तार आर सर्वांगीणता सेहो एहि मे बेसी छैक।

हरिमोहन बाबूक जतबा जे व्यंग्य-कृति हमरा सभ कें उपलब्ध अछि, तकरा मोटा-मोटी तीन विधाक अन्तर्गत राखल जा सकैए-उपन्यास, कथा आ गप्प। आधुनिक समयक एक महान व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जेना निबन्ध विधा मे अधिकाधिक लेखन कयलनि, तेना हरिमोहन बाबू नहि क' सकलाह। तकर मूल कारण ई जे ओ मूलतः एक खिसक्कड़ द्रष्टा छलाह जखन कि परसाई जी एक विचारमग्न द्रष्टा। परसाई जी कें खिसक्कड़ी पर एहन गहन आ गहियाजोर पकड़ नहि छलनि आ उदास-परेशान बुद्धिजीवीक बाना हुनका सतत आकृष्ट करैत रहलनि। एकर एकदम विपरीत, हरिमोहन बाबू हँसी-मजाक करिते-करिते चित्त क' देबाक चतुर बाना मे रहलाह। भौतिक कारण सेहो अलग-अलग भेल--परसाई जी अखबार मे कॉलम लिखलनि आ हरिमोहन बाबू प्रोफेसरी कयलनि।

अस्तु, निबंध तँ ओ नहि लिखलनि, तखन हुनक रचनाशीलताक जे विकास भेल जे क्रमशः उपन्यास सँ शुरू होइत, कथा द' क' बढ़ैत, 'गप्प' नामक अद्‌भुत विधा धरि पहुँचल। एहि तीनू विधा मे जे व्यंग्यक उपस्थापन, स्वभाव आ प्रभाव मे उत्तरोत्तर अन्तर अबैत गेल अछि, तकर

विश्लेषण करब बहुत रोचक होयत। एहि विषय पर फराक सँ आलेख तैयार कराओल जयबाक चाही।

हरिमोहन बाबूक व्यंग्य बहुत पीड़क आ सघन अछि। ओ इशारा क'क' बात कह' बला आ ताही सँ सन्तुष्ट भ' गेनिहार व्यंग्यकार नहि छथि। हुनक प्रहार बहुत जोरगर होइत अछि। तें, अपन व्यंग्य सभ मे ओ अतिवाद धरि उतरि अबैत छथि। हुनक एहि अतिवाद पर बहुतो गोटे समय-समय पर आपत्ति करैत रहलाह अछि। लक्ष्य-वर्ग जे अछि (जकरा पर ओ व्यंग्य कयलनि) तकर आपत्तिक तँ कोनो अर्थे नहि अछि, यद्यपि कि तकरहु महत्त्व नहि देल गेल। जेना, किरण जी देखौलनि जे हरिमोहन बाबूक लेखन मे करुणाक घनघोर अभाव अछि, जाहि कारणें हुनक साहित्य मे उदात्त तत्त्व प्रस्फुटित नहि भ' पाओल अछि। एहि बातक परीक्षण सेहो बहुत धैर्य आ विस्तार सँ कयल जयबाक चाही जे करुणा-तत्त्वक अभाव जँ अछि तँ से कोन प्रकृति व प्रकारक अछि तथा कोन-कोन रूपें ई उदात्त तत्त्व कें प्रस्फुटित होयबा मे बाधा उत्पन्न कयलक अछि तथा ईहो जे कोन कारण सँ एकर अछैत हुनक रचना सभ लोकप्रिय, ग्राह्य तथा महत्त्वपूर्ण भ' सकल। हमरा बुझाइत अछि जे वस्तुतः करुणा आ सदिच्छा--यैह दुनू हुनक लेखनक मूल हेतु थिकनि। करुणा, जकर कि मूल दुख थिक, हुनक रचनाक प्रेरक तत्त्व सेहो थिकनि। मुदा से ततबे धरि, जतबा कि मकानक न्यौं होइत अछि, जे कि माटि तर गड़ल रहबाक कारणें देखाइ नहि पड़ैत अछि। हुनक कोनहु टा रचनाक कथ्याणु (कथ्य+अणु) पकड़ि लिय', स्पष्ट भ' जायत जे कोनहु पीड़ा, कोनहु दुख कें अभिव्यक्त करबाक लेल रचना कयल गेल अछि। जेना कि 'कन्यादान'। अनमेल विवाहक एक पीड़ा अछि, जे कि रचना बनि क' फूटल अछि। मुदा, अद्‌भुत छथि हरिमोहन बाबू। भावलोक-प्रक्षेपण हुनका मे ततेक बेसी छनि जे कम्मे ठाम भेटत। एखन तुरन्त एक भावलोक मे छथि, आ तुरन्ते प्रक्षेपण क'क' सर्वथा विपरीत भावलोक मे प्रवेश क' जयताह। आ अजब अद्‌भुतता हुनक ई थिकनि जे एहि विपरीत भावलोक मे ओ बड़ी-बड़ी काल धरि, बहुत-बहुत पन्ना धरि, नमहर-नमहर प्रसंग धरि बनल रहि सकैत छथि। यैह कारण थिक जे दुख आ पीड़ा सँ जनमल हुनक रचना मे करुणाक लेशमात्र कतहु नहि देखाइत

अछि। लगातार व्यंग्य, लगातार विकृति-दर्शन, आक्षेप, छिद्रान्वेषणक आवरण ल'क' हँसी-मजाकक माहौल ओ बनौने रहि सकैत छथि। हुनक रचनाक जे ई प्रकृति अछि, से हुनक व्यक्तित्व मे सेहो गह-गह भरल रहनि। एहि विपरीत भावलोकक चित्रण मे सेहो जे एक वस्तु बरोबरि जड़ि दिस, प्रकृत भाव दिस, करुणा दिस संकेत करैत रहैत अछि, से थिक-रचना मे अनुस्यूत सदिच्छा। सदिच्छा हुनक लेखन कें उदात्त मूल्य देनिहार एक प्रधान कारक थिक।

'कन्यादान'क रचनाकाल मे हुनका लग दू टा सभ्यता छलनि, जकर प्रवेश आ आच्छादन ओहि समाज मे छलैक, जकरा ओ रचना-भूमि बनौलनि। एक छल देसी सभ्यता आ दोसर अँगरेजिया सभ्यता। 'कन्यादान' आ 'द्विरागमन' मे बहुत साफ-साफ एहि दुनू टा सभ्यता कें बोकियाओल गेल अछि। दुनू टाक अपंगता, पाखण्डपनी आ आडम्बर एक संग उद्घाटित भेल अछि। हरिमोहन बाबूक खूबी छनि जे हुनका लग मे कोनहुँ चीज कखनहुँ 'छोट' नहि रहैत छनि। क्यो जँ बूड़ि अछि तँ छोट बूड़ि भेने हुनक साहित्य मे स्थान भेटब कठिन। धूर्त जँ क्यो अछि हुनक साहित्य मे तँ बड़ा भारी। मूर्ख जँ अछि तँ प्रचण्ड मूर्ख। पाखण्डी अछि तँ महान पाखण्डी। एही हिसाबक अनुसार देसी आ अंगरेजिया-दुनू संस्कृति महा अनर्थकारी बनि क' एहि उपन्यास मे प्रकट भेल अछि। दू मे सँ ककरो पक्ष मे हरिमोहन बाबू नहि छथि। तँ की ओ 'निहिलिस्ट' (सर्वनकारवादी) छथि? नहि, किन्नहुँ नहि। एही ठाम हुनक 'सदिच्छा तत्त्व'क महत्त्व बुझबा मे अबैत अछि। सही बाट, जे कि ओ इंगित कर' चाहैत छथि, एहि दुनू ओरछोरक बीच मे कतहु अछि-मज्झिम निकाय-मध्य मार्ग जकाँ। हुनक उपन्यासक ई खूबी अछि जे कथाक इष्ट ओर अथवा छोर पर नहि, कतहु बीच मे निहित अछि। एहि तरहक उपन्यास दुर्लभ अछि।

हुनक कथा मे मुदा, ई विशेषता नहि भेटत। मैथिली आ अंग्रेजीक बीच उठापटक तँ हुनक सम्पूर्ण साहित्य मे अछि, मुदा हुनक कथा सभ मे इष्ट बिन्दु मध्य मे नहि, छोर पर छैक। ओ सदरिकाल 'देसी' कें ध्वस्त करैत छथि आ 'अँगरेजी' (आधुनिकता) कें उत्साहित। तें, सभ्यताक जे सन्तुलन कन्यादान-द्विरागमन मे छैक, से कतहु आन ठाम नहि। परवर्त्ती

गप्प-लेखन मे तँ आरो निंघटि गेल अछि आ ओ खुलि क' आधुनिकताक पक्ष मे सिपाही जकाँ लड़' लगलाह अछि।

जाहि हिसाब सँ ई सन्तुलन-मात्रा घटल गेल अछि ताही हिसाब सँ ओ 'लाउड' होइत गेलाह अछि। कहल ईहो जा सकैत अछि जे जें कि ओ उत्तरोत्तर लाउड होइत गेलाह अछि, तें ई सन्तुलन-बिन्दु घटल गेल अछि।

आ, जे हम कहलहुँ, न्यों मे स्थापित पीड़ाक मादे, सेहो सन्तुलन-मात्रहिक हिसाबें अपन भंगिमा देखबैत अछि। जतेक बेसी सन्तुलन, ततेक बेसी करुणाक झलक--ई हुनक सन्दर्भ मे साँच प्रतीत होइत अछि। तें, हमरा लगैत अछि जे जे क्यो हुनक रचना मे करुणाक अभाव देखैत छथि, से वस्तुतः हुनक परवर्त्ती लेखन कें देखि क' अपन मन्तव्य बनबैत छथि।

दुख अछि, दुखक कारण अछि आ दुखक निदान अछि--ई बात कहियो बुद्ध कहने छलाह। ओ ई बात अपन अवलोकन आ निष्कर्षक आधार पर कहने छलाह। सुच्चा-सुच्ची आधुनिक सन्दर्भ मे हरिमोहन बाबू सेहो यैह बात कहैत छथि। अधिक जोर हुनक छनि--दुखक कारण पर। दुखक जे कारण सभ अछि, से हास्यास्पद अछि। हमरा लोकनि कें तें, हुनक रचना पढ़ि-पढ़ि हँसी लगैत अछि। हमरा लोकनि बिसरि जाइत छी जे जे 'दुख'क कारण अछि, सैह हमरा सभ कें हँसा रहल अछि। ई हरिमोहन बाबूक जादू, हुनक सम्मोहन थिकनि। जाहि तरहें अपना व्यक्तित्व मे आ भावलोक मे ओ पलछिन मे प्रक्षेपण क' जाइत छलाह, तहिना अपन पाठको कें प्रक्षेपण क' जयबा लेल बाध्य क' दैत छथि। एकरा जादू छोड़ि क' आर की कहबैक जे जाहि बात पर हमरा कनबाक चाहैत छल, ताहि बात पर हम हँसैत छी। ई विधेय?

समाजशास्त्री लोकनि, समीक्षक लोकनि कहैत छथि जे जाहि दुनियाँक चित्रण हरिमोहन बाबू कयलनि, से दुनियाँ बदलि गेल। नहि, नहि। दुनियाँ कहाँ बदलि गेल? भौतिक तौर-तरीका बदलल अछि, लोक तँ ओहिनाक ओहिना अछि। बुच्ची दाइ जँ अंग्रजी पढ़ि-लिखि गेलीह तँ कत' पहुँचलीह? रेवतीरमणक कनिञे धरि की ने? (मानसिक आ चारित्रिक स्तर पर) आ सी. सी. मिश्रा जँ घुरि अयलाह तँ कतय घुरलाह? रेवतीरमणे लग कि ने? नहि नहि। दुनियाँ भने बदलि जाउक, लोक नहि बदलल। जाहि भूखण्डक

जाहि समाजक चित्र हरिमोहन बाबू देखौलनि अछि-डायलॉग आ सिचुएशन भनें बदलि जाउक--कथा लिखल जायत तँ एखनहुँ एहिना लिखल जायत।

मानसिक आ चारित्रिक तल पर जाहि उदात्तताक स्थापना लेल आकुल होइत हरिमोहन बाबू कलम पकड़लनि, तकर स्थापना एखनहु नहि भेलैक अछि। हुनक आकुलता एक सार्वकालिक आकुलता थिक। शिव-सुन्दरक स्थापना लेल ककरहु हृदय मे उठल आकुलता सदा सार्वकालिक आकुलता होइत अछि। आ, एहि प्रकारक रचनाक पुनर्मूल्यांकन तँ युग बदलला पर जरूर कयल जयबाक चाही, कारण पुनर्मूल्यांकने हमरा बदलल परिवेशक संग सामंजनक बाट सुझाओत, मुदा एहि प्रकारक रचनाक प्रासंगिकताक विषय मे कहियो चिन्तित नहि होयबाक चाही। मिर्जइ-पागक बदला मे सूट-टाइ पहिरि लेने जेना जड़ता आ गतिहतताक निवारण नहि भ' जाइछ, तहिना विश्वास-युग सँ विज्ञान-युग (?) मे चल अयने उदात्तताक प्रासंगिकता नहि बदलि जाइछ।

(दू)

हरिमोहन झा, एक पिछड़ल आ गतिहत समाज मे स्त्रीक जे विडम्बना होइत छैक, तकर आख्यान सँ अपन साहित्य-यात्रा शुरू केने छलाह। 'कन्यादान' सेहो सैह छल। एकर अधिकांश भाग 'मिथिला' (सम्पादक बाबू भोलालाल दास) मे छपल छल। 'मिथिला'क प्रथमे अंक मे हरिमोहन झाक एक लेख छपल रहनि- 'स्त्री शिक्षाक वर्त्तमान दशा।' लेखक शीर्षके सँ हुनक चिन्ता आ प्रतिबद्धता स्पष्ट अछि, जखन कि तहिया ओ मात्र एकैस बर्खक नौजबान छलाह। स्त्री शिक्षाक जे तहिया दशा छल, स्वाभाविक थिक जे बुच्ची दाइ (कन्यादानक नायिका)क कथा कें पढ़ि सकबाक आ ओकर मर्म धरि पहुँचि सकबाक स्थिति, मिथिलाक बुच्ची दाइ लोकनिक (मैथिल स्त्रीगणक) नहि छलनि। आइ समय कोना बदलि गेल अछि, तकर एक बड़ सुन्दर चित्र प्रभास कुमार चौधरी अपन टिप्पणी ('प्रवासी'क हरिमोहन झा-विशेषांकक सम्पादकीय) मे एहि तरहें प्रस्तुत केलनि अछि- *'अपन सहज हास्य-विनोद दिस प्रवृत्त मनोवृत्तिक कारणें ओहू दिन मे आ आइयो बेसी मैथिली पाठक आ लेखको एकरा मनोरंजक*

साहित्यक रूप मे लैत अछि, गम्भीर साहित्यक रूप मे नहि। तकर कारण छैक जे जाहि बुच्ची दाइ सभक लेल ओ भविष्यक कथा लिखलनि, ओ ताहि दिन मे ओतेक पढ़लि-लिखलि आ बौद्धिक रूप सँ विकसित नहि रहथि जे ओकर मर्म कें बुझितथि आ आइ ततेक पढ़ि-लिखि गेल छथि जे द्विरागमनोक बुच्ची दाइ सँ बहुत बेसी (आगाँ) निकलि गेल छथि आ आधुनिकताक नाम पर अपन मैथिल संस्कृति आ परम्परे कें बिसरि त्यागि देने छथि। तें ओहू दिन मे ओ हरिमोहन बाबू कें क' ट' क' मनोरंजनक लेल पढ़ैत छलीह आ आइयो क' ट' क' (शिक्षिता होइतो मैथिली पढ़बा मे असुविधा होइत छनि।) पढ़ि जाइत हेती।' मुदा, ई कथन परिस्थितिक एक सीमाबद्ध आ निगेटिव पक्ष कहल जा सकैत अछि। पॉजिटिव पक्ष ई थिक जे यत्किंचिते सही मिथिला-समाजक आधुनिकीकरण भेल।

'कन्यादान'क रचना-काल मे जे मैथिल लोकनिक स्थिति छलनि, तकर एक झांकी काञ्चीनाथ झा 'किरण'क लेख 'हास्यरसक मूल कारण : एक विवेचन' मे एहि तरहें आएल अछि- *'मैथिल-समाजक सामाजिक जीवन गत डेड़-दू सय बर्ख मे बड़ सांकड़ भ' गेल छल। 'अपन' शब्दक परिधि ततेक छोट भ' गेल जे सहोदरो भाय-बेटो ओहि परिधिक भीतर नहि रह' पाबैक। संगहि, कर्महीनताक तँ राज्य छल, बैसल खायब, परसिरे खाइत बैसल रहब मज्जागत स्वभाव भ' गेल रहय। अकर्मण्य समाजो मे, अनका सँ श्रेष्ठ कहयबाक प्रवृत्ति तँ प्रकृत्या रहिते छैक मुदा काज तँ ओ करत नहि, गुण अरजत नहि, तखन तँ उपाय बचै छै एके टा, आन सभ धसि जाय तँ ओ श्रेष्ठ अनायासे बनि जायत। .....परिणामस्वरूप अपन श्रेष्ठता सिद्ध करबाक एकमात्र साधन रहय आनक अहित।'*

मैथिल समाज मे परिवर्त्तन जे दिशा अकानल गेल छलैक, जे कि नवजागरणक परिणाम-स्वरूप छल, तकर आकलन डॉ. किरण एहि तरहें केलनि अछि- *'जँ जँ मैथिल समाजक चिन्तन-धारा बदलत, 'अपन' शब्दक परिधि पैघ होयत, तँ तँ स्नेह ओ सहानुभूतिक क्षेत्रक विस्तार भेल जायत, संगहि लोक कर्मठ होयत, गुणक अर्जन करैत जायत तँ अपना मे हीनता नहि पाओत आ निन्दा-कुचेष्टा द्वारा आनक अपकर्ष-ज्ञापन करबाक प्रवृत्ति कम भेल जयतैक।'*

अठारहम-उनैसम शताब्दीक डांग सँ डेंगाओल मैथिल सभ्यता कें जखन हम 'म्रियमाण सभ्यता' कहैत छी तँ तकर यैह सन्दर्भ थिक। एकर म्रियमाणता, नवजागरणक सापेक्ष थिक। 'जीवनेच्छाक अभीप्सा' नवजागरण-तत्त्व कें ग्रहण करबाक उद्यम थिक, जकर संकेत डॉ. किरणक उपर्युक्त उद्धरण मे देखल जा सकैत अछि।

मिथिलाक सामाजिक नेतृवर्ग पुरातनपंथी छल। 'पुराणमित्येव न साधु सर्वम्' (पुरान रीति सदैव नीके हो, से बात नहि)- एहि मान्यता पर विश्वास नहि करैत छल आ नवाचारक प्रति शत्रुता-भाव सँ भरल छल। दोसर दिस, ई लोकनि प्रकृति सँ परम स्वार्थी आ परजीवी होइत छलाह। राजसत्ताक समर्थन प्राप्त छलनि, ताहि मे दुनूक अपन-अपन स्वार्थ छल। एहना मे 'पुराण'क प्रति आत्मिक प्रतिबद्धता हिनका लोकनि मे होइनि, सेहो नहि छल। 'जे दिअय दही चूड़ा तकरे दिस' बला स्थिति छल। हिनका लोकनिक चारित्रिक छद्म एकदम फड़िच्छ छलनि। 'कन्यादान'क रचना-काल मे समुच्चा भारत मे नवजागरणक लहरि उठल छल। पड़ोसी बंगाल एकर केन्द्र बिन्दु छल। मुदा, मैथिल नेतृवर्गक जे रुखि छलनि तकर वर्णन हरिमोहन झा, ओही कालखण्डक एक कविता मे एहि तरहें केलनि अछि-

बाहर बाजथि तिलक प्रथा कें विष-सन जानू।
घर मे बाजथि, दुइ हजार सँ कम नहि आनू।।
बाहर बाजथि छुआछूत कें शीघ्र हटाउ।
घर मे बाजथि ई चमैनि थिक, दूर भगाउ।।

तहिना, हरिमोहन झा स्पष्ट लिखलनि अछि जे धर्म वा परम्परा सँ हुनका बैर होइनि से बात नहि, ओ कहैत छथि- *'हमरा ज्योतिष सँ एक आड़ि खेत नहि। ने धर्मशास्त्र सँ कोनो शत्रुता अछि। विज्ञान और धर्म सँ ककरा शत्रुता हेतैक? परन्तु, जहाँ अनुष्टुप छन्द गढ़बाक लेल लाइसेन्सक प्रयोजन नहि और कोनो श्लोकबद्ध वचन शास्त्रक नाम पर चलाओल जा सकैत अछि, तहाँ सत्य ओ मिथ्याक विवेचना करब विद्वानक कर्त्तव्य थिक।'* ('प्रणम्य देवता'क भूमिका) कहब आवश्यक नहि जे 'बिना लाइसेन्सक रचल' यैह श्लोकबद्ध वचनामृत सभ शास्त्रक रूप धारण कए

मैथिलक सामाजिक जीवनक नियमन करैत छल। एहना स्थिति मे आत्मविश्वास दुनू दिस समाप्त छल-आँखि मुनने शास्त्रक अनुसरण करैबला मैथिल समुदाय मे सेहो आ सत्यनिष्ठा सँ रहित छद्मजीवी नेतृवर्ग मे सेहो।

दरभंगा महाराज ने मात्र 'मिथिलाक राजा' छलाह अपितु 'सभ्य समाज'क प्रधान सेहो छलाह। 1930 मे जखन गोलमेज सम्मेलन मे महाराज कामेश्वर सिंह यूरोप जेबाक निर्णय केलनि तँ सभ्य समाज खलबला उठल। तकर कारण छल जे समुद्र-लंघन शास्त्र-वर्जित छल। महाराज मुँहपुरुख पण्डित लोकनिक समक्ष अनेक तर्क रखलनि मुदा से सभ निष्प्रयोजन साबित भेल कारण परम्परानिष्ठ पण्डित लोकनि कें भय छलनि जे एक बेर जँ महाराज द्वारा समुद्र लंघन क' लेल गेल तँ परम्परावादी मैथिल धर्मक दुर्ग धराशायी भ' जेतैक आ तकर देखादेखी, सनातन धर्म मे जे कोनो रीति पवित्र आ मान्य मानल जाइछ, सभक अस्तित्व खतरा मे पड़ि जेतैक। मुदा महाराज यूरोप जाएब नहि छोड़लनि, से बहुत हद धरि हुनक आधुनिकतावादी रुझान आ भविष्यक भारतीय राजनीतिक प्रति उत्साहक प्रमाण छल। घरेलू राजनीति क' क' ओ पण्डित लोकनिक एक तबका कें अपना समर्थन मे ल' अनलनि, प्रभावशाली नेता लोकनिक संग गुप्त बैसार केलनि। हुनका प्रस्थान केलाक बाद, हुनका विरोध मे कोनो प्रदर्शन नहि हुअ' पाबय, ताहि लेल कांग्रेस कमिटी आदि कें जायज-नजायज हजारो टाका देलनि। मुदा, 1931 मे हुनका घुरला पर, भीषण झंझावात हुनक प्रतीक्षा क' रहल छल। परम्परावादी मैथिल ब्राह्मण लोकनिक मत मे, महाराज अपना कें स्वयं जाति-बहिष्कृत क' लेने छलाह। उजान गामक ब्राह्मण लोकनि हुनका संग भोजन करबा सँ इनकार क' देलकनि। सार्वजनिक भोजक हुनक निमन्त्रण कें लोक नहि स्वीकार केलक। कैक ठाम तँ निमन्त्रण-पत्र कें फाड़ि क' गन्दा जगह पर फेकि देल गेल वा तकरा कुकूरक नाङरि मे बान्हि देल गेल। महाराजक भनसिया हुनकर भानस रान्हबा सँ इनकार क' देलक। मुदा, महाराज एहि सभ सँ उग्र नहि भेलाह आ बहुत धैर्य आ विवेकक संग एहि समस्त विरोधक सामना केलनि। सामाजिक परिवर्त्तनक दृष्टिकोण सँ एकर बहुत सकारात्मक

प्रभाव पड़ल। समुद्र-लंघनक पक्ष आ विपक्ष मे छपल लेख सभ सँ तत्कालीन मैथिली पत्रिका भरल अछि। 'कन्यादान' मे सेहो स्वदेशी-बिलैंतीक एहि झगड़ाक झलक आएल अछि जतय हमरा लोकनि देखैत छी जे विवाहक हकार देबा मे किछु टोल कें छोड़ि देल जाइत अछि।

वैकल्पिक प्रस्तावक आधारशिला छल--आधुनिकता आ नवाचारक वरण। ई व्यापक भारतीय नवजागरणक प्रभाव छल, यद्यपि कि ई प्रभाव बहुत विलम्ब सँ, लगभग एक सय बर्ख पछाति, मिथिला मे प्रत्यक्षतः प्रकट भेल। शास्त्रार्थक लेल मिथिला शुरुहे सँ सुप्रसिद्ध छल। मुदा, एहि मे पक्ष आ विपक्ष, दुनू शास्त्रेक अनुगामी होइत रहय, 'जीवन'क नहि। हरिमोहन झाक पक्ष तेसर छलनि, जाहि मे आधुनिकता आ नवाचारक समर्थन छल। सुधारवादी धाराक कथा-साहित्य हुनका सँ पहिनहि सँ मैथिली मे लिखल जा रहल छलै। स्वयं हुनक पिता जनार्दन झा 'जनसीदन' दूटा उपन्यास- 'निर्दयी सासु' (1914) तथा 'पुनर्विवाह' (1926) लिखने रहथि, जाहि मे सुधारवादक प्रत्यक्ष समर्थन छल। हरिमोहन झाक साहित्य कें सेहो सुधारवादी धाराक साहित्य मानल जाइत छनि। मुदा देखबाक थिक जे पूर्वक सुधारवाद सँ हुनक सुधारवाद कोन अर्थ मे भिन्न छल? पूर्वक रचनाकार लोकनि धर्मशास्त्रक सीमा में रहिए क' सुधार चाहैत छलाह। एहि सीमाक भीतर रहैत जतबा आधुनिकीकरण भ' सकौ समाजक, ततबे हुनका मान्य छलनि। एहि सीमा कें हरिमोहन झा तोड़लनि। ओ धर्मशास्त्र पर प्रहारात्मक रुख अपनौलनि। हुनका साहित्य में तर्कवाद आ बुद्धिवादक सर्वोपरि मूल्य छनि। अपन उपन्यास मे ओ सामाजिक विडम्बना कें अतिरेकक संग प्रस्तुत केलनि। ई आँखि मे आँगुर भोंकि क' यथार्थ देखेबाक प्रयत्न छल। एहि आशयक बात हरिमोहन झा अपनो कहने छथि। 1956 में आयोजित प्रथम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलनक कथा विभागक सभापति-पद सँ व्याख्यान दैत 'कन्यादान' क मादे ओ कहने छला - *'कन्यादान एक गम्भीर समस्या कें समाजक आँखि मे आँगुर दए धार्मिक रूप सँ प्रदर्शित केने छल।'*

'कन्यादान'क विषयवस्तुक एक संक्षिप्त सूचना एहि पोथीक 'समर्पण' सँ भेटैत अछि। समर्पण कोनो व्यक्ति कें नहि, समाज कें कएल गेलैक

अछि। जाहि समाज कें पोथी समर्पित अछि, तकर चरि गोट विशेषता लेखक बतौने छथि- (1) कन्या कें जड़ पदार्थवत दान कय देबा मे जे कुण्ठित नहि होइत अछि। (2) बेटा आ बेटी मे अन्तर करैत जे बेटी कें हेय बुझैत अछि। (3) सुखी दाम्पत्य-जीवन लेल पति-पत्नीक बौद्धिक धरातलक एकरूपता पर जे विचार नहि करैत अछि। (4) शारीरिक स्तर पर पति-पत्नीक समानताक आवश्यकता जे नहि बुझैत अछि। स्पष्ट अछि जे चारू बिन्दु वैवाहिक जीवन आ तकर समस्या सँ जुड़ल अछि। प्रश्न अछि जे कोनो समाज एहन किऐक अछि जे एना करैत अछि। मानसिक संरचनागत अपन दोषेक कारण ने? तकरे चिन्हार आ देखार करबाक चेष्टा हरिमोहन झा केलनि अछि। स्वाभाविक थिक जे एहि अध्ययनक क्रम मे लेखक 'समाज-अध्ययन' केलनि अछि। मोहन भारद्वाज अपन लेख 'समाज-अध्ययन अनिवार्य विषय थिक' मे एहि बिन्दु पर विस्तार सँ विचार केने छथि। ओ तँ एहि उपन्यासक व्याप्ति तते पैघ मानैत छथि जे एहि *'उपन्यासक आधार पर तत्कालीन मिथिलाक इतिहास लिखल जा सकैत अछि।'*

मैथिलीक प्राध्यापक-समुदाय मे हरिमोहन झा 'हास्य सम्राट'क विरुद सँ विभूषित कयल गेलाह। यथार्थ सन्दर्भ मे देखल जाय तँ हरिमोहन झाक लेल ई विरुद अवमाननाजनक छल आ हुनक व्याप्ति कें छोट करबाक मंशा सँ प्रदान कएल गेल छल। ई हुनक कथ्यक धार कें कुन्द करबाक लेल छल वा तकरा अछोप बनौने रखबाक लेल। पण्डित-समुदाय हुनका 'स्वच्छन्द प्रोफेसर' कहलकनि, तकर तात्पर्य छल जे मैथिल संस्कृति लेल ओ विनाशक तत्त्व छथि। हुनका पर आरोप लगाओल गेलनि जे मैथिली-साहित्य कें ओ 'कन्यादान' लिखि क' भ्रष्ट केलनि अछि, जेना कि 'पारो' (यात्री)क प्रकाशनक बाद पण्डित त्रिलोकनाथ मिश्रक एहि प्रतिक्रिया मे देखल जा सकैत अछि-

स्वच्छन्द प्रोफेसर हाथ-पैर-दन्तावलि पूर्वहि तोड़ि देल।
दुर्भाग्य सँ सम्प्रति मैथिलीक 'पारो' कपारो फोड़ि देल।।

'कन्यादान' उपन्यासक जे पात्र--बुच्चीदाइ, सी. सी. मिश्रा, लालकका, बुचकुन चौधरी, बटुकजी, झारखंडीनाथ, लालकाकी, फुचुक रानी आदि

तत्कालीन मैथिल ग्रामीण लोकक प्रतिनिधित्व करैत छथि। हिनका लोकनिक जे कोनो छोट-पैघ कृत्य उपन्यास मे वर्णित भेल अछि, से समाजक एक दैनन्दिन घटना छल। एहि मे हास्य उत्पन्न करबाक लेल कोनो 'करतब' कएल गेल हो, तेहन कोनो बात नहि छल। तखन, उपन्यासक जे एक अनिवार्य तत्त्व थिक घटनावलिक संयोजन, से तँ आवश्यके छल। एहि परिस्थिति मे एकरा हास्य उपन्यास कहल जाएब शुद्ध रूप सँ लक्ष्य-समुदायक कुटिलता छल। आब ओ युग बीति चुकल अछि। ओहन चरित्र सभ आब दुर्लभ भेल छथि। एहना मे जँ नबका पीढ़ी कें एहि चरित्र सभक क्रियाकलाप हास्यपूर्ण लीला देखार पड़ैत छैक, तकरा ऐतिहासिक अवबोधक अभावे मानल जेबाक चाही।

हरिमोहन झाक एहि उपन्यास कें एहि अर्थ मे एक 'महान कृति' कहल जा सकैत अछि जे अध्ययनक अनिवार्य शर्त्त--साक्षर हएब--के सीमा धरि कें ई तोड़ि देलक, ततेक लोकप्रिय भेल। साधारण 'पाठक' (?) जे निरक्षर छल, सेहो अनका सँ पढ़बा-पढ़बा क' एहि उपन्यासक आनन्द लेलक। एखनो गाम-घर मे बहुतो एहन बुजुर्ग भेटि जाइत छथि, जनिका ने तँ अक्षर-ज्ञान छनि आ ने ओ 'कन्यादान' फिल्म देखने छथि मुदा 'कन्यादान'क पात्र सभ सँ आ घटना सभ सँ परिचित छथि। एहि कोटिक पाठक लोकनि कें भने ओ साक्षर रहथु वा निरक्षर, एहि उपन्यासक कथा-गति मन्द रहबाक शिकाइत कहियो नहि रहलनि।

साहित्यक क्षेत्र मे ई एक सर्वप्रचलित मान्यता जकाँ छैक जे कोनो कृति द्वारा समस्या कें ओकर सर्वांगता मे प्रस्तुत क' देबे पर्याप्त अछि, ओकर समाधान तकबाक दिशा मे लेखक कें प्रवृत्त हेबा सँ बचबाक चाही। कारण, समस्या स्वयं अपना भीतर समाधान कें धारण केने रहैत अछि आ ई साहित्य-विधाक अपन खास विशिष्टता छिऐक जे अपन प्रकृति सँ ओ सामाजिक होइत अछि आ कृति मे वर्णित समस्या अलग-अलग पाठक कें अपना-अपना हिसाबें समाधान तकबाक लेल प्रवृत्त करैत छैक। ई साहित्यक अपन स्वायत्तता थिक। 'कन्यादान' स्वयं मे एक समस्यामूलक कृति थिक आ एकर अन्त सेहो एकटा प्रश्नचिह्नक संग भेलैक अछि- 'एकर उत्तरदायी के? एहि उपन्यास मे समाधान तकबाक जें कि कोनो

प्रकट प्रयत्न नहि भेलैक अछि, ई अनेकविध समाधान सँ युक्त अछि। एकर विपरीत परिस्थिति हमरा लोकनि 'द्विरागमन' मे देखैत छी, जतए लेखक समाधान तकबा लेल व्यग्र देखाइत छथि आ अन्ततः ताकबा मे सफल सेहो भेल छथि। मुदा, ई समाधान एक व्यक्ति--हरिमोहन झा--क व्यक्तिगत समाधान छिऐक आ तें कृति कें सीमाबद्ध सेहो करैत छैक आ मतान्तरक गुंजाइश सेहो बनबैत छैक। हरिमोहन झा सेहो एहि बात कें गछने छथि। साहित्य सम्मेलन (1956) मे बजैत ओ ईहो कहने छलाह जे *'कन्यादान' समस्यामूलक उपन्यास अछि और ओकर अन्त छैक प्रश्नवाचक चिह्न मे। 'द्विरागमन' सँ ओहि प्रश्नक समाधान नहि होइत छैक।'*

हरिमोहन झा अंग्रेजी पढ़ल-लिखल पहिल पीढ़ीक पहिल पैघ रचनाकार छलाह। मैथिल संस्कृतिक रूढ़ि आ निर्घेंस कें देखार करबाक प्रवृत्ति हुनका साहित्यक प्रधान लक्षण थिकनि। एहना मे, हुनका सँ अपेक्षा कएल जा सकैत छल जे एहि समस्त रूढ़िक विरूद्ध ओ प्रगतिक एक प्रतिमान ठाढ़ करताह। स्वाभाविके ई आशा कोनो आधुनिक-शिक्षित पात्रक रूप मे हेबाक चाहैत छल। ई पात्र छला--सी. सी. मिश्रा। हुनक व्यक्तित्वक उत्थरपन ततेक अतिरेक मे शुरूहे सँ अभिव्यंजित होइत रहल अछि, से अन्ततः हुनका माध्यम सँ ताकल समाधान एक मिथ्या आयास बनि क' रहि जाइत अछि। 'द्विरागमन'क अन्त मे हमरा लोकनि 'आर्य सभ्यता' क एडीटर सी. सी. मिश्रा कें महात्माजीक समक्ष नतमस्तक होइत देखैत छी। एहना मे अशोकक ई कथन बेस सटीक बुझाइत अछि जे *'विलासी लोकक मिस बिजली ओ महात्मा जीक बीच बौआयब आ नतमस्तक होयब, द्विविधाग्रस्त होयब एखन धरि समाप्त नहि भेल अछि तें कन्यादानक यथार्थ आइ धरि कायम अछिये।'*

अस्तु। हरिमोहन झाक लेखन मैथिली साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण अध्याय थिक। मिथिला-समाजक आत्मसंघर्ष के ई एक अविस्मरणीय दस्तावेज थिक। उनैसम-बीसम शताब्दी मे, भारतक विभिन्न भाषा क्षेत्र मे जे नवजागरणसक हलचल मचल रहैक, तकर सुस्पष्ट प्रभाव आ विकास कोन तरहें मिथिला-समाज कें आन्दोलित आ समृद्ध केलक, तकर आकलन हुनक कृति सँ कएल जा सकैए। आवश्यकता एहि बातक अछि

जे हास्यावतारक चौखटि सँ बहार क' क' नवजागरण-दूतक रूप मे हुनका मूल्यांकित कएल जाय। आइ जे सांस्कृतिक संकट हमरा लोकनिक समक्ष उपस्थित अछि, ताहि परिस्थिति मे, हुनक सर्वोपरि प्रासंगिकता एही सँ सिद्ध भ' सकत।

(2008)

अतीत कें देखबाक हुनर

(पण्डित सहदेव झाक मण्डन मिश्र विषयक अध्ययन)

पण्डित सहदेव झाक जीवन-वृत्तक जँ अवलोकन करी तँ एक बात एकदम स्पष्ट भ' जाइत छैक जे हुनकर जीवन कर्मठता सँ भरल छलनि। छात्रावस्था मे जाहि कर्मठताक संग विविध शास्त्र मे ओ गँहीर ज्ञान प्राप्त केलनि, आगू चलिक' ओही कर्मठताक संग ओ अपन ज्ञान कें प्रचारित-प्रसारित आ मूर्तिमान करबा मे लागल रहलाह। समयक संग हुनक ई कर्मठता बढ़िते गेलनि। एतय धरि जे अपना जीवनक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य ओ सेवा-निवृत्तिक बाद पूरा केलनि। मिथिलाक बुद्धिजीवी लोकनिक आलस्यपूर्ण जीवन-क्रम कें देखैत ई एक विशिष्ट दृष्टान्त थिक, जे हमरा लोकनि कें सदति प्रेरित आ प्रभावित करैत रहत।

पण्डित जी अपना गामक हाइ स्कूलक संस्थापक शिक्षक भेलाह, हस्तलिखित 'मित्रवाणी' पत्रिकाक मुद्रित वाचस्पति विशेषांक प्रकाशित करौलनि जे आइयो अपूर्व आ ऐतिहासिक मानल जाइछ, आश्चर्यजनक उद्यमशीलताक संग वाचस्पति संग्रहालयक स्थापना केलनि जाहि मे अति महत्त्वपूर्ण पुरावशेष सभक ढेर लगा देलनि, अपना गामक रेलवे स्टेशनक नाम बहुत प्रयास सँ 'वाचस्पतिनगर' करबौलनि, वाचस्पति पर चिरस्मरणीय पुस्तक लिखलनि, अपना प्रखण्डक ऐतिहासिक गरिमा कें अखिल भारतीय स्तर पर चिह्नित-चर्चित करबाक जतन केलनि, कतेको शोधप्रज्ञ लोकनि कें दर्शन-विषयक शोध-कार्य मे मार्गदर्शन देलनि आ एहि सभ कथूक अतिरिक्त आठ गोट पुस्तक आ पचासो गोट शोध-निबन्धक प्रणयन

केलनि। नब्बे बर्खक सारस्वत जीवन कें सार्थकता प्रदान करबाक लेल ई कर्तृत्व कम नहि थिक। हमरा लोकनि तँ देखैत छी जे एहि मे सँ थोड़बो जँ क्यो क' पबैत छथि तँ ओ अपना समाजक अग्रणी पुरुष कहबैत छथि।

पण्डितजीक लेखन मे हमरा लोकनि अपूर्व उद्यमशीलताक प्रवृति पबैत छी। हुनक लेखनशैलिए कें देखिक' ई अनुमान कएल जा सकैत अछि जे ओ अपना जीवन आ विचार मे कतेक कर्मठ छल हेताह। आधुनिक शब्दावली मे एहि कोटिक लेखक कें 'एक्टिविस्ट राइटर' कहल जा सकैत छैक। शास्त्रीय लेखन केनिहार लेखक लोकनि मे आमतौर पर निरपेक्षता आ तटस्थताक प्रवृत्ति देखल जाइत छनि। ई लेखन-प्रवृत्ति रिसर्चक लेल तँ ठीक अछि मुदा जतय लेखनक एक सार्थक लक्ष्य होइक, जतय लेखक अपन लेखन द्वारा समाज कें जगेबाक आ व्यक्ति कें जागरूक बनेबाक अभियान चलौने हो, ततय तटस्थताक ई प्रवृत्ति एक भयंकर दोष भ' जाइत छैक।

सभ सँ पैघ काज

अपन लेखन द्वारा पण्डितजी जतेक जे कोनो काज क' गेलाह ताहि मे सभ सँ पैघ, सभ सँ महत्वपूर्ण काज थिकनि-मण्डन मिश्र विषयक हुनक लेखन। हुनक एहि अवदान कें समाज स्वीकारलक अछि आ हमरा लोकनि देखब जे आब'बला समय मे हुनक ई काज आरो जगजियार हेतनि।

हुनक ई काज सभ सँ पैघ किएक साबित भेलनि? हम देखैत छी जे मण्डन मिश्र विषयक अध्ययन कें एक्टिविस्टबला फार्म मे प्रस्तुत कएल जेबाक खगता छलैक। हमरा लोकनिक शताब्दीक, बीसम शताब्दीक, ई ऐतिहासिक दायित्व छल। एम्हर पण्डितजीक लेखन मे ई गुण प्रभूत मात्रा मे उपलब्ध छलनि। हमरा तँ लगैत अछि जे दुनू कें दुनूक खगता छलनि। मण्डन मिश्र बारह सय बर्ख सँ पण्डित सहदेव झाक प्रतीक्षा मे छलाह तँ एम्हर पण्डित झा व्यग्र भ' क' ओहि पीड़ीक खोज मे लागल रहथि, जे निज हुनका लेल निर्धारित छलनि। विशेष विवरणक लेल हुनक पुस्तक 'मण्डन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त'क परिशिष्ट 'मण्डन मिश्र के प्रति मेरी अभिरुचि कैसे हुई' मे ओहि वृत्तान्त कें देखल जाय जखन ओ पहिल बेर

'ब्रह्मसिद्धि' कें देखने छलाह। अपन ई संस्मरण ओ 'वाचस्पति मिश्र' (मैथिली अकादमी)क भूमिका मे सेहो लिखलनि अछि।

हमरा लोकनि अवगत छी जे 'ब्रह्मसिद्धि'क खोज बीसम शताब्दीक आरम्भे मे भ' चुकल छल। 1914 सँ 1922 ई.क बीच पाण्डुलिपि-संग्रहणक अभियान गवर्नमेन्ट ओरियन्टल मैन्युस्क्रिप्ट लाइब्रेरी मद्रास द्वारा डॉ. एस. कुप्पुस्वामी शास्त्रीक नेतृत्व मे चलाओल गेल छल, एही अभियानक मध्य 'ब्रह्मसिद्धि'क तीन गोट पाण्डुलिपि भेटल छल। 1936 ई. मे ई ग्रन्थ प्रकाशित भ' गेल। ग्रन्थक संग कुप्पुस्वामी शास्त्रीक एक सुविस्तृत भूमिका प्रकाशित भेल, जाहि मे 'ब्रह्मसिद्धि'क भेटलाक उपरान्त उत्पन्न समस्या आ संभाव्यतम समाधान सभक विस्तृत चर्चा छैक। पण्डितजी लिखलनि अछि जे जखन 'ब्रह्मसिद्धि'क मूल ग्रन्थ पढ़िक' आ तकर मनन क' क' ओ अपन निष्पत्ति धरि पहुँचि गेल छलाह तँ एक बेर हुनका जिज्ञासा भेलनि जे देखबाक चाही जे कुप्पुस्वामी शास्त्री सँ हमर विचारक समर्थन भेटैत अछि कि नहि। अपन अनुज पण्डित वासुदेव झा सँ ओ कुप्पुस्वामीक अंग्रेजी भूमिका सुनलनि-बुझलनि तँ हुनका बहुत आनन्द भेलनि जे अप्पन चिन्तनक बल पर ओ जाहि निष्कर्ष पर पहुँचल रहथि, तकर पूरा समर्थन कुप्पुस्वामी करै छलथिन।

हम कह' चाहैत छी जे 1936 मे कुप्पुस्वामीक भूमिका छपलनि, 1993 मे एलेन राइट थ्रेसरक पुस्तक 'द अद्वैत वेदान्त ऑफ ब्रह्मसिद्धि' छपलनि आ एहि बीचक अवधि मे दू सयक करीब शोधपत्र विविध ठाम छपल, जाहि मे एक्के बात कहल गेल छल। एकरा अतिरिक्त, 'अद्वैतचिन्ताय आचार्य मण्डन' (बंगला-रमाप्रसाद भट्टाचार्य) आ 'श्रीशंकर-मण्डनयोः मत समीक्षा' (संस्कृत-टी. नारायणकुट्टि) सन पुस्तक तँ हमर अपने संग्रह मे अछि जे समान निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि। एहन पुस्तक सभ निश्चिते आरो हएत। प्रश्न अछि जे एतेक पहिनहि जखन एहि सभ तथ्यक खोज भ' चुकल छलैक तँ भारतीय समाज आ मैथिल समाज एकरा स्वीकार किएक नहि केलक? एहि सम्बन्ध मे हम कुप्पुस्वामीक दृष्टान्त राख' चाहब। ओ लिखलनि अछि जे परम्परागत विश्वास आ मान्यताक आधार पर ओहो एहि बात पर पूर्ण आस्था रखैत छलाह जे शंकर-मंडन मे शास्त्रार्थ भेल,

मण्डन हारलाह आ शंकर-शिष्य सुरेश्वर बनलाह। जखन 1921-22 ई. मे पहिल-पहिल बेर ओ 'ब्रह्मसिद्धि'क अध्ययन करै छलाह, आ एकर समालोचनात्मक पाठ तैयार करबाक लेल विविध आनुषंगिक ग्रन्थ सभक साहचर्य मे छलाह, तखन हुनका समक्ष पहिल बेर ई तथ्य उद्घाटित भेलनि जे मण्डन आ सुरेश्वर कोनहु हालति मे एक व्यक्ति नहि भ' सकैत छथि। बहुतो-बहुत एहन साक्ष्य अछि जे युग-युग सँ मान्यताप्राप्त तथ्य कें झूठ साबित करैत अछि। बहुत ईमानदारीक संग कुप्पुस्वामी लिखलनि अछि जे ई तथ्य जानिक' हुनका बहुत 'धक्का' लगलनि। ई निष्कर्ष हुनका लेल बहुत दुखद छलनि। बाद मे ओ अपन गुरुवर्ग लग मे ई तथ्य रखलनि आ जिज्ञासा केलनि तँ हुनका आरो आश्चर्य भेलनि जे ओहो लोकनि एहि सत्य सँ अवगत रहथि मुदा तैयो परम्परागत मान्यता कें मानैत रहथि। माने, जे इतिहासक मूल्यांकन-पुनर्मूल्यांकन करबाक साहस हुनका लोकनि मे नहि छलनि। तात्पर्य, जे 'जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः' हम जनैत छी जे धर्म की थिक मुदा ताहि दिस हमर प्रवृत्ति नहि होइछ, तहिना जनैत छी जे अधर्म की थिक मुदा तकरा सँ हमरा निवृत्ति नहि अछि। अपना ओतक, मैथिल पण्डित आ विद्वान लोकनिक जे प्रवृत्ति देखैत छी, सेहो एहि सँ भिन्न नहि अछि। महामहोपाध्याय डॉ. गंगानाथ झा एहि विषयक पूर्ण पारंगत छलाह। हुनका द्वारा मण्डन मिश्रक दू गोट ग्रन्थ 'मीमांसानुक्रमणिका' तथा 'भावना-विवेक' सम्पादितो कएल गेल अछि। मुदा, सभ कथू कें जनैत अन्ततः हुनक निष्कर्ष की छनि? ओ ओही परम्परागत मान्यताक संग छथि। मण्डन-सुरेश्वरक पार्थक्य कें नीक जकाँ देखितो जँ क्यो मण्डन मिश्रक व्यक्तित्वक पुनर्मूल्यांकन हुनक सिद्धान्तक आधार पर करबाक बेगरता नहि बूझथि आ तिमिराच्छन्न अतीत मे सँ देदीप्यमान सत्य कें अनावृत्त करबाक चेष्टा नहि करथि तँ कोना मानल जाय जे ओ मण्डन मिश्र कें चिन्हैत छथि! हमरा तँ यैह लगैत अछि जे ई काज तटस्थ विद्वान वा साहसहीन पण्डित बुते हएब पूर्णतः असम्भव थिक। एकरा लेल क्यो 'एक्टिविस्ट राइटर' चाही। पण्डित सहदेव झा मे हम ई गुण पबैत छी।

सभटा सत्य उद्घाटित भेलाक बादो, आइयो, मण्डन मिश्रक वास्तविक परिचय, अन्धकार मे नुकाएल अछि। शांकर मठ द्वारा प्रचारित असत्य

कण-कण मे व्याप्त छैक। बड़का-बड़का पण्डितो, एखनो, शास्त्रार्थ आ संन्यासबला ओही खिस्सा कें निर्लज्जतापूर्वक दोहरा रहल छथि। जे सत्य कें जनितो छथि, हुनको, एकरा स्वीकार करबा मे 'धक्का' लगैत छनि आ आस्था आहत होइत छनि! ई कोन धर्म भेल? शांकरमठ (तात्पर्य 'शंकर दिग्विजय') जँ झूठो बाजल तँ ताहि पर पण्डित लोकनि कें ततेक आस्था जे शास्त्र, इतिहास आ शोधक समस्त निष्कर्ष निघेंस भ' गेल! ई कोन युग मे जीबि रहल छी हमसभ? की एहिना, एही तरहें सनातन धर्मक रक्षा भ' सकत?

तें, हमरा लगैत अछि जे पण्डित सहदेव झाक सभ सँ पैघ काज ई छियनि जे अत्यन्त उद्यमशीलताक संग ओ अन्धकार कें चीरि क' मण्डन मिश्रक यथार्थ छवि आ परिचय कें अनावृत्त केलनि। ओकरा जन-जन धरि पहुँचेबाक जतन केलनि।

मण्डन मिश्र-विषयक हुनक लेखन

मण्डन मिश्र-विषयक विधिवत लेखन ओ 1970 सँ आरम्भ केलनि। एहि वर्ष जे हुनकर पहिल निबन्ध 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेल, ताही मे ओ अपन कुल्लम निष्कर्षक पत्ता खोलि देलनि। एहि निबन्धक शीर्षक छल-'मण्डन-विजय'। अर्थात ओ शंकराचार्य सँ पराजित भेलाह, ई बात तथ्यात्मक रूप सँ गलत अछि। सत्य ई थिक जे मण्डन मिश्र विजयी भेलाह, कारण अपन लेखन मे शंकराचार्य हुनकर प्रभाव कें ग्रहण केलनि।

मोन राखबाक थिक जे 1970 वैह वर्ष थिक जहिया पहिल-पहिल बेर हमर गाम, महिषी, मे भारती-मण्डन-स्मृति-महासमारोह (मार्च 1970 मे) मनाओल गेल छलैक। एहि अवसर पर एक स्मारिकाक प्रकाशन सेहो भेल रहैक। जानि नहि किएक, ई स्मारिका पण्डितजीक लेख छपबा सँ वंचित रहि गेल। मुदा अनुमान करी तँ कारण जानब बेसी कठिन नहि अछि। हमरा लोकनि देखैत छी जे एहि स्मारिका मे प्रकाशित लेख सभ मे परम्परागत मान्यता सँ टक्कर लेबाक साहस नहि छैक। सर्वत्र चर्वित चर्वण। वैह शास्त्रार्थ, वैह संन्यास। वैह खिस्सा जे सुग्गो 'स्वतः प्रमाण' उचारैत छल। वैह गर्वोक्ति जे पनिभरनी संस्कृत बजैत छल। आश्चर्य

लागत जे ओहि स्मारिकाक कैक गोट लेखक लोकनि कें मण्डन मिश्रक कै टा ग्रन्थ छनि, ताहू ग्रन्थ धरिक सही-सही जानकारी नहि छलनि। एकटा टिप्पणी ओहि मे छपल छलनि वेदान्ताचार्य पण्डित सृष्टिनारायण झाक। ताहि मे सत्यक थोड़ेक ताजगी छल। बाद मे बूझल जे ओ पण्डित सहदेव झाक एक गुरु छलथिन आ मदनेश्वर स्थानमे 'आदर्श ब्रह्मचर्याश्रम'क संस्थापक, जाहि मे पण्डितजी सेहो थोड़ेक दिन शिक्षण केने छलाह। अस्तु! पण्डितजीक ई लेख जुलाइ 1970 मे 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेलनि।

हमरा लगैत अछि जे सत्य कें स्वीकार करबाक साहस तहियो धरि, मिथिलाक बुद्धिजीवी लोकनि मे नहि आएल छलनि। पण्डितजी एहि पाछू पच्चीस बर्खक समय लगौलनि। एहि बीच हुनक अनेक लेख सभ पत्रिकादि मे प्रकाशित होइत रहल आ आकाशवाणी सँ प्रसारित होइत रहल।

1999 मे पण्डितजीक गौरव-ग्रन्थ प्रकाशित भेलनि- 'मण्डन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त।' एहि पुस्तक कें हुनका सँ लिखेबाक आ सम्पादन करबाक सौभाग्य हमरा भेटल। एहि पाछू हमरा लोकनि प्रायः पाँच बर्खक समय लगाओल। एहि योजनाक पाछू की पृष्ठभूमि छलैक, तकर विवरण हम ओहि पुस्तकक भूमिका मे देने छी। पण्डितजीक प्रकाशित लेख सभ सेहो हम ध्यानपूर्वक पढ़ि गेल रही आ अत्यन्त साकांक्ष रही जे हुनक समस्त शोध आ मननक निष्कर्ष एहि पुस्तक मे आबि जाय। से आबि गेल। हुनक लेख सभ मे वर्णित समस्त तथ्य, भिन्न शैली आ शब्दावली मे, एहि पुस्तक मे आबि गेल अछि।

तत्पश्चात, 2004 मे पण्डितजीक एहि विषयक दोसर महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'मिथिला के वेद-वेदान्त' प्रकाशित भेलनि। एहि पुस्तक मे पहिल बेर 'ब्रह्मसिद्धि'क तीनू काण्ड पर तीन भाग मे सुविस्तृत अध्ययन प्रस्तुत कएल गेल छैक। एकरा अतिरिक्त, तीनगोट आरो व्यापक लेख एहि मे संगृहीत छैक, जे मण्डन मिश्रक सिद्धान्त कें व्याख्यायित करैत अछि। एहि पुस्तकक प्रकाशक अन्धराठाढ़ीग्रामवासी श्री गोविन्द झा छथि।

एहन प्रतीत होइत अछि जे मण्डन-विषयक हुनक किछु आरो लेख सभ छनि जे एखनहुँ अप्रकाशित अछि। जेना, हमरा बूझल अछि जे जेना

'ब्रह्मसिद्धि' पर ओ काण्डवार अध्ययन प्रस्तुत केने छथि, ताही तरहक एक काज ओ 'विधि-विवेक' पर सेहो केने छलाह, से कतहु प्रकाशित भेल नहि देखैत छी।

आधार-सामग्री

मण्डन मिश्रक विषय मे पण्डितजी जाहि कोनो निष्कर्ष पर पहुँचल छथि, ताहि मे मुख्य आधार सामग्री जकरा ओ बनौलनि से स्वयं मण्डन मिश्रक लिखल ग्रन्थ सभ थिक। हुनकर मूल ग्रन्थ सभ ओ बहुत ध्यानपूर्वक पढ़ने छथि आ ताहि पर बहुत गहराइ सँ मनन केने छथि। हुनक मननशीलताक दृष्टान्त एही वृत्तान्त सँ भेटि जाइत अछि जे जखन ओ 'ब्रह्मसिद्धि'क रचयिताक रूप मे मण्डन मिश्रक नाम देखलनि तँ 'आश्चर्य-सागर मे निमग्न' भ' गेलाह जे अरे, ई कोना भ' सकैत अछि! मण्डन मिश्र जँ मीमांसक छलाह, जे कि हुनका आमतौर पर मानले जाइत अछि, तँ ओ 'ब्रह्मसिद्धि' कोना लिखि सकैत छथि, कारण मीमांसक लोकनि तँ 'ब्रह्म' कें मानैत नहि छथि, ई शब्द तँ हुनका शब्दावली मे नहि छनि। आदि। एहि दृष्टान्त सँ हुनक बुद्धिक कुशाग्रताक परिचय सेहो भेटैत अछि।

वेदान्त दर्शनक प्रायः समस्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हुनका पढ़ल-देखल छनि। आ से ने मात्र मिथिला-स्कूलक अपितु शांकर सम्प्रदायक सेहो। आवश्यकतानुसार ओ एहि ग्रन्थ सभक उपयोग आधार-सामग्रीक रूप मे करैत छथि। 'भामती' पर हुनका बेस अधिकार छनि आ तें कतोक बेर वाचस्पतिक आशय कें ओ पूर्ण विश्वासक संग अभिव्यक्त क' पबैत छथि। दोसर दिस, बौद्ध दार्शनिक दिङ्नाग, धर्मकीर्त्ति, ज्ञानश्रीमित्र आ शान्तरक्षितक सन्दर्भ ओ कैक ठाम दैत छथि। शान्तरक्षितक एक सन्दर्भक उपयोग तँ ओ एहन महत्त्वपूर्ण स्थापनाक लेल केलनि अछि जाहि सँ स्पष्ट होइत छैक जे परवर्ती काल मे सेहो, शंकराचार्य ओ प्रतिष्ठा प्राप्त नहि क' सकल छलाह, जे मण्डन मिश्र कें, अपन सिद्धान्तक कारणें, प्राप्त छलनि।

आधुनिक युग मे अंग्रेजीक माध्यमे मण्डन मिश्र पर कएल गेल काज सभ मे सँ अधिकांश सँ ओ अपरिचित छथि। मुदा, मिथिलाक जे कोनो मनीषी लोकनि जतए कतहु वेदान्त विषयक कोनो विमर्श प्रस्तुत केलनि

अछि ताहि सँ ओ परिचित छथि। हिन्दी भाषा मे जे काज सभ भेल अछि ताहि सँ ओ अवगत छथि, आ आवश्यकतानुसार आधार-सामग्रीक रूप मे ओकर उपयोग करैत छथि। राहुल सांकृत्यायनक सन्दर्भ कैक ठाम भेटैत अछि। एकठाम, शंकराचार्यक शास्त्रेतर नकली महिमा कें देखार करैत ओ राहुल सांकृत्यायन कें उद्धृत करैत कहैत छथि जे *आइ जे शंकराचार्य एतेक पैघ देखार पड़ि रहलाह अछि से तँ मात्र एही दुआरे जे वाचस्पति मिश्र हुनका अपन कन्हा पर बैसौने छथिन।* आदि।

पण्डितजीक ई एक खास विशेषता छियनि जे परम्परा आ पृष्ठभूमिक बहुत सही ज्ञान हुनका छनि। अति प्राचीन काल सँ दसम शताब्दी धरिक, आ तकर बादोक मिथिलाक एकदम साफ चित्र हुनका मनोमस्तिष्क मे खचित छनि। एही कारणें ओ कोनहु प्रसंग विशेषक सन्दर्भ ओकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य संग जोड़ि पबैत छथि। हुनक सभ सँ पैघ आधार सामग्री यैह छियनि जे ओ मिथिलाक संग-संग सम्पूर्ण भारत मे धर्म-दर्शनक उतार-चढ़ाव कें काल-क्रमानुसार देखि पेबा योग्य आँखि रखने छथि।

दोसर दिस हमरा लोकनि देखैत छी जे ऐतिहासिक रूप सँ जकर प्रामाणिकता असंदिग्ध नहि छैक, एहन वस्तु कें ओ निघेंसवत् तुच्छ बुझैत छथि। उदाहरणार्थ 'शंकरदिग्विजय'। पण्डितजीक दृष्टि मे एहि कविता-पुस्तकक मोल एक्को कौड़ी नहि। कारण, ई ऐतिहासिक दृष्टि सँ प्रामाणिक नहि अछि आ झूठ के पुलिन्दा अछि। तहिना, किम्वदन्ती-जनश्रुति आदि कें सेहो ओ सदति संदेहक दृष्टि सँ देखैत छथि। एकाध ठाम जँ कतहु जनश्रुतिक उपयोग ओ करबो केलनि अछि तँ से इतिहासक कठोर परीक्षणक बादे। जे किम्वदन्ती ऐतिहासिक साक्ष्य द्वारा सत्य हेबाक संकेत दैत हो, तकरे टा किछु मूल्य मानबाक लेल ओ तैयार छथि।

मण्डन विषयक मूल प्रश्न सभ आ तकर समाधान

पहिनहि कहलहुँ जे मण्डन मिश्रक विद्वत्तापूर्ण सम्पादित ग्रन्थ सभक रहितहु हुनकर परिचय पूर्णतः तिमिराच्छन्न रहल अछि। एहि तिमिर कें अत्यन्त रणनीतिक कुशलताक संग प्रचारित-प्रसारित करबाक श्रेय शांकर मठ कें छैक। शांकर मठ ई अपकर्म करबाक लेल किएक बाध्य भेल, तकर

विवरण अन्यत्र देनहि छी। तें, मण्डन मिश्र कें अन्हार सँ बाहर करबाक लेल पहिल चुनौती छैक शांकर मठक षड्यन्त्र कें देखार करब। ई काज अनेक लोक द्वारा अनेक मंच पर भेल अछि। न्यायालय मे मुकदमो चलल अछि। एहि लेल जरूरी छैक 'शंकरदिग्विजय' (माधवाचार्य) आ एकर देखादेखी लिखल गेल अन्यान्य विजयग्रन्थ सभक विवेचन। पण्डितजी पूर्ण मनोयोगक संग एकर परायण आ विवेचन केने छथि।

ओ देखौलनि जे 'शंकरदिग्विजय' पूर्णतः एक अप्रामाणिक कविता-पुस्तक थिक, जकर कोनहु टा ऐतिहासिक मूल्य नहि छैक। एकर पहिल दोष तँ ई छैक जे घोषित रूप सँ अपन परम गुरु कें दिग्विजयी साबित करबाक लेल लिखल गेल (सेहो छव सय बर्खक बाद) एहि कारणें तथ्यगत निष्पक्षताक एहि मे सर्वथा अभाव छैक। दोसर जे परमगुरु कें दिग्विजयी देखेबाक लोलुप उत्साह मे माधवाचार्य इतिहास-ज्ञानक प्रचण्ड अज्ञानता प्रदर्शित करैत, दण्डी (छठम शताब्दी) बाण आ मयूर (सातम शताब्दी) अभिनव गुप्त (दशम शताब्दी) श्री हर्ष तथा उदयनाचार्य (एगारहम शताब्दी) धरिक संग शंकराचार्य कें शास्त्रार्थ करैत आ हिनका लोकनि कें पराजित करैत देखौलनि अछि। एकरा अतिरिक्त, एहि पुस्तकक भूगोल-ज्ञान सेहो हास्यास्पद छैक। मुदा, सभ सँ पैघ दोष जे पण्डितजी देखैत छथि से ई जे मण्डन मिश्रक मान्यता आ सिद्धान्तक कोनहु टा ज्ञान माधवाचार्य कें नहि छनि। एहि पुस्तक मे कहल गेल अछि जे मण्डन वेदान्त कें प्रमाण नहि मानैत छलाह, आजीवन सकाम कर्महिक सम्पादन सँ मुक्ति होइत छैक, से मानैत छलाह, आदि-आदि। पण्डितजी देखौलनि जे एहि मे सँ एक्को टा सिद्धान्त मण्डन मिश्रक नहि छियनि। आ तें मण्डन-विषयक परिज्ञान प्राप्त करबाक लेल एहि पुस्तक कें ओ सर्वथा निरस्त घोषित क' देलनि।

दोसर समस्या अछि जे मण्डन मिश्रक जन्मभूमि कोन क्षेत्र छल? ई अपेक्षाकृत अधिक जटिल समस्या बनल रहल, कारण जे मण्डनक कृतित्व पर ग्रन्थ वा शोधपत्र लिखनिहार विद्वान लोकनिक लेल ई प्रश्न अधिकतर अविचारणीय बनल रहल। दोसर जे शांकरमठ मण्डन मिश्र कें दाक्षिणात्य बतबैत रहल। तेसर जे विविध शंकर-विजय-ग्रन्थ सभ जे मण्डनक

जन्मभूमिक सम्बन्ध मे परस्पर विरोधी सूचना देने अछि से भिन्न-भिन्न क्षेत्रक लोक कें मण्डन कें अप्पन साबित करबाक लोभ जगबैत रहल।

मिथिलाक पूर्ववर्ती आधुनिक विद्वान लोकनि जे मिथिलाक महिषी कें मण्डनक जन्मभूमि हेबाक लेल तर्क तैयार केलनि से दुर्भाग्यवश अधिकतर 'शंकर दिग्विजय'क प्रमाण पर आधारित छल। प्रश्न अछि जे भीषण अप्रामाणिकताक आधार पर जखन हमरा लोकनि एक बेर ओहि पुस्तक कें निरस्त क' दैत छी तँ फेर कोनो दोसर प्रसंग मे, ओही पुस्तक कें आधार बना क' कोना कोनो तथ्य प्रमाणित क' सकैत छी?

जेना कि पहिनहि कहलहुँ, पण्डित सहदेव झाक मूल आधार-सामग्री मण्डन मिश्रक मौलिक ग्रन्थ सभ रहलनि अछि। एकरे मनन सँ प्राप्त तथ्य कें ओ सर्वोपरि मार्गदर्शक मानैत छथि। पण्डितजीक मत छनि जे मण्डन मिश्रक मान्यता आ सिद्धान्त हुनका असंदिग्ध रूप सँ मैथिल प्रमाणित करैत छनि। कारण, ओहि विचारधाराक उत्स, पृष्ठभूमि आ पल्लवन मिथिला सँ जुड़ल छैक। आ मिथिला मे मात्र एकटा स्थान महिषी दावेदार अछि तें ओ हुनक जन्मभूमि छियनि। आइ स्थिति ई अछि जे समुच्चा दुनियाँक दर्शनशास्त्रज्ञ एहि तथ्य कें स्वीकार करैत छथि जे मण्डन आ वाचस्पति मैथिल छलाह।

एक प्रश्न मण्डन मिश्रक परिचय कें ल' क' अछि। आमतौर पर व्यक्तिक परिचय ओकर नाम-गाम कुल-परिवार कें ल' क' होइत छैक। मण्डन मिश्र अपन कोनहु गोट पुस्तक मे अपना सम्बन्ध मे कोनो विवरण नहि देने छथि आ ने परवर्त्ती आचार्य लोकनि एहि मादे कोनो सूचना देलनि अछि। जनश्रुति अछि जे परम विदुषी भारती मण्डन मिश्रक पत्नी छलथिन। एहि जनश्रुतिक मूलाधार थिक-शंकरदिग्विजय। ई एक सर्वथा अप्रामाणिक पुस्तक थिक, जकर देल सूचनाक कोनो असंदिग्ध मूल्य नहि अछि। एकटा मध्यमार्ग ई भ' सकैत अछि जे 'विजयग्रन्थ'क जाहि सूचनाक सत्यापन मिथिला मे प्रचलित जनश्रुति सँ होइत हो अथवा आन कोनो सन्दर्भ सँ ओकर सत्यापित हेबाक गुंजाइश हो, तकरा स्वीकार क' लेल जाय। जेना ई जे मण्डनक पिताक नाम हिम मिश्र आ ससुरक नाम विष्णु मिश्र छलनि, आदि। मुदा, पण्डितजी एहू मे दोष देखैत छथि।

कारण, आनन्दानुभव आदि प्राचीन आचार्यक ग्रन्थ सभ मे एहन उल्लेख भेटैत छैक जे मण्डन मिश्र सँ इतर क्यो विश्वरूप मिश्र छलाह, ओहो मैथिल छलाह, आ वैह अपन उत्तरजीवन मे संन्यासी भेलाक बाद सुरेश्वराचार्य नाम ग्रहण केने रहथि। माधवाचार्यक कलाकारी सेहो एतय ध्यान रखबाक योग्य अछि। अपन पुस्तक मे सदति ओ विश्वरूप, मण्डन आ सुरेश्वर, तीनू कें एक्के व्यक्ति लिखलनि अछि। एहना स्थिति मे ई हएब संभावित जे कोनो विवरण जे माधवाचार्य, विश्वरूपक परिचय ख्यापित करबाक लेल देने होथि, से मण्डन पर लागू केने अव्यवस्था-दोष उत्पन्न भ' सकैत अछि। कारण, एहन सैकड़ो गोट असंदिग्ध प्रमाण सभ अछि जे सुरेश्वर आ मण्डन कें अलग-अलग व्यक्ति प्रमाणित करैत अछि आ जकर उल्लेख पण्डितजी अपन पुस्तक मे केने छथि। आनो अनेक विद्वान केने छथि।

एहना स्थिति मे, मण्डन मिश्रक परिचय हुनक अवदान, मान्यता आ सिद्धान्तेक आधार पर स्थापित कएल जाएब पण्डितजी कें मान्य छनि। वस्तुतः ई एक तर्कसंगत आ वैज्ञानिक दृष्टिकोण थिक। एक बेर परिचय स्थापित भ' गेने आन सभ कथू भ' जाएत--से भविष्यद्रष्टा कल्पना एहि पाछू हमरा देखार पड़ैत अछि।

तें, मण्डन मिश्रक परिचय आ व्यक्तित्व कें ओ नाम दैत छथि- 'सारस्वत व्यक्तित्व।' प्रसंगवश एहिठाम हमरा डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेयक एक स्थापना मोन पड़ैत अछि जतए ओ कहलनि अछि जे मण्डन मिश्रक दुर्द्धर्ष प्रतिभा आ अतुलनीय विद्या कें, मिथक मे परिवर्तित करैत, विजयग्रन्थकारलोकनि द्वारा हुनक पत्नी भारतीक रूप मे मानवीकृत क' देल गेल। तात्पर्य जे मण्डन मिश्रक जे सरस्वती (विद्या) छलथिन, तनिके हुनक पत्नी भारतीक रूप मे कल्पित क' लेल गेलनि आ संगति बैसेबाक लेल हुनका (मण्डन कें) ब्रह्माक अवतार घोषित कएल गेलनि।

पण्डित जीक मान्यता छनि जे कोनो व्यक्ति मे निहित जे संस्कार, सिद्धान्त आ विचारधारा होइत छैक, सैह ओहि व्यक्तिक वास्तविक परिचय होइत अछि। एहि मान्यताक आधार पर ओ मण्डन मिश्रक जाहि भव्य सारस्वत व्यक्तित्वक चित्र प्रस्तुत केलनि अछि तकरा देखने मन श्रद्धा सँ

अभिभूत भ' जाइत छैक आ निजता-बोधक कारणें आत्मगौरव सँ माथ ऊँच सेहो भ' जाइत छैक।

मण्डन मिश्रक सिद्धान्त छलनि जे ब्रह्म जे आनन्दस्वरूप छथि, से हुनकर आनन्दस्वरूपता निर्विशेष रूपक कदापि नहि थिक जेना कि शंकराचार्य मानैत छथि। एकर विपरीत ओ (ब्रह्म) नितान्त भावात्मक अर्थमे आनन्दस्वरूप छथि। एही मान्यताक आधार पर मधुसूदन सरस्वती मण्डनक अद्वैत कें 'भावाद्वैत' कहलनि। पण्डितजीक लेखनी एहि भावाद्वैतक व्याख्या आ बखान जतेक रमिक' करैत अछि से सभ कें पढ़बा योग्य अछि। तहिना मण्डन मिश्र ब्रह्म कें अज्ञेय आ असंवेद्य नहि मानैत छथि। मन आदि साधन सँ भने ओ असंवेद्य होथि मुदा अपनहि नैसर्गिक ज्ञान सँ ओ सर्वथा ज्ञेय आ संवेद्य छथि। कृष्ण यजुर्वेद-सम्प्रदायक विरोधाभास कें देखबैत पण्डितजी मैथिल चिन्तन-पद्धतिक विशिष्टता उद्घाटित करैत छथि आ तैखन मण्डन मिश्र हुनकर पताका होइत छथिन। शंकराचार्यक मतक विरुद्ध ओ (पण्डितजी) वृहत्त्रयीक प्रमाण उपस्थित करैत शुक्लयजुर्वेदक एहि प्रांजल जीवन-शैली कें मण्डनक आँखिएँ प्रस्तुत करैत छथि जे ज्ञान आ कर्मक समुच्चय सँ अधिक शीघ्रतापूर्वक ब्रह्मज्ञान-प्राप्ति सम्भव अछि। तहिना ई जे ब्रह्मज्ञानक प्राप्ति सँ प्रारब्ध कर्महु निष्प्रभावी भ' जाइत अछि।

हमर तँ सौभाग्य जे हम तीनू गोटे, मण्डन-वाचस्पति आ सहदेव, कें एक पाँत मे बैसल देखि रहल छियनि। हमरा तँ हिनका लोकनिक ई मान्यता सर्वाधिक प्रिय आ उपादेय लगैत अछि जे ब्रह्मज्ञान जाधरि मात्र शब्दज बनल रहत, ताधरि ओ प्रत्यक्ष नहि भ' सकैछ अपितु परोक्षे ब्रह्मज्ञान हएत, ओकर प्रत्यक्षीकरण तखनहि टा सम्भव जँ ओकरा ध्यानज बनाओल जाय। एहि युग मे तँ देखैत छी जे टी. वी. चैनलक भरमार अछि जाहि पर कोनो-ने-कोनो सन्त-महात्माक प्रवचन चौबीसो घंटा चलैत रहैत अछि। अधिकांशक सन्देश तँ 'तत्त्वमसि'बला रहितहि छनि। तँ की श्रवणक बाद मनन आ निदिध्यासन केने बिना कोनो प्राप्ति ताहि सँ सम्भव छैक? हमरा तँ लगैत अछि जे भविष्य मे धर्म आ अध्यात्म जे बचल रहत से अपन एही सर्वोत्तम रूप मे, अर्थात ध्यानक रूप मे। मण्डन मिश्र ध्यानजप्रत्यक्षवादी

छथि आ शंकराचार्य शब्दजप्रत्यक्षवादी, तें जँ शंकराचार्य पण्डितजी कें नापसिन्न छथिन तँ से सर्वथा उचित।

ई ब्रह्माण्ड अ-भाव नहि थिक, ई एक परिपूर्ण भाव थिक। मनुक्खक ई अनमोल जीवन वि-राग नहि थिक, एक नितान्त राग थिक। सृष्टिक विकास उद्यम सँ भेल अछि, सभटा त्यागिक' विरक्त भ' गेने नहि। जेहन आइ दुनियाँ अछि, काल्हि जँ एहि सँ सुन्दरतर दुनियाँक कामना करैत छी तँ सेहो उद्यमे केने हएत। कामना, ब्रह्मज्ञानक मार्ग मे बाधक नहि थिक, बशर्ते कि ओ सार्थक कर्मक प्रति हो। हम तँ मण्डन मिश्र कें देखैत छियनि आ पण्डित सहदेव कें। लगैत अछि जेना मण्डनक बास पण्डितजीक आत्मा मे छनि।

(2010)

वितान

"आचार्य रमानाथ झा बहुत शोध कयलाक पछाति एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छलाह जे मैथिली भाषाक आदिम विकास ब्राह्मणेतर वर्णक छोट-छोट लोक सभ केलनि। के छलाह ओ लोक सभ? मिथिला-क्षेत्रक किसान, जन-बोनिहारिन, छोट-छोट व्यवसायी, शिल्पकार, आ साधु-सन्त लोकनि। पण्डितक भाषा हिनका लोकनिक अपन भाषा नहि भ' सकैत छलनि। ओहि भाषा मे ने तँ हिनका लोकनिक लेल कोनो स्पेस छलनि आ ने हिनका लोकनिक अनुभूति लेल कोनो संभाव्य अभिव्यक्ति। आवश्यक रूपें ई प्रश्न प्राचीन मिथिलाक सत्ताक संग जुड़ल अछि। ब्राह्मण-धर्म आ बौद्ध धर्मक बीच जे युगान्तरव्यापी सारस्वत संघर्ष चलल, तकर अनेको फलाफल बहराएल आ तकर एक फल मैथिली सेहो थिक।

... कनेक विकास कएल लोक अपन मातृभाषा छोड़ैत अछि, ताहि सँ बेसी विकास कएल लोक अपन राष्ट्रभाषा; आ बहुत विकास जे क' गेल तकरा लेल की भाषा आ की साहित्य? मुदा, रच्छ अछि जे अपना समाजक ई अन्तिम सत्य नहि थिक।

मैथिलीक विकास छोट-छोट लोक, कतिआएल, अबडेरल लोक सभ मिलि क' केने रहय आ एकर उत्स, एकर जड़ि लोकसाहित्य मे निहित छैक। मैथिली अपन लोकसाहित्य कें जतेक पकड़त, ओहि मे जतेक डूबत, अपना कें ओकर जतेक निकट आनि सकत, एकर भविष्य ओतबे उज्ज्वल हेतैक। ओत्तहि सँ एकर स्वर मे आत्म-विश्वास एतै आ निर्णय मे प्रभाविता एतै।"

लोक साहित्य आ दलित साहित्य

सभ क्यो अवगत छी जे मैथिली साहित्यक श्रीगणेश 'वर्णरत्नाकर' सँ होइत अछि। एकर रचयिता ज्योतिरीश्वरक काल थिकनि चौदहम शताब्दी। तहिना, ईहो जनैत छी जे बंगला साहित्यक श्रीगणेश लोकभाषा मे लिखल जन्तर-मन्तर, कहबी, फकड़ा सँ होइत अछि। एहि वस्तु सभक रचनाकाल निर्धारित कएल गेल नवम शताब्दी। मतलब भेल जे बंगला साहित्य मैथिली साहित्य सँ पाँच सय बर्ष जेठ अछि।

मुदा, दोसर दिस ईहो बात सभ क्यो जनैत छी जे मध्यकालक प्रारम्भिक समय मे एकटा एहन कालखण्ड छल,जखन अपभ्रंश भाषा सेहो लोक-अभिव्यक्ति लेल अपर्याप्त साबित भ' गेल छल आ तकरा स्थान पर नवीन भाषान्दोलनक आविर्भाव भेल छलैक। एहि भाषान्दोलनक छाप हमरालोकनि सिद्ध साहित्य पर आ लोकसाहित्यक अनेक छोट-छोट विधा सभ पर देखैत छिऐक। एहि साहित्यक भाषा एहन अछि जकरा असमबला असमियाक पूर्व रूप कहैत छथि। बंगाली बंगलाक पूर्व रूप आ मैथिल सेहो मैथिलीक पूर्वरूप कहैत छथि। मतलब जे एहि साहित्यक भाषा एहन अछि जकरा निर्भ्रान्त रूप सँ कोनो आधुनिक भारतीय भाषाक साँचा मे फिट नहि कएल कएल जा सकैत अछि। विद्वानलोकनि ईहो कहैत छथि जे एहि साहित्यक निर्माण-कालक बादहि एहन परिस्थिति बनल जखन आधुनिक भारतीय भाषा सभ अपन वर्त्तमान स्वरूप ग्रहण करबाक दिस उन्मुख भेल। हमरालोकनि ईहो जनैत छी जे आधुनिक भारतीय भाषा सभ मे मैथिली मे अभिव्यक्ति-कौशल सभ सँ पहिने प्रभावी ढंग सँ, विकसित

भेलैक। यैह कारण छैक जे मध्यकालीन रचनाकारलोकनि मे विद्यापति कें हमरालोकनि सभ सँ अगुआएल देखैत छियनि। विद्वानलोकनि कहैत छथि जे मध्यकालीन बोधक सीमाक अतिक्रमण करैत बहुतो बात विद्यापति मे एहन छनि जे आधुनिकताक तत्त्व सँ भरल-पुरल अछि। आ तै अर्थ मे ओ आधुनिक छथि।

हमर कहबाक अर्थ एतबे जे साहित्य तँ हमरालोकनिक ओतबेक पुरान अछि, जतेक बंगलाक; अपितु आरम्भिक काल कें देखैत कहल तँ ई जेबाक चाही जे हमरालोकनिक साहित्य, अपन उद्भव मे बंगला सँ बहुत पुरानो अछि आ आगुओ, मुदा हमरालोकनिक किछु जातीय सीमा सभ अछि जाहि मे संसीमित भ' क' हमर साहित्यो अपन त्वरा, गति आ लय हेरा लेलक अछि आ हमरो लोकनि।

मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास दिस ताकी तँ एहन सीमा सभ तँ ढेरीक ढेरी देखल आ गनाओल जा सकैत अछि मुदा साहित्यक इतिहास दिस तकला पर देखै छी जे आरम्भकालीन लोक-साहित्य कें हमरा लोकनि साहित्ये नहि मानल आ बंगाली लोकनि एकरा अपन नींव मानि इतिहासक अपन महल ठाढ़ क' लेलनि। हमरालोकनि लोकभाषा कें भाषाक गरिमा नहि देलिऐक, लोक-साहित्य कें साहित्य नहि मानल। आचार्य लोकनिक निर्देशानुसार मात्र शिष्ट साहित्य कें मैथिली साहित्य मानि तकर इतिहास तैयार कएल गेल आ तकरे अभिवृद्धि आ विकास पर दिमाग लगाओल गेल। एना किएक भेल, तकर आकलनक लेल काञ्चीनाथ झा 'किरण'क किछु पंक्ति सभ उद्धृत करब --

(1) ई तँ मानल बात जे मिथिलाक समाज मुख्य रूपें दू भाग मे बंटल छल। ऊँच जाति आ नीच जाति। ऊँच जाति धनी पढ़ल-लिखल, नीच जाति निर्धन-मूर्ख। ऊँच जाति स्थायी वा अस्थायी रूपें राजधानीक सम्पर्क मे रहै छल। अपना कें नागरिक मानै छल। गाम मे रहितहुँ अपना कें छोट लोक सँ भिन्न मानै छल।[1]

(2) लोकभाखा आ साहित्यिक भाखाक बीच मे देबाल ठाढ़ बूझि पड़ैत अछि से अपन हृदय मे बाभन आ छोटका लोकक बीच मे जे देबाल ठाढ़ केने छी, तकरे प्रतिबिम्ब थिक।[2]

(3) मनुष्य तँ ओहो सभ छल। चित्तवृत्ति ओकरो सभ कें छलै। ओहो सभ प्रकृति कें देखैत छल, परिस्थितिक अनुभव होइत छलै। प्रकृतिक देल अपन भाषा छलै। अपन भाव छलै। अपन विशेष समाज छलै। बहुत प्रकारक लोक छलै ओहू समाज मे। एक सँ एक प्रतिभावान, कोयला मे नुकायल हीराक समान।

ओही समाजक लोक जकरा अपन अनुभव सँ समाज कें हित करक भावना प्रबल भए जाइत छलै से अपन भाव कें, अपन अनुभूति कें अपन ठेंठ शब्द मे बान्हि दैत छल। लीखय अबैत नहि छलै तें घोखि लैत छल। लोक कें सुनबैत छलै वा अवसर पाबि पढ़ैत छल। लोक कें नीक लगै। ओहो ओकरा घोखि लिअय। यैह बान्हल शब्द होइत छल ओहि ठेंठ समाजक पद्य-काव्य। एहन पद्य बनौनिहार कें लोक सभ, अधिक सम्भव पण्डित लोकनि फलेल-फँचाड़ि-फक्कड़ कहैत छलथिन। कारण ओकरा कवि कोना कहितथिन? कवि तँ पण्डिते भ' सकैत छला।[3]

बहुत अध्ययन आ शोध केलाक बाद आचार्य रमानाथ झा[4] एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छलाह जे मैथिलीक विकास, एहि भाषा आ एकर साहित्यक विकास छोट-छोट जातिक, छोट-छोट काज करैबला आम लोक द्वारा अपन भावाभिव्यक्तिक लेल कएल गेल छल। किरण जी कहैत छथि- *'जेहने काँच-कोचिल, उसिनल-पकौल भोजन, तेहने भाषा-पद। मुदा, पोषकता तँ उसिनल-पकौल सन तरल-छौंकल मे नहि रहैत छै।'* ई मैथिलीक लोकसाहित्य थिक। मुदा, हमरालोकनिक सीमा! अलंकारशास्त्र तेना माथपर चढ़ि नचैत रहल अछि जे पोषकताक कोन मोल?

मैथिलीक लोक साहित्यक सभ सँ पैघ विशेषता छैक जे मिथिलाक संस्कृति (अथवा 'मैथिल संस्कृति')क एकांगिता, अधूरापन कें, एकभगाहपन कें ई तोड़ैत छैक आ एकरा मिलौने बिना, आत्मसात कएने बिना, एक 'सम्पूर्ण मैथिल संस्कृति'क रूपरेखा तैयार नहि कएल जा सकैत छैक। समुच्चाक समुच्चा लोकपरम्परा लोकसाहित्ये मे अभिव्यंजित-संरक्षित छैक। ओकर अपन आचार-प्रणाली, आ मूल्यबोध छैक। ओकर अपन स्वतन्त्र सौन्दर्य-बोध छैक जे बहुतो अर्थ मे तथाकथित मुख्य परम्परा कें अनसोहाँत आ कठाइन लगैत हो, मुदा धनसन! अपन मूल्य आ प्रतिमान

ल' क' परिपूर्ण आत्मबलक संग ओ चलैत आ बढ़ैत रहल अछि। ओहि समाजक एहि यात्राक आख्यान थिक लोकसाहित्य। आचार-संहिता आ मूल्य-मर्यादा कोन तरहें लोकसाहित्य कें सबल आ सार्थक जीवनक पैरवीकार बनबैत छैक, एहि बात कें स्पष्ट करबाक लेल हम एकटा दृष्टान्त देब।

मिथिलाक एक प्रसिद्ध लोकगाथा थिक 'नैका बनिजारा'। एकर नायक छथि नैका। एहि लोकगाथाक कालखण्ड मणिपद्मजी शोधपूर्वक सातम शताब्दी सिद्ध केलनि अछि। 'नैका बनिजारा'क नायिका थिकी फुलेश्वरी। एहि फुलेश्वरीक महान दुश्मन थिकथिन हुनकर अपने ननदि मने नैकाक बहिन। परिस्थिति एहन बनैत छैक जे ननदि फुलेश्वरी कें कुम्भा डोमक हाथें छलपूर्वक बेचि लैत अछि। कुम्भा डोम थिक नारी देहक व्यापारी। स्पष्ट अछि जे ओ स्त्री सँ वेश्यावृत्ति करबैत अछि। एहि लोकगाथा मे हमरालोकनि नैकाक पौरुषक एक बानगी देखैत छी जे फुलेश्वरी कें ने केवल ओ कुम्भा डोमक चाङुर सँ मुक्त करबैत छथि, अपितु हुनका ठीक ओही तरहें अपन पत्नीक रूप मे यथावत स्वीकार करैत छथि, जेना किछुओ नहि भेल होउक। कोनहुँ टा सन्देह नहि, ने कनिञो टा असमंजस। एकरा की कहबै? एहि आचार-संहिता कें, एहि जीवन-मूल्य कें कोना परिभाषित करबै? तथाकथित मुख्य परम्परा मे हमरालोकनि जनिका 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहैत छियनि आ जनिका साक्षात परमात्माक अवतार मानैत छियनि, से भगवान राम सेहो एना नहि क' सकल छलाह, जखन कि हुनक स्त्रीक हरण केनिहार रावण कुम्भा-डोम जकाँ कोनो स्त्री-व्यापारियो नहि छलाह, आ ने सीताक चरित्र कोनो लांछन-योग्य परिस्थिति मे फँसल छल। हमरा तँ स्पष्ट बुझाइत अछि जे जीवन-मूल्यक समझ आ ताहि सँ निर्मित परम्परा दू अलग-अलग समाज मे अलग-अलग ढंग सँ परिभाषित होइत एलैक अछि। राम सीता कें त्यागि देलनि ताहि सँ जे हुनकर समाज कें आनन्द आ सन्तोष भेलनि, ओही हेतु हुनका 'मर्यादा पुरुषोत्तम'क उच्चासनो भेटल आ हुनकर गाथा सेहो गाओल जाए लागल। दोसर दिस, कुम्भा डोमक चाङुर सँ फुलेश्वरी कें मुक्त करा क' नैका जे हुनका यथावत अपन पत्नीक रूप मे स्वीकार क' लेलनि, ताहि सँ हुनका समाज कें जे

सन्तोष भेलनि तकरे बदौलत ओ महानायक बनलाह आ हुनक गाथा गाओल जाए लागल।

विवाह संस्थाक इतिहास कें उनटाय जँ हमरालोकनि देखी तँ पबैत छी जे सवर्ण समाज मे पुनर्विवाह प्रतिबन्धित छल, जखन कि जारकर्म (परपुरुष संग व्यभिचार) मान्य छल। दोसर दिस, लोकायत परम्परा मे पुनर्विवाह मान्य छल आ जारकर्म निन्दित आ प्रतिबन्धित। जारकर्म ओ स्त्री आखिर करत कथी ले? यदि ओकरा अपन पति सँ प्रेम आ संरक्षण नहि भेटैत छैक तँ ओ ओकरा त्यागि देत आ पुनर्विवाह क' लेत। जारकर्म किएक करत?

कहि सकैत छी जे एक समाज मे स्त्रीक हाथ मे बहुत किछु छैक जे ओकरा मानवीय अस्मिता आ गरिमा प्रदान करैत छैक, समानताक अधिकार धरि पहुँचाबैत छैक मुदा दोसर समाज मे स्त्रीक हाथ पूरे खाली छैक। एकटा कहबी हम एहि ठाम कोट करब जाहि मे एक गरिमावाली स्त्रीक कामना व्यक्त भेलैक अछि- *'भरल रहय, कोखि, मांग। बनल रहय अपन समांग।'* देखिते छी जे एहिठाम कोखि (अर्थात् सन्तान)क बाद मांग (अर्थात् पति) कें स्थान देल गेलैक अछि, मुदा सभ सँ बेसी प्रमुखता समांग (अर्थात् स्वास्थ्य) कें प्राप्त छैक जे ओ (स्त्री) कर्मठतापूर्वक अपन प्रतिपाल क' सकत, अपन गरिमाक रक्षा क' सकत, बस एतबे चाही। ई थिक लोक-साहित्यक आन्तरिक संसार।

आ, एहि गरिमामयी स्त्रीक चरित्र कें देखल जाय। 'नैका बनिजारा'क फुलेश्वरी कें हुनकर ननदि बड़ दुख दैत छथिन। कुम्भा डोमक हाथें बेचि क' वेश्यावृत्ति लेल मजबूर क' देलकनि, से तँ कहबे केलहुँ। हुनकर पुत्रक हत्या क' देबाक भारी षड्यन्त्र धरि केलक। मुदा, बदला मे फुलेश्वरी की केलनि? जखन हुनका हाथ मे प्रभुता एलनि तँ ओ ननदि कें क्षमा क' सहायता धरि केलनि। 'महाभारत'क द्रौपदी जँ रहितथि तँ कौरव वंशक नाश क' देने रहितथि। कोनो संस्कृति जखन अपन फराक अस्तित्व रखैत अछि तँ ओकर निजता सेहो गत्र-गत्र सँ झलकैत रहैत छैक।

दलित-साहित्यक सम्बन्ध मे यदि थोड़बो टा ज्ञान हो, तँ हमरालोकनि देखि सकैत छी जे अपन मूल स्वभाव आ प्रकृति मे दलित साहित्य वैह

वस्तु थिक जे लोकसाहित्य थिक। युगक अनुरूप धुआ-धजा सँ ल' क' बोली-बानी धरि बदलि अवश्य गेल अछि, मुदा सभ कथूक बदलि गेलाक बादो जे वस्तु अपरिवर्तनीय रहैत छैक ताहू वस्तु कें हमरालोकनि खोज केलाक उपरान्त विद्यमान देखि सकैत छिऐक। सभ सँ प्रमुख परिवर्तन भाषा आ ओकर तेवर मे भेल अछि। तकर प्रमुख कारण अछि सामाजिक परिवर्तन। शिक्षा, वैज्ञानिक बुद्धिक विकास, लोकतन्त्र आ वैश्वीकरण--ई सभ मिलि क' आजुक समाज कें ओहि कालक समाज सँ ततेक आगू क' देलक अछि जे एहि सभ परिवर्तनक घटित हएब सहज एवं तर्कसंगत अछि।

तखन हमरालोकनि ईहो देखैत छी जे सामाजिक परिवर्तन (जकरा सुविधानुसार क्रान्ति सेहो कहि सकैत छिऐक)क सन्दर्भ मे मिथिलाक स्थिति कमोवेश एक निर्वासित द्वीपक रूप मे बनल रहल अछि। बाहर एक सँ एक जोरदार क्रान्ति होइत रहल हो, मुदा ताहि खन मिथिला मे तकर कोनो सुगबुगी अहाँ नहि देखब। उनटे प्रतिक्रिया आ विरोध देखब। आगू जखन ओहि क्रान्तिक आगि मिझा जाएत तँ ओकर प्रमुख अवदान सभ कें, गुण सभ कें मिथिला चुपचाप अपना लेत। एकरा 'ब्राह्मणवादी चतुरता'क नाम देल जा सकैत अछि। एहि युगीन नवाचार सभ कें अपनेबा काल, मिथिलाक मूल मंशा कें देखैत, औचित्यविहीन पाखण्ड जकाँ अहाँ कें लागि सकैत अछि, मुदा अहाँ जँ मिथिला कें टोकबै तँ अपन कृत्यक संगति देखेबा लेल एक लाख तर्क अहाँ लग मे राखत। ई ओकर बौद्धिक प्रखरताक निशानी छिऐक जे युग-युग सँ ओकरा ढीठ बना क' रखने छैक। बौद्धधर्म-संस्कृतिक उत्थान, भक्तिकाल आ भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन (आ भारतक नव-निर्माण)मे अम्बेदकरक उपस्थिति--ई तीनू एहन माइल स्टोन सभ थिक, जकर महत्त्व, सामाजिक परिवर्तन आ खास क' क' दलित-चेतनाक उभार मे युगान्तरकारी महत्त्व छैक। मुदा, हमरालोकनि देखि सकैत छी जे एहि सभक संग मिथिलाक व्यवहार सदैव नकारात्मक रहल अछि। आर कतए गेल जाए, आइ देखैत छी जे लोकतन्त्र दुनियाँक सर्वाधिक मूल्यवान वस्तु थिक। मिथिला सेहो एकरा अपनेने अछि। मुदा, एकरा अपनेबा मे जे अन्यमनस्कता छै, से एकर मजबूरी कें प्रकट करैत

छैक आ सहज परिणामवश लोकतन्त्रक आन्तरिक लाभ सँ एकरा वंचित सेहो करैत छैक। हमरालोकनि तँ ओहि देसक बासी छी जकर महाराज संविधानक उद्‌भव काल मे, प्रतिगामी शक्तिक नेतृत्व केने छलाह आ माथ पर 'मनुस्मृति' राखि क' दिल्लीक सड़क पर 'दाण्डी मार्च' (विरोध प्रदर्शन) केने छलाह। हुनकर तात्पर्य ई जे जखन 'मनुस्मृति' अछिए तखन नबका संविधान बनेबाक कोन औचित्य छैक? आ आइ मिथिला संविधान कें अपनेबा लेल विवश अछि। आ, महराजक जयकार सेहो चाहबे करी। एहना मे लोकतन्त्रक लाभ सँ ई वंचित कोना नहि रहत?

अध्ययन कएला पर हमरालोकनि पबैत छी जे मैथिली लोकसाहित्य एक अपूर्व आशावाद सँ सर्वत्र दीप्त अछि। ई आशावाद पूर्ण रूप सँ मिथिलाक कतिआएल जनसमूह, अबडेरल समाजक मनोनिर्मिति थिक, जकरा हेरेबा लेल किछु नहि छैक, मुदा पएबाक लेल सौंसे ब्रह्माण्ड अछि--अद्‌भुत राग, कामना आ उत्साह सँ भरल। मनुष्यताक हक मे जे पॉजीटिव अछि, एहन सेहन्ता सभ सँ डबडब। एहिठाम घर अछि, घरनी अछि, परिवार अछि, कुल-कुटुम्ब अछि संस्कृतिक रूप मे उदात्तीकृत रोजी-रोजगार अछि, समाज अछि, समाजक अपन लक्ष्य अछि आ ओहि लक्ष्य कें पूरा करबाक लेल उत्साह आ उद्यम अछि।

कतोक बेर हमरा आश्चर्य लगैत अछि जे ई कोना क' सम्भव भ' सकल हएत? हमरालोकनि अवगत छी जे मैथिली लोक-साहित्यक उद्‌भव-काल करीब-करीब वैह अछि जे सिद्ध-साहित्यक विद्यमानताक काल छैक। सिद्धसाहित्य घोर निराशावाद सँ भरल अछि। एहिठाम जीवनक कोनो मतलब नहि छैक जँ अहाँ एकाकी आ असंग ढंग सँ जीबैत, शौच-अशौचक भेद कें त्यागि सहज साधना करैत परमात्मा कें प्राप्त नहि क' सकलहुँ। एक्के कालक दूटा साहित्य-धारा मे हमरालोकनि बिल्कुल विपरीत जीवन-मूल्य कें प्रधान लक्ष्य बनल देखैत छी। ई बात हम पहिनहुँ अन्यत्र कहि आएल छी जे महाकवि विद्यापतिक युगान्तरव्यापी सफलताक रहस्य एही बात मे निहित छैक जे ओ अपना लेल आदर्शक चयन लोक-साहित्य सँ केलनि। आशा, उत्साह आ राग कें अपन प्रधान लक्ष्य बनाओल। यैह चीज हुनका साहित्य-संसार मे बहुत पैघ क' देलकनि आ

एतए धरि जे मध्यकालीन सँ बेसी ओ आधुनिक प्रतीत होइत रहलाह। लोक-साहित्य सँ विद्यापति जीवनमूल्य आ रचना-शैली लेलनि, मुदा तें हुनका लोकसाहित्यक अन्तर्गत क' क' देखी, तकर ने प्रश्न उठैत अछि आ ने तकर कोनो प्रसंगे छैक। हँ, ई जरूर भेलै जे ओ 'लोक' मे सुहृद मनें अपना लेल गेलाह।

यैह आशावाद दलित साहित्यक सेहो प्रधान जीवन-मूल्य आ सर्वोच्च प्राथमिकता-प्राप्त कथ्य छिऐक। युग पर युग बितैत चल गेल, मुदा वृहत्तर समाजक एक संवर्ग पिछड़ल के पिछड़ले, कतिआएल के कतिआएले रहि गेल। कहियो ओकरा धर्म-सत्ता दाबने रहल तँ कहियो राजसत्ता। सुविधाभोगी उच्चवर्गक उच्चता बरकरार रहय, ताहि लेल एहि वर्ग कें पिछड़ल, कतिआएल रहब अनिवार्य मानल गेल। हमरा सभ लग 'मनुस्मृति' अछि आ हाल-सालमे देखल अंग्रेज सरकारक नीति अछि, जाहि सँ बूझि सकैत छी जे दलितवर्गक प्रति उच्चवर्गक की नजरिया छलैक। प्रसंगवश, बंकिमचन्द्र चटर्जीक ई बात हम कोट करब जे *'ब्राह्मणलोकनि प्राचीन भारतक अंग्रेज छलाह'।* मुदा, जेना तेना देश स्वतन्त्र भेल, विरोधक बादो लोकतन्त्र अंगीकार कएल गेल आ संविधान लागू भेल। एहि साठि-पैंसठ वर्ष मे बहुतो परिवार एहन निकलि आएल, जतए अक्षरक इजोत पहिल बेर पसरलैक। खन्दान मे पहिल बच्चा जनमल जे 'क-ख' लिखब सीखलक। फेर एहनो लोक आबए लगलै, जकरा मे साहित्यिक प्रतिभा आ लेखन-क्षमता भेलैक। ओकर नजरिया, ओकर अनुभव, ओकर चेतना पहिल-पहिल बेर साहित्य मे उतरलैक। सोचि क' देखी तँ ई कोनो मामूली घटना नहि छिऐक। मुदा प्रश्न अछि जे सोचि क' देखी कोना?

एहन साहित्य, जाहि मे सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग, एहि कतिआएल समाजक जीवन दर्ज हो, दलित साहित्य कहल जाइत अछि।

एहि कतिआएल समाज कें, जें कि विकासक मुख्यधारा सँ दूर रखबाक लेल बाट मे काँट रोपल गेल, सभ दिन गैर-बराबरीक व्यवहार कएल गेल, से सभ एकर चेतना मे खचित छैक। तें, स्वाभाविक छैक जे दलित-साहित्य मे ओकर जीवनक दुख-दर्द आ आक्रोश-प्रतिरोध अधिकता मे व्यक्त भेलैक अछि। मुदा, स्वीकार करबाक चाही जे ई सभ वस्तु

दलित-साहित्यक मात्र एक आयाम थिकैक। एकर दोसर आयाम ओतए सँ शुरू होइत छैक, जतए हमरालोकनि ओकर जीवनक सौन्दर्य, ओकर उत्साह आ उल्लास कें देखैत छिऐक। सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग जँ ओ समाज अपन सहज जीवन जीयत तँ ओकर जीवनक सौन्दर्य कोनहुँ युगक लोकक लेल एक सार्थक जीवनक बानगी हेबे करतैक।

सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग दलित जीवन जाहि साहित्य मे आएल हो, एहन साहित्य दू तरहक भ' सकैत अछि। एक तँ एहन जे दलितेतर लोक द्वारा लिखल गेल हो मुदा एहि मे जीवन-गरिमाक कमी नहि हो। एहन साहित्य कें दलित-विचारक लोकनि 'सहानुभूतिक साहित्य' कहैत छथि आ मानैत छथि जे ईहो साहित्य सही दलित साहित्य नहि भ' सकैत अछि। तकर अनेक कारण ओ लोकनि बतबैत छथि। ओ लोकनि मानैत छथि जे दलितक जीवनक जे विडम्बना अछि, तकरा एक दलिते सही-सही अभिव्यक्त क' सकैत अछि, कारण आन समाजक मनोनिर्मिति दलितक मनोनिर्मिति सँ सर्वथा भिन्न होइत अछि। विभिन्न भाषाक एहन महान साहित्यकारलोकनि, जनिकर दलित-सहानुभूति जगजाहिर छनि, हुनको साहित्य मे दलित-विचारकलोकनि हजार तरहक दोख देखैत छथि। ई दोख प्रेमचन्द, नागार्जुन, मुल्कराज आनन्दोक साहित्य मे देखाओल गेल अछि। हिनकालोकनिक तथ्य कें देखी तँ से बेस तर्कसंगत देखाइत छैक। हिनका सभक मान्यता छनि जे एक दलिते दलितक जीवन-कथाक संग न्याय क' सकैत अछि आ अपन निर्मिति (रचना) द्वारा एक एहन विश्वस्त आभा-मण्डल रचि सकैत अछि जे दलित-समाजक लेल स्वीकार्य आ व्यवहार्य (ओकर जीवन मे काज एबा योग्य) भ' सकैत छैक। एहन साहित्य 'स्वानुभूतिक साहित्य' कहल जाइछ।

मैथिली साहित्यक स्थितिक जँ हमरालोकनि अवलोकन करी तँ देखैत छी जे स्वानुभूतिक साहित्यक तँ कोन कथा जे सहानुभूतिक साहित्यक सेहो एतए घनघोर अभाव अछि। तकर कारण अछि जे मिथिला मे धर्मसत्ता आ राजसत्ता दुनू दलित-शूद्र वर्ग कें प्रधान शासित मानैत आएल आ सामाजिक न्यायक प्रश्न दूर-दूर धरि कतहु दृश्यमान धरि नहि भ' सकल। ई ऐतिहासिक दुश्मनी छल, जकर जड़ि नान्यदेव-पूर्वक शूद्र-शासन मे

निहित छै। मिथिला कें अपन शासन भेलैक तँ सभ सँ बेसी ध्यान दलित-शूद्र कें सैंतबा पर देलक। ई दुनू समाज ताहि तरहें अलग-विलग क' देल गेलैक जे सभ कथू मे दू तरहक रंग-ढंग शास्त्र-सम्मत बनि क' विकसित भ' गेल। दुनूक दू रंगक भाषा, दू रंगक रीति-रेवाज, दू रंगक धर्मशास्त्र, दू रंगक जीवन-पद्धति, दू रंगक नैतिक मानदण्ड, दू रंगक सौन्दर्य-दृष्टि। रवीन्द्रनाथ टैगोर लिखलनि अछि जे *जखन समाजक एक वर्ग, दोसर वर्ग कें दुरवस्था पर पहुँचाबैत छैक, तँ पतन मात्र ओहीटा वर्गक नहि होइत छैक जे दुरवस्था कें प्राप्त क' लैत अछि, अपितु ओहो वर्ग ओही हिसाब सँ दुरवस्था कें प्राप्त करैत छैक जे दोसर कें ताहि दिस ठेलबाक काज करैत अछि।* मिथिलाक सवर्ण समाज कोन तरहें दुरवस्था कें प्राप्त केलक तकर आख्यान हमरालोकनि 'खट्टर ककाक तरंग' मे आ हरिमोहन झाक आनो लेखन मे देखि सकैत छी। एहना स्थिति मे अहाँ दलितक प्रति सहानुभूतिक साहित्यक अपेक्षा कोना क' सकैत छी?

मगध आ मिथिला दुनू बिहारे मे अछि। मुदा, हमरालोकनि देखैत छी जे बीसम शताब्दीक प्रथम चरण मे जखन मगध मे हीरा डोम दलित-पीड़ा पर कविता लिखि रहल छलाह आ तकरा प्रतिष्ठित पत्रिका मे प्रकाशित कएल जा रहल छलैक, तहियो मिथिला समुद्र-लंघन उचित कि अनुचित केर महान धर्मप्रश्न सँ प्राणपण सँ जूझि रहल छल। ताहि दिनक जे सर्वाधिक प्रगतिशील साहित्यकार सभ छलाह, जेना चन्दा झा, लालदास, परमेश्वर झा आदि, हुनको सभ लेल अस्पृश्यता एक एहन जीवन-मूल्य छलनि, जकर अनुपालन मे ढिलाइ किन्नहुँ स्वीकार्य नहि भ' सकैत छलैक। एहना स्थिति मे की अहाँ दलितक प्रति सहानुभूतिक साहित्यक अपेक्षा कए सकैत छी?

आगू मैथिली साहित्य बहुत विकास केलक। कथा, उपन्यास आ कथेतर गद्य प्रमुखता-प्राप्त विधा बनल रहल। एहि सभ मे दलितो एला, शूद्रो एला, एतए धरि जे विधर्मियो एला। मुदा, हजार बर्ख सँ अलग-अलग विलग-विलग संस्कृति जीबैत अदना (पराया) लोकक मनोनिर्मिति कें सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग शब्दबद्ध क' देब की एतेक आसान बात छिऐक! प्रेमचन्दो जतए कठोर आलोचनाक पात्र बनि जाइत छथि, ततए कथाकार ललित कतेक काल टिकि सकैत छथि!

दलितक आगमन अनिवार्य अछि। ओकर साहित्य जँ हमरा लोकनि कें चाही तँ ओकरा हाथ मे कलम धरब अपरिहार्य अछि। स्वानुभूतिक साहित्यक अतिरिक्त आन कोनो उपाय नहि अछि।

मैथिली मे स्वानुभूतिक साहित्य रचल जा सकए, एकर सम्भावना आइधरि नहि कहियो बनल होइक, एहनो बात नहि अछि। मैथिलीक आधुनिक साहित्यक पछिला सए बर्खक इतिहास मे कम सँ कम एक दर्जन एहन लेखकक आगमन भेल जे भिन्न मनोनिर्मिति कें ल' क' मैथिली मे आएल छलाह। साहित्य मे ओ लोकनि एहि दोसर--कतिआएल, अबडेरल--समाजक प्रतिनिधित्व करैत छलाह। एक भिन्न दृष्टिकोण सँ ओ लोकनि दुनियाँ कें देखबाक आँखि आ गुनबाक सम्वेदना ल' क' आएल छलाह। मुदा, दू कारण भेल जे ओलोकनि दलित साहित्यक दृष्टिऐं कोनो सार्थक पहल नहि क' सकलाह। प्रत्येक साहित्यक अपन परम्परा, अपन लीक, अपन आभामण्डल होइत छैक। एहि सँ एक बन्हन, एक अनुशासन बनैत छैक। साहित्यक आभामण्डल नवागन्तुक लेखकक लेल मूक मुदा अटारनीय प्रशिक्षकक काज करैत छैक। यैह कारण होइत छैक जे अहाँ मैथिली मे कलम पकड़ि उर्दू सनक साहित्य नहि लिखि सकैत छी। मैथिली मे लिखब तँ अहाँ कें मैथिलिए सनक लिखए पड़त। बड़का सँ बड़का लेखक कें हमरा लोकनि एहि बाध्यताक आगू झुकैत देखि सकैत छी। से, ई लोकनि जखन मैथिली मे लिखलनि तँ मैथिली सनक लिखब हिनकर बाध्यता छलनि। आ, मैथिलीक मति आ गति जाहि तरहक विकसित कएल गेल छलैक, ई असम्भव सन छल जे क्यो एहि बाध्यता कें तोड़ि आगाँ बढ़ि सकथि।

दोसर कारण भेल जे आधुनिकताक दबाव मे ई लेखक लोकनि स्वयं एक दौड़, एक संघर्ष मे लागल रहलाह। ई दौड़ संस्कृतीकरण (Sanskritisation)क दौड़ छल। अर्थात् छोटका लोकनि बड़का बनबाक अभियान मे लागल छलाह। समाजक आदर्श छलाह ब्राह्मण लोकनि। ई नवागन्तुक लोक सभ जखन सक्षम भ' क' सामने एलाह तँ ब्राह्मण जकाँ खेबा-पीबा, ओढ़बा-पहिरबा, सोचबा-विचारबाक अभ्यास केलनि। कलम पकड़लनि तँ ब्राह्मणे जकाँ लिखबाक अभ्यास केलनि। अपन कृत्य आ

कृति सँ समाजक मुख्यधारा मे अपना कें शामिल देखबाक आ सम्मान हासिल करबाक ई निश्छल सेहन्ता छल। ई सेहन्ता हुनका लोकनिक दिस सँ छलनि आ से इनोसेन्ट, तें देखल गेल जे एकर पूर्त्ति सेहो ओलोकनि अपने दिस सँ पाबि गेला। मैथिली मे लिखिये क' मात्र अपना कें मुख्यधारा मे शामिल अनुभव क' लेलनि। हुनक संस्कृतीकरणक चक्र पूरा भ' गेल। एतद्धि।

मुदा, सोचि क' देखू तँ की ओलोकनि ठीके सम्मानित भ' सकलाह? मैथिली साहित्य पर जिनका लोकनिक पहरा छलनि, ओ सभ हिनका लोकनिक प्रति निरपेक्ष आ असम्वेदनशील बनल रहलाह। हिनका लोकनि कें सदैव 'आउट साइडर' आ आक्रान्ता-सनक ट्रीट कएल गेलनि, जेना ई लोकनि हुनका सभक पुरखाक सम्पत्ति हड़पबा लेल अवांछित रूप सँ किला मे प्रवेश क' गेल होथि।

ब्राह्मणानुकूलित साहित्य लिखबाक अछैतो हिनका लोकनि मे सँ क्यो एक्को गोटे सम्मानक हिसाबें सर्वस्वीकृत नहि मानल जा सकलाह। की अहाँ छाती पर हाथ राखि क' कहि सकै छी जे जाहि स्तरक किताब सभ कें आइधरि ओ लोकनि साहित्य अकादेमीक पुरस्कार देलनि, ताहि स्तरक अथवा ताहि सँ उच्च स्तरक कोनो किताब मैथिली मे, एहि दलित लोकनि मे सँ क्यो आइधरि नहि लिखि सकल छथि? असल मे, साहित्यक मूल्यांकन कें एतए सामाजिक संघर्षक रूप द' देल गेलैक, जे शक्तिशाली सवर्ण आ शक्तिहीन कुवर्णक बीच चलैत रहल अछि। एकरा जँ भविष्यक प्रति दृष्टिहीनता नहि कहब तँ की कहब? आ एना मे, मैथिलीक हो, तँ की हो?

प्रसंगवश, एहिठाम हम एकटा आर सन्दर्भक बात करब। अंगिका आ वज्जिकाक अस्मिता आ स्वीकृतिक संघर्ष पछिला कैक दशक सँ चलि रहल अछि। मैथिलीक बुद्धिजीवी लोकनि कैक आधार पर एकरा औचित्यहीन बतबैत छथि आ विरोध करैत छथि। इतिहास उनटाबी तँ देखब जे एकर आरम्भ कोनो जनान्दोलन अथवा राजनीतिक आन्दोलनक रूप मे नहि भेल छलैक। ई शुद्ध रूप सँ तत्तत भाषाक साहित्यकार लोकनिक द्वारा साहित्य-लेखनक माध्यम सँ चलाओल गेल अभियान छल। एम्हर, सुप्रसिद्ध

लेखक कमलेश्वरक एक लेख कें पढ़ैत हमरा जानकारी भेटल जे 'संस्कृति के चार अध्याय' सन गौरव ग्रन्थक रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' अपन जीवनक अंतिम कालखण्ड मे अत्यन्त गम्भीरताक संग अंगिका आ आन अबडेरल लघु-भाषाक अस्मिता आ पहचान पर एक सर्वांगपूर्ण ग्रन्थ लिखबाक योजना बनौने छलाह। लिखबा सँ पहिनहि हुनकर निधन भ' गेल, से भिन्न बात। मुदा, मुद्दाक गम्भीरताक पता तँ एहि सँ चलिते छैक। एहि विषय मे हमर स्पष्ट मान्यता अछि जे अंगिका-वज्जिका आन्दोलनक जन्मदाता मैथिल महासभाक मैथिल-नीति थिक आ एकरा धार आ तेवर देबाक काज आचार्य रमानाथ झाक मानक भाषा-नीति केलक। अहाँ ब्राह्मण आ कर्णकायस्थ कें छोड़ि आन कें मैथिल नहि मानब आ पाँच गामक परिधि मे बाजल जाइ बला बोली टा कें मानक भाषाक दर्जा देब तँ ओ लोकनि की करताह जे एहि मे सँ एक्को शर्त्त पूरा नहि करैत छथि! अपन अस्तित्वक लड़ाइ तँ लड़बे करताह। क्षमा करब, ईहो प्रकारान्तर सँ हमरा दलित-संघर्ष देखाइत अछि। आ दुर्भाग्य सँ आइयो धरि मैथिली मे क्यो एक्को गोटा नहि भेलाह, जे तोड़ल कें जोड़बाक रणनीति सोचैत होथि।

दलित-स्वरक वर्त्तमान स्थिति कें देखी तँ बहुत बदलल सन देखाब दैत अछि। विचारक लोकनि एकरा उत्तर आधुनिकताक प्रभाव मानैत छथि। कोनो शास्त्रीय सिद्धान्तक आधार पर समाज मे आ व्यक्ति मे परिवर्त्तन आएल हो, से बात तँ ने अछि आ ने भ' सकैत अछि। बात मात्र एतबे अछि जे युग आ समयक दबाव मे आइ सौंसे दुनियाँक समाज मे किछु ठोस परिवर्तन सभ भेल अछि आ समाजशास्त्री आ दार्शनिक लोकनि ओकरा परिभाषाबद्ध करबाक प्रयास केलनि अछि। ई युग नव-नव अस्मिताक उभार आ उमंगक युग बनि क' आएल अछि। जे जही ठाम अछि, तही ठाम सँ अपन अस्मिताक आत्मविश्वस्त घोषणा क' रहल अछि। तात्पर्य जे अपन अस्मिता कें परिभाषित करबाक लेल अनका पर आश्रित रहब ओ छोड़ि देलक अछि। नारी आ दलित - ई दू टा अस्मिता थिक जे अपन गम्भीर विमर्शक रूप लेने एहि युगक सोझाँ हिमालय जकाँ उपस्थित अछि। ई मिथिलाक बात नहि, सौंसे दुनियाँक बात थिकैक।

एकर प्रभाव जानता-अनजानता मिथिलो पर कमोबेश पड़ि रहलैक अछि। मिथिला मे आइ हमरा लोकनि एहन-एहन विचारक, वक्ता आ लेखक कें देखि रहल छी, जकर हेबाक संभावना दशक भरि पहिने धरि नहि भ' सकैत छल। एहन-एहन रचना लिखल जा रहल अछि जे मैथिली-चिन्तन परम्पराक जड़ता कें नाङट क' क' सामने राखि दैत अछि। ई बात भिन्न जे एहन रचना संख्या मे कम अछि आ एकर प्रशंसक नगण्य आ निन्दक अगणित अछि। मुदा, स्थितिक पता एहि सँ तँ चलिये जाइत छैक जे तैयो एहन रचना लिखल जाइत अछि।

प्रतिनिधि-स्वरक प्रखरताक बात भिन्न, मुदा व्यापक सर्वेक्षणक आधार पर जँ देखल जाय तँ मैथिली मे दलित साहित्यक स्थिति आइयो, एहू उत्तर आधुनिक विमर्शक युग मे, विपन्न अवस्था मे अछि। मैथिली मे दलित स्वरक रचना सभ तँ जरूर अछि, मुदा किताब वा संकलन नहि अछि। एहन कृति सभक घोर अभाव अछि, जकरा एक मुकम्मल दलित-कृति कहल जाय। एहन रचनाकारक स्थिति नगण्य अछि, जिनका दलित-स्वरक मर्म भीजल होनि। तकर फल होइत अछि जे एक्के रचनाकारक एक रचना जँ दलित साहित्य थिक तँ दोसर ब्राह्मणवादक प्रभाव सँ दूषित। एहन क्यो रचनाकार नहि छथि, जिनका मे जुझारूपन आ विद्रोह स्थायीभावक रूप मे होइनि, जखन कि दलित साहित्यक लेल ई एक आवश्यक गुण मानल जाइत छैक।

पछिला पाँच बरस मे एक दर्जन सँ बेसी नवागन्तुक रचनाकार लोकनि मैथिली मे लेखन शुरू केलनि अछि। ई लोकनि 'मण्डल' कुलनामी सँ ल' क' 'पासवान' धरि छथि। प्रथम दृष्ट्या हिनका लोकनि कें दलित संवर्गक साहित्यकार कहल जा सकैत अछि। से हिनका लोकनि कें दोसर क्यो कहनि, तकर जरूरति नहि छनि, अपितु अपने ई लोकनि चिकरि-चिकरि क' ई बात कहैत छथि आ अपन पताका अपने फहराबैत रहैत छथि। आन भाषाक क्यो दलित-चिन्तक जँ हिनका लोकनि कें सभा मे देखताह तँ बहुत आनन्दित हेताह जे मैथिली-सन गतिहत भाषा मे सेहो ई लोकनि अपन पताका फहरा रहल छथि। दलित-स्वरक नव फसिल उपजेबाक लेल ओ लोकनि मिथिला कें बधाइयो द' सकैत छथि। मुदा वास्तविकता की

अछि, से हमरा सभ, घरबैया लोकनि बूझि रहल छी। ई नवागन्तुक लोकनि ब्राह्मणवादी वर्चस्वाकांक्षी मैथिलीसेवी सभक पालतू कार्यकर्त्ता लोकनि थिकाह, जे छोट-छोट लोभ-लाभक फेर मे अपन मूल चेतनाक संग गद्दारी क' रहल छथि। गम्भीर ढंग सँ एहि पर बात करी तँ कहल जाएत जे पूर्ण रूप सँ ई वर्ग-सहयोगक दृष्टान्त थिक। भ' सकैछ जे ब्राह्मणवादी लोकनि फुसला क', डरा-धमका क', दबौट बना क' अथवा धन आ यशक लोभ द' क' ई सहयोग प्राप्त केने होथि। भ' सकैछ जे ई लोकनि अनिच्छापूर्वक सहयोग क' रहल होथि। मुदा, प्रश्न इच्छा-अनिच्छाक नहि अछि, प्रश्न ऐतिहासिक प्रक्रियाक वस्तुगत स्थितिक अछि। मैथिली मे दलित लेखनक इतिहास वर्ग-सहयोगक इतिहास रहल अछि आ तकरा एहि परिप्रेक्ष्य मे साफ-साफ देखल जा सकैत अछि।

मुदा, एहि सभ कथूक बादो हमर सोच अछि जे आगाँ जँ मैथिली साहित्यक कोनो नीक भविष्य छैक, तँ से दलित साहित्यहुक विकास आ अवदान पर निर्भर छैक। से दुनू अर्थ मे - सहानुभूतिक साहित्यक अर्थ मे सेहो आ स्वानुभूतिक साहित्यक अर्थ मे तँ सहजहिं।

(2014)

सन्दर्भ :

1. फकड़ा, किरण-समग्र, पृ. सं. 176
2. साहित्यिक भाषा आ लोकभाषा, किरण-समग्र, पृ. सं. 153
3. फकड़ा, किरण-समग्र, पृ. सं. 179
4. रमानाथ झा, प्रबन्ध संग्रह, पृ. सं. 56, 1963 ई.

आदिकालीन मैथिली साहित्यक प्रवृत्ति

मैथिली कविता की थिक? पछिला एक हजार बर्ख मे एहि भूभाग, मिथिलाक लोक, अपन वैचारिक वा भावनात्मक अनुभवक काव्यात्मक अभिव्यक्ति, अपन भाषा मे जे केलक अछि, सैह थिक--मैथिली कविता। एहि भाषा कें 'मैथिली' तँ आइ कहल जाइत छैक। हमरा लोकनि जनैत छी जे एहि भूभागक भाषाक अर्थ मे 'मैथिली' शब्दक प्रयोग प्रथम-प्रथम कोलब्रुक्स 1801 ई. मे कयलनि।[1] आगाँ एहि नामकरण कें ग्रियर्सन पुष्ट केलनि। पण्डित लोकनि एकरा 'मिथिलापभ्रंश' वा बहुत भेल तँ 'मिथिला-भाषा' कहथि, मुसलमान लोकनि 'तिरहुता' वा 'तिरहुतिया' कहथि, विद्यापति एकरा 'देसिल बयना' कहलनि। आरम्भिक रचनाकार यथा सिद्धलोकनि एकरा मात्र 'भासा' कहि क' काज चलौलनि। आदिकवि वाल्मीकि जकरा 'मानुषी भाषा' कहने छला, तकरहु भाव तँ यैह थिक। मूल बात थिक--एहि भूभागक आमलोक द्वारा प्रयुक्त भाषा, अर्थात पण्डितक भाषा नहि, देवताक भाषा नहि, ठेठ आमलोकक भाषा।

आचार्य रमानाथ झा बहुत शोध कयलाक पछाति अन्ततः एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छलाह जे मैथिली भाषाक आदिम विकास ब्राह्मणेतर वर्णक छोट-छोट लोक सभ केलनि। के छलाह ओ लोक सभ? मिथिला-क्षेत्रक किसान, जन-बोनिहार, छोट-छोट व्यवसायी, शिल्पकार आ साधु-सन्त लोकनि। पण्डितक भाषा हिनका लोकनिक अप्पन भाषा नहि भ' सकैत छलनि। ओहि भाषा मे ने तँ हिनका लोकनिक लेल कोनो स्पेस छलनि आ

ने हिनका लोकनिक अनुभूति लेल कोनो संभाव्य अभिव्यक्ति। आवश्यक रूपें ई प्रश्न प्राचीन मिथिलाक सत्ताक संग जुड़ल अछि। ब्राह्मण धर्म आ बौद्ध धर्मक बीच जे युगान्तरव्यापी सारस्वत संघर्ष चलल, तकर अनेको फलाफल बहराएल आ तकर एक फल मैथिली सेहो थिक।

सिद्ध लोकनि अपन गामघरक भाषा मे पद जोड़ब शुरू केलनि, से हुनका लोकनिक लेल तँ ई स्वाभाविक आ सहज बात छल मुदा भारतीय साहित्यक सन्दर्भ मे ई एक युगान्तरकारी काज छल।

सिद्ध लोकनिक कविता मैथिलीक प्राचीनतम काव्य धरोहर थिक। एहि मादे किछु काज भेल अछि। मुदा विषय-वस्तुक संग आत्मीयता नहि रहबाक कारण हमर आचार्य लोकनि ठोस निष्पत्ति धरि नहि पहुँचि सकलाह अछि। आत्मीयताक अभावक की कारण? कारण जे सिद्ध साहित्य विधर्मीक, बौद्ध लोकनिक वस्तु थिकनि। हमरा लोकनि अवगत छी जे सिद्ध साहित्य पर हिन्दी, बंगला आ असमियाक दाबेदारी आइयो छैक। यैह दाबेदारी कहियो विद्यापतियो पर छलनि। मिथिलाक आचार्य लोकनि कें विद्यापति जतेक 'आत्मीय' लगलथिन, सिद्ध लोकनि नहि आ तें ताहि दिशा मे प्रयास नगण्य बनल रहल अछि। स्थिति तँ एहन अछि जे डॉ. जयधारी सिंह अपन ग्रन्थ 'बौद्धगानमे तांत्रिक सिद्धान्त' मे ई सिद्ध करबाक लेल तँ प्रचुर श्रम कयलनि जे सिद्ध लोकनि अपन सैद्धान्तिक आधार हिन्दूतन्त्र (शैवशाक्ततन्त्र) सँ प्राप्त केने छलाह, मुदा तकर भाषाक ओझरौट कें सोझरेबा मे, ओ निस्पृह बनल रहलाह।

सिद्धसाहित्यक मैथिली आजुक भाषा सँ पृथक देखाइत अछि तकर कारण जे ओ अपना कालखण्डक मौखिक भाषाक लिप्यन्तरित रूप थिक। मूल आधार थिक ओकर भाषा-प्रकृति। सिद्ध साहित्यक भाषा अपभ्रंश-प्रकृतिक नहि अछि, ओ मैथिली प्रकृतिक अछि, ठीक तहिना जेना 'वर्णरत्नाकर'क भाषा कें आजुक मैथिली सँ भिन्न होइतो हमरा लोकनि ओकर प्रकृतिक आधार पर पहचान करैत छी। एहिठाम, एहि विषयक विस्तार मे गेने बिना हम मात्र एतबे कहब जे सिद्ध साहित्यक भाषा ठीक ओहिना प्राचीन मैथिली थिक, जेना 'षडावश्यक-बालावबोध' अथवा 'सन्देश-रासक'क भाषा प्राचीन हिन्दी।[2]

डॉ. नामवर सिंह तथ्य-निरूपणक संग ई बात कहलनि अछि जे जतय पश्चिमी प्रदेशक साहित्यिक भाषा बहुतो दिन धरि परिनिष्ठित अपभ्रंश सँ प्रभावित रहल ओतहि पूर्वी प्रदेश (मिथिला आदि) क लेल ओ शुरूहे सँ मात्र साहित्यिक भाषा बनिक' प्रतिष्ठित छल तें स्थानीय बोली सँ अलग-थलग बनल रहल। फल भेल जे एहि क्षेत्र मे देशी बोलीक उभार बहुत तेजी सँ भेल।[3]

प्रो. मायानन्द मिश्र तकर कारण तकैत सुदूर अतीत धरि जाइत छथि आ देखबैत छथि जे आर्यीकरण जें कि बहुत शुरुहे मे एहि प्रदेश मे भ' गेल आ कौलिक निरंकुश राजतन्त्रक स्थापना मे सेहो ई क्षेत्र अगुआ रहल, तें तकर प्रतिक्रियो सभ सँ पहिने एतहि भेल जकर एक फल छल जनपदीय भाषाक विकास।

मैथिलीक किछु आचार्य सिद्ध साहित्य कें साहित्यक कोटि मे नहि रखैत छथि। तकर गतानुगतिकता सम्भवतः ई लोकनि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल सँ प्राप्त केलनि, मुदा एहि कालक इतिहास-विमर्श पर जे शुक्ल जीक बाद आगू हजारी प्रसाद द्विवेदीक विचार अयलनि, ताहि सँ ई लोकनि निरपेक्ष बनल रहलाह। एहि पाछू सिद्ध साहित्य मे प्रयुक्त भाषा-रूप ओतेक जिम्मेवार नहि अछि जतेक सिद्ध लोकनिक विचारधारा। सिद्ध साहित्य एहि प्रदेशक आम लोक सभक लोकायत धर्म-भावना आ विचार कें काव्यात्मक रूप मे प्रस्तुत करैत अछि, आ ब्राह्मण-धर्म आ पण्डित-संस्कृतिक प्रति विद्रोह-भाव रखैत अछि।

मैथिली साहित्यक आदिकालीन सामग्री कें हमरा लोकनि तीन मुख्य कोटि मे राखि सकैत छी--

(1) सिद्ध साहित्य (2) गाथा-साहित्य (3) डाक-वचन

सिद्ध साहित्य स्वयं मे एक पैघ विविधता सँ भरल-पुरल अछि, जकर मुख्य भाग थिक--चर्याचर्यविनिश्चय, दोहाकोश तथा डाकार्णव। चर्याचर्यविनिश्चये कें सामान्य रूपें चर्यागीत कहल जाइछ जे मैथिली मे लिखल गेल अछि। दोहा सभ मे शास्त्रीयता अपेक्षाकृत बेसी हाबी छैक आ भाषा-रूप मे सेहो ओ जनभाषा सँ थोड़े दूर, अपभ्रंशक लगीच अछि। एहन प्रतीत होइत अछि जे ओ अधिकांशतः मैथिली-मूलक सिद्ध लोकनिक

रचना नहि थिकनि आ तकर काव्यरूप सेहो मिथिला सँ बाहर सँ आयातित अछि। प्राचीन वा मध्यकालीन मैथिली कविता दोहा छन्द मे निबद्ध नहि भेटैत अछि। मैथिली भाषा-प्रकृतिक अनुकूल विधा गीत छल, कवित्त छल मुदा दोहा नहि। डाकार्णव सेहो जनभाषा मे रचित अछि, मुदा ई सिद्ध लोकनिक अपन साम्प्रदायिक वस्तुक संग्रह थिकनि--लोकप्रसिद्ध डाकवचन सँ ई पृथक थिक। एकर सन्दर्भो भिन्न छैक। सिद्ध लोकनि मिथिला आ मगधक निवासी छलाह। अधिकांश सिद्ध अन्त्यज जातिक छलाह। ई लोकनि वज्रयान शाखाक अन्तर्गत अबैत छलाह। ब्राह्मण-धर्मक प्रति हिनका लोकनिक हृदय मे कठोर विद्रोह-भावना छलनि। समाज मे मुदा हिनकर सम्मान रहनि तकर कारण ईहो जे आमलोक वज्रयानक प्रति अनुराग रखैत छल। हिनका लोकनिक मुख्यालय विक्रमशिला विश्वविद्यालय रहनि। राजनीतिक सत्ता तहिया पाल लोकनिक हाथ मे रहनि जे स्वयं जात्या शूद्र छलाह आ बौद्ध धर्म कें मानैत छलाह, मुदा ब्राह्मण-धर्मक प्रति सह-भाव रहनि। वज्रयानी लोकनिक प्रति आमलोकक श्रद्धा आ अनुरागेक कारण आइ हमरा लोकनि देखैत छी जे मिथिला समाजक धार्मिक लोकाचार मे बहुतो एहन तत्त्व समाहित छैक जकर जड़ि वैदिक-ब्राह्मण धर्म मे नहि, अपितु बौद्ध सिद्धक धर्म-धारणा मे निहित छैक।

डॉ. जयकान्त मिश्र एहि साहित्यक काल 800-1300 ई. निर्धारित करैत छथि। मुदा हमरा लोकनि देखैत छी जे अनेक सिद्ध (यथा कंकणपाद), जनिक कतेको उल्लेखनीय रचना प्राप्त होइत अछि, 700 ईस्वीक आसपासक छथि। तें, मैथिली सिद्ध साहित्यक आरम्भ 700 ई. सँ मानबाक चाही, आ यैह मैथिली साहित्यक आदिकालक आरम्भिक बिन्दु सेहो बुझबाक चाही।

गाथा-साहित्य, आदिकालीन साहित्यक द्वितीय कोटि थिक। गाथा कें कतोक गोटे 'लोकगाथा' आ 'कण्ठ-साहित्य' सेहो कहैत छथि। तकर कारण जे ई आम लोकक वस्तु छल। 'लोक' सँ एहिठाम तात्पर्य ओहन लोक सँ अछि जनिकर व्यावहारिक ज्ञानक आधार ग्रन्थ नहि होइत छैक। कण्ठ-साहित्यक तात्पर्य जे ई साहित्य जन-कण्ठ मे बसैत छैक आ ताही माध्यम सँ अपन विकास प्राप्त करैछ, एकर कोनो लिखित रूप नहि होइछ।

हमरा लोकनि अवगत छी जे 'वर्णरत्नाकर' मे गाथा-साहित्यक चर्च भेल अछि। मैथिलीक प्रमुख गाथा सभ जेना लोरिक, सल्हेस, दीनाभद्री आदि निश्चिते 800 ई. सँ 1200 ई.क बीच अपन मूल स्वरूप मे आबि गेल होयत से अनुमान कएल गेल अछि। लोकगाथा सभक जे रचना-वितान हमरा लोकनि देखैत छिऐक आ तकर विषय-वस्तु सेहो, से असंदिग्ध रूप सँ कहल जा सकैए जे इहो कृति सभ ओही सामाजिक दशाक उपजा थिक, जकर उपजा सिद्धसाहित्य थिक। माने ब्राह्मण-धर्मक प्रति आ ओकर वर्चस्वक प्रति विद्रोह। सिद्धसाहित्यक विद्रोह आध्यात्मिक बाना मे छैक, ब्राह्मण धर्मक निषेध लेल ओ वैकल्पिक धर्मचर्याक उपस्थापन करैत अछि। तकरा पाछू एक विशाल परम्परा छैक आ अपन मठ आ अपन सत्ता सेहो छैक। गाथा-साहित्यक विद्रोह भिन्न रूपक अछि। ओहि मे संन्यास आ मोक्षक लेल जगह नहि छैक। ओ शुद्ध क' क' सामाजिक आ राजनीतिक परिस्थिति पर अपन हस्तक्षेप करैत अछि। अपन नायक ओ ठाढ़ करैत अछि जकर व्यापक आभामण्डल रचल जाइत छैक। ओतय जँ असमानताक दंश छैक तँ तकर प्रतिकार लेल संघर्ष सेहो छैक। तकरा संग ओतय प्रेम छैक, दाम्पत्य छैक, जीवनक रस-गन्ध, राग-अनुराग छैक।

आदिकालीन साहित्यक धार्मिक रुझानक विश्लेषण करैत किछु आलोचक लोकनि[5] देखौलनि अछि जे जाहि समाज मे दुख-दर्द आ अत्याचार कें वर्णव्यवस्थाक धर्मशास्त्रीय नियमन द' क' वैधानिकता प्रदान क' देल गेल हो, ततय जँ लोक विद्रोहो करय चाहय तँ से धार्मिके-नैतिके रूप मे अभिव्यक्त भ' सकैत अछि। ई तथ्य सिद्धसाहित्यक सन्दर्भ मे सटीक बैसि सकैत अछि, मुदा मैथिलीक गाथा-साहित्य एकर अतिक्रमण करैत अछि। व्यवस्थाक विरुद्ध प्रति-व्यवस्था आ सत्ताक विरुद्ध प्रति-सत्ता। किछु इतिहासज्ञ लोकनि (यथा प्रो. मायानन्द मिश्र) जोरदार ढंग सँ एहि तथ्यक अन्वेषण-उपस्थापन केलनि अछि जे लोरिक-गाथाक नायक 'लोरिक' वास्तव मे पालवंशक संस्थापक राजा गोपाल (700-810 ई.) छलाह। ठीक यैह बात हजारी प्रसाद द्विवेदी सेहो कहैत छथि। ओना, ओहि कालखण्डक सन्दर्भ मे भारतक इतिहास आमतौर पर की कहैत अछि? कहैत अछि जे राजनीतिक दृष्टिञे ई काल अराजकताक काल छल आ सांस्कृतिक दृष्टिञे

वैदिक परम्पराक प्रति विद्रोहक। से सैह, एही कालक उपजा मैथिली भाषा आ एकर आदिकालीन साहित्य थिक। आचार्य रमानाथ झा जखन गछैत छथि जे मैथिलीक जन्म ब्राह्मणेतर वर्णक लोकक द्वारा भेल छैक तँ ओ दृष्टान्तपूर्वक तकर विस्तार मे नहि जाइत छथि मुदा हमरा लगैत अछि जे से कहैत काल हुनका दृष्टिपटल पर ई तथ्य अवश्य रहल छल हेतनि।

आदिकालीन साहित्यक जे तेसर कोटि हमरा लोकनि कें प्राप्त होइत अछि से थिक--डाकवचन। डाको कें ल' क' विविध भाषा-प्रदेशक दाबेदारी रहलैक अछि। असल बात ई थिक जे सिद्धसाहित्य-डाकवचन सँ ल' क' विद्यापतिक गीत-रचनाक काल धरि एक एहन कालखण्ड छल जखन सभ प्रान्त मे तत्तद्देशीय भाषा सभ (जे कि आइ आधुनिक भारतीय भाषा थिक) विकसित हेबाक प्रक्रिया मे छल आ पूर्वी भारत मे मिथिला अपन उन्नत सांस्कृतिक धरोहर आ क्रियाकलापक कारण सभक अगुआ छल। एतुक्का वस्तु सभठाम पहुँचै छल आ ओहि प्रान्त सभक लोकक व्यावहारिक जीवन मे घुलि-मिलिक' ओहिठामक रंग ग्रहण क' लैत छल। तें डाकवचन पर जँ आनो प्रान्तक दावेदारी छैक, तँ कोनो आश्चर्य नहि।

डाकवचन उपर्युक्त दुनू कोटिक साहित्य सँ भिन्न छैक। ओ थिक मूलतः धर्मनिरपेक्ष प्रान्तनिरपेक्ष काव्य-रचना। ज्योतिष कें ओहुनो विज्ञानक कोटि मे रखबाक चलन रहलैक अछि। ई बात भिन्न जे मिथिला मे ज्योतिष-विद्याप्राप्त व्यक्ति कें कहियो पण्डितक सम्मान प्राप्त नहि भेलैक, ओ दोयम बूझल जाइत रहलाह। एना तँ खैर धर्मसत्ता पर वैदिक ब्राह्मणक पुनर्जाग्रत वर्चस्वक बाद भेल। डाकक सम्बन्ध मे कहल जाइछ जे ओ प्रकाण्ड ज्योतिर्विद वराहमिहिरक अवैध पुत्र रहथि जे गोआरिनक गर्भ सँ जन्मल रहथि आ शूद्र कोटि मे परिगणित रहथि। मुदा, तकर प्रमाण किछु नहि अछि। डाकक रचना अनुभवक कसौटी पर तेना क' कसल अछि जे ओ स्वतः प्रमाण भ' गेल अछि। ओ आगामी समयक बदलल राजनीतिक-धार्मिक परिवेश मे सेहो प्रासंगिक बनल रहल कारण ओहि मे अनुभवसिद्धताक आभा रहैक। आम लोकक साहित्यक रूप मे ई रचल गेल छल आ आमलोक एकरा सदति अपन हृदय मे धारण कयने रहल। अपन मौलिक स्वरूप मे जाधरि मिथिलाक गाम रहत, एहि ठामक लोक

अपन अस्मिता कें धारण कयने रहत, कृषि-कर्म जाधरि लोकक पेशा बनल रहतैक, डाकवचन प्रासंगिक बनल रहत।

ईहो कहल जाइत अछि जे डाकवचनक रचयिता कोनो एक व्यक्ति नहि छल, अपितु एहि विषय-वस्तु सभ पर जाहि-जाहि युग मे जे क्यो अनुभवी कविस्वभावी लोक भेलाह से सभ अपन-अपन 'कवित्त' रचिक' डाकक नाम पर चलबैत रहलाह। हमरा बुझने एहि कथन कें स्वीकार क' लेबामे कोनो हर्ज नहि छैक। (आब तँ एहि विषय पर मोहन भारद्वाजक पुस्तक सेहो आबि चुकल अछि।)

मैथिलीक आचार्य लोकनि डाकवचन कें सेहो कविता नहि मानैत छथि, कारण एहि मे हुनका काव्यत्व नहि देखार पड़ैत छनि। कहब आवश्यक नहि जे एहन मान्यताक पाछू शास्त्रीयतावादी काव्य-दृष्टिकोण छैक। आइ, हजार बर्खक बाद मैथिली कविता जतय पहुँचल अछि आ काव्य कें देखबाक-बुझबाक जे ओकर दृष्टिकोण आ सौन्दर्यबोध छैक, तकरा मोताबिक डाकवचन निस्सन्देह रूपें कविता थिक। वास्तविकता तँ छैक जे डाकवचन मूलतः तथ्य-संग्रह थिक, जे दीर्घ अनुभव सँ पुष्ट आ प्रकृतिसंगत छैक। मुदा, निरन्तर बदलैत परिस्थितियो मे जँ आइ धरि ओ टिकल रहि गेल तँ तकर कारण मात्र एकर तथ्य नहि थिक, ओ ओहि कथन-भंगिमा आ काव्यात्मक तथ्य-निरूपण-शैलीक बदौलत अछि। जखन डाक कहैत छथि- *'जौं पुरबैया पुरबा पाबय, सुखले नदिया नाव चलाबय'* तँ ई कथन लोकक हृदय कें छुबैत छैक। एक तँ 'पुरबैया'क मानवीकरण, जे लोकक लेल तथ्य-ग्रहण कें रोचक बनबैत छैक। दोसर, परिणामक चयन (सुखले नदिया नाव चलाबय) जे अलग-अलग लोकक हृदय मे अलग-अलग संचित स्मृति कें जगबै छै। अतिवृष्टिक जे कोनो अनुभव जकरा हृदय मे छैक, से हठात् जाग्रत भ' उठैत छैक। एक वाक्य कहने जँ एतेक मानसिक क्रिया-प्रतिक्रिया घटित हो तँ ओहि उक्ति कें काव्यात्मक कहले जायत। जखन डाक कहैत छथि- *'आब की रोपबह हौ किसान'* तँ की ओ बेस काव्यात्मक भेल नहि देखाइत छथि? ई तथ्यक भाषा तँ नहि थिक। तथ्यक भाषा तँ हेबाक चाही- 'किसान कें आब धान नहि रोपबाक चाही'।

पालवंशक शासनकाल मे आदिकालीन मैथिली साहित्यक सामग्री सभ रचल गेल रहय। ओहि शासन मे ओ लोक सभ, जकर भाषा मैथिली रहैक, अपन उन्नत अस्मिताक संग जीवन बसर करैत छल। यद्यपि कि राजनीतिक रूप सँ ओ अराजकताक काल छल किन्तु सांस्कृतिक रूप सँ वैदिक-ब्राह्मणधर्मक वर्चस्व शिथिल छल। आगाँ आबिक' कर्णाट शासनकाल सँ ई शिथिल वर्चस्व उत्तरोत्तर मजगूत होइत गेल। बौद्ध संस्कृतिक जाबन्तो अवशेष कें हृदय मे नुकौने आम लोक एहि नवीन परिस्थितिक संग समायोजन क' लेलक। एहि नवीन परिस्थिति मे सिद्ध साहित्यक लेल कोनो जगह नहि बचलैक, ओकर जे संस्कार समाज पर अवशेष रहि गेल छल तकरा हँटेबाक लेल नवीन ढंगक कविता लिखल जाय लागल। स्वयं विद्यापतिक शृंगारिक कविता एही उपक्रमक एक अंश थिकनि, जे कि ओ पारलौकिक कें श्रेण्य मान'बला लोक कें राग-अनुराग दिस आकर्षित करबाक मंशा सँ लिखलनि।

एक दिस सिद्धसाहित्य जँ जनकण्ठ सँ बहरा क' पोथी दिस अग्रसर भेल तँ दोसर दिस, गाथा-साहित्य सेहो अपन व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता हेरा देलक। आब ओ ओहि जाति-विशेषक वस्तु बनि क' रहि गेल जाहि जाति सँ सम्बद्ध ओकर नायक छलाह। जातिविशेष अपन मुक्तिदाताक रूप मे अपन-अपन नायक कें पूजब शुरू केलक जे कि वास्तव मे ओकर स्वर्णिम अतीतक स्मरण-पुनर्स्मरण मात्र रहैक। नायक कें 'लोकदेवता' कहल जाय जागल, ओकरा मे लोकोत्तर शक्तिक समावेश कएल गेल ताहि संगे पूजा-पाठक कर्मकाण्ड जोड़ि देल गेल। ई वस्तुतः वैदिक ब्राह्मण-धर्मी कर्मकाण्डक वर्चस्व सँ बाहर निकलबाक आ अपन पृथक उपासना-पद्धति विकसित करबाक उपक्रम छल। कर्णाट कालक बाद सँ विशृंखलित समाज कें संगठित करबाक दाबेदारीक संग जे धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड पर एते बेसी आ मेंही काज भेल अछि, से वस्तुतः राजसत्ता पयबाक बाद वर्चस्व बनौने रखबाक एक सावधान प्रयास थिक। एहि काल मे जे मैथिल-जीवन-क्रमक आदर्श निरूपित भेल, से अनिवार्य रूप सँ विजातीय आ विधर्मी (यथा बौद्ध) कें तुच्छ, नगण्य आ अप्रासंगिक सिद्ध करबाक मंशा सँ भेल। ब्राह्मण-धर्मसत्ताक कठोर

वर्चस्व कायम हेबाक ई काल छल, तें एकरा मिथिलाक इतिहासक स्वर्णयुग कहल गेल। आचार्य रमानाथ झा एहि युग (कर्णाट-ओइनवारकालीन) कें मिथिलाक इतिहास, ओकर सामाजिक आ सांस्कृतिक जीवन क्रमक सन्दर्भ मे 'अभिनव स्वर्णयुग' कहलनि अछि। एहि युगक मादे ओ कहैत छथि- *'मैथिलत्वक परिचायक एखनहुँ जे किछु बचल अछि से सब एही युगक देल थिक। हमरा लोकनिक वर्त्तमान सांस्कृतिक जीवनक सूत्रपात एही युगमे भेल अछि, हमरा लोकनिक जातीय जीवनक नवीन परम्परा एतहि सँ प्रारम्भ होइत अछि, वस्तुतः वर्त्तमान मिथिलाक इतिहास एही युग सँ आरम्भ होइत अछि।'*[6] ध्यान रखबाक थिक जे एहिठाम जकरा 'मैथिलत्व' कहल गेल अछि से आदिकालीन सृजेता लोकनिक मैथिलत्व सँ सर्वथा भिन्न वस्तु थिक--जकर सुस्पष्ट जाति विभाजन मैथिल महासभा क' देने अछि।

अस्तु। आगूक एहि बदलल परिस्थिति मे हमरा लोकनि देखैत छी जे सिद्धसाहित्यक परम्परा सर्वथा समाप्त भ' गेल। ओहि मे निहित विचारधारा--वर्चस्वक प्रति विद्रोह, सर्वजन-समानता आ वैराग्य--समाजक मुख्यधारा सँ विलीन भ' गेल। वर्चस्वक लेल नवीन राजसत्ताक संग तालमेल बैसल, समानता तोड़बाक लेल धर्मशास्त्र सृजित भेल आ वैराग्यक प्रतिरोध लेल घोर श्रृंगारिक कविता सभ लिखल गेल, जकर सर्वश्रेष्ठ उदाहरण विद्यापतिक गीत थिकनि। बहुदेवोपासना एहि परिस्थितिक लेल आवश्यके छलैक, कारण वर्चस्व लेल ध्रुवीकरण आवश्यक छल। मुदा तन्त्र आ शक्तिपूजा बदललो परिवेश मे ठठि गेल। ओ उत्तरवर्तियो मैथिल धर्म-धारणाक अंग बनल रहल, जखन कि अपन मूल स्वभाव मे तन्त्र समानता आ अभेदक धर्म-धारणा थिक।

एहि बदलल परिवेश मे गाथा-साहित्य ठठि नहि सकल, तकर उल्लेख पहिनहि कएल गेल। ओ मुदा, सीमिते सही अपना लोकक कण्ठ मे बसल आगामी समयक यात्रा करैत रहल आ लिखित रूपक अभाव मे समकालिक भाषा धारण क' क' गाओल जाइत रहल। डाकवचन, मुदा अपन प्रासंगिकता आगाँ सेहो बनौने राखि सकल कारण व्यावहारिक तथ्य-संग्रह हेबाक कारण ने तँ राजसत्ता कें आ ने धर्मसत्ता कें ओहि मे कोनो आपत्ति

बुझौलैक। लोक तँ एकरा अपन हृदय मे राखनहि छल जे कि ओकर उपयोगिता आ रमणीयताक बदौलति छल।

आगूक जे कृति, हमरा लोकनि कें प्राप्त होइत अछि से थिक ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'। एहि पुस्तक कें गद्य-कृतिक रूप मे मान्यता देल गेलैक। वर्णरत्नाकर मे भौतिक आ लौकिक जीवनक बहुरंगी झाँकी प्रस्तुत कएल गेल अछि। विधर्मी (यथा-बौद्ध)क प्रति एतय कठोर घृणाक अभिव्यक्ति छैक। स्पष्टतः वैराग्यक प्रतिषेध आ भौतिक जीवनक प्रति अनुरागेक ई अभिव्यक्ति थिक। पुस्तकक रूप मे निबद्ध, मैथिलीक ई प्रथम कृति मानल जाइछ। कोन उद्देश्य सँ ज्योतिरीश्वर एहि कृतिक रचना केने छल हेताह? अपन शोध-ग्रन्थ मे काञ्चीनाथ झा 'किरण' एहि प्रश्नक समाधान ताकबाक प्रयास केलनि अछि। हुनका मतें ई कृति पण्डित लोकनिक लेल नहि लिखल गेल छल, अपितु अपढ़/अशिक्षित आम जनताक उपयोगार्थ रचित भेल छल। किरणजी उद्देश्य बतबैत छथि- *'अशिक्षित मैथिल हिन्दू समाजक दृष्टिमे हिन्दू धर्मक श्रेष्ठता देखायब जाहि सँ यवन धर्म दिस आकृष्ट नहि भ' जाय। अर्थात हिन्दू जाति अपने धर्म कें नीक-श्रेष्ठ मानि एकर रक्षा करय। बौद्धो धर्मबला अपना कें हिन्दूक अंग मानैत रहय।*[7] एकठाम आरो किरणजी एही तथ्यक व्याख्या करैत लिखैत छथि- *'मिथिलामे तथाकथित दलित (बैकवार्ड) वर्गक ओ हरिजनक संख्या थोड़ नहि अछि, ओकर सभक स्थिति समाजमे बड़ दुखद, असम्मानजनक अछि। तथापि ओ सभ मुसलमान नहि भेल से किएक? मिथिलाक विद्वान ओकर हृदय मे धार्मिक भावना भरैत रहलाह अपन भाषाक रचना द्वारा। ज्योतिरीश्वर एहि प्रकारक विद्वान मे अग्रगण्य थिकाह।*[8]

तात्पर्य जे बदलल परिवेश मे बहुजन कें अपना संग समायोजित आ अनुकूलित करबाक मंशा सँ ई कृति रचल गेल अछि। चहुँदिस मुसलमान योद्धासभ आक्रान्त क' लेने छल। एहना मे मिथिला कें बचौने रखबाक लेल सभ कें संगठित क' क' राखब एक उचित आ बाध्यकारी परिस्थिति छल, से ओ मानैत छथि।

हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे 'वर्णरत्नाकर' ब्राह्मण-वर्चस्वक

विद्रोही-वर्गक लेल अपन संस्कृति मे 'स्पेस' बनेबाक उद्यम थिक। विद्रोही वर्ग, जकर अपन पुष्पित-पल्लवित संस्कृति तँ जरूर छलैक, मुदा सत्ताक आश्रयक अभाव मे जकरा विरुद्ध असमानता आ अवमानना व्यापक रूप सँ बढ़ि गेल रहैक, तकरा लोकनिक लेल, तकरे शब्दावली आ अभिव्यक्ति-शैली मे एहि कृतिक रचना भेल। किरणजी स्थापित केलनि अछि जे वर्णरत्नाकर *'मिथिलाक भूमिसँ स्वयंसंजात सलहेसक गीत जातिक वस्तु थिक।'* दोसर दिस हमरा लोकनि ईहो देखैत छी जे लोक-साहित्य कें नियमन प्रदान करब सेहो ज्योतिरीश्वरक एक उद्देश्य थिकनि। अर्थात उन्मुक्त नदी-धारा कें तटबन्ध सँ घेरब। 'लोक' कें शास्त्रीयताक ढांचा मे फिट करब। प्रकारान्तर सँ एकरा 'ब्राह्मणीकरण' वा पारिभाषिक शब्द मे कही तँ 'संस्कृतीकरण' कहल जा सकैछ।

मैथिल पण्डित लोकनि मे ज्योतिरीश्वर निश्चिते प्रगतिशील खेमाक लोक रहल हेताह जे परिस्थिति कें एहि दृष्टिकोण सँ देखलनि आ ताहि लेल रचनाशील भेलाह। अपन प्रयास मे ओ सफल रहलाह। तकर कारण भेल जे कर्णाट शासन वैदिक-ब्राह्मणधर्मी होइतो प्रजावत्सल छल आ लोक सुखी जीवन व्यतीत करैत छल। दोसर जे चारूकात मुसलमानी आक्रमणक भय व्याप्त रहैक। दुनू संस्कृति एक-दोसराक संग संघटित भेल। आगू सैकड़ो वर्ष धरि ई सम्मिलन बरकरार रहल।

आगामी राज-कुलक शोषण, अत्याचार आ विभेद-बुद्धि जँ नहि घटित भेल रहैत तँ मिथिलाक इतिहास आ मैथिली साहित्यक इतिहास सेहो, किछु दोसर तरहें लिखल जाइत।

(2007)

सन्दर्भ :

1. एसियाटिक रिसर्चेज, भाग-8, पृष्ठ-199 क आधार पर राजेश्वर झाक पुस्तक 'मैथिली साहित्यक आदिकाल'मे उद्धृत।
2. रमानाथ झाक कोटेशन।
3. विस्तृत विवरण लेल देखी-नामवर सिंहक पुस्तक 'हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का

योग’ तथा चन्द्रधर शर्मा गुलेरीक पुस्तक ‘पुरानी हिन्दी।’

4. उपर्युक्त (पृष्ठ-75) नामवर सिंहक।
5. यथा डॉ. नामवर सिंह।
6. आचार्य रमानाथ झाक लेख ‘मैथिली नाटक’।
7. वर्णरत्नाकरक काव्यशास्त्रीय अध्ययन : पृष्ठ-96।
8. उपर्युक्त पृष्ठ-95।

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथाक परिदृश्य

परम्परित सामाजिक ढब-ढाँचाक संग आलोचनात्मक रूखि रखैत सक्क भरि स्थिति-परिवर्त्तन प्रस्तावित करब--एक एहन सहज गुण-सन छल जे स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा कें विरासत मे भेटल रहै। मैथिलीक प्रारम्भिक कथाकार लोकनि समाज-सुधारक घोषित लक्ष्य लेल कथा-लेखन करैत रहथि। तें मैथिली साहित्य मे कथाक आरम्भ हमरा लोकनि एक मिशनरी भावना सँ होइत देखै छी आ पबैत छी जे गद्य-लेखने जकाँ कथोक आरम्भ, मैथिली मे, आधुनिकताक अंगीकारक अभीप्सा सँ भेल। आधुनिकताक अर्थ एतए ठीक ओएह अछि जे आन-आन, प्रायः समस्त भारतीय भाषा सभ मे, उन्नैसम शताब्दीक विभिन्न दशक मे हमरा लोकनि पल्लवित-पुष्पित होइत देखै छी। अर्थात, अंगरेज जातिए जकाँ अपन मातृभाषा कें पवित्र मानब आ अपन समस्त भाव-विचारक अभिव्यक्ति-माध्यमक रूप मे एकरा अंगीकृत आ विकसित करब। कहब आवश्यक नहि; जे आधुनिकताक आरम्भक ई एकटा प्रेरणा-बिन्दु मात्र छल, कोनो प्ररूप नहि; आ से आधुनिकता अपन सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोत सभ सँ विभिन्न उपादान कें ग्रहण करैत विविध देशी-विदेशी प्रेरणा आ विचार सँ आलोड़ित-विस्फारित होइत आइ एक व्यापक परिप्रेक्ष्य मे सोझाँ ठाढ़ अछि। तें कहबाक चाही जे मैथिली गद्य-लेखनक पछिला सय बर्खक इतिहास, मिथिला द्वारा आधुनिकताक ग्रहण-अनुग्रहणक विभिन्न रूप-प्ररूप, कल्प-प्रकल्प थिक।

हमरा लोकनि देखै छी जे मैथिल समाज कें जाग्रत आ उद्यत करबाक प्रेरणा सँ बीसम शताब्दीक पहिले चरण मे मैथिल महासभा-सन संगठन

बनल। यद्यपि एकर मैथिलत्वक बहुत छोट आ आपत्तिजनक सीमा छल, जे विवादास्पदो बनल, आ विकासक्रम कें गतिहत करबाक जिम्मेवार सेहो मानल गेल, मुदा जहाँ धरि एकर प्रयासक प्रश्न छल, महासभाक प्रायः पहिले अधिवेशन, सन् 1910 मे, नौ-सूत्री कार्यक्रम पारित भेल जे तत्कालीन कथाकार-साहित्यकार लोकनि लेल एक सुस्पष्ट मार्गदर्शक छल। बाद मे हम सभ ईहो देखै छी जे सन् 1925 मे, 'श्रीमैथिली'क पाँचम अंक मे कथाकार लोकनि लेल ने मात्र दिशा-निर्देश प्रकाशित कएल गेल, अपितु ओहन विषय-वस्तु सभक एक सूची सेहो प्रकाशित भेल जाहि पर सामाजिक लक्ष्यक प्राप्त्यर्थ, लेखन जरूरी बूझल गेल छल। एहि तरहें हमरा लोकनि देखि सकै छी जे सामाजिक संगठन तथा पत्रकारिता--दुनू सोद्देश्य कथा-लेखनक आग्रही बनिक' ठाढ़ भेल छल। हुनका लोकनिक ई आग्रह शुरुहे सँ मैथिली कथा कें सामाजिक प्रश्न सभ सँ जोड़बाक दबाव कायम केलक। तहियाक मिथिला-समाज सर्वथा एक बन्द समाज छल। आधुनिक शिक्षाक प्रसार नहि छलै। आर्थिक परिस्थिति नितान्त चिन्तनीय छलै। सामाजिक-सांस्कृतिक प्रश्न सभ पर भयावह स्पन्दहीनता व्याप्त रहै। आइयो परिस्थिति मे कोनो भारी परिवर्त्तन तँ नहि भेल छै किन्तु उग्रासक हल्लुक किरिण जहाँ-तहाँ देखाइ छै अवश्य। कहबाक चाही जे एहि सभ कथूक आकलन आ विश्लेषण किछु सीमाक संग, मैथिली कथाकार लोकनि क' सकलाह।

मैथिलीक पहिल प्रकाशित कथा (नवीनतम शोधक आधार पर 'विलक्षण दाम्पत्य', कथाकार जलधर झा : मैथिल हित साधन : संयुक्तांक 1906) सँ ल' क' आगूक कथा सभ कें देखी तँ पबैत छी जे मैथिली कथा आत्यन्तिक रूप सँ सामाजिक प्रश्न सभ संग मुठभिड़ान लैत, सुधार प्रस्तावित करैत, आ तकरे सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करैत पाँचम दशक धरि पहुँचि जाइत अछि। एहि सुधारवादी कथा-प्रवृत्तिक चरम विकास हमरा लोकनि हरिमोहन झाक कथा-रचना मे देखै छी, जनिकर कथा-कलाक मादे ई बात बेर-बेर कहल जाइछ जे ओ मैथिली कथा कें नेना सँ प्रौढ़ बनौलनि।

'पुरुष-परीक्षा'क अनुवाद (1889) संग मौलिक मैथिली कथा-लेखनक सम्भावना प्रतीति मे आएल आ मैथिली पत्रकारिताक आरम्भ (1905) सँ

एहि सम्भावना कें यथार्थ मे परिणत हेबाक आशा बनल। हमरा लोकनि मुदा, देखै छी जे जाहि रचना कें साहित्य-विधाक रूप मे एक मौलिक कथा कहल जा सकैक, तकर विकास तेसर दशकक अन्ते मे आबिक' भ' पबैत अछि। आरम्भिक युगक कथाकार लोकनि मे सँ काली कुमार दास, गंगानन्द सिंह, हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज', जयनारायण मल्लिक, लक्ष्मीपति सिंह आदिक कथा-रचना अवश्ये एहि हद धरि विकसित भेल देखाइत अछि, जकरा परवर्ती कथा-परम्परा सन्तोषपूर्वक अपन विरासतक कोटि मे राखि सकए। ई बात एतए मोन राखल जेबाक चाही जे रचनाकारक पहिल पीढ़ी द्वारा मैथिली मे मौलिक रचना करबे एकटा चुनौती छल, कारण मिथिलाक सनातन पण्डित परम्परा मे लोक भाषा मे मौलिक साहित्य-सृजन करब निषिद्ध काज छल। एहि दृष्टिएँ ई जबरदस्त आ रोमांचक आधुनिकता छल। तेसर दशकक आसपास जखन हमरा लोकनि कथाकारक पहिल सफल दल द्वारा 'काजक कथा-रचना' लिखल जाइत देखै छी तँ आगू ईहो देखै छी जे एहि मे विकासक गति तँ उत्तरोत्तर तीव्र भेबे कएल, कथाकार लोकनिक अपेक्षाकृत बेसी काबिल आ सबल पीढ़ीक आगमन आ सक्रियता सेहो सम्भव भेल। काञ्चीनाथ झा 'किरण', हरिमोहन झा, मनमोहन झा, योगानन्द झा, उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' आदिक निरन्तर क्रियाशीलता सँ आगूक पूरा परिदृश्य बदलि गेल देखाब दैत अछि।

स्वातन्त्र्योत्तर कथा-परिदृश्यक आरम्भिक कालखण्ड मे हमरा लोकनि दू-तीन टा मुद्दा ल' क' बेस गर्दमगोल होइत देखैत छी। एक तँ परम्परा बनाम आधुनिकताक विवाद-सम्वाद। दोसर, परम्पराक गन्ध बनाम परम्पराक विकासक प्रश्न। नवीन कथा-पीढ़ी जतए परम्परा कें ध्वस्त क' क' मौलिकताक आयोजनक उत्साह मे छल, ओतहि परम्पराक विकासक प्रश्न कें सोझरेबा मे सेहो सूक्ष्म रूप सँ योग द' रहल छल। परम्पराक विकासक मॉडल कें मुख्यधारा मे एबा मे आगू बहुत समय लगलैक, से भिन्न बात।

स्वतन्त्रता सँ ठीक पूर्व जे कथा-पीढ़ी अपन पहिचान बनौने छल आ जकर सक्रिय उपस्थिति सँ आगूक परिदृश्य जगजगार भेटैत अछि, कैक बात कें ल' क' बहुत महत्वपूर्ण अछि। गोविन्द झा, सुधांशु शेखर चौधरी,

ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', राधाकृष्ण बहेड़ आदि एहि पीढ़ीक महत्वपूर्ण कथाकार छथि, हिनका लोकनिक सर्वोत्तम लेखन, स्वतन्त्रताक बादे सामने आएल, मुदा स्वातन्त्र्योत्तर कथा-पीढ़ी मे ई लोकनि शामिल नहि कएल गेलाह। तकर कारण बताओल गेल जे आधुनिक कथा अपन जाहि स्वर आ स्वरूप मे भिन्न आ मौलिक अछि, तकर निर्वाह हिनका लोकनिक कथा मे नहि भेल अछि। मुदा मोन रखबाक थिक जे नव यथार्थक नवीन सम्वेदना कें अंगीकार करबाक जे उत्साह आ प्रयुक्ति ई लोकनि देखौलनि, से स्वयं मे बहुत महत्वपूर्ण अछि। परम्पराक 'गंध' हिनका लोकनिक मूल स्वभाव छल, जकरा परम्पराक विकास सेहो स्पष्ट रूप सँ नहि कहल जा सकैत छल। हिनका लोकनिक ई सीमा हिनकर कथा-भाषा मे सुव्यक्त रूप सँ देखार भेल अछि। एहि बात कें ल' क' एहि कथा-पीढ़ीक महत्व कदाचित बहुत बेसी अछि, जे शताब्दीक अन्तिम दू दशक मे परम्पराक विकासक जेहेन स्वरूप खूब नीक जकाँ कथा परिदृश्य मे उभरल, जकरा मोहन भारद्वाज 'सांस्कृतिक चेतनावाद'क नाम दैत छथि, तकर प्रेरणा-बीज एहि पीढ़ीक कथा-दृष्टि मे ताकल जा सकैत अछि।

सन् 1950 क दशक एहन कालखण्ड थिक जखन भारतक प्रायः सभ भाषा-साहित्य मे, कथा हो कि कविता आ कि साहित्य-चिन्तन, सभ कथू मे, बहुत देखार आ युगान्तरकारी परिवर्त्तन घटित भेल। से मैथिली कथा-साहित्यक संसार मे सेहो घटित भेल।

नवीन कथान्दोलनक जे रूप सभ सँ पहिने पाठक-वर्गक ध्यान आकृष्ट केलक से छल--ओकर भाषा। सभ क्यो जनैत छी जे मैथिलीक लोकभाषा बड़े मधुर, बड़े हृदयाकर्षक होइत अछि। तहिना, मैथिलीक पण्डित भाषा अत्यन्त तत्समबहुल आ टीकाधर्मी। मिथिलाक लोक अत्यन्त भावनाप्रवण। एहना मे, हम सभ देखै छी जे परम्परित मैथिली कथाक भाषा एहि सभक समाहार सँ भरल-पुरल छल आ अपन जे प्रभाव छोड़ैत छल तकरा कुल मिलाक' भावुक भाषा-वितान कहल जा सकैत अछि। कोनो भाषा अनिवार्य रूप सँ अपन प्रकृतिक अनुरूप भाव आ कथानक चुनैत अछि। हमरा लगैत अछि जे परम्परित मैथिली कथा, जे पारिवारिक सम्बन्धक राग-विराग, प्रेम आ करुणाक चौबगली घुमैत रहल, ताहि मे एकर

भाषा-प्रकृतिक सेहो बड़ भारी योगदान अछि। सन् 1950 क दशक मे जे सभ सँ पैघ परिवर्त्तन हमरा लोकनि रूप लैत देखै छी से थिक--भावुक भाषाक स्थान पर एक यथार्थवादी भाषाक उठान। ललित एकर सभ सँ पैघ प्रयोक्ता आ प्रवक्ता भेलाह। यद्यपि कथाकारक स्वभाव-धर्में एहि मे हमरा लोकनि बहुतो तरहक विविधता देखै छी, मुदा कथा भाषाक जे मूल गुणधर्म तहिया चलन मे आएल, आगूक तमाम दशक मे हमरा लोकनि तकरे विविध आयाम मे पल्लवित-पुष्पित होइत देखैत छी। ललित आ हुनके सहधर्मी सोमदेवक कथा सभ मे कतोक बेर कथ्य आ कथानक छुछुन्न देखि पड़ैत अछि, मुदा ओही ठाम जँ कथा-परिदृश्य कें यथार्थवादी भाषा द्वारा यथार्थक आरेखनक दृष्टि सँ देखल जाए, तँ ओ कथित छुछुन्नता नवीन कथान्दोलनक मर्म कें उद्घाटित करैत देखार पड़ैत अछि। कहब आवश्यक नहि जे एहि कालखण्डक कथा मे परम्परागत पाठक कें जँ छुछुन्नता देखार पड़ै छनि तँ तकर कारण अक्सरहाँ नवरसज्ञताक कमी रहैत अछि।

स्वतन्त्र भारत मे युवा भेल कथाकार लोकनिक पहिल जत्था द्वारा आधुनिक मैथिली कथाक स्वर आ स्वरूपक निर्धारणक संग-संग ओकर सामर्थ्यवर्द्धन सेहो करबाक बात जखन कुलानन्द मिश्र कहै छथि आ तकरा संग-संग ईहो जोड़ै छथि जे *'समकालीन चेतनाकें चीन्हब आ ओकर संग समय आ समाजकें मूल्यांकित करबाक लूरि कथाकार लोकनि सीखि लेल।'* तँ प्रकारान्तर सँ ओ एही यथार्थवादी भाषा कें विकसित करबाक बात कहै छथि। 'लूरि सीखब' वस्तुतः दुनू आयाम कें सम पर मिलाएब थिक। कहब आवश्यक नहि जे ई 'लूरि सीखल' कथाकार लोकनिक उपस्थिति हमरा लोकनि कें सौंसे स्वातन्त्र्योत्तर कथा-परिदृश्य मे देखार पड़ैत अछि।

सामान्यतः मिथिलाक पहिचान सदा सँ एकर सारस्वत अस्मिता आ अवदानक कारण रहल अछि। समाजशास्त्री लोकनि मैथिल अस्मिताक दू टा प्रमुख अभिज्ञान माननलनि--विद्या आ व्यक्तित्व। मुदा, एहि ठाम स्मरण रखबाक चाही जे 'मिथिला' जकरा हमरा लोकनि कहै छिऐ से वस्तुतः दू टा पृथक संस्कृतिक समाहार सँ बनल अछि।

एक मिथिला जँ पण्डितक मिथिला थिक, जकर अस्मिता विद्या आ व्यक्तित्व थिकैक, तँ दोसर मिथिला किसानी संस्कृतिक मिथिला थिक, जकर पहिचान जीवन आ तकर संरक्षण लेल अनन्त राग, आध्यात्मिकताक हद धरि पहुँचल बेलौसपन आ प्रगतिशील तत्वक प्रति पक्षधरता थिक। कहब आवश्यक नहि जे एतुक्का किसानी समाज सँ जीवनतत्व ग्रहण क' क' मिथिलाक पण्डित समाज अपन शिखर व्यक्तित्व बनौलक, मुदा हमरा लोकनि इतिहासक विभिन्न चरण सभ मे लगातार देखै छी जे मिथिलाक ई पण्डित-संस्कृति सभ दिन लोकसंस्कृतिक शत्रु-पक्ष बनल रहल। बुद्धक विकास मे मिथिलाक योगदान आ तकर बाद वज्रयान आ सिद्धसाहित्यक निर्माण मे मिथिलाक योगदान एहन विरल अध्याय थिक, जकरा लेल पण्डित-समाज अपनहि आमजन कें कहियो माफ नहि केलक। बाद मे हमरा लोकनि ज्योतिरीश्वर आ विद्यापति सन पण्डित कें जँ देदीप्यमान देखैतो छियनि तँ मोन रखबाक थिक जे ओ लोकनि परम्परित पण्डित-मर्यादाक भंजने क' क' एहि दिस अग्रसर भेल छलाह। ई हुनका लोकनिक निजी व्यक्तित्वक तेज आ क्रांतदर्शिता छलनि, आ तकर ऐतिहासिक कारण सभ सेहो छल।

स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा कें हमरा लोकनि उत्तरोत्तर लोकपक्षक प्रति प्रतिबद्ध होइत जाइत देखै छी। मैथिली कथा मे भारतक स्वतन्त्रताक ई अतिरिक्त महत्व छै जे पण्डित-संस्कृतिक वर्चस्व कें चुनौती दैत जन-संस्कृति मुख्यधारा मे प्रस्तुत होइत अछि। स्वातन्त्र्योत्तर कथा-परिदृश्यक आरम्भिक काल मे हमरा लोकनि अक्सरहां मनःस्थितिक द्वैध आ दुविधा कें टहलैत-बुलैत देखै छी। आम तौर पर एकरा स्वतन्त्रताक-बादक विभिन्न स्थिति-परिस्थितिक कारणें आमलोक मे पाओल जाइबला मोहभंग आदिक रूप मे देखल जाइत अछि। कुलानन्द मिश्र एकर सम्बन्ध *'स्वतन्त्र भारतक लोक-मानस मे व्याप्त प्रकट स्वाधीनता आ प्रच्छन्न दासता'*क संग जोड़ै छथि। मुदा कहबाक चाही जे तत्कालीन स्थितिक ई एकटा पक्ष मात्र थिक। दू संस्कृतिक बीच जे घात-प्रतिघात चलि रहल छल, निज आँखिक आगू तकर योगदान कदाचित एहि मे बेसी छल। मुदा सेहो ततबे टा नहि। हमरा लोकनि देखैत छी जे स्वातन्त्र्योत्तर लेखक लोकनि स्वयं

अपनहु कतोक बेर पक्षग्रहणक मामिला मे अनस्थिर भेटै छथि। ई युग कथाकार लोकनि कें सेहो नहुँ-नहुँ शिक्षित-प्रशिक्षित क' रहल छल।

हमरा लोकनि अवगत छी जे मैथिली कथाक आदिकालीन परिदृश्य सामाजिक कुरीति सभक परिहार आ सुधारक भावना सँ कुण्डाबोर अछि। ई कुरीति सभ अधिकांशतः वैवाहिक छल, जकर भिन्न-भिन्न प्रकार-उपप्रकार छल। 'श्रीमैथिली' एहन वैवाहिक कुरीति सभक एगारह प्रकारक सूची प्रकाशित केने छल, जकर परिहारक वास्ते कथा-लेखनक अपील कएल गेल छल। ई कुरीति सभ अधिकांशतः अभिजात समाज द्वारा शेष समाज पर अपन सत्ता आ वर्चस्व काएम करबाक रणनीतिवश चलन मे आएल हएत। मुदा जें कि स्त्रीक जीवन कें मैथिल समाज नरक मे परिवर्त्तित क' देने छल, युगान्तरक आरम्भिक कथा-परिदृश्य मे हमरा लोकनि एहि कुरीति सभक लंकादहन होइत अक्सरहाँ देखै छी। मुदा, मोन रखबाक चाही जे सुधारक ई आयोजन अभिजात-समाजक शर्त्त आ कसौटी पर आधारित छल आ तें तत्कालीन कथा सभ मे तार्किक अन्विति आ आलोचनात्मक विवेकक अभाव भेटैत अछि। सुधारक कुल्लम अपील इएह जे स्त्रीगणक करुण दशा पर दया करू आ एहि कुरीति सभ कें त्यागू।

स्वातन्त्र्योत्तर कथा-परिदृश्य मे एहि विषय पर नजरि दी तँ आकाश-पतालक अन्तर देखाब दैत अछि। एहि ठाम उदित होइ छथि 'शेफाली' (ललितक कथा 'मुक्ति'क) आ 'मालती' (लिली रेक कथा 'रंगीन परदा'क नायिका)। ई नवोदित स्त्री-लोकनि ततेक मुखर छथि आ हिनकर आभामण्डल ततेक दीप्त, जे वैवाहिक समस्याक निराकरणक तँ कोन कथा, विवाह-संस्थे पर प्रश्नचिह्न ठाढ़ क' दैत छथि। ई कथा सभ तहिया सभतरि हाहाकार मचा देने छल। एहि पर निन्दा-खिधांस सँ ल' क' प्रशस्ति-प्रशंसा धरिक जे क्रम चलल से बहुतो बर्ख धरि जारी रहल। मैथिली कथाक पाठक आ लेखक--दुनूक बोध आ सम्वेदना मे ई कथा सभ, आ एहि तरहक आन अनेक कथा सभ, जे कि एकर लगले बाद लिखल गेल, जबर्दस्त आलोड़न घटित केलक।

मुदा, तथ्य थिक जे स्वातन्त्र्योत्तर पहिल कथा-पीढ़ी मे पक्ष-ग्रहणक शुरुआती अनस्थिरता वा हिचक छल। 'रंगीन परदा' जे बाद मे स्त्री-विमर्शक

जबर्दस्त कथा मानल गेल आ विभिन्न रूप मे परवर्ती कथा-पीढ़ी कें बहुत सकारात्मक ढंग सँ प्रभावित केलक, तकर कथाकार लिली रे एकरा अपना नामे नहि, कल्पना शरणक छद्म नाम सँ छपबौने छलीह। तहिना, राजकमल चौधरी, 'मुक्ति' (ललित) क प्रतिक्रिया मे 'फुलपरासबाली' लिखलनि। राजकमलक एक कथा 'ललका पाग' ततेक लोकप्रिय आ प्रसिद्ध भेल जे ओकरा 'रमजानी' (ललित) क तुलना मे बेसी सफल कथा मानल गेल, जखन कि 'ललका पाग'क प्रशस्ति करैवला लोक पण्डित--संस्कृति द्वारा अनुकूलित लोक सभ छलाह।

एवम्प्रकारें, एक दिस देश-दुनियाँक साहित्य आ विचारक भिज्ञता सँ लैस बोध छल तँ दोसर दिस पण्डित-संस्कृति द्वारा अनुकूलित कथाकार लोकनिक समाज-मन। एक दिस जँ धर्मप्राण परम्परा छल तँ दोसर दिस मार्क्स-फ्रायडक जबर्दस्त सम्मोहन। एक दिस युग-युग सँ चलि आबि रहल पतनशील राजतन्त्रक जड़िआएल संस्कार छल तँ दोसर दिस *'पढ़ता गुनता करताह पास, जूगल कामति, छीतन खबास'* (यात्रीक कविताक पंक्ति)क प्रतिबद्धता। तें हम देखै छी जे ई द्वैध आ दुविधा द्विपक्षीय अछि--कथाकार द्वारा स्वयं अपना भीतर स्वातन्त्र्योत्तर-बोध विकसित करब आ तखन अन्यथा-अनुकूलित समाज-मन कें एहि बोधक प्रति आकृष्ट करब। जे रचनाकार एहि दुविधा कें जतेक पहिने आ जतेक ठीक सँ दूर क' सकलाह, से ततेक आगू बढ़लाह आ टिकाउ भेलाह। एहि अर्थ मे कदाचित राजकमल चौधरीक बाद लिली रे सभ सँ नमहर पड़ै छथि। अस्तु, जेना-जेना जनपक्षधर समाज-मन दिस कथाकार लोकनिक बोध बढ़ैत गेलनि, कथा-सम्वेदनाक विस्तार होइत गेल आ ताहि संग कथा-भूमि सेहो विस्तृति पबैत गेल। 'दंश' (धूमकेतु) सन सीमाबद्ध कथा लिखनिहार जँ आगू चलिक' 'एकटा मूल्यहीन कथा' लिखि पबै छथि अथवा 'अरगनी'क कथाकार प्रभास कुमार चौधरी जँ आगाँ 'इन्द्रधनुष' लिखैत छथि वा 'सरिसवक साग' (अशोक)क कथाकारक कलम सँ जँ आगाँ 'राँड़' लिखाइत अछि, तँ तकरा मात्र विषय-वस्तुए टाक नहि अपितु बोध, सम्वेदना आ कथा-भूमिक विस्तार सँ सेहो जोड़िक' देखल जेबाक चाही।

स्वातन्त्र्योत्तर कालक कथाकारक पहिल पीढ़ी कें हमरा लोकनि दू टा

बात ल' क' बहुत मोहासक्त देखै छी। एक तँ आधुनिकताक प्रति उदग्र अनुराग आ दोसर भोगल अथवा भोगल-सन यथार्थक प्रति प्रबल निर्भरता। कहब आवश्यक जे हिनका लोकनिक ई आधुनिकता आद्य कथा-पीढ़ीक ओहि आधुनिकता सँ सर्वथा भिन्न छल। हिनका लोकनिक आधुनिकता स्वातन्त्र्योत्तर-बोध सँ दीप्त छल जाहि मे अथाह उमंग, नीक भविष्यक प्रति प्रबल विश्वास, सभ किछु जल्दिए बदलि जेबाक उत्कट आशा--ई सभ तेना मिझराएल छल जे ओ 'पुरान' आधुनिकता, जाहि मे अपन भाषा आ भूमि कें पवित्र आ सक्षम साबित करबाक अभीप्सा रहै, बहुत पाछू छूटि गेल। एकर स्थान ल' लेलक देशी-विदेशी, नव-नव विचार, नव-नव शिल्प आ जीवन शैली। हिनका लोकनिक एहि आधुनिकता मे हमरा लोकनि भूमण्डलीकरणक प्रथम उन्मेषक दर्शन पाबि सकै छी।

एहि नवोन्मेषी आधुनिकता मे जे चीज कदाचित सभ सँ बेसी प्रचलन मे आएल, से छल--परम्परित व्यवस्था आ चिन्तन-वितानक प्रति घोर आलोचनात्मक रूखि। आद्य कथा-पीढ़ीक आलोचनात्मक रूखि सँ हिनका लोकनिक रूखि एहि अर्थ मे भिन्न छल जे ओ लोकनि जतए कुरीतिक बीच सुधार चाहै छलाह, ई लोकनि ओहि तमाम रीतिए मे परिवर्त्तनक आग्रही रहथि। रीति-कुरीतिक बीचक भिन्नता हिनका लोकनिक लेल कोनो अर्थक नहि रहि गेल आ कुल मिलाक' एतए परम्परा-मात्र कें निषिद्ध करार देल गेल। जे परम्परा सँ निषिद्ध छल तकरा मुख्यधारा मे आनल गेल। जे अकथ्य मानल जाइत छल तकरा मूल कथ्य प्रतिपादित कएल गेल आ एहि तरहें एक नवीन सौन्दर्यशास्त्र विकसित करबाक चेष्टा भेल। कहबे केलहुँ जे अपन आग्रहक अनुरूप कथा-भाषा गढ़बा मे सेहो ओ लोकनि सफलता प्राप्त केलनि, जे बाद मे समाज-मनक लेल स्वीकार्य बनबा मे हुनका सभक लेल परम सहायक भेल।

एतय कहल जेबाक चाही जे जे कथू ओ लोकनि चाहैत छलाह, तकरा लेल परम्पराक निषेधक जे नारा देलनि, से एहि सभ कथू कें परम्पराक विकासक अभियानक अन्तर्गत सेहो पाओल जा सकै छल। समय अन्ततः साबितो सैह केलक। तखन ई जरूर जे ई बोध विकसित हेबा मे अगिला कैक दशकक समय लागल आ एक नव कथा-पीढ़ी आगू आबिक' समयक

एहि इंगित कें मूर्त्तिमान केलक। ललित तथा हुनक समकालीन कथाकारक नायक सभ मे जे अपना लोकक लेल आसक्ति छै, ओही आसक्ति कें जँ 'पिता' (प्रभास कुमार चौधरी) वा 'घरदेखिया' (सुभाषचन्द्र यादव) वा 'चिन्ता' (शिवशंकर श्रीनिवास) वा अन्यान्य समकालीन कथाक नायक सभक आसक्ति सँ तुलना क' क' देखी तँ जड़ि सँ अलगल आ जड़ि सँ माटिस्थ दू भिन्न-भिन्न गाछक बिम्ब कदाचित व्यवहृत भ' सकैत अछि। रोपल जेबाक लेल माटि चाही आ ताहि लेल जमीन, से सैह।

परम्पराक विकासक प्रति फरिछाइत दृष्टिएक अवदान कहल जाएत जे आगू हमरा लोकनि भोगल यथार्थक सम्मोहन कें उत्तरोत्तर घटैत जाइत देखै छी। नहुँ-नहुँ ई स्पष्ट होइत गेल जे अपन भोगल अथवा आप्तजनक भोगल-सन यथार्थक बल पर ने तँ समयक सम्पूर्ण इंगित कें पकड़ल जा सकैत अछि आ ने समाजक सभटा कथे कहल जा सकैत अछि। आगाँ यथार्थ अपन विस्तार पबैत गेल। एहि विस्तारक बिना 'तेल' (जीवकान्त), 'एकटा उड़ल फुर्र' (विभूति आनन्द) वा 'साक्षी रहथु छठ घाट' (विभा रानी) सन कथा लिखल जाएब एक सम्भावने-टा भ' सकै छल।

मैथिलीक आरम्भिक कथाक रुझान आ बुनाबटि पर ध्यान दी तँ स्पष्ट लागत जे तहियाक कथाकारलोकनि लग आदर्शक रूप मे संस्कृतक कथा-रचना छलनि आ सामान्यतः परिचिति वृत्त मे सेहो मुख्यतः संस्कृते भाषा छलनि। आगू अंग्रेजी पढ़ल-लिखल लोकक आवाजाहीक प्रसादात कथा मे नहुँ-नहुँ अंग्रेजीक शॉर्ट स्टोरीक गुणधर्म कें रचैत-पचैत हमरा लोकनि देखि सकै छी। स्वातन्त्र्योत्तर कथा-पीढ़ी सँ सद्यः पूर्वक मध्यवर्ती कथा-पीढ़ी मे राग-तत्व आ करुणा-तत्व बेस जगजियार अछि। ई कथाकारलोकनि एक दिस जँ अंग्रजी सँ कथाक पैटर्न ल' रहल छलाह तँ दोसर दिस बंगला सँ सम्वेदना ग्रहण क' रहल छलाह। तहियाक अधिकांश जागरूक कथाकार कें अंग्रेजी आ बंगला दुनू भाषाक ज्ञान छलनि आ तकर साहित्य सँ अवगति सेहो। स्वातन्त्र्योत्तर काल मे कथाकार लोकनि मे नहुँ-नहुँ हमरा लोकनि बंगला ज्ञान मे कमी होइत जाइत देखैत छी आ तकरा स्थान पर हिन्दी कें प्रतिष्ठित होइत सेहो देखैत छी। एकर अनेको ऐतिहासिक आ सामाजिक कारण सभ अछि,

तकर विस्तार मे हम नहि जाक' एतबे कहब जे भारतीय भाषा सभ मे सँ संस्कृत, बंगला आ हिन्दी एहेन भाषा-साहित्य थिक, जकरा संग मैथिली कथा साहित्यक अन्तर्सम्बन्ध अलग-अलग कालखण्ड मे न्यूनाधिक रूपें रहल अछि। एहि सम्पर्क-सामीप्यक प्रभावक मात्रा आ मैथिली कथाक विकास मे तकर योगदान पर विस्तार सँ विश्लेषण अपेक्षित अछि, जकर एतए अवसर नहि अछि। मोट बात एतबे जे एहि जटिल अन्तर्सम्बन्धक सरल फार्मूला प्रस्तुत करैत मैथिलीक प्राध्यापक लोकनि ई बात कहलनि जे पहिलुका कथा संस्कृतक प्रभाव मे लिखल गेल, बीचक कथा बंगलाक प्रभाव मे आ आजुक कथा हिन्दीक प्रभाव मे लिखल जा रहल अछि। कहब आवश्यक नहि जे ई कथन वस्तुस्थितिक जाहिल सरलीकरण थिक।

स्वातन्त्र्योत्तर कालखण्ड मे उत्तरोत्तर बंगला सँ मैथिली कथाक सम्पर्क-सामीप्य घटैत गेल, तकर मुख्य कारण थिक जे ओतुक्का समकालीन कथा-साहित्य मे महानगर-बोध आ आत्महीनता, परिचिति-संकट आदि-आदि अनेक परिस्थिति सभ प्रमुखतापूर्वक व्यंजित हएब आरम्भ भेल जे कि मैथिलीक दुनियाँ लेल अबूझ आ अतार्किक-सन छल। बंगाल कें कोलकाता सन महानगर उपलब्ध छलै, जतए समस्त साहित्यिक गतिविधि ने मात्र केन्द्रित भ' रहल छल अपितु ओत्तहि सँ आधार-सामग्री सेहो ग्रहण क' रहल छल। मिथिला कें कोलकाताक तँ कोन कथा, पटनो धरि उपलब्ध नहि। पटना जँ साहित्यिक गतिविधिक उपकेन्द्र बनबो कएल तँ आधार-सामग्री मुहैया कराब' जोग आप्तता कहियो नहि पाबि सकल।

मैथिली कथा-साहित्य अपन लोक-मन (वा समाज-मन)कें अभिव्यंजित करबाक आयासक संग जे अपन यात्रा शुरू केने छल से आगुओ निरन्तरता बनौने राखि सकल, से एहू कारणें सम्भव भ' सकल जे स्वतन्त्रताक बादो मिथिला मे ने तँ औद्योगिक विकासक कोनो विहान भेलै आ ने शिक्षाक व्यापकता मे अपेक्षित प्रगति एलै, जे कि आधुनिकताक प्रसार मे योग द' पबैत। तखन, नहुँ-नहुँ समाज जे परिवर्त्तनक प्रति आग्रही आ अनुकूलित होइत गेल, तकर मुख्य कारण आधुनिक समयक दबावे कें मानल जाएत। कथाकार लोकनिक आधुनिकता आ प्रगतिशीलता,

एक तरहें लोक-मन कें राष्ट्रीयता आ विश्व-दृष्टिक परिप्रेक्ष्य मे बूझल जेबाक आवश्यकता उत्पन्न केलक।

लोक-मनक ऐकान्तिक अभिव्यंजना साहित्य मे मार्मिकता अनै छै। मुदा विविध दृष्टिक बीच परस्पर सन्तुलन लेल अक्सरहाँ कोनो ने कोनो द्वन्द्व, कोनो-ने-कोनो प्रेरक शक्तिक बेगरता होइछ। मैथिली कथाक सन्दर्भ मे एहि द्वन्द्व, एहि प्रेरक शक्तिक काज केलक--कथाकार लोकनिक आधुनिकता-बोध। समाजक यथार्थ आ वास्तविकता सँ विच्छिन्न भेने ई आधुनिकता-बोध शुद्ध हवाबाजी भ' सकै छल, मुदा दू टा मुख्य कारक हम देखै छी जे समाज-मन कें कथाकारक आधुनिकताक संग अनुकूलनक परिस्थिति बनौलक--एक तँ यत्किंचिते सही, आधुनिक शिक्षाक प्रसार आ दोसर मनीऑर्डर-इकॉनोमी, जकरा बदौलति मिथिला मे महानगरक बोली-बानी, स्वप्न-सेहन्ता हुलकी मारलक। कथाकारक आधुनिकताक संग समाज-मनक अनुकूलनक एक सुन्दर दृष्टान्त हमरा लोकनि 'सिनुरहार' (शिवशंकर श्रीनिवास) मे देखि सकै छी, जतए धार्मिक गतिविधि मे पुनर्विवाहित कल्याणीक सहभाग समाज द्वारा स्वीकृति योग्य मानल जाइछ, मुदा दोसर दिस एहि स्वीकृतिक विरोध मे हमरा लोकनि कल्याणीक माइये कें ठाढ़ पबै छी जे मैथिल लोक-मनक एक दारुण यथार्थ थिक।

वस्तुतः स्वातन्त्र्योत्तर कालखण्ड मे, भारतीय भाषा-साहित्यक सन्दर्भ मे, आधुनिकताक एक मुख्य अभिलक्षण भेल, राष्ट्रीयता आ विश्व-दृष्टिक संग अपन लोक-मनक अनुकूलन आ सन्तुलनक प्रयत्न। एही अर्थ मे हमरा लोकनि ललितक 'रमजानी' कें पहिल आधुनिक कथा मानैत छी। एही प्रयत्न कें हमरा लोकनि बादक समस्त कथा-साहित्य मे टहलैत-बुलैत पबै छी। 'छठि-परमेसरी' (धूमकेतु) कथाक अन्त मे जखन हमरा लोकनि गोपीनाथ कें गमछा झाड़िक' निचिन्त होइत देखै छी तँ लोक-मन कें विश्व-दृष्टि धरिक व्याप्ति भेटैत अछि। ओतए 'हारब' जिजीविषाक पस्त हेबाक नहि, एक श्रेण्य इष्टक प्रति अनुकूलनक बाट देखाएब थिक।

आब ई बात भिन्न जे विविध दृष्टिक बीच सन्तुलनक द्वन्द्व आ प्रेरक शक्ति जतेक सबल आ जबर्दस्त हएत,आधुनिकताक अंगीकार आ व्यापकता सेहो ताही रूपें बढ़त। जँ हमरा लोकनि मैथिली कथा-साहित्य

मे बंगला वा मराठी-सन व्यापकतापूर्ण परिदृश्य नहि देखै छी तँ तकर कारण मिथिला-समाज लग चुनौतीक कम दबाव थिक जे ओकर सामूहिक सम्वेदना कें दलमलित क' दैक। मुदा मोन रखबाक थिक जे साहित्यगत मार्मिकता एहिसँ भिन्न वस्तु थिक आ ओ लोक-मनक अभिव्यंजने-मात्र सँ पुष्ट होइत रहैत अछि। तखन, प्रश्न अछि--सामर्थ्य आ तकर सीमाक। मैथिलीक कथा-साहित्यक अनेको सीमा सभ अछि, से सभ अपना जगह पर स्पष्ट अछि।

मैथिली कथा थिक मूलतः गामक कथा आ एकर मन थिक मूलतः मिथिलाक लोक-मन। पछिला पचास-साठि बर्ख मे मिथिला अपन लोक-मनक संग राष्ट्रीयता आ विश्व-दृष्टिक संतुलनक कतेक ब्योंत क' सकल, तकरो एक आकलन एहि ठाम भेटि सकैत अछि। मैथिली मे 'कथा कहब' एक सुप्रसिद्ध मोहाबरा थिक आ एकर एक अर्थ अछि--दुर्गंजन करब। से, मैथिली मे, कथा वस्तुतः कहबा-सुनबाक लेल वा पढ़िक' सुनाबक लेल लिखल जाइत रहल अछि। स्वातन्त्र्योत्तर कालखण्ड मे आबिक' जखन कथा मे आधुनिक जीवनक जटिलता आ संश्लिष्टता बढ़ि गेल आ कथाक लेल एक सुनबा-जोग वस्तु रहि सकब कठिन होअए लागल, तखनहुँ मैथिली कथा कमोबेश एकर निर्वाह केलक। पछिला पन्द्रह बर्ख सँ मैथिली मे 'सगर राति दीप जरय' नाम सँ त्रैमासिक कथागोष्ठीक आयोजन भ' रहल अछि, से भारतीय साहित्यक सन्दर्भ मे निस्सन्देह एक बेजोड़ प्रयोग थिक, से इहो आयोजन मैथिली कथा कें बहुत हद धरि सुनबा जोग कथा बनौने रखबा मे सहायक भेल अछि। मैथिली कथा सोझ, एकहरा आ छोट होइत अछि, से आब तँ एकर ई रूप सर्वजानित भ' गेल अछि।

हरिमोहन झा सँ गोविन्द झा धरिक कथा स्वतन्त्रता-पूर्वक ओहि कथा-पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करैत अछि, जकर सक्रियता सँ स्वतन्त्रताक बादोक परिदृश्य भरल-पुरल रहल। एहि कथा सभ मे परम्पराक गन्ध तँ चिन्हले जा सकैत अछि, नवीन सम्वेदना कें अंगीकार करबाक उत्साह सेहो देखल जा सकैत अछि। काञ्चीनाथ झा 'किरण' क कथा 'रूपा' अपेक्षाकृत बादक लिखल थिक। से ई देखबा लेल जे बदलल समयक संग सामंजन

लेल एहि पीढ़ी लग कोन रूपक प्रस्ताव छल, ई कथा महत्त्वपूर्ण अछि।

ललित सँ रामदेव झा धरिक कथा मे स्वातन्त्र्योत्तर बोध आ सम्वेदनाक प्रत्यक्ष धाही अनुभव कएल जा सकैत अछि। एहि कथा सभ मे, आलोचनात्मक आस्था कथाकारक मुख्य सम्बल बनिक' ठाढ़ भेल अछि। नीति-निर्धारक-वर्गक छद्म, आम-लोकक पराभव, युवा पीढ़ीक कुण्ठा आ मोहभंग--एहि सभक संग-संग किरणमालाक सन्धानक एक रूपरेखा सेहो एहि ठाम पाओल जा सकैछ। ई समस्त बोध आ सम्वेदना आओर सघन भेल अछि अगिला कथा पीढ़ी मे, जकर प्रतिनिधित्व धूमकेतु सँ ल' क' गंगेश गुंजन धरि करैत छथि। छिन्न-भिन्न होइत सामन्ती ताना-बाना पर मैथिली मे बहुतो कथा लिखल गेल अछि। 'भात' (धूमकेतु) ताहि सँ थोड़ेक आगूक बात कहैत अछि, कारण एहि ठाम 'स्वजन' कें पुनर्परिभाषित करबाक उद्यम भेल अछि। एहि उद्यम कें 'अपन समांग' (गंगेश गुंजन) किछु आर विस्तार प्रदान करैत अछि। मिथिला मे उपभोक्तावादी संस्कारक आक्रमण, पाइ, पैरबी आ प्रभुताक धकापेल आ एहन-एहन नव हवा सँ गामक नरक होइत जाएब-ई चिन्ता जँ एक दिस अछि (जीवकान्तक कथा 'तेल') तँ दोसर दिस निस्तारक अकुलाहटि सेहो अछि, जकर एक रूप 'पिता' (प्रभास कुमार चौधरी) मे देखल जा सकैछ।

ई अकुलाहटि आठम दशकक कथा-पीढ़ी लग आबिक' प्रतिरोधक रूप अख्तियार क' लैत अछि। बहुतो एहन कथा लिखल गेल जाहि मे अस्तित्व रक्षा लेल निर्णायक संघर्ष अनिवार्य बनिक' आएल। एहि संग वर्ण, जाति, वर्ग, परिवार, समाज सन संस्था सभ कें नव परिप्रेक्ष्य मे बूझल-समझल जाएब, आवश्यक मानल गेल। हाशिया पर अबडेरल निम्न-जनक जीवन-सौन्दर्य कें देखबाक एक चेष्टा सेहो मुख्यधारा मे आएल। एहि कथा सभ मे बदलैत मिथिलाक वैचारिक आ सम्वेदनात्मक पहलू सभ कें साफ-साफ देखल जा सकैत अछि। सुभाषचन्द्र यादव सँ मनमोहन झा धरि एहि कथा-पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करैत छथि।

आठम दशकक बाद मैथिली कथा मे व्यापक बदलाव घटित भेल देखाइत अछि। एक तँ चौमुखी विषय-विस्तार, दोसर कथाक आत्मीय परिदृश्य--ई दुनू एक नव प्रकारक पाठक-संसार सँ मैथिली कथा कें

जोड़लक अछि। भूमण्डलीकरणक विरुद्ध प्रतिक्रिया अस्मिताक बोध कें दीप्त केलक अछि। परम्परा आब अपन विकासक आगामी चरण मे प्रवेश पौलक। कथा मे आब'बला 'गाम' आब ओ गाम नहि रहि गेलै। स्त्री, शूद्र आ बच्चा--अदौ सँ मिथिला-समाज मे उपेक्षित एहि 'दलित-समूह'क प्रति एक सावधान उन्मुखता व्यक्त भेल। एक सजग आलोचनात्मक विवेक रखैत कथाकार लोकनि सांस्कृतिक निजताक अन्वेषण मे प्रवृत्त भेलाह।

(2008)

मैथिली उपन्यास आ राजनीतिक विचारधारा

अपना ओतए अदौ सँ सुप्रसिद्ध कहबी जकाँ अछि जे 'सहसा विदधीत न क्रियाम्'। एकरे दोसर तरहें कहल गेल अछि जे 'बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय।' तात्पर्य जे कोनहु टा कार्य सम्पादित करबा सँ पूर्व विचार क' लेबाक चाही। ई कथन विचार आ क्रियाक अनिवार्य संगतिक निर्देश करैत अछि। ई एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाक सहज गुम्फन सेहो थिक जे पारम्परिक भारतीयता मे सेहो सुनिर्दिष्ट आ प्रशंसित अछि। विचार सभ क्यो करैत अछि। सभक अपन-अपन विचार होइत छैक। निर्विचार हएब एक असामान्य स्थिति थिक जे कि तँ समाधिएक अवस्था मे भ' पबैत छैक आ कि गहन बेहोशिएक अवस्था मे।

व्यक्तिगत विचार, सभक भिन्न-भिन्न भ' सकैत छैक, होइतो छैक, जकरा 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना' कहल जाइछ। मुदा, ध्यान देबाक थिक जे मुण्ड-मुण्ड मे भिन्न-भिन्न मतिक अर्थात् विचारक हएब सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य मे अधलाह मानल जाइछ। कोनो आयोजनक सन्दर्भ मे एकरा निकृष्ट स्थिति बूझल जाइछ। कोनहु भाषा मे कएल जाइबला कार्य यथा उपन्यास-लेखन सेहो एक महत् आयोजने थिक। प्रत्येक रचनाकारक अपन विचार होइत छैक, अपन भाव होइत छैक, जे आन रचनाकार सँ अथवा ओही रचनाकारक कोनो आन रचना सँ ओकरा पृथक करैत छैक। मुदा, एहि सभक अछैत कोनो एहनो वस्तु रचना मे अनुस्यूत रहैत छैक

जे समस्त रचनाकार लोकनि मे अथवा रचनाकार लोकनिक कोनो पीढ़ी वा वर्ग-विशेष मे एक दोसरक बीच सातत्य आ सम्बन्ध-सूत्र जोड़ैत छैक। ओ वस्तु थिक विचारधारा, आ ओ दोसर वस्तु थिक भावधारा।

एहि तरहें हम देखि सकैत छी जे 'विचार'क संग 'धारा' शब्द जुटने स्वतः स्वाभाविक रूप सँ एहि मे सामूहिकता आबि जाइत छैक। विचारधाराक संग एक परम्परा सेहो आवश्यक रूप सँ होइछ आ तकर निरन्तरता आ विकासक कामना आ प्रयास सेहो। हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे धारा शब्द जुटने दू टा परिस्थिति अनिवार्य रूप सँ फलित होइत छैक जे कि विचारधाराक खासमखास विशेषता थिक। एक तँ गति करबाक प्रवृत्ति। धारा कखनहु गतिविहीन नहि भ' सकैत अछि, विचारधारा सेहो नहि। दोसर तट सँ, यथास्थिति सँ टकरेबाक, प्रतिरोध करबाक प्रवृत्ति। विचारधारा, ओ चाहे राजनीतिक हो कि आचारशास्त्रीय, मे ई परिस्थिति अनिवार्य रूप सँ फलित होइत छैक।

हमरा लोकनि अवगत छी जे हमरा-अहाँ-सन कोनो मनुष्यक अथवा ओकर समाजक पहिचान ओकर संस्कृति, ओकर भाषा, ओकर धर्म, ओकर क्षेत्रीय अस्मिता, ओकर राष्ट्रीयता आदि सँ होइत छैक। मनुक्खक व्यक्तित्वक ई अविच्छिन्न अंग थिक। ध्यान सँ देखल जाय तँ स्पष्ट हएत जे ई सभ गोट परिचिति मूलतः आर्थिक सन्दर्भ सँ जुड़ल छैक आ तकर नियमन राजनीतिक सत्ता करैत अछि। विश्व इतिहास मे हमरा लोकनि अनेको एहन दृष्टान्त देखैत छी जे कोनो खास विचारधारा कोनो विशेष भूखण्ड अथवा समाज कें जखन अपन अनुकूल बनब' चाहैत अछि अथवा तकर संस्कृति कें अपना रंग मे रंग' चाहैत अछि तँ ओ अपन पहिल चोट ओहि ठामक राजनीति पर करैत अछि। भूमण्डलीकरणक आजुक अभियान मे एहि स्थिति कें घटित होइत हमरा लोकनि साफ-साफ देखि सकैत छी।

दोसर दिस, साहित्य जे अछि, तकर मूल इष्ट गरिमापूर्ण मनुष्य-सत्ताक निर्माण आ तकर संरक्षण थिक। यैह काज साहित्य सभ युग मे करैत आएल अछि। एहना मे स्वाभाविक थिक जे साहित्यक संग राजनीतिक सत्ताक टकराहटिक परिस्थिति बनैत छैक। प्राचीन साहित्य कें हमरा लोकनि अक्सरहाँ राजनीतिक प्रति निस्पृह देखैत छी। तकर कारण थिक

जे ओकर रचनाकार राजनीतिक सत्ता द्वारा आक्रान्त रहल अछि आ ओहि साहित्यक निर्माणे दरबारी संरक्षण मे भेल छैक। राजनीतिक प्रति सजगता आ मुखरता भारतीय साहित्यक सन्दर्भ मे एक आधुनिक दृष्टि थिक। मैथिली साहित्य सेहो एहि संग अविच्छिन्न अछि।

उपन्यास विधा सेहो पूर्णतः एक आधुनिक विधा थिक आ उचिते जे आधुनिक मूल्यक संग पूरे-पूरी जुड़ल अछि। आधुनिक भारतीय भाषा मे उपन्यास-लेखनक आरम्भ 1857 ईस्वीक बाद भेल। हमरा लोकनि जनैत छी जे यैह 1857 ई. भारतक राजनीतिक इतिहास मे राष्ट्रीयताक उदयक काल थिक। आधुनिक सन्दर्भ मे, भारतीय राष्ट्रक जन्म एहि काल मे भ' रहल छल तँ एम्हर उपन्यासक जन्म सेहो भ' रहल छल। आलोचक लोकनि आनो-आनो देशक दृष्टान्त रखैत ई निष्कर्ष प्रस्तुत केलनि अछि जे देशक जन्म आ उपन्यासक जन्म संग-संग भेल अछि।[1] अवधारणा-विशेषक सन्दर्भ मे कोनो देशक जन्म शुद्ध रूप सँ एक राजनीतिक घटना थिक। आ ताहि संग उपन्यासक जन्म जुड़ल अछि। एहि तरहें आ आनो तरहें उपन्यास विधा अपन मूल अभिप्राय मे एक राजनीतिक विधा थिक। एहि परिस्थिति मे स्वाभाविके जे उपन्यास राजनीतिक प्रति निस्पृह नहि भ' सकैत अछि आ विचारधारा सँ एकात भ' क' अपन बाट नहि चलि सकैत अछि। से एहू कारणें जे अपन जाहि जनताक जीवनक चित्रण हेतु ओ लिखल जाइत अछि, सैह अन्ततः राजनीति सँ अनस्पृष्ट नहि अछि। जतए मनुष्य-सत्ताक परिचिति आ अस्मिते राजनीति सँ नियमन पबैत हो, ई सम्भवो कोना भ' सकैछ?

भारतीय भाषा सभ मे आरम्भकालीन उपन्यास-लेखनक प्रवृत्ति पर नजरि दी तँ एक जबर्दस्त साम्य देखार दैत अछि जे प्रायः सभ ठामक आरम्भिक उपन्यास स्त्रीक विडम्बनापूर्ण जीवन कें ल' क' लिखल गेल--ओकर पीड़ा, ओकर उत्पीड़न, ओकर दासता आ ओकर आत्मबलिदान आदि कें ल' क'।[2] ई प्रवृत्ति हमरा लोकनि मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास सभ मे सेहो पबैत छी, जखन कि ई सत्य जे एहि ठामक सृजनशीलता आन ठामक तुलना मे कम सँ कम साठि-सत्तर वर्ष पाछू चलि रहल छल। एकर लगले बाद उपन्यास मे अबैत छथि खेतिहर किसान। एहि जीवनक संघर्ष आ

संकटक विषय मे सेहो हमरा लोकनि मैथिली कें संग चलैत देखैत छिऐक। हमरा कहबाक अछि जे उत्पीड़ितक जीवन, ओकर समस्त निजताक संग, केन्द्र मे आनब सैह अपना मे एक प्रतिरोधी विचार थिक आ से अन्ततः एक राजनीतिक विचारधाराक संवाहक थिक।

मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास सभक विचारधारा अपना संग राजनीतिक अभिप्राय कोना रखने अछि ताहि लेल एकाध दृष्टान्त पर नजरि देब उचित हएत।

पण्डित जीबछ मिश्रक उपन्यास 'रामेश्वर' (1916) तत्कालीन व्यवस्था मे पसरल विकृति आ विडम्बना, बाह्य आडम्बर, अनाचार, व्यभिचार एवं शोषण करबाक प्रवृत्ति कें खूब सपाट ढंग सँ अभिव्यक्त करैत अछि।[3] एहि ठाम हमरा लोकनि देखैत छी अंग्रेजी सत्ताक पुलिस-प्रशासन-तंत्र कें निपट नांगट रूप मे, जे कि अपन नंगटपनीक हेतु कुख्यात छल। भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक पाँती *'कपट कटारी हिय मे हूलिस, कहु सखि साजन नहि सखि पूलिस'* कें एहि ठाम एकदम सटीक दृष्टान्त भेटैत देखल जा सकैत अछि।

थाना मे पकड़ाएल एक चोर मौका पाबि क' भागि जाइछ तँ थानाक दरोगा अपन अक्षमता कें नुकेबाक हेतु एक निर्दोष आ निरपराध नागरिक रामेश्वर कें पकड़ि ओहि चोरक एवज मे जेल पठा दैछ। एहि ठाम ओहि व्यवस्थाक क्रूरताक एक अनुमान कएल जा सकैछ जकरा विरुद्ध स्वातंत्र्यकामी जनता गोलबन्द भ' रहल छल। एहि घटनाक जे विषम प्रभाव रामेश्वर आ ओकर परिवार पर पड़ल, तकर आख्यान पूरे उपन्यास मे व्याप्त छैक। तखन, एहि मे अबैत छथि ओहि कालक जमीन्दार, जनिकर स्वार्थपरता, अमानवीयता आ बैमानी जगजाहिर अछि। तहिना, रासबिहारी लाल दासक उपन्यास 'सुमति' (1918) मे एक साधारण परिवार कें मिथ्याडम्बरक फाँस में फंसि क' सर्वनष्ट होइत देखाओल गेल अछि। एहि ठाम देखाओल गेल अछि जे बेटा-बेटीक विवाह मे दुनू पक्ष धनबलक प्रदर्शन करबाक लेल महाजन, जमीन्दार आ महाराजाधिराज सँ ऋण आ मंगनी प्राप्त करैत अछि। आ बाद मे, ऋण-वसूली हेतु चलैत मोकदमाबाजिएक क्रम मे अपन प्राण गमबैत अछि। मजेदार ईहो थिक जे

ई पुस्तक महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह के समर्पित कएल गेल छनि। मुदा तें की एकर राजनीतिक अभिप्राय निरस्त भ' जेतैक? तहिना, जनार्दन झा 'जनसीदन'क उपन्यास 'निर्दयी सासु' (1914) मे सासु अनूप रानी द्वारा अपन पुतोहु शारदा पर जे अनेको लांछन सभक कारण अमानवीय अत्याचार कएल जाइछ, ताहि मे सँ एक लांछन ईहो थिक जे पढ़लि-लिखलि हेबाक कारण ओ किताब पढ़ए चाहैत छथि आ मोनक भाव लिखए सेहो चाहैत छथि। सुधारवादी वातावरण सँ ओतप्रोत एक व्यक्ति ज्योतिषी चिन्तामणि झा जँ समाज मे छथिहो तँ बाँकी लोक अपन जाहिलपनी मे रेकर्डतोड़ छथि। ई जे अन्तर्विरोध अछि समाज मे, तकर जड़ि ताक' चली तँ अन्ततः राजनीतिक सत्ता लग मे पहुँच' पड़त। 'निर्दयी सासु'क एक पात्र घटक कहैत अछि--*'हरिसिंह देवी कतए लेने फिरै छी, कन्या जाहि सँ सुख मे रहए से कर्त्तव्य थिक'* मुदा हरिसिंह देवीक शिखर संरक्षक से किएक चाहताह? महाराजाधिराज दरभंगा खेतिहर प्रजाक शोषण सँ भेल बेशुमार आमदनी मे सँ किछु अंश जनकल्याणकारी काज मे लगबैत छलाह। अति उत्तम। मुदा, एहि जनकल्याणकारी मदक पाइ सँ पटना नगर मे नालीक निर्माण कएल जाइत छल, मिथिला मे स्कूल नहि खोलाओल जाइत छल। एकरा कही अकबाल!

अस्तु। उपर्युक्त दृष्टान्त सभ द्वारा रचनागत राजनीतिक अभिप्राय सभक थोड़ेक स्थूल चित्र हम अहाँक सोझा रखलहुँ। वास्तव मे तँ उपन्यास मे अनुस्यूत राजनीतिक अभिप्राय अत्यन्त सूक्ष्म रूप सँ व्यक्त भेल रहैछ, आ मनुष्य-सत्ताक परिचितिक समस्त कारक मे ओकरा विद्यमान देखल जा सकैत अछि। कोनो रचनाक निविड़ समकालीनताक यैह उपस्थापक थिक।

मैथिली उपन्यासक अद्यतन उपलब्धि पर ध्यान दी तँ कुल्लम दू प्रकारक प्रवृत्ति दृष्टिपटल पर अबैत अछि। एहि दुनू प्रवृत्ति कें क्रमशः सुधार आ परिवर्त्तनक कोटिक्रम सँ अभिहित कएल जा सकैत अछि। आलोचक आ अध्येता लोकनिक ध्यान एहि दिस गेलनि अछि आ तदनुसार विवेचनो कएल गेल अछि।[4] डा. यशोदानाथ झा कहैत छथि- *'1960 ई. धरि उपन्यास अनमेल विवाहक समस्या लए चक्कर कटैत रहल*

किन्तु अगिला दशक मे आबि विधवा-समस्या, भाग्यक भरोसें दिन कटैत जीवन, ग्रामवासीक अवरुद्ध प्रगतिक बाट, मातृभाषा-सम्बन्धी आन्दोलन, भारतीय राजनीति एवं भारतीय सभ्यता-संस्कृति गौरव-गरिमा आदि विषय उपन्यासक रचना-क्षेत्र मे वैविध्यक संग विस्तार अनलक।' एतय डॉ. झा जकरा 'वैविध्यक संग विस्तार' कहैत छथि, से वस्तुतः सुधारवादी मनोवृत्ति सँ परिवर्त्तनवादी मनोवृि त्त मे संक्रमण थिक। एकरा मात्र विस्तार टा नहि मानल जा सकैत अछि, कारण परवर्त्ती युगक अवधारणा, विचारधारा आ लक्ष्य मे हमरा लोकनि मौलिक भिन्नता देखि सकैत छी।

ई भिन्नता खूब स्पष्ट भ' सकत जँ हमरा लोकनि दुनू युगक उपन्यास-लेखनक मुख्य प्रवृत्ति सभ पर एक नजरि दी।

भारतीय भाषा-साहित्य मे उपन्यासक उदयक प्रसंग मे ऊपर हम कहलहुँ जे स्त्रीक पीड़ा सँ प्रायः सभे भाषा मे उपन्यासक आरम्भ भेल। मैथिली मे हमरा लोकनि देखैत छी जे प्रथम उपन्यास लिखल जेबाक चालीस-पचास बर्ख आगू धरि उत्पीड़ित स्त्री मुख्यधारा मे बनल रहलीह। एहि उत्पीड़नक मुख्य जिम्मेवार छल विवाह संस्था। एहि विवाह संस्था मे अनेकानेक प्रकारक अमानवीय दोष सभ व्याप्त रहैक। एते धरि जे अपन निष्पत्ति मे ई विवाह नहि रहल, एक सामाजिक राजनीति बनि गेल, जकर उद्देश्य छल--किछु जात्यभिमानी सम्भ्रान्त लोक द्वारा आन लोक पर अपन वर्चस्व बनौने राखब। एहि राजनीतिक प्रत्यक्ष शिकार भेलीह स्त्री, जे कि ओकर जीवन कें नरक मे परिवर्तित क' देलक। हमरा लोकनि देखैत छी जे एहि वर्चस्वक राजनीति कें संरक्षण दै बला जे शिखर पुरुष रहथि, सैह अन्ततः वैवाहिक कुरीति सभक परिहारोक मार्गदर्शक भेलाह आ तकर प्रवक्ता भेल मैथिल महासभा। एकर कारण ओहि कालक राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य मे ताकल जा सकैत छैक--राजा राममोहन रायक सुधारवादी आन्दोलन आ तकर बदौलति पास भेल कानून सभ।

अस्तु! आरम्भिक उपन्यासक ई एक मुख्य प्रवृत्ति थिकैक जे स्त्री-जीवनक उत्थानक बिना सामाजिक विकास सम्भव नहि थिक।

दोसर प्रवृत्ति थिक जे बाह्याडम्बर निरर्थक थिक कारण ओ हमर प्रगति कें अवरुद्ध करैत अछि। तेसर प्रवृत्ति थिक जे जातिक आधार पर

उच्चतावचताक भावना उन्नतिक प्रतिकूल थिक। 'भलमानुस' (योगानन्द झा) उपन्यास तँ स्थूल रूप सँ एहि प्रवृत्तिक आरेखन करैत लिखले गेल मुदा एहि कालक प्रायः सभ रचना मे ई विचारधारा सूक्ष्म रूप सँ अनुस्यूत देखल जा सकैत अछि। तहिना, एहि युगक एक प्रवृत्ति थिक जे शिक्षाक प्रसार अपरिहार्य अछि, कारण अभ्युन्नतिक समस्त द्वार एही सँ खुलि सकैत अछि।

ध्यान रखबाक बात थिक जे मैथिली मे उपन्यासक उदय, भारतीय राजनीति आ स्वतंत्रता आन्दोलन मे महात्मा गाँधीक उदय सँ पूर्वहि भ' चुकल छल। तें, प्रारम्भिक सुधारवादी मॉडल गाँधी-पूर्व आन्दोलनक उपजा थिक, जकर वैचारिक ताना-बानाक सर्वाधिक श्रेय राजाराम मोहन राय कें छनि। महात्मा गाँधीक व्याप्तिक बाद जे सुधारवादी कार्यक्रम मे त्वरा, मुखरता आ जुझारूपन आएल, तकर एक छोटछीन झाँकी हमरा लोकनि 'चन्द्रग्रहण' (काञ्चीनाथ झा 'किरण') मे देखि सकैत छी, जतए 'वन्दे मातरम्' अछि, कांग्रेस अछि, कार्यकर्त्ता सभक जुझारू जत्था अछि आ देशोद्धारक संकल्प अछि। अथवा, सुधारवादी धाराक चरम प्रयोक्ता हरिमोहन झाक उपन्यास मे जे बेधकता आ दू टूकपन अछि, से मात्र हुनकर व्यक्तिगते प्रतिभाक बदौलति नहि अछि, एहि मे तत्कालीन राष्ट्रीय परिदृश्यक प्रभूत योगदान छैक।

सुधारवादी युगक उत्तरवर्त्ती काल मे हमरा लोकनि एक विशिष्ट प्रवृत्ति कें उदित होइत देखैत छी। ई प्रवृत्ति छल जे नैतिकता युग-धर्मक संग परिवर्त्तनीय वस्तु थिक। वर्त्तमान परिस्थितिक संग एकर सामंजन आवश्यक, नहि तँ हमरा लोकनि अपेक्षित प्रगति नहि क' सकब। एहि 'नैतिकता'क अन्तर्गत धार्मिकता आ पारम्परिक लोकाचार सेहो निहित मानल गेल। ई प्रवृत्ति ओहि संक्रमण-रेखाक काज केलक जे सुधारवादी युग कें आगू परिवर्त्तनवादी युग मे ल' गेल। नैतिकतापरक सोच मे आएल बदलाव एहि कालक औपन्यासिक परिवेश मे अकानल जा सकैत अछि। 'कला' (चतुरानन मिश्र) जँ विकट समस्याक समाधान एक तरहें प्रस्तावित करैत अछि तँ 'नवतुरिया' (यात्री) एक आर तरहें समाधानक पक्ष मे ठाढ़ होइछ, जे कि परिवर्त्तनकामी दृष्टिक अंगीकार थिक। नैतिकताक ओझरा

कें सोझरौने बिना 'पारो' (यात्री)क रचना नहि कएल जा सकैत छल।

कहब आवश्यक नहि जे एहि रचना सभक विचारधारात्मक अभिप्राय एकदम्म स्पष्ट अछि। वर्चस्वशाली सत्ताक प्रतिरोध, उत्पीड़ितक प्रति पक्षधरता आ प्रगतिकामिताक अंगीकार। हरिमोहन झा आ यात्रीक उपन्यास पर जे वर्चस्वशाली वर्ग दिस सँ प्रहार भेल छलैक, जकर बानगी एहि कथन मे देखल जा सकैछ--

स्वच्छन्द प्रोफेसर हाथ-पैर-दन्तावली पूर्वहि तोड़ि देल
दुर्भाग्य सँ सम्प्रति मैथिलीक पारो कपारो फोड़ि देल।[5]

एहि पाँती मे मैथिली कें ल' क' पण्डितजीक जे हताशा अभिव्यक्त भेलनि अछि, से विचारधारापरक चोट पहुँचने बिना सम्भव नहि भ' सकैत छल। ई हताशा वर्चस्व टुटबाक हताशा थिक।

'नवतुरिया' (यात्री) मे हमरा लोकनि एक पात्र कें कहैत देखैत छी- *'नवका तूरक लोक कोनो प्रकारक अलट-बिलट बर्दास्त नहि करतै।'* ई परिवर्त्तनवादी युगक आधार-कथन-सन बनि गेल। स्थिति कें परिपूर्ण बेबाकीक संग तँ परखले जाय, समाधान ताकबा काल सेहो परम्परित बन्धन आ कुण्ठा कें स्थगित राखल जाय--ई सामान्य प्रवृत्ति हमरा लोकनि एहि कालक उपन्यास मे पबैत छी। परिवर्त्तन एक जीवन-मूल्य बनि क' सामने आएल। यात्रीक 'बलचनमा' एक ठाम कहैत अछि- *'साधारण जिनगी मे हेर-फेर के नहि चाहत? यदि बारहो महिना जाड़े रहै तँ ककरो नीक लगतै? आ तहिना जौं भोर-साँझ नहि होइ, सदिखन जेठक दुपहरियाक रौदे-रौद रहै तँ केहन लगतै मनुक्खक जिनगी? कहबाक माने ई जे मनुक्खक जिनगीक गप्पे कोन, समूचा संसार आइ परिबरतने पर चलै छै। परिबरतनक पहिया सदिखन चलिते रहै छै।'* ई जे 'साधारण जिनगी मे हेर-फेर' चाहबाक ललक अछि से साधारण बात नहि थिक। ई ललक धर्म, ईश्वर, भाग्य, वर्चस्ववादी समाज-व्यवस्था, सामन्त-सत्ता--एहि सभक विरुद्ध जाइत अछि। स्वाभाविक जे ललक राखनिहारक वर्ग कें 'एक रत्तीक जान, तैपर तेरह कमान' भोग' पड़ैत छैक। मुदा एकरे प्रतिरोध मे गठित होइत छैक वर्गीय समाज आ संघर्षक वास्ते संगठनबद्धता। बलचनमा (यात्री), पृथ्वीपुत्र (ललित), आ भोरुकवा (धीरेन्द्र) मे एहि

प्रक्रिया कें सम्पन्न होइत देखल जा सकैत अछि। 'बलचनमा'क तँ दूरगामी महत्त्व छैक, कारण ओ सम्पूर्ण व्यवस्था कें परिवर्त्तनवादी दृष्टि सँ देखबाक आँखि तँ दैते अछि, परिवर्त्तनक विभिन्न चरणक विवरण सेहो समस्त अविरोध-अन्तर्विरोधक संग प्रस्तुत करैत अछि।[6]

भारतक स्वतंत्रताक संग जे पीढ़ी सामने आएल से आत्मविश्वास सँ लबालब भरल पीढ़ी छल। ई आत्मविश्वास स्वर्णिम भविष्यक आशा-आकांक्षा संग जुड़ल रहैक। समाज-व्यवस्थाक प्रत्येक क्षेत्रक लोक मे एकरा देखल जा सकैत रहैक आ तकर प्रतिफलन साहित्यो मे भेल। अपन वृतान्त सुनबैत 'बलचनमा' कहैत अछि- *'सोराज भेटला पर की हेतैक? ई बात पटना मे एकबेर हम महेन बाबू सँ पुछने रहियनि। ओ की जवाब देने छलाह भैया से की कहिअ? महेन बाबू यैह कहने छलाह जे सोराज भेला पर सभक दिन फिरतैक, सभक भाग चमकतैक। हमरो, तोरो।'* मुदा आगू देखल गेल जे ई सपना टूटि गेलैक। सभक दिन नहि फिरलैक। महेन बाबूक तँ खूब भाग चमकलनि मुदा बलचनमा ओहिनाक ओहिना रहि गेल। बहुत पहिने लक्ष्मीपति सिंह अपन उपन्यास 'पंचवटी' मे जे एक आकलन सम्भावित मानने छलाह--*'विभिन्न राजनीतिक दल अपना सभ मे नित्य नवीन संघर्ष करैत निरीह जनताक शोषण मे लीन रहत।'*[7] वा, स्वयं महात्मा गाँधिए जे आशंका भविष्यक राजनीति आ राजनेता कें ल' क' जाहिर केने छलाह, तकरा सगरो मूर्त्तिमान देखल जाय लागल। एहना मे महेन बाबूक भाग कें नित बढ़ैत क्रमें देखियो क' बलचनमा, माने आम लोक, ओहिनाक ओहिना रहि गेल, से कहब सत्य नहि हएत। ओ कुण्ठा आ असन्तोष सँ भरल, ओ आक्रोश आ विद्रोहक बाट पकड़लक। ओ प्रतिरोध कें अपन औजार बनौलक। मार्क्सवादी राजनीति आ विचारधारा एहि मे प्रबल रूप सँ मार्गदर्शक बनलैक। 'पृथ्वीपुत्र' (ललित) मे जमीनक हक वास्ते संगठनबद्ध प्रतिरोध हमरा लोकनि देखैत छिऐक। से प्रतिरोध 'भोरुकवा' (धीरेन्द्र) मे तिक्ख भ' क' आएल अछि। 'खोंता आ चिड़ै' (मायानन्द मिश्र) मे तकरा देखल जा सकैत अछि। 'गाम सुनगैत' (विभूति आनन्द) आ 'जिन्दाबाद जिन्दाबाद' (रविकान्त नीरज) मे तकरा चीन्हल जा सकैत अछि। लिली रेक उपन्यास 'पटाक्षेप' संगठनबद्ध सशस्त्र

प्रतिरोधी जत्थाक कथा कहैत अछि, जकर कि अपन अन्तर्विरोध सेहो ओहिठाम एलैक अछि।

उपर्युक्त उपन्यास सभ मे अनुस्यूत राजनीतिक अभिप्राय अत्यन्त स्पष्ट तथा मुखर अछि। आनो आनो उपन्यास जे कि अपन विषय-वस्तु मे भिन्न अछि, मे एहि अभिप्राय कें सूक्ष्म रूप सँ अनुस्यूत देखल जा सकैत अछि। जीवकान्त आ प्रभास कुमार चौधरीक उपन्यास सभ मे समकालीन लोकक असन्तोष, कुण्ठा, अनास्था, दिशाहीनता, नैतिक ह्रास आदिक मार्मिक चित्रण भेल अछि। एहि सभक राजनीतिक अभिप्राय की स्पष्ट नहि अछि? सत्ता आ व्यवस्थाक प्रति ओ एक धिक्कार बनि क' आगू आएल अछि। हँ, ओहिठाम आक्रोश छैक मुदा मुखर प्रतिरोध नहि छैक। मुदा, ओतए देखल जेबाक चाही जे ओहि परिस्थिति मे स्वतन्त्र देशक बन्धनग्रस्त मुदा, जाग्रत नागरिकक जिनगी गुदस्त करबे स्वयं मे एक प्रतिरोध थिक।

एहि ठाम हम परिवर्त्तनवादी उपन्यासक किछु मोट-मोट प्रवृत्ति आ मान्यता दिस संकेत करए चाहैत छी, जाहि सँ स्थिति आर बेसी स्पष्ट भ' सकए। एहन किछु बिन्दु निम्नलिखित अछि-

1. वर्णव्यवस्था आ जाति विभाजन शोषणमूलक आ तें निरर्थक थिक। समाज कें एहि सँ मुक्त भ' क' अपन बाट ताकबाक चाही। वर्गीय समाज, जे कि अपन आर्थिक हितक आधार पर संगठित होइछ, सर्वोत्तम थिक। जाति-व्यवस्थाक व्याख्या 'भोरुकवा' मे एहि रूपें कएल गेल अछि- *'छोटका जाति। अर्थात जे बहुत दिन सँ गरीब रहल अछि आ जकर सामाजिक महत्त्व कें अर्थक देवता लोकनि नीचा कए देने छलथिन। वैह राड़ छोटका जातिक लोक।'* आ वर्गीय हितक बोध एहि छोटका लोक मे कोना उदित भ' रहल छैक, तकर उदाहरण बलचनमाक एक कथन- *'सोराजी भ' गेल छलाह तें की, छलाह तँ आखिर बाबुए-भैया ने। गरीब-गुरबाक दुख ई लोकनि की बुझथिन। सत बुझलह भाइ, तखन हमरा मोन मे ई बात बैसि गेल जे जेना अंग्रेज बहादुर सँ सोराज लेबाक हेतु बाबू-भैया लोकनि एक भ' रहल छथि, हल्ला-गुल्ला आ झगड़ा-झंझट मचा रहल छथि ओहिना जन-बोनिहार, कुली-मजूर आ बहिया-खबास कें अपना हकक लेल बाबू-भैया सँ लड़' पड़तैक।'*

2. श्रम एक महनीय जीवन-मूल्य आ एक स्वायत्त संस्कृति थिक। श्रमजीविताक तुलना मे सम्भ्रान्तता (सामन्तवादिता) दोयम थिक।

श्रमजीवीक सौन्दर्य-बोध 'बलचनमा' मे मुखर रूप सँ प्रकट भेल अछि। समकालीन साहित्यक ई एक एहन प्रवृत्ति थिक जकरा सगरो अनुभूत कएल जा सकैत अछि।

3. अर्थसत्ता सर्वोच्च नियामक सत्ता थिक, जकरा प्रभावित केने बिना स्वतंत्रताक कोनो मूल्य नहि अछि।

आर्थिक दिशाहीनताक एक चित्र- *'कागज परक स्वतन्त्रता प्रधानतः उच्चवर्गस्थ लोक वा धूर्तक लेल इजोत अनलक अछि। आ सामन्तवादी अर्थव्यवस्थाक ढेंग तर सामान्य जनता पूर्णतया दूभि जकाँ दबायल अछि। ओकरा लेल स्वतन्त्रता कोनो माने नहि रखैछ। भू-हीन, विद्या-हीन, अर्थहीन जायत तँ....जायत कत'? करत तँ की करत? कहतैक तँ ककरा कहतैक?'* (भोरुकवा)

4. बहुसंख्यक राजनीतिक नेता आत्यन्तिक रूप सँ भ्रष्ट आ जनहित विरोधी होइत अछि। तकर प्रतिकार लेल जनता कें जागरूक आ संगठनबद्ध हेबाक चाही।

नेताक चित्र आ चरित्र सभ ठाम प्रायः एही रंग मे रंगल देखार भेल अछि--से 'बलचनमा' सँ ल' क' 'मोड़ पर' (धूमकेतु) आ 'सर्वस्वान्त' (साकेतानन्द) धरि मे।

5. व्यक्तिगत कुण्ठा, असन्तोष, आक्रोश आदि व्यवस्थाक प्रतिरोधक एक मार्ग थिक, मुदा एकर चरम सार्थकता सामूहिक संगठनबद्धते मे निहित छैक।

असन्तोष कें आक्रोश आ तखन विद्रोह धरि ल' जेबाक चाही। विद्रोहक बिना परिवर्त्तन संभव नहि थिक।

अस्तु। राजनीतिक विचारधाराक परिप्रेक्ष्य मे मैथिली उपन्यासक एक संक्षिप्त आकलन हम ऊपर प्रस्तुत केलहुँ। शुरुहे मे हम विचारधाराक संग भावधाराक बात कहने रही। कोनो विचारधाराक चरम सफलता, साहित्यक सन्दर्भ मे, भावधारा कें गँहीर रूपें प्रभावित करबा मे होइत छैक। भावधारा आर किछु नहि, सम्वेदनाक ओ सामूहिक स्वरूप थिक जे

रचनाकारक कोनो पीढ़ी-विशेष मे वा वर्ग-विशेष मे पाओल जाइत छैक आ जे कि ओकरा जीव-जगतक संग, समाज आ तकर व्यक्तिक संग अन्तःक्रियाक हेतु प्रेरित करैत छैक। भावधारा साहित्य कें ग्राह्यता प्रदान करैत छैक, जकरा कारणें ओ पढ़ल आ गुनल जाइछ। विचारधारा साहित्य कें सार्थकता प्रदान करैछ। ग्राह्यता आ सार्थकता--एहि दुनू गुणक सम्यक् सन्तुलन सँ श्रेष्ठ साहित्यक सृजन सम्भव होइछ। से हम कहब जे ओ वामपंथिए विचारधारा थिक जे परिवर्त्तनवादी उपन्यासकारक भावधारा कें गँहीर रूपें प्रभावित केलकैक।

भारतीय राजनीतिक जे मॉडल सभ मैथिली उपन्यास मे आएल अछि से थिक--कांग्रेसी राजनीति, सोशलिस्ट राजनीति आ वामपंथी राजनीति। भिन्न-भिन्न उपन्यासक कथानक सभ भिन्न-भिन्न तरहें तीनूक प्रति प्रतिक्रिया केलक अछि। एहि प्रतिक्रिया सभ कें देखने ओहि मॉडल सभक गुणावगुण आ सीमा कें चीन्हल जा सकैत अछि। यात्रीक 'बलचनमा' एहि तीनूक विवरण संग-संग प्रसतुत केलक अछि, जतए कथानायक अपन मुक्तिक अभीप्सा मे, सांयोगिके रूप सँ सही, कांग्रेस, सोशलिस्ट आ कम्युनिस्ट तीनू राजनीति केनिहार लोक सभक सान्निध्य मे अबैत अछि आ ओकर सामर्थ्य-सीमा सँ परिचित होइत अछि। यात्रीक इष्ट वर्गवादी समाज, जे कि अपन आर्थिक हितक आधार पर संगठित होइछ, धरि पहुँचाएब रहलनि, तें ओहि ठाम कांग्रेस आ सोशलिस्टक राजनीतिक सीमा देखार कएल गेल। वामपंथी राजनीतिक थोड़ेक सीमा 'पटाक्षेप' (लिली रे) मे देखार भेल अछि।

एम्हर मिथिला-समाज कें जँ हमरा लोकनि देखी तँ एहि तीनू राजनीति केर प्रभाव, भिन्न-भिन्न काल मे, न्यूनाधिक रूपें समाज पर रहलैक अछि। समाज एकरा संग अन्तःक्रिया केलक अछि। समाजक स्वप्न आ आदर्श कें तोड़बाक सर्वाधिक श्रेय कांग्रेसी राजनीति कें जाइत छैक, तकर एक कारण ईहो जे 'सोराज'क सम्मोहन सेहो यैह पैदा केने छल। कांग्रेसी राजनीति मे मैथिल लोकनि मुख्य धारा मे रहलाह, प्रभावशाली रूप मे पदासीन सेहो रहलाह मुदा मिथिला आ मैथिलीक विकासक कोनो ईमानदार आरम्भ कहियो नहि क' सकलाह, जखन कि

मिथिला-मैथिली कें अपन बपौती घोषित करैत रहलखिन। कांग्रेसी राजनीतिक ई छद्म मिथिला-समाजक आस्था कें चकनाचूर क' देलक। मैथिलीक उपन्यास आ कथा मे, उचिते, कांग्रेसी राजनीतिक भयावह दुर्गंजन कएल गेल अछि। नेताक जे चित्र आ चरित्र, घृणा आ व्यंग्य सँ कुण्डाबोर क' क' उकेड़ल गेल अछि, कहब आवश्यक नहि जे ओ चित्र आ चरित्र कांग्रेसिए नेता लोकनिक छियनि। एतए धरि जे लालूराज मे लिखल उपन्यास 'सर्वस्वान्त' (साकेतानन्द) मे जखन नेता आएल तँ ओहो अभगला कांग्रेसिए नेता छल।

दोसर दिस, सोशलिस्ट राजनीति, जकर कि अपन गँहीर जड़ि मिथिला-समाज मे छलैक, सेहो कैक कारणें समाज कें निराश केलक। विकासहीनताक तँ कथे नहि हो, लंपटतन्त्रक वर्चस्व आ सामन्ती गठजोड़--एहन दू टा पहिचान थिक जकरा लेल एकरा स्मरण कएल जाएत। एकटा जँ काल्हि छल तँ एकटा आइ अछि। एम्हर, वामपंथी राजनीति सेहो मिथिला-समाज कें आश्वस्त नहि क' सकल। तकर एक कारण तँ भेल जे मिथिलाक सांस्कृतिक निजता आ अस्मिताक लेल वामपंथी राजनीति मे कोनो जगह नहि छलैक, दोसर जे ओ मिथिला राजक विरोध केलक। एक गहन उदासीक संग एहि सत्य कें हम देखैत छी आ अपसोचक संग कहैत छी जे एहि समस्त राजनीतिक मॉडल सभक बीच मिथिलाक अपन कोनो राजनीति नहि बनि सकलैक। क्षेत्रीय विकासक बात हो कि मिथिला राज वा मैथिली भाषाक--सभ मोर्चा पर जँ हमरा लोकनि असफलता देखैत छी तँ तकर यैह कारण जे मिथिला समाज राजनीति पर अपन कड़गर दबाव नहि कहियो बना सकल। से एही दुआरे भेलै जे मिथिलाक अपन कोनो राजनीति नहि रहल। जमीन्दार लोकनि मे सभ सँ कड़ियल जमीन्दार दरभंगा महाराज, मुख्यमंत्री मे सभ सँ धाकड़ मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र; मुदा तें की? मिथिला कें की? मिथिला तँ सभ दिन प्रतिपक्षेक लोक बनल रहल।

दू टा उपन्यास हमरा दृष्टिपटल पर अबैत अछि, जाहि मे, मिथिलाक अप्पन राजनीति हो ताहि पर, सीमाबद्धे सही, संकेत कएल गेल अछि। एक तँ राजकमल चौधरीक 'आन्दोलन' आ दोसर कुँअरकान्तक 'सेहन्ता'।

कुँअरकान्त अपन उपन्यास कें 'सेहन्ता' जाहि अर्थ मे कहलनि, तेना क' तँ राजकमलोक उपन्यास कें सेहन्ते कहल जाएत। स्वतंत्रताक एहि साठि बर्ख मे, मिथिला-समाजक जे स्थिति रहल अछि, झुनझुना बजब' बलाक स्थिति, तकर बहुत दारुण चित्र राजकमल एहि शब्द मे व्यक्त केलनि अछि--

'कुम्मी बीमार अछि, वन्दे मातरम्। गुलाब विधवा भए गेलीह, वन्दे मातरम्। भौजीक हाथ पर अद्धियो नहि छनि, वन्दे मातरम्। सुशीला वेश्या बनि कए, सीता आ सावित्री कें बेचि रहल छथि, वन्दे मातरम्। रमाशंकर भूखल छथि, वन्दे मातरम्।'

तखन तँ 'आन्दोलन'हिक एक पाँती फेर उद्धृत हम करब-- *'हमरा सभक निश्चित उद्देश्य अछि, शान्तिपूर्ण ढंग सँ, भारतीय विधानक सम्मान करैत, मिथिलाक आर्थिक, सांस्कृतिक आ राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करब। एहि उद्देश्यक पूर्ति लेल हम सभ प्राणपण सँ प्रस्तुत छी।'*

ओहि राजनीतिक, आ ओहि राजनीतिक विचारधाराक तँ आइयो प्रतीक्षे अछि।

(2007)

सन्दर्भ :

1. विशेष विवरण लेल देखी-साहित्य अकादेमी सँ प्रकाशित पुस्तक Early Novels of India मे डॉ. नामवर सिंहक लेख Reformulating the Questions.
2. उपर्युक्त
3. विस्तार हेतु देखी- 'अखियासल' (डॉ. रमानन्द झा 'रमण') मे संकलित लेख।
4. विस्तार लेल देखी- 'यथार्थवाद ओ आधुनिक साहित्य' (चेतना समितिक प्रकाशन) मे संकलित डॉ. यशोदानाथ झाक लेख।
5. पण्डित त्रिलोकनाथ मिश्रक पाँती। 'मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन' (डॉ अमरेश पाठक) मे उद्धृत।
6. परिपूर्ण विस्तार हेतु देखी : बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान : मोहन भारद्वाज।
7. विस्तार हेतु देखी - सामाजिक असन्तोष ओ मैथिली साहित्य : डॉ. नीता झा : अध्याय पाँच।

8. अन्यान्य विवरणक हेतु देखी - (1) आधुनिक साहित्यक परिदृश्य : डॉ. देवशंकर नवीन (2) मैथिली उपन्यास मे चित्रित समाज : सम्पादक-डॉ. रमानन्द झा 'रमण' तथा (3) मैथिली साहित्यक इतिहास : डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'।

मैथिली कविताक वर्त्तमान

(पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित कविताक एक अध्ययन)

एहि शताब्दीक आरम्भ मे मैथिली कविताक तत्कालीन दशा-दिशाक एक आकलन हम कएने रही, आ से 'देशज'क एक अंकक रूप मे प्रस्तुत भेल रहए। नहुँ स्वर मे ओतय हम कहने रही जे समस्त प्रकारक प्रतिकूल परिस्थितिक दबाव मैथिली कविता पर छैक मुदा तकरा सभक अछैत मैथिली कविता उल्लेखनीय काज क' पाबि रहल अछि। आइ पाँच साल बितलाक बाद कविताक स्थिति दिस ताकै छी तँ प्रतिकूलताक परिस्थिति थोड़े आर जटिल भेल देखाइत अछि। पत्र-पत्रिकाक सम्पादकलोकनि बेसी बेसोह भ' जाइ गेलाह अछि। सेहो जँ शिष्ट भाषा मे कही, तखन। खोजी पत्रकारिताक शब्दावली मे कहल जाय तँ एहि बीच एकटा नव ट्रेन्ड विकसित भेल अछि--विज्ञापनक तौर पर कविताक छापब। एहन कविता पाइ ल' क' वा साधन प्राप्त क' क' छापल जा रहल छैक। सम्भ्रान्त नवधनाढ्य लोकनि एहि क्षेत्र मे इन्वेस्ट क' रहलाह अछि। मैथिल ब्राह्मण अस्मिताक परम्परागत प्रमुख कारक थिक--विद्या। से रचना छपबाक' वा पुरस्कार पाबिक' ओ 'विद्यावान' हेबाक जस पौताह, आ एहि तरहें कोटिक्रमी मैथिल-समाज मे ओ अपन कुल-मूल धरिक उद्धार क' सकताह--एतेक पैघ सिद्धि कें देखैत, सम्पादक लोकनि पर वा पुरस्कारदाता लोकनि पर कएल गेल हजार-बजारोक व्यय हुनका लोकनि कें तुच्छ देखाइ पड़ैत छनि।

2005 मे प्रकाशित पत्र-पत्रिका मे छपल कविता सभ कें देखैत छी। जनिका कविता-भाषाक कोनो टा ज्ञान नहि छनि, जनिका लग मे कहबा

योग्य कोनहु टा कथ्य नहि छनि, जनिका तुक धरि जोड़बाक लूरि नहि छनि, तनिका लोकनिक कविता ने मात्र छपल अछि अपितु बारम्बार छपल अछि, अनेक ठाम छपल अछि। आ ईहो नहि जे नवागन्तुक कविक रूप मे छपल हो, 'महत्त्वपूर्ण कविक रूप मे' हुनक रचना कें छापल गेल अछि। आ जुलुम देखू जे छपनिहार लोकनि मे सँ क्यो तँ मैथिलीक 'समर्पित सम्पादक' थिकाह तँ क्यो स्वयं सुप्रसिद्ध कवि-सम्पादक।

मुदा तैयो, अनेक प्रतिकूलताक अछैत आ एहन-एहन अँखिगर-योग्य सम्पादक लोकनिक अछैत, आइयो हम ई कहबाक स्थिति मे छी जे मैथिली कविता मे उल्लेखनीय सृजन-कर्म भ' रहल अछि आ तकर पुष्टि 2005 मे प्रकाशित पत्रिका सभ सँ सेहो होइत छैक।

वर्ष 2005 मे अनेक वरिष्ठ एवं प्रतिष्ठित कविक कविता पत्रिका सभ मे प्रकाशित भेलनि अछि। एक दिस जँ चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' ('लोकभूमि'), चन्द्रभानु सिंह ('लोकभूमि', 'घर-बाहर') तथा मार्कण्डेय प्रवासी ('समयसाल', 'जखन तखन', 'घरबाहर')क कविता हमरा लोकनि धरि पहुँचल अछि तँ दोसर दिस स्व. हंसराज ('घरबाहर') तथा सोमदेव ('कर्णामृत', रचना)क अद्यतन काव्य चिन्ता सँ परिचित हेबाक अवसर सेहो भेटल अछि। जीवकान्त एहू बर्ख खूब रचनाशील रहलाह अछि आ अनेक-अनेक ठाम यथा 'मैथिली दर्शन', 'समय-साल', 'जखन-तखन', 'मण्डन-निकेत' आदि मे हुनक कविता प्रकाशित भेलनि अछि। महाप्रकाशक कविता 'अंतिका' छपलक अछि तँ नचिकेता 'मैथिली दर्शन', 'मण्डन-निकेत' तथा 'घर-बाहर' मे प्रकाशित भेलाह अछि। गंगेश गुंजन (रचना), उदयचन्द्र झा 'विनोद' ('लोकभूमि', 'घर-बाहर' तथा 'समय-साल'), रामलोचन ठाकुर ('घर-बाहर') तथा मन्त्रेश्वर झा ('मण्डन निकेत') सेहो अपन उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज करौलनि अछि। एहि वर्षक साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता विवेकानन्द ठाकुरक अद्यतन काव्य-बोध सँ परिचित हेबाक अवसर 'जखन-तखन', 'घर-बाहर' तथा 'कर्णामृत' देलक अछि। बहुतो दिन सँ साहित्यक परिदृश्य पर अनुपस्थित कवि गंगानाथ गंगेश ('लोकभूमि', 'घर-बाहर') घनचक्र तथा शशिकान्त ('समय-साल') क कविता सेहो एहि वर्ष प्रकाशित भेलनि अछि। बुजुर्ग कवि बच्चा ठाकुर ('मण्डन निकेत'), दिवाकर शास्त्री

(‘मैथिली दर्शन’, ‘कर्णामृत’) तथा शशिबोध मिश्र ‘शशि’ (’घर-बाहर’) अपन अद्यतन कविताक संग उपस्थित देखल गेलाह अछि।

चूड़ान्त कवि हरेकृष्ण झाक बहुतो दिन धरि मोन रखबा योग्य कविता ‘जखन-तखन’ तथा ‘घर-बाहर’ छपलक अछि। एहि वर्ष यद्यपि ‘अंतिका’क एक्के टा अंक प्रकाशित भेल मुदा ताहि मे छपल कृष्णमोहन झा, अविनाश तथा रमण कुमार सिंहक कविता एहि वर्षक उल्लेखनीय प्रकाशन साबित भेल अछि। युवा कवि पंकज पराशर अत्यधिक उर्वर पाओल गेलाह अछि आ अनेक ठाम जेना ‘लोकभूमि’, ‘मैथिली दर्शन’, ‘घरबाहर’, ‘मण्डन निकेत’ आदि मे हुनक सुन्दर कविता सभ पढ़बा लेल भेटल अछि। विभूति आनन्दक एक महत्त्वपूर्ण रचना ‘समय साल’ छपलक अछि। अजित कुमार ‘आजाद’ तथा अशोक कुमार मेहताक टटका कविता ‘समय साल’ छपलक अछि तँ विकास कुमार झा अपन एक मनोरम कविताक संग ‘घरबाहर’ मे प्रकाशित कएल गेलाह अछि। फूलचन्द्र झा ‘प्रवीण’ (‘जखन-तखन’) धीरेन्द्र प्रेमर्षि (‘घर बाहर’), मधुकान्त झा (‘मैथिली दर्शन’, ‘समय साल’), जियाउर रहमान जाफरी (‘हिलकोर’) लक्ष्मण झा सागर (‘मैथिली दर्शन’) तथा शम्भूनाथ मिश्र (‘लोकभूमि’)क नव रचना हमरा लोकनि धरि पहुँचल अछि। फजलुर रहमान हाशमीक टटका गजल ‘लोकभूमि’ अनलक अछि तँ दिवंगत कवि दामोदर लाल दासक एक मार्मिक दीर्घकविता ‘कर्णामृत’ प्रकाशित केलक अछि।

स्त्री-विमर्शक तीक्ष्ण स्वर ल’ क’ कामिनी तथा मंजुला झाक कविता ‘अंतिका’ छपलक अछि आ एही त्वराक एक कविता ज्योत्स्ना चन्द्रम्क ‘समय-साल’ प्रकाशित केलक अछि। दुनियाँ बदलबाक सपनाक संग पारम्परिक कविता ल’ क’ स्वयंप्रभा झा ‘समय-साल’ आ ‘घर-बाहर’ मे प्रकाशित भेलीह अछि। नवागन्तुक कवयित्रीक रूप मे ‘मण्डन निकेत’ अर्चना झा तथा श्यामा चौधरी ‘नन्हीं’क कविता छपलक अछि।

एहि कालखण्ड मे दर्जन भरि सँ बेसी कविनामधारी अपरिचित लोक सभक वस्तु जहाँ-तहाँ छपल अछि, मुदा ताहि कविता सभ मे कविता कत’ अछि, से निर्णय करब महाग कठिन। हँ, नवागन्तुक कविक रूप मे आशीष कुमार मिश्र, महाकान्त (‘मैथिली दर्शन’), कुमार सौरभ (‘मण्डन निकेत’)

तथा शिव कुमार नीरव ('समय साल') अपन स्वर आ भंगिमा ल' क' आश्वस्त करैत छथि।

मैथिलीक महत्त्वपूर्ण पत्रिका 'रचना' कविता प्रकाशित नहि करैत रहल अछि, मुदा एहि वर्ष एक विशेष योजनाक रूप मे जाग्रत एवं तेजस्वी विदेशी कविता सभक अनुवाद छपलक अछि। युवा कवि पंकज पराशर बहुत अध्यवसाय एवं मनोयोग सँ कविताक चयन, अनुवाद एवं कविपरक परिचयात्मक टिप्पणी तैयार केलनि अछि। नीग्रो, चिली एवं इराकी भाषाक प्रतिनिधि कवि कें महत्त्वपूर्वक छापब निस्सन्देह संघर्षशील चेतनाक प्रति आस्थाक प्रतीक थिक। आ से अनुवादक एवं सम्पादकक दृष्टिसम्पन्नताक परिचायक सेहो थिक।

'जखन तखन' अपन प्रवेशांक (मार्च 2005) मे कवि जीवकान्तक एक पत्र (भीमनाथ झाक नाम) छपलक, जकर शीर्षक थिक- 'मैथिली कविता कत' अछि?'। ओहि मे जीवकान्त कहैत छथि जे 'देश मे कविता जखन मरैत अछि तँ ओकर पुनर्जन्म मिथिला मे होइत छै।'

जीवकान्तक एहि कथनक दू गोट सुस्पष्ट प्रमाण तँ छैके- मध्यकाल मे विद्यापति आ आधुनिक काल मे यात्री। कविता कें पुनर्जन्म द' सकबाक सामर्थ्य जाहि ठाम सँ भेटैत छैक से थिक मिथिलाक लोकवादी परम्परा, जे जन-मन मे रसल-बसल अछि। जीवनक संग गहन संलिप्तता आ अद्भुत सौन्दर्य-विवेक, ई जे दू टा मिथिलाक साधारण जनताक अस्मिता थिक, तकरे बल पर जीवकान्त ई दावा क' पबैत छथि।

मिथिलाक एहि लोकवादी सृजन-परम्पराक पड़ताल आइयो एक करणीय कार्य बनल अछि, कारण शास्त्रजीवी कठमुल्ला पण्डितवर्ग अपन दृष्टि मैथिली साहित्य पर लदने रहल आ परिस्थिति एहन भ्रामक बनाओल गेल जे मानू यैह कठमुल्ला परम्परा मैथिली साहित्यक मुख्यधारा आ मुख्य परम्परा थिक। अपन एही पत्र मे जीवकान्त आगू कहैत छथि- 'एक दिस हमरा लोकनि संस्कृतक बन्हलाहा लीख पर भागल आब'बला कवि सभक कोपभाजन छी, आ दोसर दिस पश्चिमक कवि सभक अंधानुकरण मे भागल जाइत कवि सभक दृष्टि मे पथभ्रष्ट बूझल जाइत छी।'

एक हिसाबें देखल जाय तँ मैथिली कविताक वर्त्तमान परिदृश्यक

सम्पूर्ण कथा जीवकान्तक ई एक पाँती कहि जाइत अछि। दू टा आयातित परम्परा अछि जे घोर अतिवादी रूखि काएम रखने अपन-अपन लीख पर चलल जा रहल अछि- पहिल तँ संस्कृतक आयातित परम्परा आ दोसर विदेशी साहित्य आ विचार सँ प्रसूत आ प्रभावित परम्परा। मिथिलाक निज अप्पन लोक-परम्परा एहि दुनूक बीच अछि आ दुनूक कोपभाजन अछि। दोसर नंबरक अतिवाद सँ ग्रस्त अधिकांशतः नवतूर अछि जे मिथिलाक मूल परम्पराक निजता सँ अपरिचय हेबाक कारण कोप करैत अछि आ पहिल नंबरक अतिवाद ओहि पण्डित लोकनिक षड्यन्त्रक नमूना थिक, जे मिथिलाक खाँटी लोक-परम्परा मे अपन कठमुल्लापनक लेल कोनो स्थान नहि पबैत छथि आ अन्ततः संस्कृतक दाबी पर, ओकरा (लोक परम्पराक) छाती पर सवार भए ओकर कण्ठ मोकि देबए चाहैत छथि। ध्यान राखैक योग्य बात थिक जे जहिया ज्योतिरीश्वर वा विद्यापति 'देसिल बयना' मे लिखै छलाह तँ समस्त संस्कृत पण्डित हुनका लोकनिक विरुद्ध छलथिन। विरुद्धे टा नहि, हुनका लोकनिक बाट मे सक्क भरि काँट रोपलथिन, हुनकर निन्दा केलथिन आ अपना जानतें हुनकर परम्परा कें मटियामेट क' देबाक सभतरि ब्योंत धरेलथिन। आधुनिक युग मे जँ काल-परिस्थितिवश लोक-भाषे अपन अभिव्यक्ति लेल सभ तरहें प्रशस्त प्रमाणित भेल अछि तँ ई सनातनी लोकनि लोकभाषा कें संस्कृतक दासता मे आबद्ध रखबा लेल सन्नद्ध छथि। अपना ओतए तँ पण्डित लोकनि साफ-साफ (अभिधा मे) भाखि गेलाह अछि जे *'भाषा-सौन्दर्यक गति न आन।'* माने, लोकभाषा मैथिली जँ 'सुन्दर' बनबाक कामना करए तँ संस्कृतक दासता गछने बिना ओकर कोनो दोसर गति नहि छैक। एहन सुन्दरता ल' क' आइ कोनो लोक-भाषा की करत, जकर नाम तँ लोकभाषा रहौक, मुदा ओकर मुँहक बोल आ ओकर परम्परा सनातनी कठमुल्ला लोकनिक होइन?

प्रसंगवश, ई प्रश्न उठाएब जरूरी लागल अछि। कारण, आइ जँ क्यो मैथिली मे लिखि रहल छथि आ एहि प्रश्न सँ अनजान बनल छथि तँ कहए पड़त जे ओ 'लल्लू' छथि। वर्त्तमान मे संस्कृतक लीख पर चलैत पुरान मूल्य कें अपन जीवनाधार माननिहार अनेक बूढ़-बुजुर्ग लोकनि कविता-लेखन क' रहल छथि। ई लोकनि अपना कें संस्कृतक शास्त्रसम्मत परम्पराक

अनुगामी कहैत छथि, आ आधुनिक जीवन-मूल्य हो कि सौन्दर्य-दृष्टि, तकर सक्कभरि विरोध करैत छथि। कहब आवश्यक नहि जे हुनका लोकनिक ई विरोध अन्ततः जीवनक विरोध थिक। एक शब्द मे एहि कोटिक कविता कें गतिहत कविता कहल जा सकैत अछि, कारण एहन कविता परिवर्त्तनक विरुद्ध अछि, आ समाज कें 'मनुवादी स्वर्णकालक' गुफा मे बन्द राख' चाहैत अछि। जीवकान्त एहि प्रकारक कविता कें 'जीर्ण कविता' कहैत छथि।

आधुनिक सोच राखनिहार प्रगतिशील साहित्यकार लोकनि अधिकतर एहन प्रकारक रचना सभ सँ कतियाक' चलैत , एकरा अनठबैत, अपन मार्ग तकबाक प्रयास करैत छथि। विगत वर्ष छपल एहि कोटिक कविता सभ कें देखी तँ हमरा एहि मे चारि गोट महादोष देखार पड़ैत अछि, जाहि कारणें एकरा आयातित तुक्कड़ अथवा गतिहत वा जीर्ण कहबा लेल बाध्य होअ' पड़ैत अछि। हमरा मतें, एहन कविता ने तँ मिथिला-समाजक आ तकर जीवनमुखी लोक-सरोकारक सही आकलन करबा मे समर्थ अछि आ ने मैथिली कविताक लोक परम्पराक विकास मे कोनहु प्रकारें योग दैत अछि।

पहिल दोष थिक--समय-बोधक अभाव। समयबोध कें युग-बोध आ अन्ततः काल-बोध सेहो कहल जा सकैछ। जाहि युग मे, जाहि समय मे हम जीबि रहल छी तकर जँ हमरा परिचये नहि हो तँ ताहि पर कोनो जिम्मेदार टिप्पणी करबाक अपेक्षा हमरा सँ कोना कएल जा सकैत अछि? उदाहरणक लेल हम 'समय-साल' (जून-2005) मे प्रकाशित मार्कण्डेय प्रवासीक एक गीतक चर्चा करब। ओहि रचना मे ओ वर्त्तमान समय सँ बहुत आहत छथि आ तकर विडम्बनाक चित्रण करैत छथि। विपरीत समय भ' जेबाक दृष्टान्त दैत ओ कहैत छथि जे जे व्यक्ति(अर्थात शूद्र) दिन मे दूध बेचै छल आ राति मे तेल-मालिश करै छल, सैह बतहबा आइ देश मे रेल चला रहल अछि अर्थात रेलमंत्री भ' गेल अछि। ई कविक 'समय-बोध' थिकनि, जकरा आधार पर ओ समकालीन संसार पर अपन निर्णय पारित करबाक उत्साह मे छथि। क्यो प्रगतिशील कवि जँ रेलमंत्रीक विरोध करताह तँ हुनक भ्रष्टता आ लम्पटताक कारण, जेना कि 'समय-साल' मे

छपल अशोक कुमार मेहताक गीत-रचना मे कएलो गेल अछि। मुदा, ई लोकनि हुनक विरोध मात्र शूद्र हेबाक कारण करताह। ई कोन 'समय-बोध' थिक?

कतेक दिन पहिनहि देश स्वतंत्र भेल, आइ समतामूलक समाजक स्थापना लेल प्रयासरत एकर संविधान छैक, लोकतन्त्र छैक, सभ कथू कें वैज्ञानिक दृष्टिकोण सँ देखबाक आग्रह करैत आधुनिकता अछि, तखन बाजार आ भूमण्डलीकरण आदि अछि। मुदा, एहि सम्प्रदायक कवि लोकनि वर्णव्यवस्थाक गुफा मे ततए बन्न छथि जे एहि सभ कथूक बसात हुनक स्पर्शो नहि क' सकैत अछि।

एहि सम्प्रदायक कविताक दोसर महादोष अछि जे ई परम्पराक विकासक प्रति उदासीन अछि। असल मे ई एहि कवि लोकनिक क्षमता सँ बाहरक बात छिऐक। हमर जे कोनो पूजी अछि (अर्थात परम्परा) आ हमरा आगूक जे दुनिञा अछि (अर्थात युगबोध) ताहि दुनूक घर्षण-प्रतिघर्षण सँ परम्पराक विकास होइत छैक जे आगामी समयक लेल एकरा (परम्परा कें) स्वीकार्य आ व्यवहार्य बनबैत छैक। से नहि भेने गतिहतता कोनो साहित्य कें कोना व्यापि लैत छैक, तकर उदाहरणक लेल अनेको कविता हमरा लोकनिक समक्ष अछि। समयक दबाव-वश कतोक बेर एहन परिस्थिति बनैत छैक जे कवि कें युगबोध अंगीकृत करबा लेल बाध्य करैत अछि, मुदा तखनहु ई लोकनि केहन महीनीपूर्वक छिछलि जाइत छथि, तकर एक बड़ नीक उदाहरण चन्द्रभानु सिंहक कविता मे देखल जा सकैए। अपन 'बाढ़ि' कविता मे ओ कोशी तटबन्धक भीतर बसल लोक सभक, गाम सभक दुर्दशा आ तबाहीक वर्णन केलनि अछि। क्यो ओहि तबाह लोक सभ कें देखनिहार नहि, सरकारो नहि। एहना स्थिति मे समय कवि पर दबाव बनबैत छैक जे ओ लोक कें आशावादी-संघर्षवादी बाट देखाबथि, स्वयं ताहि मे संलग्न हेबाक प्रतिश्रुति करथि। एक प्रगतिशील कवि से निश्चये करत। मुदा, हिनका लोकनिक बाट दोसर छनि। कवि कहैत छथि-*'रेगिस्तान बनल संसारे तँ हमहूँ आश्वस्त। जौं ककरो नहि फिकिर मरै के, बुझियौ हमहूँ मस्त।'* बूढ़ कविक ई मस्ती, सेहो दुर्दशापन्न आ तबाह समाजक बीच, कते निर्लज्ज प्रकारक मस्ती थिक! एहि सम्प्रदाय सँ की परम्पराक

विकास लेल मार्गदर्शनक अपेक्षा कएल जा सकैए?

तेसर महादोष थिक--आलोचनात्मक विवेकक अभाव। यथार्थ कें युग-बोधक कसौटी पर आ गुण-दोषक आधार पर परखबाक उपरान्त कवि कें एक विवेकवान बौद्धिकक रूप मे अपन निष्पत्ति प्रस्तुत करबाक रहैत छैक। दृष्टिसम्पन्न प्रगतिशील लेखन मे से होइतो आएल अछि। मुदा, एहि सम्प्रदायक कवि लोकनि अपन काव्य-भंगिमा मे, आवश्यक रूप सँ, एकालापी होइत छथि। निरन्तर यूटोपिया मे जीबैत, स्वर्णकालक सुखद गाथा रचैत वा तकर कामना करैत, सीधे अपन निष्पत्तिक आरोपण क' दैत छथि। विवेकानन्द ठाकुरक एहि प्रकारक कविता कें पढ़ैत कतेको बेर दृष्टिवान लोक धरि मुग्ध आ गद्‌गद्‌ भेलाह, कारण यूटोपियन एकालाप सँ कुण्डाबोर हुनक बिम्ब सभ अपूर्व रूप सँ अपन पाठक कें भावुक बना देबाक क्षमता रखैत अछि। हुनक एहि प्रवृत्तिक विश्लेषण करैत युवा कवि-समीक्षक पंकज पराशर जखन हुनका रचना कें 'काव्य नहि, काव्याभास' कहैत छथि तँ ताहि सँ असहमत हेबाक कोनो कारण हम नहि देखैत छी। एहि वर्ष विवेकानन्द ठाकुर साहित्य अकादेमी पुरस्कार जितलनि अछि आ एहि वर्ष हुनक मान्यता, जीवन-मूल्य आदि सेहो अपन प्रकृत अवस्था मे कविता मे देखार भेल अछि। अपन एक कविता 'प्रगतिशील बाभन' ('घरबाहर') मे ओ प्रगतिशील लोकनिक, बिना ई बुझने जे अपन वास्तविक अर्थ मे प्रगतिशील ककरा कहल जाइछ, 'ढाकीक ढाकी' गंजन केलनि अछि। आ, हुनका लोकनि कें ध्वस्त करैत, हुनक मलबा पर 'अपन' पुरखालोकनिक सनातनी ब्राह्मण-समाजक, राज्याभिषेक केलनि अछि। ठोस भ' क' कहए पड़त जे एहि कोटिक निरर्थक कविताक कोनो वास्तविक मूल्य नहि अछि। कारण, जे रचना समयक ताप कें नहि सहि सकैत अछि, से भविष्यक ढाही कें कोना बर्दाश्त क' पाओत?

यैह, आलोचनात्मक विवेक-रहित, एकालापी काव्यभंगिमा उदयचन्द्र झा 'विनोद'क सेहो सीमा बनि जाइत छनि। अपन कविता 'यात्रासँ पूर्व' ('समय-साल') मे ओ भारतीय रेलक कुव्यवस्था कें देखार करैत, तकरा ध्वस्त करबाक चेष्टा करैत, मनुक्खक मनुष्यता, ओकर आत्म-गौरव, ओकर आत्म-विश्वास, ओकर संघर्ष-क्षमता, दुनियाँ कें बदलबाक ओकर

संकल्प-शक्ति धरि कें ध्वस्त क' दैत छथि (रच्छ अछि जे ई विनोद जीक स्थायीभाव नहि थिकनि)। एकरे समानान्तर हम प्रगतिशील कवि नारायणजीक कविता 'विश्वास' ('मैथिली दर्शन') कें देखबाक आग्रह करब। ओहू मे भारतीय रेल आएल अछि। ओहू मे विश्वासहीनता आ टूटैत सम्बन्ध-बन्ध देखाओल गेल अछि। मुदा एहि कविक आलोचनात्मक विवेक तते सजग जे एहू परिस्थिति मे ई तथ्य हुनका नजरि पर अएबा सँ नहि बचैत अछि जे *'विश्वास/निरवधि विस्तार मे उपस्थित अछि।'* एही कविताक दोसर खण्ड मे कवि प्रश्न करैत छथि-*''विश्वास मरि जयबाक डर बूढ़ मे रहैत अछि तखन की?''* हँ कवि, ई डर बूढ़ मे रहैत छैक, मुदा अनिवार्य रूप सँ नहि। (जेना यात्रीजी-किरणजी मे नहि रहनि) ई डर विनोदजी मे छनि। ई डर अमरजी मे छनि, नहि तँ अपन कविता 'ठाठमे चुआठ' मे ओ एहि निष्पत्ति पर कोना पहुँचतथि जे आम निर्वाचन मे भाजपाक पराजय रामराज्यक अवधारणा सँ हटि गेलाक कारण भेल, ने कि कोनो आन भौतिक, देश-दशादिक कारणें। भारतीय लोकतंत्र आ भारतीय मतदाताक परिपक्वता पर ई केहन अविश्वासपूर्ण टिप्पणी थिक!

अस्तु, कुल मिलाक' हम यैह कहब जे एहि सम्प्रदायक कविता सँ एक रुग्ण, जर्जर, मरणासन्न, संकल्पहीन मिथिलाक चित्र बनैत छैक जे समकालीन दुनियाँ कें बुझबाक लेल आ तकर चुनौती कें स्वीकार करबाक लेल कोनहुना प्रस्तुत नहि अछि। ओकर मृत्युए टाक प्रतीक्षा कएल जा सकैए। दृष्टिरहित भ' क' सोची तँ आब एक ईश्वरे टाक अवलम्ब बाँचल अछि। कदाचित तें, एहि धारा मे नव-नव दीक्षित युवा कवयित्री स्वयंप्रभा झा एहि सम्प्रदायक रचनाधर्मक नारा बुलन्द करैत छथि-*'हम नऽव समय केर गान लिखी/ईश्वरक अतुल गुणगान लिखी/कऽ छन्दबद्ध सबहक मोनक अरमान लिखी' ('घरबाहर') मुदा, हमरा लगैत अछि जे कवयित्री आवश्यकता सँ बेसी सुधांग (आलोचनात्मक विवेक रहित) छथि। कवि जँ ईश्वरक गुणगान लिख'* लागत सेहो कते तँ 'अतुल' तँ की ओकरा लग आरो किछु लिखबाक अवसर बाँचत? ईश्वर की एतेक मामूली लोक छथि! गान जे नव समयक लिखल जाएत तँ से नव समय कोन भेलै? सम्भवतः जकर आरम्भ मस्जिद ढाहलाक उपरान्त होइत हो! मुदा जँ सैह तँ तैयो, क्यो

कवि एहि बाट पर चलिक' सबहक मोनक अरमान कोना लिखि सकैत अछि? कारण, वंचितक हित कें तँ वंचकक हित सँ पृथक हेबाक चाही। (अस्तु, ई एक दृष्टान्त मात्र थिक। एहि प्रकारक अन्तर्विरोध सँ एहि सम्प्रदायक काव्य-धारा भरल-पुरल अछि।)

आ, एहि समस्त प्रकारक अन्तर्विरोधक कथा कहि जाइत अछि--कविताक भाषा। हिनका लोकनिक काव्य-भाषा जड़ आ लोक-प्रकृति-विमुख छनि, जाहि मे सृजनात्मक आयासक स्पर्शो नहि भेटैत अछि। सृजन लेल जतए आत्मसंघर्षे नहि हो, ततए सृजनात्मक भाषाक आशा कोना कएल जा सकैत अछि? तें अधिकतर काव्य-भाषाक स्थान पर काव्याभास-भाषा बनिक' ई रहि जाइत अछि। एकरा हम चारिम महादोष मानैत छी।

उपर्युक्त चारि महादोष सँ मुक्त मैथिली कविताक जँ हमरा लोकनि खोज करी तँ से मुख्यधाराक कविता मे प्राप्य अछि। जाहि चारि गुण--समयबोध, परम्परा-विकासक प्रति उन्मुखता, आलोचनात्मक विवेक आ सृजनात्मक काव्यभाषा---क अनुपस्थिति संस्कृत-परम्पराक आयातित कविता कें हेय बनबैत छैक, तकरे देखार उपस्थिति मुख्यधाराक कविता कें समकालीनता आ प्रासंगिकता प्रदान करैत छैक आ भविष्यक लेल स्वीकार्य आ व्यवहार्य बनबैत छैक। ई बात भिन्न जे कविक प्रतिभा, ओकर दृष्टि-नैपुण्य आ ओकर अभ्यासक विपुलता ओकर अपने समकालिक आन कवि सँ विराट बनबैत हो, से उचितो मुदा अन्ततः ई ओकर वैयक्तिक विशिष्टता मानल जायत। तहिना क्यो कवि अपन स्वल्प प्रतिभाक कारण आ आन कमी सभक कारण कमजोर कवि साबित भ' सकैत छथि, सेहो हुनक वैयक्तिक परिचिति सैह हएत। मुदा, समकालीन कविताक सामूहिक स्वर आ छवि उपर्युक्त चारि गुणधर्म सँ, समेकित रूप मे, बनैत छैक, से धरि निश्चय।

एकरा मुख्यधाराक कविता हम एहि लेल मानैत छी जे निज मैथिली कविताक मूल धाराक अद्यतन विकास एही धारा मे भेल अछि, से एक बात। दोसर जे ठेठ मिथिलाक आम लोकक जीवन-दर्शन आ सौन्दर्य-विवेक एही ठाम निरूपित भेल अछि। मिथिला सँ बाहर जाहि कविता कें ल' क' मैथिलीक पहचान बनल अछि से सेहो यैह कविता थिक।

एहि कवि लोकनि कें समेकित रूप सँ प्रगतिशील कवि कहल जाइत छनि तँ से एहि दुआरे जे स्पृहणीय मानव-मूल्य कें अंगेजने ई लोकनि आधुनिक दृष्टि सँ सम्पन्न छथि। से एक दिस, दोसर दिस वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सर्व-आयामी लोकतन्त्र, आलोचनात्मक इतिहास-बोधक संग अपन माटि-पानि सँ जुड़ि अपन लोक-परम्पराक विकास लेल सन्नद्ध छथि। समय भने कतबो खराप होउ, जीवनक पक्ष मे ठाढ़ भ' क' रचनात्मक पहल करैत एक नीकतर भविष्यक कामना कएल जा सकैए--ई हिनका लोकनिक दृढ़ मान्यता थिकनि।

आलोच्य अवधि मे प्रकाशित कविता सभ कें देखी तँ विविधता सँ पूर्ण परिदृश्य सोझाँ अबैत छैक। एक दिस जँ अनेक पीढ़ीक अनेक रचनाकार--जीवकान्त सँ ल' क' अविनाश धरि संग-संग रचनाशील छथि तँ दोसर दिस स्वातंत्र्योत्तर समय-बोध सँ ल' क' उत्तर-आधुनिक समय-बोध धरिक कविता प्रकाशित भेल अछि। एम्हर किछु समय सँ मैथिली कविता मे छन्दक प्रति झुकाव तथा ओकर वापसी खास तौर पर अकानल गेल अछि। से एहू अवधि मे एक-सँ-एक छान्दस प्रयोग, मुक्तक सँ ल' क' गीत धरि रचल गेल अछि। ओना, ई बात निस्सन्देह जे वर्त्तमान समयक सर्वाधिक प्रतिभाशाली कवि लोकनि एखनहु अपन अभिव्यक्ति लेल मुक्त छन्दे कें समर्थ मानि रहलाह अछि। काव्यभाषे कें जँ देखी तँ वरिष्ठ कवि लोकनि जतए दीर्घ अभ्यासक बदौलति स्वार्जित भाषा-विन्यास ल' क' उपस्थित छथि तँ दोसर दिस युवा कवि लोकनि यथागृहीत भाषाक संग विविध प्रयोग करैत ओकरा सृजनात्मक बना रहलाह अछि।

वरिष्ठ कवि जीवकान्तक प्रायः एक दर्जन बाल-कविता विभिन्न ठाम छपल अछि, से कविताक परिदृश्य मे एक भिन्ने प्रकारक विविधता अनलक अछि। एकरा बालकविता कहल गेल अछि मुदा से ई एही टा अर्थ मे बाल-कविता थिक जे एकर अभिव्यक्ति सहज छैक आ एहि मे आयासपूर्वक सरल शब्द सभक संयोजन कएल गेल अछि। छन्द मे ग्रथित भेने साधारणो लोक लेल ई ग्राह्य भेल अछि। मुदा, ने तँ भाव-बोधक स्तर पर आ ने युगबोध कि आलोचनात्मक विवेकेक स्तर पर ई सभ हुनक आन कविता सँ आ कि प्रचलित समकालीन कविता सँ कमतर अछि। तें, एहि प्रकारक

हुनक प्रयोग कें एक अर्थें लोक-परम्पराक एक आयाम-विशेषक विकास मानल जाएत।

समकालीन कविताक गुणधर्म आ विविधताक संकेत देलाक पछाति आब थोड़े चर्चा एकर प्रवृत्ति पर कएल जा सकैए। गुणधर्मक निर्वाह कोन रूपें भेल अछि तकरो विवरण एहि मे प्रसंगानुसार आबि जाएत।

हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे जीवन, जीवनक संरक्षणक उपाय आ जीवनक विरुद्ध सक्रिय तत्त्व सभक प्रति विरोध-भाव--ई आजुक कविताक प्रधान स्वर थिक। भविष्य मे शुभ घटित हेबाक सम्भावना सँ जे आस्था उपजैत छैक, तकरा रहरहाँ मैथिली कविताक परिदृश्य मे टहलैत-बुलैत देखल जा सकैछ।

आलोच्य अवधि मे सेहो, जीवन-संरक्षणक उपाय रचैत, वंचित समुदायक पक्ष मे सर्वाधिक स्वर मुखर भेल अछि। खास बात एक ई भेल अछि जे स्थानीय स्तर कें पार करैत कविक दृष्टि वैश्विक भेल अछि। जतए कतहु जाहि कोनो देश-मूलक लोकक संग वंचना कएल जाइत हो, मैथिली कविता तकर विरोध मे ठाढ़ होइत अछि। एहि वंचनाक रूप कतेक अछि, तकर थोड़े दृष्टान्त हम दी तँ बात फड़िच्छ हएत।

1. 'छोटका लोक'क भनसामे माछक झोर सँ/एखनो अबैत अछि फाटल भाग्यक गन्ध" (नव इतिहासक सन्दर्भ मे)

2. *''उपेन्दर मिसिर घराजोड़ी क' रहल छथि कोइरी किसुनमा सँ/ मिश्रीक घोल-सन लसलस छनि हुनकर गप/ आब पुरान प्रसंगक कोन काज/ जे तिक्त क' दिअय वातावरण आ कादो मे/ फेंटि दिअय अछिंजल''* (बाजू मित्र बाजू)

3. ''कोन असोकर्ज जखन एहि दलित पुराण मे/ सुनल जा रहल हो सत्यनरैन भगमानक कथा'' (बाजू मित्र बाजू)

युवाकवि अविनाशक उपर्युक्त तीन उद्धरण एहि लेल देल जे अपना समाजक स्तर पर वंचितक प्रति कएल जा रहल छल कें ठीक-ठीक अनुक्रमक संग बूझल जा सकए। मुक्त बाजार, मिथिलाक वंचित समुदाय कें एकर अवसर देलक जे ओहो जँ भरि मोन श्रम करए तँ माछ-भात खा सकैए, मुदा (अ)सामाजिक अन्याय, आ निहित स्वार्थी वर्गक मेंही

कुटिचालि आ धार्मिक कुचक्री लोकनिक निरन्तर अध्यवसाय ओकर 'फाटल भाग्य' कें जोड़बाक अवकाश कहाँ द' रहल अछि?

4. ''दुर्गम सँ दुर्गम जगह पर आ कि/ व्यस्त महानगरक कोनो ठाम जयबाकाल/ सड़क पर सँ सर्र द' क' निकलैत/ की कहियो उठल अछि अहाँक मोन मे ई प्रश्न/ जे एहि सड़क सभ कें बनौनिहार लोक सभ/ पहुँचलाह कोनो ठाम आकि नहि? (सड़क बनौनिहार : रमण कुमार सिंह)

5. *''जाकिर हुसैनक तबलाक लेल जे हाथ सानलक माटि/ आ गढ़लक अँगुरी सँ तालजन्मा आकृति/ तकर कतए उल्लेख अछि संगीतक इतिहास मे?''* (इतिहास : पंकज पराशर)

ई वंचनाक दोसर रूप थिक जे कि पूँजीवादी सभ्यताक निर्मिति थिक। सड़क बनौनिहार मजूर सभ ठामक ठामहि पड़ल मरि-खपि जाएत आ मंजिल पर मोटरबला पाइबला सभ पहुँचत। इतिहास मे नाम रहतैक तँ से प्रधानमंत्री टाक रहतैक। इतिहासक निर्माण केनिहारक संग न्याय के करत?

परिस्थितिक जे जटिलता अछि, ताहि मे राजनेता-वर्ग सँ न्याय पेबाक कोनो उमेद नहि कएल जा सकैए कारण-*'कतेक टाक छाती छै अपना देशक/ ओ सत्ता मे ओकरे रखने अछि/ जे बसातक बाट छेकने छै।'* तात्पर्य जे न्यायक बसात केर बाट छेकनिहार यैह लोकनि छथि। एहि पाँतीक कवि अजित कुमार 'आजाद' कें मुदा वंचनामुक्त भविष्यक एक आहट भेटैत छनि एक दलित-नायक नागेसर डोमक निर्णय मे, आ ओ कहैत छथि- *''चुप्पी नहि छै सहाज ओकरा/ आ तें, नागेसर लेने अछि निर्णय/ -अन्न बेतरेक मरि जाएत बरू/ मुदा जीवन मे/ कहियो नहि बनाओत जाबी।'* आ, भविष्यक एक आओर आहट जीवकान्त एहि दृश्य मे व्यक्त करैत छथि- *''जंगल मे एकपेरिया रचलक/ से आगाँ अछि/ जे पहाड़ कें टपि कए बढ़लइ/ से सोझाँ अछि।/ अन्तरिक्ष मे उड़ल यन्त्र मे/ से पूजित अधिकारी/ फाटक खोलह बाट बनाबह/ आबह विपिन बिहारी।''*

एहि बीच, विश्व-परिदृश्य पर घटित होइबला अनेको प्रभावी घटना मैथिली कविताक उपजीव्य बनल अछि। इराक-युद्धक घटना पर तँ अनेको कविता लिखल गेल, जे अत्यन्त मार्मिक बनि पड़ल अछि। पंकज पराशर

अपन कविता 'बसरा' ('लोकभूमि') मे सर्वनाशक बादक दृश्य अंकित करैत देखौलनि अछि जे नरकंकाल देखिक' डेराइबला उमेरक बच्चा, परिस्थितिवश अपन सर-सम्बन्धीक कंकाल बीछि-बीछिक' व्यापारीक हाथ बेचैत अछि, जकरा बदला मे ओकरा रोटी भेटतैक। जखन, ओ पुछैत छथि- *''ई कोन युद्ध छल जाहि मे अस्तित्वे नहि छल/ द्रोणपुत्र अश्वत्थामाक कतहु/ क्यो नहि दैत अछि उत्तर कि किएक बनाओल गेल/ नील नदी कें नोर नदी''* तँ ने मात्र वस्तुस्थिति पर अपन बेबाक टिप्पणी रखैत छथि, अपितु रासायनिक हथियार कें अश्वत्थामाक बिम्ब प्रदान करैत एक भारतीय मिथक कें सटीक अर्थविस्तार प्रदान करैत छथि। वरिष्ठ कवि गंगेश गुंजन एही घटना कें कूटनीतिक आयाम मे देखैत अपन देशी सरकार पर मारुख कटाक्ष करैत कहैत छथि- *''पछिला इराक युद्धक, समुद्र मे लागल पेट्रोलिया आगिक/ धधरा लपटि रहलैए/ हमरो सँ ऊँच, फेर घरो सँ ऊँच, तुरन्त/ इण्डिया गेटो सँ ऊँच। तँ की/ ई संसदो भवन सँ ऊँच पसरि जायत की?''* समकालीन काव्य-भाषाक भंगिमा कें एतए लक्ष्य कएल जा सकैए, जाहि मे कवि की कहैत की कहि जाइत अछि!

तहिना, विगत वर्ष सुनामीक जनमारा लहरि आएल जे कतेको मुलुकक आमजन कें सर्वतोभावेन नष्ट क' देलक। एहू पर कैक कविता लिखल गेल। मधुकान्त झाक कविता 'मैथिली दर्शन' छपलक। एहनो विपति काल मे मुदा क्षुद्र लोक अपन क्षुद्रताइ कोना नहि छोड़ैत अछि, तकर एक चित्र रमण कुमार सिंहक कविता 'ई सृष्टिक स्थगित हएब नहि थिक' ('अंतिका') मे देखल जा सकैए- *''एखनो पण्डितगण दलितक संग/ राहतक अन्न खयबा लेल तैयार नहि।''* एहि अमानुषिक कुसंस्कारक विरोध करैत कवि कतेक विराट प्रश्न हमरा-अहाँक समक्ष रखैत छथि- *''की ई आपदा जिनगीएक लेल छल/ जिनगीक रन्ध्र मे घोसियाएल विकृतिक लेल नहि?''*

पूर्व सँ स्थापित मूल्य-मर्यादा सँ अलग हँटिक' वस्तुस्थिति पर विचार करबाक अपील--ई आधुनिक मैथिली कविताक एक एहन प्रवृत्ति थिक जे आब एकर पहचान बनि चुकल अछि। आलोच्य अवधि मे प्रकाशित किछु कविता एतद् विषयक विमर्श बहुत त्वराक संग प्रस्तुत करैत अछि। अपन

एक कविता 'नहि छी विवर्ण' ('जखन-तखन') मे जीवकान्त वर्णव्यवस्था पर कड़गर प्रहार करैत निष्पत्ति दैत छथि जे *'हमर एक संग अनेक वर्ण अछि'* तँ हुनकर स्वर संग साम्य रखैत पंकज पराशर मूल-व्यवस्था पर प्रहार करैत छथि-*''जाहि नगरक बसात मे सांस लेलहुँ/ जाहि ठामक अन्न-पानि सँ पोसायल ई देह' से विवरण दैत कवि पुछैत छथि-'मात्र एक्के टा मूल पंचोभे करियौन कहि कए/ एतेक रास मूल सँ हम कोना पिण्ड छोड़ा लेब पण्डितजी?''* एहि कोटिक किछु कविता स्वयं आधुनिक एवं प्रगतिशील मूल्य-मर्यादाक प्रति सेहो तिक्ख रूप सँ आत्मालोचनक प्रस्ताव रखैत अछि। वरिष्ठ कवि रामलोचन ठाकुर अपन कविता 'जाल' ('घर-बाहर') मे आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था, जकरा द्वारा मनुक्ख कें जाल बुनब आ निरुपाय लोक कें ताहि मे फँसेबाक शिक्षा देल जाइछ, पर आक्षेप करैत छथि तँ युवा कवि शिव कुमार नीरव अपन कविता 'सहज अछि घूरब' मे आधुनिक मनुक्ख द्वारा प्रकृति पर विजय प्राप्त करबाक असहज महत्वाकांक्षा कें देखार करैत छथि। आ, धार्मिक क्रियाकाण्डक नाम पर पसरल अनीतिक विरोध तँ एक सुपरिचित स्वर अछिए, ताहि पर धीरेन्द्र प्रेमर्षिक एक पठनीय गजल 'घर-बाहर' छपलक अछि-

जप-तप-परसादी पर शाप बदलि जाइ छै
टका बलें धर्म आओर पाप बदलि जाइ छै

स्त्री-विमर्श से, बहुत जगजगार भ' क' एहि अवधि मे उभरल अछि, जे ध्यान सँ देखल जयबाक पात्रता सँ परिपूर्ण आ बेस गम्भीर अछि। मैथिली मे स्त्री-विषयक कविता आधुनिक कालक आरम्भे सँ लिखल जाइत रहल अछि। से यात्री सँ ल' क' नारायणजी धरिक कविता मे एक स्पष्ट स्वरूप सेहो पौलक अछि। मुदा, एहि दशक मे आबिक' स्त्री-विमर्शक ई स्वर आरो धारदार भेल अछि। स्त्री-विमर्शक सामान्ये गुणधर्म थिक जे एक सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग स्त्री कें आ ओकर अस्मिता कें समाज आ साहित्य मे स्थान भेटौक। कहब आवश्यक नहि जे पितृसत्तात्मक एहि समाज मे, जतए कि पुरातनपंथी विचारधाराक एखनो बहुत दखलंदाजी अछि--ई सम्भव भ' पाएब एक कठिन चुनौती अछि। समकालीन कविताक ई एक सफलता मानल जाएत जे वर्त्तमान मे सृजनरत कवियित्री लोकनि

एहि चुनौती कें स्वीकारलनि अछि, आ एहि स्वीकार सँ परिदृश्य मे बहुत धार उत्पन्न भेल अछि। आलोच्य अवधि मे सेहो कैक गोट मार्मिक कविता सभ प्रकाशित भेल अछि।

अपन कविता 'नारी' मे ज्योत्स्ना चन्द्रम् आजुक मैथिलानीक एक आधार-चित्र रचैत प्रतीत होइत छथि, जकरा कदाचित स्त्री-विमर्शक मानदण्डो कहल जा सकैए। ओ कहैत छथि जे 'प्रकृति/सृष्टिक सम्पूर्ण सौन्दर्य आ कोमलता/करुणा आ ममता/ सेवाभाव ओ दया/ समेटलक एक पिण्ड मे' आ से आकृति भेल नारीक। ध्यान देबाक थिक जे मूल सृजेता ओ 'प्रकृति' (स्त्री) कें बतबैत छथि, 'भगवान' (पुरुष) कें नहि, जे भगवान अक्सरहाँ कठमुल्ला लोकनिक खबासक भूमिका अदाइ करैत यत्र-तत्र देखल जा सकैत छथि। आगाँ ओ कहैत छथि जे *'आजुक नारी/ने अबला ने बेचारी/ ओ तँ धुरी अछि सम्पूर्ण सृष्टिचक्रक/ अष्टभुजी दुर्गा जकाँ सम्हारने अपन कार्यक्षेत्रक कमान।'* अष्टभुजी दुर्गाक बिम्ब अर्थात भनसाघर सँ ल' क' अन्तरिक्ष धरि पर दखल देबाक संकल्प आ क्षमता।

मुदा, अपना समाजक जे स्थिति अछि से महाग भयाओन। हमरा लोकनिक पुरुष वर्चस्ववादी समझ कोन तरहें एहि 'अष्टभुजी दुर्गा'क शक्ति सँ अनजान बनल ओकरा प्रताड़ित करैत रहलैक तकर बहुत मार्मिक चित्र मंजुला झा अपन कविता 'आर कतेक दिन' (अंतिका) मे प्रस्तुत केलनि अछि। ओ पुछैत छथि *'आर कतेक दिन कयल जाइत रहतै/आकक दूध सँ आजन/ ओसक रोशनाइ सँ लिखाइत रहतै दाम्पत्यक अनुबन्ध?'' ...'आर कते दिन निपाइत रहतै/ नोर सँ गोसाउनि घरक चिनवार'।* पुरुष-मानसिकता लग मे एहि प्रश्नक अलावे आर एकर की जवाब भ' सकैत अछि जे अपन जीवन-संगिनीक एहि आलोकमय अस्मिता कें ओ महसूस करए?

स्त्रीक चौबगली रचल गेल उपेक्षाक कारण ओकर जीवन केहन भीषण एकाकीपन सँ भरि गेलैक अछि, तकर वर्णन कामिनीक कविता करैत अछि- *'गली मे आवारा कुकूर भुकैए/चनरसल राति मे चुहचुहिया चुहचुहाइ छै/ अलसायल बच्चा/ कनैत छै कतौ/ निनाएल मायक/ छाती हँसोथैत/ तँ शब्दक सहारा जेना भेटि जाइए।'* (सूतल राति मे जगैत स्त्री) की आश्चर्य जे एहना स्थिति मे स्त्रीक लेल, स्त्रीक जीवन एहि हाल मे पहुँचि गेल अछि

जे *'ठेस लागल पयरक अंगूठा जकाँ/ दर्दे टा छै अवशेष/ जिनगी तँ रफ्फ कागतक टुकड़ी जकाँ/उड़िया रहल अछि एहि गली सँ ओहि गली।'* (कामिनी : रफ्फ कागतक टुकड़ी भेल जिनगी)

कहब आवश्यक नहि जे स्त्री-विमर्शक ई धारदार तेवर समकालीन कविता मे एक नव परिघटना थिक, जकर आशा पूर्ववर्ती कवयित्रीलोकनि सँ नहि कएल जा सकैत छल। दलित समुदायक स्त्री, जकर अस्मिता निश्चिते बेसी आलोकमय छैक आ जे अपन हक लड़िक' लेबाक हुनर कालक्रमें खूब विकसित क' लेलक अछि, एक आलोकस्तम्भ बनिक' हमरा लोकनिक सोझा आलोकित भ' सकैत अछि। कदाचित एहने स्त्री, पुरुषवादी लोकनिक सोझाँ ठाढ़ भ' सकैत अछि। कदाचित एहने स्त्री, पुरुषवर्चस्वी लोकनिक सांस लेब धरि कें रोकि द' सकैछ ताधरिक लेल जाधरि कि ओकरा अपन हक नहि भेटि जाइक। यैह बिम्ब उतरलनि अछि हरेकृष्ण झाक एहि कविता मे, जकर पोस्टर बनाक' लोक कें अपन कोठली मे टाँगबाक चाही- *''ई खखरी/ एहिना उधियाक'/ भरैत रहत हमर आत्मा मे/ हमरा गुमसबैत,/जाधरि धानक फूल/ नहि उड़तैक एहि स्त्रीक मोन मे,/धानक लाबा नहि छिड़ियेतैक/ एकर संसार मे''* (खखरी)

ऊपर हम आजुक कविताक एक मुख्य प्रवृत्ति--वंचित समुदायक प्रति निस्सन पक्षधरता, आ तकर अनेक आयाम-उपआयाम प्ररूप-उपप्ररूप पर थोड़ेक चर्चा केलहुँ। एकर जे दोसर प्रमुख प्रवृत्ति--मनुष्य आ प्रकृतिक सह-जीवनक अन्वेषण--विगत किछु समय सँ प्रकाश मे आएल अछि आ तकर पर्याप्त आरेखन आलोच्य अवधि मे भेल अछि, ताहि पर आ एकर किछु आयाम पर किछुएक गप करब।

प्रकृतिपरक कविता लिखल जेबाक चाही कि नहि--ई मामिला आधुनिक युगक उत्कर्षकालहि सँ विवादास्पद बनल रहल अछि। हमरा लोकनि जानैत छी जे तेजस्वी कवि राजकमल चौधरी प्रकृति-कविताक प्रबल विरोध केने छलथिन। फेर हमरा लोकनि देखल जे ओ स्वयं अपनहु एहन कविता लिख' लगलाह। नव-कविताक आन्दोलन जे भारतीय भाषा सभ मे चलल, ताहि मे विधिवत् सिद्धान्त-कथन क' क' प्रकृति कविताक निषेध कएल गेल। वामपंथी विचारधारा प्रकृतिपरक कविता लिखल जेबा

कें हेय क' क', मनुक्खक संग धोखेबाजी क' क' बुझैत रहल अछि। मुदा, समकालीन युग मे आबिक' भारतीय साहित्य मे जे प्रवृत्ति विकसित भेल अछि, से एहि मान्यता कें खण्डित करैत अछि आ 'लकीरक फकीर' बनब' बला जड़ता कें तोड़बाक अपेक्षा करैत अछि।

एहि बीच मे जे विश्वक परिदृश्य बनल अछि, ताहि पर कने दृष्टिपात कएल जाय। संसाधनक विवेकहीन दोहन सँ आ सभ्यता-जनित आनो-आन रोग-व्यसन सँ प्रकृति आ मनुष्यक बीच सन्तुलन लगातार बिगड़ल अछि। दोसर दिस, प्रतिस्पर्धापूर्ण जीवन-शैलीक कारण मनुक्खक सम्वेदनशीलता आ तें जीवन्तता निरन्तर घटैत गेल अछि। एक बेसोह-किसिमक उत्थर जीवन-दर्शन प्रचलन मे आएल जे मनुक्ख कें ओकर अपने लय आ ताल सँ काटिक' राखि देलक। आनन्द बिला गेल। बाजारवाद सभ कथू कें, मनुक्खो कें एक उत्पाद बना छोड़लक, जाहि मे सभ किछु अछि, एक जीवन नहि। भूमण्डलीकरण एहि समस्त त्रास कें गाम-गाम घर-घर पहुँचेबाक अभियान चलौलक। तकर विरोध मे दुनियाँक सभ देश मे, स्थानिकवाद, निजतावाद आ एक नवीन प्रकारक मानववाद विकसित भेल। जीवनक संरक्षण लेल प्रतिबद्ध समस्त विचारधाराक विवेकी लोकसभ एहि लेल एक संग ठाढ़ भेलाह अछि। हम देखैत छी जे एहि जटिल परिस्थिति मे सांस्कृतिक निजताक प्रश्न जते महत्त्वपूर्ण अछि, प्रकृति आ मनुष्यक सहजीवनक प्रश्न ताहि सँ कनेको कम नहि।

अकारण नहि थिक जे आइ गुजरातीक वरिष्ठ कवि मकरन्द दवे अपन गुरु 'वृक्ष' कें बतबैत छथि आ कारण कहै छथि जे एहि सृष्टि मे वृक्षे एक एहन अछि जे अपन जीवनक अन्तिम क्षण धरि विकास करैत रहैत अछि। अकारण नहि थिक जे आइ मानल जा रहल अछि जे मनुक्खक, प्रकृति लग जाएब वस्तुतः विस्मृति सँ स्मृति दिस घुरबाक प्रक्रिया थिक।

आलोच्य अवधि मे प्रकाशित, वरिष्ठ कवि हरेकृष्ण झाक कविता 'मुदा तें की' ('जखन-तखन') कें देखैत छी तँ समकालीन विश्वक लेल, मिथिला-समाजक दिस सँ प्रस्तुत, निस्सन जीवन-दर्शनक एक प्रस्ताव-पत्र-सन लगैत अछि। समकालीन मैथिली कविता मे जे प्रकृति उतरि रहल छथि, तकर दृष्टि-पत्र तँ ई थिकिहे- *''हँ, कतेको ठाम/फुलाइत-फुलाइते झमान*

भ' क' खसि/पड़ल अछि अड़हूल;/ मुदा तें की/ गरीबिन सँ गरीबिन/ माइक छाती मे/ आब अपन चिलकाक लेल/ दूधक हिलोर/ नहि उठैत अछि?/ हँ ठीक,/ जे लोकक आत्माक गह्वर मे/ जाबन्तो काल सँ थापल/सपनाक टुहटुह कलश/ देखिते-देखिते/ छहोछित/ भ' गेल अछि; कतेको ठाम/ तें की/ भोर खन क' आब/ पुबरिया दिगन्त मे/ किरनक गर्दमीसान/ नहि मचैत अछि?/ हँ, ई बात सत्त/ जे पूँजीक नबका कारपरदार/ सभक सांस/ अस्सी योजनक/ भ' गेल अछि आ जतबैक/ खुसफैल/ लगैत अछि/ सभ किछु/ ततबैक सिकस्त/ भ' गेल अछि/जे एकटा मोहक दलपरदा मे/ सभतरि/ चमाचम ताला/लागि रहल अछि।/ हँ, ईहो अछि सत्त/ जे धुरखुरक माटि धरि/ बनि रहल अछि जिनिस/ सतरंगा पन्नीमे सील भ' क';/ जे नेहक ओ कुशल छेमक/ जएटा चैनल/ जाम भ' जाइत अछि/ चामक लामकाफक/ तएटा चैनल/ लुहलुहार/ भ' जाइत अछि।/ हँ, के कहत नहि,/ जे अरना पाराक चामक/ कनात सँ/ घेरल अछि समय-साल;/ चकाचक इजोतक बीच/ पसरल भक्इजोत मे/ भकचक अछि/ देस देशकाल/ मुदा तें की/ निसबद्द भेल राति मे/ सिसकैत अछि शीत/ विपदाक भीतरी विलाप जकाँ;/ निहारुन/ होइत अछि आकाश,/ बिसरैत अछि कहियो/ भोर दिस बढ़बाक/ दुरन्त संकल्प कें?/ एना नहि बन्धु/ झूरझमान/ एना नहि,/ जरलो परतीक अतल मे/ कतहु-ने-कतहु/ होइत अछि सूरसार/ कंच हरियरीक...''

एहि कविता कें ध्यान सँ देखला पर प्रकृति आ मनुक्खक अन्तर्सम्बन्ध, जकरा हम एहि दुनूक सहजीवन जकाँ देखैत छी, कें परखल जा सकैत अछि। एही सँ ईहो स्पष्ट भ' जाएत जे प्रकृति लग जाएब कोना विस्मृति सँ स्मृति मे घुरबाक प्रक्रिया थिक। गरीबिन सँ गरीबिन माइक छाती मे अपन चिलकाक लेल दूधक हिलोर उठब एक प्राकृतिक परिघटना थिक, जे ने अपन घटित हएब बन्न केलक अछि ने बन्न करबा लेल अछि, मुदा देखबाक थिक जे अपन चिलकाक परिपालन लेल ओहि माय कें सांसारिक स्तर पर जे कोनो दायित्व निमाह' पड़ैत छैक, तकर संकल्प जगाएब सैह वस्तुतः एहन कविताक इष्ट होइत छैक। जखन कवि कहैत छथि जे 'एना नहि बन्धु झूरझमान' तँ तकर कारण आ स्पष्टीकरण तँ कविता प्रस्तुत

करैत अछि मुदा ई वस्तुतः ओहि प्रक्रियाक अंगमात्र थिक जे कविता अपन भावकक हृदय मे स्मृति जाग्रत क' क' घटित हेबाक अभीप्सा-रूप मे रखने अछि।

एहि कविता मे हमरा लोकनि देखैत छी जे एहि ठाम मनुष्यो आएल अछि आ प्रकृतियो, दुनूक बीच पूरा परिवेश आ परिस्थिति सेहो निरूपित भेल अछि। मुदा, साम्प्रतिक कविता मे एक एहनो रूप प्रचलन मे अछि जाहि मे मनुक्ख आ ओकर परिस्थिति नहि अबैत छैक। अबैत छैक मात्र प्रकृति, ओकर परिवेश आ ओकर परिस्थिति। कहब आवश्यक नहि जे मनुक्ख स्वयं आबए वा नहि, कविता लिखल अन्ततः जाइत छैक मनुक्खेक लेल। एहन कविता मे कवि परिवेश आ परिस्थिति एहन चुनैत छैक जे ओकर कथ्य कें स्वयं प्रकट क' सकए। कविक इष्ट होइत छैक एही स्मृति कें जगाएब। अपन कविता मे कवि एक कें आनए कि दूनू कें, ई आत्यन्तिक रूप सँ कविक कलात्मक विवेक आ आवश्यकता पर निर्भर करैत छैक। तखन तँ ई बात अवश्ये जे अपन इष्टसिद्धि मे कवि कतए धरि सफल होइछ, ई अन्ततः ओकर प्रतिभे पर निर्भर करैत अछि।

जीवकान्तक प्रकृतिपरक कविता मे अधिकांशतः एसगर प्रकृति आएल अछि, अपन परिवेश आ परिस्थितिक संग। मनुक्ख ओहि ठाम पृष्ठभूमि मे अछि। तखन, कलाकारी हुनक ई थिकनि जे परिस्थितिएक चयन ओ ताहि रूपक करैत छथि जे मनुक्खक सभ कथा कहि जाइत अछि। जीवकान्तक कविता ततेक सरल आ एकहरा होइत छनि जे कतोक बेर भ्रम होइत छैक जे ओ मात्र एक प्राकृतिक परिघटनाक चित्रांकन केलनि अछि आ ताहि मे अलग सँ हुनक कोनो कथ्य निरुपित नहि छनि। कहबाक थिक जे से बात कोनहुना सही नहि अछि। अपन कविता 'अबैत छथि सूर्य' मे जखन ओ सूर्यक एला उत्तर डेराओन जीवक द्वारा अढ़ ताकल जेबाक वर्णन करैत छथि तँ की ओ मनुक्खक जीवन मे भोर आ प्रकाशक माहात्म्य-स्मरण नहि करा रहल होइत छथि आ इष्ट रूप मे, प्रकाशक ब्योंत लेल उद्यम करबाक स्मृति नहि जगा रहल होइत छथि? तहिना, अपन बालकविता 'नीलकण्ठ' मे जखन ओ कहैत छथि जे *'अहाँ उड़इ छी नीलकण्ठ तँ गगन उड़ैए/ अहाँ पसारी बन्न पाँखि तँ पवन हँसैए।'* तँ, 'गगनक उड़ब' आ 'पवनक हँसब'

के की तात्पर्य अछि? की एहि तात्पर्यार्थक अनुमान स्वयं नीलकण्ठ कें भ' सकैत छनि? आ, मूलप्रश्न तँ ई जे गगनक उड़ब आ पवनक हँसब की कोनो प्राकृतिक परिघटना थिकहो? ई शुद्ध क' क' एक आरोपण थिक जे अपन इष्टसिद्धि लेल आ अपन कथ्य प्रकट करबा लेल कविक द्वारा आयोजित कएल गेल अछि। उल्लास आ उत्साहक जे बिम्ब एहि ठाम बनैत छैक, तकरा ओही 'एना नहि बन्धु झूर-झमान' बला प्रक्रम मे देखल जा सकैत अछि।

ओना आजुक समयक एहि दुनू विराट कवि जीवकान्त आ हरेकृष्ण झाक रचना-प्रक्रियाक मादे हम सोचैत छी तँ प्रतीत होइए जेना प्रकृतिक अवलोकनक पश्चात उत्पन्न सृजनात्मक वेगक समक्ष जीवकान्त त्वरित आत्मसमर्पण क' दैत छथि आ प्रकृतिक भाषा कें मनुक्खक भाषा मे अनूदित कइएक' आफियत मे अबैत छथि। तकर ठीक विपरीत, हरेकृष्ण झा एहि वेगक भार अपन आत्मा पर लदने, अनेको असमंजस मे पड़ल, कतेको त्रास भोगि लेबाक उपरान्त ओकरा कागत पर उतारि पबैत छथि। एहि प्रक्रिया मे मुदा हुनक आलोचनात्मक विवेकक बदौलति कविता अपना कें कटैत-छँटैत, बनैत-संवरैत एक सुपुष्ट आ सुन्दर काया ग्रहणक' लैत अछि। काव्य-भंगिमा सँ ल' क' शब्द-चयन धरि पर हुनकर बेस आयास लागल रहल होइत छनि। स्वाभाविक थिक जे हुनक कविता एक दिस जँ अपना कालखण्डक विराट कविता बनैत अछि तँ दोसर दिस जटिल कविता सेहो बनैत अछि। यद्यपि प्रसंगवश, ईहो कहल जेबाक चाही जे हरेकृष्ण झाक कविताक जटिलता ओहि प्रकारक जटिलता नहि थिक जे काव्य-वस्तुक अस्पष्ट अवबोध सँ उत्पन्न होइत छैक जेना कि हमरा लोकनि नवकविता-युगक वरिष्ठो कवि लोकनिक कविता मे देखैत छी वा आइयो अभ्यासशील आ प्रयोगवादी कविलोकनिक कविता मे देखि रहल छी। हरे कृष्णक ई जटिलता वस्तुतः सघन भाव-बोध सँ उत्पन्न जटिलता थिक। बहुत गँहीर भाव कदाचित सरल भाषा मे व्यक्तो नहि कएल जा सकैछ। एहि लेल भावक कें अपन पात्रता बढ़ाएब टा मात्र उपाय थिक।

कृष्णमोहन झाक कविता 'भेद-विभेद' (अंतिका) क स्थिति मुदा एहि दुनू सँ थोड़े भिन्न अछि। ओहिठाम ओ दू टा प्राकृतिक दृश्य कें अत्यन्त

कौतुकपूर्ण आयाम देलनि अछि। जखन आकाश मे ओ हांजक हांज सुग्गा कें देखैत छथि तँ हुनका, जेना असंख्य पात कोनो वानस्पतिक तीर्थ पर बहराएल हो, से प्रतीत होइ छनि। आ जखन गाछ पर छारल विनम्र पात सभ कें देखैत छथि तँ प्रतीति होइ छनि जेना योगासनक विभिन्न मुद्रा लगौने असंख्य सुग्गा सभ संचमंच बैसल हो। एहि कौतुकक कोनो अर्थ स्पष्ट नहि होइत देखि ओ कहैत छथि- *''हे भगवान!⁄ हमरा कहिया भेटत ओ दुर्लभ दृष्टि⁄ कि विभेदक अइ मटकुइयाँ सँ बहार⁄ निकलि सकब हम?''*

कृष्णमोहन झा द्वन्द्वात्मक सोच-समझ राखनिहार एक संघर्षधर्मी युवाकवि छथि तें ई आशा करब जे भेद-विभेदक विरुद्ध एक शाश्वत वेदान्त-दृष्टि सिद्ध करबा लेल भगवान कें गोहरौलनि अछि, निरर्थक हएत। ई कविता वस्तुतः उत्तर आधुनिक वस्तुस्थिति कें आ तकर विडम्बना कें सेहो, प्रस्तुत करैत अछि, जाहि मे पाठ-प्रक्रिया ततेक महत्त्वपूर्ण अछि जे वस्तु कें ओकर सम्पूर्ण प्रभाव मे देखब असम्भव भ' जाइत छैक, ने तँ ओकर अन्तर्ध्वनि आ ने इंगित सोझां आबि पबैत छैक। अमेरिका वास्तव मे भने हमर मुद्दइ रहौक, लाख तर्क आ तथ्य प्रस्तुत अछि हमरा सोझा जे ओ हमर हित थिक। एक नीकतर दुनिञा बनेबाक उद्यम करैत लोकक लेल एक तथ्यपूर्ण आ सार्थक निर्णय ल' पाएब, ई समय कतेक कठिन क' देलकैक अछि, तकर एक कथा एहि कविता मे सुनल जा सकैत अछि।

अविनाशक कविता ('अंतिका') मे उतरलि प्रकृति एहि प्रवृत्तिक एक आओर आयाम प्रस्तुत करैत अछि, जतए प्रतिस्पर्धापूर्ण उपभोक्तावादी संसार अछि जतय बरखाक बुन्नक स्पर्श पाबिक' ककरो उत्फुल्ल भ' जाएब कें पिछड़ापन मानल जाइत छैक। कवि ओहि ठाम कहलनि अछि जे ई पछुआएल हएब हमरा स्वीकार अछि आ एहि पिछड़ापन पर हमरा गौरव अछि। कथीक गौरव? निश्चय, ई गौरव जीवन सँ प्रत्यक्षतः जुड़ल हेबाक बोध सँ जनमल छैक।

प्रकृतिक संग, प्रेमक चर्चा नहि हो, से नहि सम्भव। आलोच्य अवधि मे वरिष्ठ कवि नचिकेताक एक सँ एक सुन्दर प्रेमकविता सभ छपल अछि।

हुनक कविता सभ ऐन्द्रिकता सँ परिपूर्ण अछि। एहि मे एहन नायिकाक अवतरण भेल अछि जे बौद्धिक रूप सँ पर्याप्त समर्थ छथि आ समतावादी समयक सजग स्त्री थिकीह। एहि लेल हुनक कविता सभ मोन राखल जाएत।

विकास कुमार झाक प्रेम-कविता 'कहने रही अहाँ' बहुत त्वराक संग प्रेम-सन एक वैयक्तिक अनुभूतिक तथ्य कें स्थान-काल-पात्रक त्रिआयाम प्रदान करैत छथि, आ एवम्क्रमें एहि युगक एक जिम्मेवार प्रेमी-युगलक प्रारूप प्रस्तुत करैत छथि। एक दिस जँ एहि रुग्ण दुनिञाक आरोग्यक वास्ते मधुर आंच पर पराग पकबैत पृथ्वी छथि, तँ दोसर दिस अपना कें बेर-बेर गमौने चलि जा रहल पाटलिपुत्र। आ ताहि मध्य प्रेयसीक कम्पित अधर पर स्वयं कें अर्जित पौनिहार प्रेमी आ 'हम अहाँक शक्ति बनि सकी, अहाँक दुर्बलता नहि' कहनिहारि प्रेयसी। ई ओहि दुनिञाक चित्र थिक, जे सुन्दर लोक सभक बनाओल सुन्दर समाजे मे सम्भव थिक, आ जे कि समकालीन मैथिली कविताक इष्ट थिक।

कृष्णमोहन झाक प्रेमकविता मे सेहो, एहि इष्ट कें स्फुट भेल देखल जा सकैए, जतए जीवन-संघर्ष सँ हँटिक' प्रेमक लेल कोनो जगह नहि छैक! प्रेमक प्रक्रिया कें प्रतीयमान करैत कवि ढाकी तर मे झांपल मेमनाक आजादीक बिम्ब रचैत छथि। की अद्‌भुत! बात स्पष्ट अछि जे आजुक कविता कें एक श्रमशील सभ्यता सँ कम पर कथू मान्य नहि अछि।

(2006)

पसार

'''मिथिला' जकरा हमरा लोकनि कहै छी, मोन रखबाक चाही जे ओहि मिथिलाक भीतर दू टा मिथिला अछि--बुनावटि, चरित्र आ लक्ष्य तीनू मे सर्वथा भिन्न। एकटा जँ राजघरानाक बबुआन लोकनि आ हुनकर लगुआ-भगुआ सभक मिथिला थिक तँ दोसर दिस हुनका सभक शोषण सँ सीदित, असमानताक डांग सँ डेंगाओल रैयत लोकनिक एक भिन्न मिथिला थिक, जकर ने मात्र अस्मिता भिन्न छै अपितु जीवन-दर्शन सँ ल' क' चिन्तन-परम्परा धरि भिन्न छै। एकटा मिथिला सामन्तवादी-ब्राह्मणवादी लोकनिक मिथिला थिकनि तँ मोन रखबाक चाही जे एकटा आर मिथिला अछि--किसानी-संस्कृतिक मिथिला, जकर खास पहचान थिक--जीवन आ तकर संरक्षण लेल अत्यन्त आत्मीय राग, आध्यात्मिकताक हद धरि पहुँचल बेलौसपन आ प्रगतिशील तत्त्वक प्रति सतत पक्षधरता, सत्य कें सत्य कहबाक साहस। वस्तुवादी ढंग सँ सोचिनिहार लोक मिथिलाक इतिहास मे साफ-साफ देखि सकै छथि जे मिथिलाक किसानी समाज सँ जीवन-तत्त्व ग्रहण क' क' एतुक्का पण्डित-समाज अपन व्यक्तित्व आ विद्या कें खूब चमकाबैत रहल, मुदा सभ दिन, लोक-पक्ष आ जन-संस्कृतिक कट्टर दुश्मन बनल रहल, ओकरा सैंतबाक ब्योंत बैसबैत रहल।

एहि समस्त घालमेंल कें देखार केनिहार, सक्क भरि यथार्थक उद्घाटन केनिहार आ जान अड़पि क' जन-संस्कृतिक पक्ष लेनिहार साहित्यकार वरेण्य छथि, आ हिनके लोकनिक अवदान पर मैथिली भाषा आ साहित्य उन्नयन प्राप्त केलक।''

रमानाथ झा आ मैथिली आलोचना

सभगोटे जनैत छी जे मैथिली भाषा-साहित्यक सन्दर्भ मे, आ मिथिला-सम्बन्धित अन्यान्य सन्दर्भ मे सेहो, आधुनिकताक उदय बीसम शताब्दीक शुरू मे आबिक' भेल। आ ईहो बात सभ गोटे जनैत छी जे पूर्ण आधुनिकता जकरा कहल जाए, से एखनहुँ घटित हेबाक अपन अभिक्रमे मे अछि। आ तें, पछिला सय बरखक भीतर, मिथिला कें ल' क' जे कोनो चिन्तन-मनन-लेखन कएल गेल अछि वा स्वयं मैथिली साहित्य सृजित भेल अछि, से सभ समन्वित रूप सँ आधुनिकतेक विविध रूप-प्ररूप, कल्प-प्रकल्प थिक।

भारतीय भाषा-साहित्य सभक परिप्रेक्ष्य मे 'आधुनिकता'क की अर्थ अछि? अंगरेज जाति जकाँ अपन मातृभाषा कें पवित्र मानब आ अपन समस्त भाव-विचारक माध्यम बनाएब--से एक बिन्दु। दोसर जे अपन मातृभूमिक स्वत्व-रक्षाक लेल, ओकर सर्वविध उन्नति आ विकासक लेल जीवन अर्पित क' सकबाक भावना राखब आधुनिकता थिक।[1] कहब आवश्यक नहि जे अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक विकास लेल उद्यमशील हएब--ई एक एहन विरल आ दुर्लभ गुण थिक जे बीसम शताब्दी-पूर्वक परम्परित मैथिल बुद्धिजीवी समाज मे ताकनहु नहि भेटि सकैत छल। विद्यापति-सन शलाका-पुरुष जँ कतहु क्यो भेटैत छथि तँ मोन राखबाक चाही जे हुनकहु रमानाथ बाबू *'कैक अर्थमे आधुनिक'* कहने छथिन।[2]

मिथिला-समाज आ मैथिली भाषाक सन्दर्भ मे आधुनिकताक प्रतिष्ठापक महापुरुष लोकनि मे आचार्य रमानाथ झा गणमान्य छथि। अपन सुप्रसिद्ध

कविता 'सारस्वत सरमे हे मराल' मे यात्री रमानाथ झा कें 'साहित्यक उद्यानपाल' कहलखिन, से निस्सन्देह सहस्र बर्ख धरि चतरल-पसरल मैथिली साहित्यक 'योग' आ 'क्षेम' दूनू कें वहन क' सकबाक हुनक क्षमता कें देखैत आ तकर अभिनन्दन करैत। हुनक 'महाप्राज्ञता'क संगहि 'चिर-अतंद्रता'क जे गुण-गान ओहि कविता मे कएल गेल अछि आ जाहि कारणें ओ 'प्रथितसिद्ध' आ 'पूर्णकाम' भ' सकलाह--से ओहि व्यक्तित्वक उपस्थिति आ कर्तृत्व निश्चये आधुनिक मैथिली साहित्यक एक दुर्लभ अध्याय थिक। रमानाथ झा कें जँ हम आधुनिक कथेतर गद्य-लेखन-परम्पराक, जकरा अन्तर्गत शोध, आलोचना, निबन्ध आदि-आदि कतेको वस्तु अन्तर्भुक्त अछि, पिता मानैत छियनि तँ हमर अनुमान अछि जे क्यो हमर बात सँ असहमत भने होथु, एकरा नकारि नहि सकैत छथि।

मैथिली-संसार मे रमानाथ झाक जे उल्लेखनीय महत्त्व छनि, से किनकहु सँ छपित नहि छनि। तकर एक नीक आकलन मोहन भारद्वाज अपन लेख मे प्रस्तुत केने छथि।[3] तखन तँ मानैए पड़त जे रमानाथ झा छलाह मूलतः एक विचारक। विचारक दुनियाँ मे मति-विमति, सहमति-असहमति सहज संभाव्य होइत अछि आ से लोकतांत्रिक साहित्यक स्वास्थ्य-रक्षा आ विकासक लेल आवश्यको अछि।

रमानाथ झाक महाप्राज्ञ व्यक्तित्वक जे विशेषता हठात् हमरा लोकनिक लेल श्लाध्य आ प्रेय भ' उठैत अछि, से थिक--हुनक वैदुष्यक विलक्षणता, अध्ययनक गहनता आ प्रस्तुतिक निजता। तहिना, मोहन भारद्वाज हुनका मे विषयक स्पष्ट अवधारणा आ प्रस्तुतिक निर्लेप रूपक जे वैशिष्ट्य पबैत छथि, से आइएक नहि, भविष्योक आलोचक लेल मानदण्ड मानल जाएत।

आलोचना-कर्मक हुनक रचना-प्रक्रिया बहुत निस्सन आ सर्वांगपूर्ण होइत छलनि। मिथिला-मैथिल-मैथिलीक नाम पर एक खाली-सन स्लेट हुनका भेटल छलनि। पृष्ठभूमि मे पाथेय-रूप मे संकेत थोड़े भने भेटल होअओ, निष्पत्ति धरि कोनो सुस्पष्ट नहि छलनि। अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक अभ्युन्नति आ विकासक प्रबल अभीप्सा टा मार्गदर्शक छलनि। एहन 'प्रथम पुरुष' जँ महान प्रतिभाशाली होथि तँ अपन मातृभाषाक उद्धार धरि क' जाइत छथि। एम्हर, हुनकर रचना-प्रक्रिया कें अकानी तँ

पबैत छी जे शार्टकट तकबाक विवशता, जकरा कारणें लोक 'बामा हाथें लिखबा' लेल बाध्य होइछ, हुनका नहि कहियो रहलनि। असीम धैर्यक संग ओ तमाम ज्ञात-अज्ञात स्रोत मे सँ अपन विषय-वस्तु लेल आधार-सामग्रीक निर्णय आ चयन करथि। अत्यन्त अतन्द्र भ' क' ओकर अध्ययन, मनन आ विश्लेषण करथि। तखन जा क' ओहि आधार-सामग्रीक उपयोग कोना हो तकर तकनीक तय करथि। एवम्क्रमें ओ तकर अनुप्रयोग करैत अपन आलोचना-कर्म मे लगैत छलाह आ सदिखन एक निष्कर्ष धरि, एक निष्पत्ति धरि पहुँचैत छलाह। मैथिली आलोचनाक रचना-प्रक्रियाक ई प्रतिमान थिक।

आलोचना कें ल' क' रमानाथ झाक जे मान्यता छलनि, तकरा जनबाक लेल हमरा लोकनि कें हुनक तीन गोट निबन्ध उपलब्ध अछि, जे 'विविध प्रबन्ध' (1970) मे संकलित अछि। ओहि महक एक निबन्ध 'समीक्षा-वृत्ति' मे ओ एहि रूपें परिभाषा ठाढ़ करैत छथि--*'समीक्षा साधु तात्त्विक प्रक्रिया थिक जाहिमे लोक कोनहु दर्शनीय वस्तुकें देखबाक इच्छा करए, देखए, ओ देखिकें ओहि मे जे द्रष्टव्य होइक तकरा दोसराकें देखएबाक इच्छा करए, देखाबए।'*[4] एहिठाम देखबाक थिक जे समीक्षाक लेल ओ दुनू स्तर पर--देखबाक तथा देखेबाक--जागरूक हेबाक शर्त्त रखैत छथि आ से इच्छा सँ ल' क' क्रिया धरिक रूपान्तरणक सम्पूर्ण प्रक्रियाक संग। समीक्षा वा आलोचना कें केहेन हेबाक चाही, ताहि मादे ओ अपन निकष एहि रूप मे निर्धारित करैत छथि- *'ओ (समीक्षक) जे कहैत छथि से स्पष्ट अछि, शुद्ध अछि, प्रभावशाली अछि, युक्तियुक्त अछि ओ समीक्षाक शैलीसँ भिन्न नहि अछि।'*[5]

एहि पाँचोटा गुण--स्पष्टता, शुद्धता, प्रभावशालिता, युक्तियुक्तता आ विहित शैलीबद्धता--सँ युक्त आलोचनाक प्रयोजनीयता की थिक, ताहि मादे ओ कहैत छथि- *'जनताक रुचि कें परिष्कृत, व्यवस्थित, सन्तुलित अथवा विवेकशील बनएबाक निमित्त, बनओने रहबाक निमित्त, कोनहु वस्तु किंवा रचनाक ठीक-ठीक परीक्षण ओ मूल्यांकन कएनिहार कुशल समीक्षकक होएब मानव-समाजक सत्प्रवृत्तिक सुरक्षा हेतु आवयके नहि, अनिवार्य सेहो अछि।'*[6] एहिठाम देखबाक थिक जे समीक्षाक प्रयोजन कें ओ 'यशसे' वा

‘अर्थकृते’ सँ दूर ल’ जाक’ ‘शिवेतरक्षतये’ मात्रक लग मे ठाढ़ करैत छथि आ सैह टा नहि अपितु तकरो सुस्पष्ट पक्ष-निर्धारण करैत एकरा ‘जनताक रुचिक परिष्कार’ सँ जोड़ैत छथि। ई रमानाथ झाक आधुनिकता थिकनि। ओना तथ्य ईहो जे हुनक एहि आधुनिकताक सीमा सेहो बड़ स्पष्ट छनि। से मुदा, भिन्न बात।

एक समालोचकक कर्त्तव्य आ दायित्व, जकर ओ भरि जीवन पालन केलनि, वास्तव मे कतेक कठिन होइत छैक, ताहि मादे ओ कहैत छथि- *‘ई (समालोचना) एक गोट अत्यन्त दुर्वह कर्म थिक ओ एहि हेतु जे योग्यता, जे प्रतिभा, जे व्युत्पत्ति ओ जे पाण्डित्य अपेक्षित छैक तकरा दृष्टिमे राखि तखनहि एहि दुर्वह कर्म कें अपनाओल जाए। ...अधलाह किंवा भ्रान्त समालोचना सँ रुचि भ्रष्ट भए जएबाक भय अछि। एहन समालोचना सँ नीक थिक जे समालोचना नहिए हो, कारण तखन तँ पाठक जनताक अपने रुचि ओकर रसग्राहकता मे सहायक होएतैक।*[7] अपन एही निबन्ध मे ओ आलोचना-लेखनक अधिकार-अनधिकार कें चिह्नित करैत ईहो कहैत छथि जे मात्र रचनाक अनुशीलन क’ लेने सँ कोनो लेखक कें आलोचना-कर्मक अधिकार प्राप्त नहि भ’ जाइत छनि अपितु एहि लेल प्राच्य अथवा पाश्चात्य समालोचना-शास्त्रक विधिवत अध्ययन आवश्यक अछि।

स्वयं रमानाथ झा कें प्राच्य तथा पाश्चात्य दुनू समालोचना-शास्त्र मे गँहीर अभिज्ञता प्राप्त छलनि। हुनक आलोचना-कर्म साक्षी अछि जे समीक्षण-क्रम मे जतए हुनका जे रुचलनि वा उपयुक्त लगलनि, दुनू शास्त्रक उपयोग कसौटीक रूप मे केलनि अछि। तखन ई धरि निश्चय जे साहित्य कें अथवा साहित्यकार कें ‘देखबाक’ जे हुनकर केन्द्रीय दृष्टिकोण रहनि, तकर नियामक पाश्चात्य समालोचना-शास्त्रे छल। एकरो हुनक आधुनिकताक एक अभिलक्षण मानबाक चाही। अर्थात् अंग्रेज जाति जकाँ अपन भाषा आ भूमि कें पवित्र मानब आ तकर विकासक उद्यम करब। अपन निबन्ध ‘समालोचना’ मे जे ओ कहलनि जे *‘समालोचनाक लक्ष्य भए गेल अछि कविक व्यक्तित्वक स्फुटीकरण जकर माध्यम हुनक काव्य भेल’*[8], तकरा हुनक एक उक्ति-मात्र नहि अपितु हुनक केन्द्रीय आलोचना-दृष्टि क’ क’ बुझबाक चाही।

सभ गोटे जनैत छी जे रमानाथ झाक सभ सँ विराट योगदान विद्यापति-सम्बन्धित अध्ययन थिकनि। एसकर विद्यापति पर जतेक जे लेखन ओ विविध भाषा मे केलनि, से पाँच सय सँ बेसी मुद्रित पृष्ठ मे अटान ल' सकैत अछि। हुनक ई समस्त लेखन घोषित रूप सँ विद्यापतिक कवि-व्यक्तित्वक स्फुटीकरणक वास्ते थिकनि। एहि लेल ओ विद्यापतिक देश, काल, समाज, वंश, कुल-मूल, राजनीति, धर्म, संस्कृति, आदि-आदि कतेको वस्तुस्थितिक पद्धतिबद्ध आ आधिकारिक अध्ययन प्रस्तुत केलनि। तहिना, प्राचीन आ मध्यकालक अन्यान्य कतेको ज्ञात-अज्ञात-अल्पज्ञात कवि-लोकनिक ओ उद्धार केलनि, से कहल जाइत अछि।

रमानाथ झाक समीक्षात्मक लेखन विशाल तँ अछिए, ओकर अनेक कोटिक्रम, अनेक विषय तथा अनेक प्ररूप सेहो छैक। एहि सभ कें एक सूत्र मे जोड़ैबला जँ किछु अछि तँ से हुनक समीक्षाक विहित शैली तथा प्रविधि मात्र थिक, जकर सदति रक्षाक ओ प्रबल आग्रही छलाह। हुनक कुल्लम लेखन कें मूलतः दू कोटि मे विभाजित कएल जा सकैए। प्रथम तँ इतिहास आ इतिवृत्तिमूलक, जकर अन्तर्गत पंजी सम्बन्धित हुनक लेखन, तन्त्रादि शास्त्रपरक हुनक विवेचन आदि आएत। हुनक लेखनक दोसर कोटि थिक--साहित्यमूलक लेखन।

ई एक तथ्य थिक जे रमानाथ झाक दृष्टि अन्ततः अतीतमुखी छलनि। जाहि मिथिलाक अभ्युन्नतिक हेतु ओ उद्यमशील छलाह, से अतीतक मिथिला छल, जकरा ओ अपन *'ज्ञानालोक', 'विद्यावैभव', 'आचार-चारुता'* तथा *'विचारक वैशद्य'*क कारण महत्त्वपूर्ण मानैत छलाह। ताहि मिथिलाक पुनरुत्थानक लक्ष्य छलनि हुनका लग, आ तें हुनक अधिकांश लेखन-ऊर्जा अतीतक उत्खनन मे अभिव्यक्त भेल। ओहि युगक आत्म-विस्मृत बुद्धिजीवी-समाजक जागरण लेल ई महत्त्वपूर्णो कतेक छल, कहब आवश्यक नहि। तें हुनक अधिकांश आलोचनात्मक लेखन प्राचीन साहित्य पर केन्द्रित भेटैत अछि। नवीनो साहित्यक जे अंश परम्परित स्वर-शैली मे लिखल जा रहल छलैक, सैह हुनका रुचिक अनुकूल रहनि आ ताही पर ओ लिखलनि। नवीन साहित्यान्दोलनक प्रभाव मे जे नव-नव स्वर-संधान मैथिली मे उभरि रहल छलैक, प्रसंगात् ओ ओहू पर लिखलनि। ओना ई बात भिन्न जे एहि

प्रकारक हुनक लेखन मात्रा मे अत्यल्प तथा प्रकृति मे असहमतिमूलक अछि।

साहित्यमूलक हुनक आलोचनात्मक लेखन मूलतः तीन प्रकारक अछि। पहिल तँ पुस्तक-रूप मे, जकर एकमात्र उदाहरण 'विद्यापति' थिक, जे ओ साहित्य अकादेमी लेल लिखलनि। दोसर, निबन्ध रूप मे, जे हुनक 'प्रबन्ध संग्रह', 'निबन्ध-माला' तथा 'विविध प्रबन्ध' मे संकलित छनि तथा किछु आर असंकलितो छनि।[8] हुनक आलोचनात्मक लेखनक तेसर रूप भूमिका-शैली मे लिखित अछि, जाहि मे सँ किछु तँ ओ अपना द्वारा लिखित वा सम्पादित पुस्तकक भूमिका-स्वरूप लिखलनि, आर किछु आन-आन लेखकक पोथी सभक भूमिकाक रूप मे लिखलनि। कहब आवश्यक नहि जे ई तमाम लेखन हुनक आलोचकीय मानदण्डक अनुरूप तँ लिखले गेल अछि, हुनका सँ अपेक्षित गम्भीरताक माँग सेहो पूरा करैत अछि।

जेना कि हम पहिनहि कहलहुँ, रमानाथ झाक आलोचनात्मक लेखनक अनेक कोटिक्रम, अनेक विषय तँ अछिए, अनेक प्ररूप सेहो अछि। ताहि सभ पर अलग-अलग विचार कएल जाय आ तकर महत्त्व आंकल जाय, तकर अवकाश एतय नहि अछि। हुनक लेखन तथ्य आ तर्क सँ ततेक परिपूर्ण अछि जे कतेको बेर ओकर मूल्य-निर्धारण हेतु मूल आधार-सामग्री धरि जेबाक जरूरति होइत छैक। हुनक यथातथ्य मूल्यांकनक एखनधरि चेष्टा नहि भेल अछि तँ तकर कारण थिक जे हुनकर गरिमामय भव्य-भाव्य व्यक्तित्व आ प्रसिद्धि आतंक उत्पन्न करैत छैक, आ तें लोक हुनका निकट भिड़बाक साहस नहि करैत अछि, से एक बात। दोसर जे हुनक भाषा आ शैलीक स्थापत्य जादुई रूप सँ ततेक ऊँच आ मजगूत छैक जे साधारण लोक ओहि मे जँ प्रवेश करए तँ अपन अभिमत कें समालोचनात्मक बनौने राखि पाएब कठिन क' दैत छैक। तें, हम सभ देखै छी जे हुनका पर जँ काज कएलो गेल अछि तँ हुनक गरिमामय व्यक्तित्व सँ अभिभूत भैए क', अपन आलोचकीय प्रतिभा कें हुनका मे पूर्णतः निमज्जित कइए क'।[9]

एहि ठाम हम, हुनकर आलोचना-साहित्यक प्रवृत्ति पर, हम जेना पेने छी, अपन किछु मंतव्य राखब।

सभ क्यो जनैत छी जे मैथिली आलोचनाक क्षेत्र मे रमानाथ झा

प्रमाण-पुरुषक रूप मे सर्वस्वीकृत छथि। आलोचनाक सम्पूर्ण परिदृश्य पर हुनकर छाया जेना टहलैत-बुलैत आएल अछि। किनको जँ उँचाइ नपबाक हो तँ हुनके सन्दर्भ सँ बात शुरु होइत अछि, वैपरीत्य जँ नपबाक हो तँ हुनके सन्दर्भ सँ बात खतम होइत अछि। एकरा अहाँ हुनकर वैशिष्ट्य कहू वा हुनकर सृजनक निजता। नीचाँ हम सात टा प्रमुख बिन्दु अंकित करै छी, जकरा अन्तर्गत रमानाथ झाक आलोचना-साहित्यक प्रवृत्ति कें, निजता कें चीन्हल-बूझल जा सकैत अछि-

1. वस्तुक स्तर पर प्राचीनताक पक्षपाती
2. तथ्यक स्तर पर अनुसन्धानात्मक
3. भाषाक स्तर पर संश्लिष्ट
4. शैलीक स्तर पर आत्मानुभूतिपरक
5. निर्वचनक स्तर पर सूत्रात्मक-टीकात्मक
6. अर्थबोधक स्तर पर पूर्वबोधापेक्षी
7. लक्ष्यक स्तर पर स्वर्णिम मिथिलाक पुनरुत्थान-कामी

एहि मे सँ एकाध बिन्दु पर थोड़े विस्तार सँ गप हो तँ स्थिति स्पष्ट भ' सकैत अछि।

हमरा लोकनि देखैत छी जे रमानाथ झाक सम्पूर्ण आलोचनात्मक लेखन अतीतक स्वर्णिम मिथिलाक गौरव-गान सँ ओतप्रोत अछि। तकरे वैशिष्ट्यक आरेखन तथा उत्तरोत्तर विकासक अभिक्रम ताकब हुनकर इष्ट थिकनि। ओ स्वयं कहैत छथि- *'वर्त्तमान संकटक स्थिति मे हमरा लोकनि सबहुकाँ मिथिलाक ई प्राचीन उत्कर्ष स्मरण करबाक थिक, मनन करबाक थिक, अनुसरण करबाक थिक।*[10] रमानाथ झा मानैत छलाह जे *'अपन अतीतक उत्कर्ष ख्यापित कइए क' समाजक भावी कर्णधार लोकनिक हृदयमे नव-स्फूर्ति संचार कएल जा सकैत अछि।'* हुनक एतेक धरि दाबा छलनि जे *'भारतीय संस्कृतिक चरम उत्कर्ष, अमरत्वक सोपान अध्यात्म-विद्याक बीजारोपण एतहि मिथिलामे भेल।*[11] कहब आवयक नहि जे रमानाथ झाक एहि तरहें सोचब आ तदनुरूप उद्यमशील हएब हुनक अभिजात व्यक्तित्व आ राजाश्रयक अनिवार्य परिणाम-स्वरूप छल।

भारतीय स्वतंत्रता आ दरभंगा-राजक अवसानक बाद, मिथिला मे,

बुद्धिजीवी चिन्तकक एक एहनो पीढ़ी सामने आएल जे बदलल परिस्थिति मे, एहि तरहें सोचल जाएब मिथिलाक भविष्य लेल हितकर नहि मानैत छलाह। हुनका लोकनिक मतानुसार अभिजात कुल-मूलक मुट्ठी भरि लोक आ राज-परिवारक उत्कर्ष कें मिथिलाक उत्कर्ष मानब अनुचित थिक। स्पष्ट अछि जे ओ लोकनि मिथिलाक दशा-दिशाक चिन्तन-मनन आम जनताक पक्षपाती भ' क' करबाक आग्रही छलाह। एहि आग्रहक स्वर हमरा लोकनि काञ्चीनाथ झा 'किरण'क लेखन मे सुनि सकैत छी।

परस्पर वैचारिक घात-प्रतिघात, सहमति-असहमति सँ अक्सरहां प्रगतिकामी विचारक विकासक सम्भावना बनैत छैक। से मुदा एहिठाम नहि भेल। हमरा लोकनि देखैत जे रमानाथ झा एहि कोटिक आग्रही लोकनि कें 'खल' आ 'मूसल'क कोटि प्रदान क' देलखिन। हमरा लोकनि पाबैत छी जे प्राचीनताक प्रति हुनक पक्षपात उत्तरोत्तर बढ़िते चल गेल आ कतेको ठाम तँ हुनका एक एहन पुरातात्त्विक नायकक रूप मे देखल जा सकैत अछि जे अतीत मे पूर्णतः डूबल अछि आ जकरा लेल वर्त्तमान आ भविष्यक कोनो मतलब नहि छैक।

समकालीन साहित्य कें देखबाक हुनक दृष्टिकोण स्वाभाविके अछि जे प्राचीनताक प्रति हुनक एहि पक्षपातक कारण भयानक रूप सँ प्रभावित भेल। साहित्य कें ओ सतत प्रवाहक रूप मे देखबाक आग्रही छलाह। कतेको विषय पर हुनक प्रबल आग्रह देखिक' कै बेर आश्चर्य भ' सकैत अछि जे टी. एस. इलियट कें मानदण्ड माननिहार रमानाथ झा प्राचीनताक गुहा मे कोना एहि तरहें सीमित रहि सकलाह आ समकालीन युग-सत्य कें स्वीकार करबाक साहस आ उदारता किएक नहि अपना सकलाह। अपन एक निबन्ध मे ओ समकालीन साहित्य कें परखबाक अपन कसौटीक मादे लिखैत छथि- *'आदिकाव्य सँ लए अद्यपर्यन्तक जे कोनो रचना उपलब्ध अछि ताहि समष्टिमे आजुक रचना सन्निविष्ट भए ओकर अंग भए जाएत ओ तखन पूर्वापरक साधर्म्य ओ वैधर्म्यक परिशीलनसँ ओकर वास्तविक महत्त्व निर्धारित भए सकत, ओकर समुचित स्थान निर्णीत भए सकत। एहि रूपें पूर्वापरक समन्वय आवश्यक। पूर्व जँ परसँ रूपान्तरित होइत अछि तँ पर सेहो पूर्वसँ अनुशासित होइत अछि तथा एहि परस्पर सम्बन्धक*

अभावमे साहित्यक मार्ग प्रशस्त नहि अपितु अवरुद्ध भए जाएत।[12] कहब आवश्यक नहि जे एहि आग्रहक रक्षाक अर्थ अनन्तकाल धरि मैथिली साहित्यक 'प्रतिज्ञापाण्डवीकरण' आ 'कविताकुसुमांजलीकरण' करब मात्र हएत। आ, वैह रमानाथ झा जखन दोसर ठाम, आन-आन भारतीय साहित्य सभक तुलना मे मैथिली साहित्य कें विकसित करबाक योजना रखैत छथि, तँ एक विचित्र अन्तर्विरोध सँ भरल देखल जा सकैत छथि।

विद्यापतिक सम्बन्ध मे ओ प्रभूत लेखन केलनि। तकरा सभ कें पढ़ि क' परम्परित मैथिल ब्राह्मण-समाजक सम्बन्ध मे बहुत ज्ञानार्जन भ' सकैत अछि। से ओ अपनो गछैत छथि। एकठाम बहुत सन्तोषपूर्वक ओ कहैत छथि जे *'विद्यापति कालीन मैथिल ब्राह्मण समाजक प्रामाणिक (जकरा आइ-काल्हि वैज्ञानिक कहबैक ताहि रीतिसँ) अध्ययन कएने संसारमे हमहि टा छी, दोसर ककरो प्रवृत्तिओ नहि देखैत छिऐक।*[13] से, हुनक एहि विशाल मैथिली लेखन कें देखैत कतेको बेर हमरा लागल अछि जे एक साधारण व्यक्ति ई सभ पढ़िक' यैह निष्कर्ष निकालत जे जाहि विशिष्ट जाति-गोत्र, कुल-मूल मे विद्यापति जन्म लेने छलाह, जाहि विशिष्ट नैष्ठिक नेमधारी लोकनिक हुनका संगति भेटलनि, जाहि पुण्य धराधाम पर ओ अवतरित भेल रहथि, जाहि पुण्यात्मा राजाक हुनका शरण प्राप्त रहनि, जाहि महिमाशाली देवी-देवतागणक ओ उपासक छलाह, आदि-आदि जतेको अभिजात-कुलक परम्परित दिव्य आलोक सँ ओ सिक्त भेल छलाह, हुनका तँ विशिष्ट अतिविशिष्ट हेबाके छलनि। ई निष्कर्ष निकालब कतेक भयानक अछि से अनुमान कएल जा सकैत अछि। मुदा, साधारण लोक से निष्कर्ष बहार करत, कारण हुनक मैथिली लेखनक यैह रुझान छनि। हँ, साहित्य अकादेमी लेल अंग्रेजी मे लिखैत अवश्य ओ अपना कें संतुलित रखबाक प्रयास केलनि। एहि सँ हुनक एक आर अन्तर्विरोध सामने अबैत अछि। हुनका दृष्टि मे, मैथिली भाषा मे रचना करबाक अर्थ सनातन मैथिल ब्राह्मण-धर्मक रक्षा रहल हेतनि आ सैह आशा ओ रचनाकार-वर्ग सँ करैत छल हेताह, से प्रकट होइत अछि।

विद्यापति लोकधर्मी प्रकृतिक व्यक्ति छलाह आ परम्परित पण्डित-समाजक दिव्य आलोकक जादू कें तोड़ि क', उल्लंघन क' क' आगू बढ़ि सकलाह

आ तें विशिष्ट छथि, तें आजुक भारतीय साहित्यक परिप्रेक्ष्य मे प्रासंगिक छथि, ई रुझान हुनक मैथिली लेखनक नहि छनि। तें आइयो, हुनका द्वारा एतेक काज सम्पादित भेलाक उपरान्तो, विद्यापतिक पुनर्मूल्यांकनक बेगरता छै, से हमरा लगैत अछि।

मिथिलाक परम्परित पण्डित-समाज मे विद्यापतिक प्रति केहन प्रबल निरपेक्षता रहैक, तकर अनुमान एक एही बात सँ लगाओल जा सकैए जे विद्यापतिक प्रारम्भिक अनुसंधित्सु लोकनि जखन हुनक ग्रन्थ सभक पाण्डुलिपिक खोज करए लगलाह तँ आइ हमरा लोकनि हुनक जतेक ग्रन्थ (गीत नहि, ग्रन्थ) देखै छी, ताहि मे सँ एक्को टाक कोनो पाण्डुलिपि मिथिला मे नहि पाओल जा सकल। ग्रन्थकार विद्यापति जँ बचाओल जा सकलाह तँ मिथिला सँ बाहरे। मिथिला मे बचि सकल मात्र हुनक गीत तँ से स्त्रिगणक प्रसादें जे विभिन्न अवसर पर सामूहिक रुपें एकरा गबै छली आ शूद्रलोकनिक प्रसादें, जे एकरा नाच मे प्रस्तुत करै जाइ छलाह। बिल्कुल सत्य थिक जे ई गीत सभ कोरस मे गाओल जाइत छल। कोनो अवसर-विशेष पर स्त्रिगण एसकर गौती किए आ नाच मे एसकर गाओल कोना जाएत? ई एक तथ्य थिक जे बीसम शतीक पूर्वार्द्ध मे पचगछिया घरानाक विख्यात गायक मांगनि खबास प्रथम-प्रथम विद्यापति-गीत कें एसकर गेबा योग्य भास मे निबद्ध केलनि आ अखिल भारतीय स्तर धरि पर जाक' एकरा मंचीय प्रस्तुति देलनि। स्त्रिगणक समूह-स्वर-भास सँ अलग एकल गेय विद्यापति-गीतक आइ जे कोनो भास सुनबा मे अबैत अछि, से मांगनि खबासक मौलिक संगीत-रचना थिकनि।[14] रमानाथ झाक जीवन-काल मे विद्यापति-गीतक एकल प्रस्तुति चलन मे आबि गेल छल। से बेस लोकप्रियो भ' रहल छल। आ से आधुनिकताक अनुकूलो छल। आ से एकर देशव्यापी प्रचारोक अनुकूल छल। रमानाथ झा जखन विद्यापति-गीत कें एकल रूप मे गाओल जेबाक विरोध (मात्र असहमति नहि) करैत छथि[15], तँ तकर कारण प्राचीनताक प्रति प्रबल पक्षपाते टा देखि पड़ैत अछि। एक एहन पक्षपात, जे आधुनिकताक विरुद्ध तँ जाइते हो, अपन सांस्कृतिक सौरभ कें देश-विदेश पसरब धरिक विरुद्ध जाइत हो। दोसर एक खटकैबला बात ई लगैत अछि जे नटुआ सभक समूह-स्वर मे ओ

विद्यापति-गीत (अर्थात विदापत-नाच) कतेको बेर सुनने छलाह जकर कि ओ चर्च स्वयं केलनि अछि, आ से नटुआक गीत समाज मे प्रचलित आ लोकप्रियो छल जे आब लुप्त भ' गेल, तकरा बचाओल जेबाक चिन्ता हुनका नहि भेलनि, तकरा बदला देवघरक पुरुष पण्डित-मण्डलीक मुहें सुनल समूह-संगीत कें ओ विद्यापति-संगीतक उच्चतम आदर्श घोषित केलनि आ तकरा बचेबाक अपील केलनि। अवगत छी जे परम्परागत रूप सँ ब्राह्मण पुरुष-मण्डलीक द्वारा विद्यापति-गीत समूह-स्वर मे गाएब प्रचलन मे नहि छल। देवघरक ओ दृष्टान्त अपवाद-स्वरूप छल, जेहो कि संभवतः आब लुप्त भ' गेल हएत। तात्पर्य जे प्रमाण ओ अपन अभिरुचि कें मानैत छथि जनताक अभिरुचि कें नहि। फल अछि जे हुनकर लेखन मे अक्सरहाँ हमरा लोकनि प्राचीनताक क्षरणक कारण हुनका सीदित-पीड़ित होइत देखैत छियनि, से चाहे परम्परागत धार्मिक आस्थाक क्षरणक प्रसंगें हो वा कि प्राचीन होरी-गीतक लुप्त भ' जेबाक कारण।

तखन हमरा लोकनि ईहो देखैत छी जे वस्तुक स्तर पर भने ओ प्राचीनताक पक्षपाती आ ताहि कारणें यथास्थितिवादी होथु, मुदा वस्तु धरि पहुँचबाक जे हुनक प्रविधि छनि, से धरि अत्यन्त निस्सन आ सटीक छनि। हुनक श्रमसाध्य अनुसन्धान-प्रक्रियाक मादे किछु बात हम पहिनहि कहि गेल छी। तकरा दोहराएब निरर्थक। तात्पर्य एतबे जे आधार-सामग्रीक चयन, तथ्यक अन्वेषण सँ ल' क' तकर संयोजनक तरीका हुनकर एकदम तर्कसंगत होइत छलनि। तखन तँ कहि गेलाह अछि ई. एच. कार जे इतिहास-लेखन मे तथ्यक अंश दसे प्रतिशत मात्र होइत छैक, शेष नब्बे प्रतिशत तँ भेल करैत छैक इतिहासकार द्वारा कएल जाइबला व्याख्या आ ओकर मंशा जे ओहि लेखन द्वारा अन्ततः ओ प्रमाणित की कर' चाहैत अछि।[16] से, रमानाथ झाक प्रसंग मे हमरा लोकनि देखैत छी जे तथ्यक व्याख्या सँ ल' क' निष्कर्ष धरि मे ओ अपन अभिरुचि कें अन्तिम प्रमाण मानि लैत छथि। एही कारण सँ हुनकर सम्पूर्ण आलोचनात्मक लेखन आत्मानुभूतिपरक शैली मे लिखल गेल अछि। हुनक लेखनक सभ सँ प्रबल अन्तर्विरोध एकरा कहल जा सकैत अछि, यद्यपि कि अपन आत्म-स्वीकृति मे एकरा गछैयो लेल ओ तैयार भेटैत छथि- *'निष्कर्ष हमर अपन थिक ओ*

यदि केओ हमरा विचारसँ सहमत नहि होथि तँ तकरा ओ हमर अपन विचार मानि लेथि।[17]

यद्यपि रमानाथ झा आलोचना-लेखन मे रुचिक महत्त्व कें कतहु-कतहु स्वीकार करितो अधिक ठाम अस्वीकारे केलनि अछि, मुदा हुनकर सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक समीक्षा-दृष्टिक जे ई फांक अछि, तकरा बहुतो ठाम जगजियार देखल जा सकैत अछि। हुनक विरोधी लोकनि जे हुनकर प्रबल विरोध केलथिन, तकरा वस्तुतः एहि फांकेक विरोध मानबाक चाही।

दोसर दिस हमरा लोकनि देखैत छी जे अपन आलोचनात्मक लेखनक लेल जाहि भाषाक ओ प्रयोग केलनि, से सर्वाधिक प्रभावशाली साबित भेल। हुनक निबन्ध सभ कें आ पाठ-आधारित हुनक टिप्पणी सभ कें देखी तँ दुनूक भाषा मे थोड़े अन्तर जरूर देखाब दैत अछि, मुदा अन्ततः दुनू अपन प्रकृति मे समान अछि। हुनक भाषाक सभ सँ पैघ गुण थिकनि--संश्लिष्टता, जे कि हुनक व्यक्तित्वे सँ उतरि क' अन्ततः भाषा मे निबद्ध भेल अछि। ई संश्लिष्टता तथ्य आ तर्कक प्राबल्य सँ उद्‌भूत अछि। एकर प्रकृति अनुशासनात्मक सेहो अछि, कारण पहिनहि जेना कि चर्चा क' आएल छी, आलोचनात्मक लेखन कें ओकर विहित भाषा-शैली सँ भिन्न भाषा मे निबद्ध करबा मे हुनका भारी आपत्ति रहनि। ध्यान रखबाक थिक जे ओतहु, जतय ओ आलोचनाक शैलीक नियमन करैत छथि, हुनक तात्पर्य आलोचनाक भाषा आ रूप सँ, सैह, होइत छनि।

रमानाथ झाक भाषा मे हमरा लोकनि बेस ताजगी आ सर्जनात्मकता देखैत छी। प्राचीनताक प्रति हुनक प्रबल पक्षपात कें देखैत एहि तरहक स्पन्दनशील भाषा लिखि पाएब एक असम्भव सन बात लगैत अछि, मुदा जे कि पूरा-पूरी सत्य थिक। हम सभ देखि सकैत छी जे आइयो जे प्राचीनताक पक्षपाती लोकनि मैथिलीक संसार मे छथि से ओ कविता लिखथि तौं, गद्य लिखथि तौं, केहन सड़ल मुरदा-सन प्राणहीन-स्पन्दनहीन-सर्जनात्मकतारहित भाषा लिखैत छथि। सुप्रसिद्ध तथ्य थिक जे भाषा मात्र भाषा नहि, ओ प्रयोक्ताक व्यक्तित्वक आइना होइत अछि। कतबो होशियारी सँ भाषा मे फूसि बाजल जाय, ओ अहाँक पाखण्डक लुतरी लाड़िये देत। से, रमानाथ झाक जीवन्त भाषा कें देखैत छी तँ लगैत

अछि जे विचारधाराक स्तर पर हमरा लोकनि सँ भने ओ कतबो दूर रहथु, बैमान धरि ओ निश्चये नहि छलाह। प्राचीनताक प्रबल पक्षपात मे जे हुनकर परिणति भेलनि, से अन्ततः हुनक मौलिक अन्वेषणक भित्ति पर टिकल छलनि आ वैह हुनका ओ आत्म-दीप्ति प्रदान केलकनि, जकरा बदौलति युग-धर्म आ लोकतन्त्र-सनक नियामक शक्तिक विरोध करितो ओ अपन विचार-निष्ठा बचौने राखि सकलाह। आइ अथवा आबैबला युग मे ओ कतेक प्रासंगिक रहताह, से अवश्ये एहि सँ भिन्न एक प्रश्न थिक।

रमानाथ झाक भाषाक ई जादू, जे कि ओकर जीवन्तताक कारण-स्वरूप छल, तते प्रबल भेल जे आगू यैह प्रतिमान बनल रहल। विचार आ निष्पत्ति मे भने क्यो हुनका सँ कतबो विपरीत भ' जाथु, भाषा धरि मे हुनके अनुगामी बनल रहलाह।

निर्वचनक स्तर पर हुनका आलोचना मे जँ हम सूत्रात्मक आ टीकात्मक प्रवृत्ति पबैत छी तँ तकरा परम्परागत सूत्र आ टीका सँ थोड़ेक फराक क' क' बुझल जेबाक चाही। व्यावहारिक आलोचना मे ओ पाठ-आधारित विश्लेषण कें प्रतिष्ठित केलनि। एहू मे हुनक आदर्श भेलथिन अंग्रेजी कवि-आलोचक टी. एस. इलियट, जिनका ओ आदरपूर्वक 'एलियट साहेब'क सम्बोधन दैत छथि। एक ठाम अपन मानदण्ड स्पष्ट करैत ओ लिखैत छथि- *'एलियट साहेबक मतें समालोचना कर्म मे दुइएटा कार्य छैक--एक तँ टीका ओ व्याख्या द्वारा साहित्यिक कृतिक आशय कें स्फुट करब, ओ दोसर, ओहि स्फुटीकरण सँ ओहि कृतिगत प्राशस्त्य कें ख्यापित कए ध्यान कें अनावश्यक ओ आनुषंगिक विषय सँ हटाए आवश्यक ओ मुख्य विषय दिशि आकृष्ट करब जाहि सँ पाठकक रुचिक सम्यक्तया परिष्कार भए सकए।'*[18] कहब आवश्यक नहि जे एहि रीतिक टीका परम्परागत संस्कृत टीका सँ भिन्न अछि, कारण एहि मे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य कें समेटब एक प्रधान चेष्टाक रूप मे रहैत अछि, जकर अभाव हमरा लोकनि संस्कृतक टीका मे देखैत छी आ जकरा स्वयं रमानाथ झा संस्कृत-समीक्षा कर्मक एक कमी आ सीमाक रूप मे चिह्नित करैत छथि।[19] दोसर जे अपन निबन्धादि मे ओ रचना वा रचनाकार पर अपन पूरा बात कहि गेलाक बाद जाहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि से बहुधा

सूत्रात्मक प्रकृतिक होइत अछि, कारण ओकर उत्तर-व्याख्याक सेहो प्रयोजन बनल रहैत छैक।

पहिनहि कहि आएल छी जे रमानाथ झा बहुत उच्च कोटिक प्रतिभाशाली व्यक्ति छलाह। बहुत जतन सँ आ बहुतो श्रम लगाक' ओ आधार-सामग्री सभक अन्वेषण-चयन-विश्लेषण केलनि। यथाशक्ति सौंसे जीवन ओ उद्यमशील रहलाह। तखन, मानए पड़त जे हुनकर व्यक्तित्व आ तें हुनकर लेखन अनेक-अनेक सीमा सभ सँ आबद्ध छलनि, जे कतहु तँ हुनक पक्षपातक रूप मे तँ कतहु हुनक अन्तर्विरोधक रूप मे प्रकट होइत अछि। ताहि मे सँ अपन किछु सीमा कें अपन आत्मस्वीकृति मे ओ विनम्रतापूर्वक गछबो केलनि। हुनक एहन किछु प्रमुख सीमा सभ पर एक दृष्टि देल जाय तँ आबैबला जुग लेल हुनक प्रासंगिकता-अप्रासंगिकताक किछु संकेत भेटि सकैत अछि।

हुनका-सन पैघ व्यक्तित्वक लेल, जे कि मैथिली मे आधुनिकताक प्रतिष्ठापक पुरुष मे सँ एक छलाह, आवश्यक छल जे ओ भविष्यक प्रति स्वप्नद्रष्टा होइतथि। आबैबला जुग मे जखन कि मिथिलाक लोक साक्षर-शिक्षित हएत, कमाएत-खाएत, अपन अधिकार आ कर्त्तव्यक प्रति जागरूक हएत, बाहरी भाषा-संस्कृतिक घात-प्रतिघातक सामना करत, तैखन मैथिली साहित्य आ मिथिलाक संस्कृतिक की 'मॉडल' हएत, तकर कोनो विधिवत आयोजन हुनका लग नहि रहनि, जे कि प्रविधि-विशेषज्ञ हेबाक नातें हुनका सँ आरो बेसी आशा कएल जा सकैत छल। ई हुनक सभ सँ पैघ सीमा रहनि।

दोसर जे इलियट आदि पाश्चात्य आधुनिक विचारकक मानदण्ड कें स्वीकारि क' ओ मिथिलाक गौरवशाली अतीतक उत्खनन केलनि, हुनकर कएल काज मैथिलीक अग्रेतर विकासक लेल आधारशिला थिक जे सभ क्यो मानैत छी। मुदा ओ देश-काल-परिस्थिति हमरा लोकनि कें मोन रखबाक चाही जखन इलियट अपन विचार प्रस्तुत केने छलाह। आधुनिक युगक संक्रमण-काल मे, जखन कि साहित्य तँ आधुनिक आ नवीन भ' रहल छल, मुदा समीक्षक लोकनि ओकरा नवीन तरहें बुझबाक उदारता नहि देखा पाबि रहल छलाह, इलियट आ हुनक रचनाकार-संवर्ग, वर्त्तमान

कें आलोकित करबाक दृटिकोण सँ अपन विचार कें सिद्धान्तीकृत केने छलाह। ठीक थिक जे जे मानदण्ड हमरा वर्त्तमान कें बुझबाक लेल बनल अछि तकरा द्वारा हम अतीतो कें बूझि सकैत छी। मुदा, इलियट के संसर्ग पाबियोक' रमानाथ झा आश्चर्यजनक रूप सँ वर्त्तमान युगसत्य आ तकर चुनौतीक प्रति विरक्त आ विरुद्ध बनल रहलाह, से हुनकर सुस्पष्ट सीमा छलनि।

हम सभ जनैत छी जे समीक्षाक प्रयोजन ओ जनताक 'सत्प्रवृत्ति'क रक्षाक लेल मानलनि। तहिना, साहित्यकार लोकनि सँ ओ सदैव ई आशा केलनि जे ओ एहन साहित्य लिखथु जे जनता मे 'सत्प्रवृत्ति'क जागरण मे सहायक हो। बात ई बहुत उत्तम छल, से के नहि मानत? मुदा, हमरा लोकनि चकित होइत छी जखन एहि सत्प्रवृत्तिक हुनक लघु सीमा कें देखैत छी। ओ स्पष्ट लिखलनि जे सत्प्रवृत्तिक अर्थ धार्मिक आ नैतिक उत्कर्ष सँ अछि। कहब आवश्यक नहि जे एहि 'नैतिक' शब्द कें हम कतबो अतिव्याप्त बना ली, तैयो समकालीन जीवन-संघर्षक तमाम ताना-बाना कें एहि मे समेटि पाएब असम्भव अछि। रमानाथ झाक प्रशस्ति मे अनेक तथ्य राखितो रामानुग्रह झा अपन निबन्ध मे हुनकर एहि सीमा कें एहि रूपें अंकित केलनि अछि- *'नव साहित्यक नवीन जीवन-दृष्टि, उपेक्षित मानवीय धरातलक स्वीकृति, मानवताक परिधिक विस्तार, युग-यथार्थक ग्रहणशीलता, संघर्षशील संकल्प, जीवन्त परम्पराक नव उपस्थापन, नव सम्वेदनाक अनुरूप नवीन शिल्प-शैलीक प्रयोजन, नवीन बिम्ब आ प्रतीकक भाव-संयोजन आदि आचार्यश्रीक शास्त्रीय रुचि कें प्रभावित नहि कयलक, नहि क' सकल।'*

तहिना, 'जनताक रुचिक परिष्कार' कें तँ ओ आलोचनाक लक्ष्य अवश्य घोषित केलनि मुदा जनताक परिधि ततेक लघु, तते क्षीणकाय छल जे एहि मे मात्र सुशिक्षित ब्राह्मण-पण्डित-परिवारे टा अँटि सकैत छल। एही कारणें हमरा लोकनि हुनक लेखन मे पूर्वबोधापेक्षी प्रवृत्ति देखैत छी। जकरा पूर्वहि सँ साहित्यक बोध प्राप्त नहि रहतैक, से मात्र हुनका नमन टा क' सकैत अछि, हुनका सँ लाभान्वित नहि भ' सकैछ। तहिना, जनताक रुचिक परिष्कार जँ ओ चाहबो केलाह तँ ताहि लेल अपन रुचि कें स्वतः

प्रमाण मानि लेलनि, जखन कि हुनका सँ जनताक रुचिक अवगतिक आ तकरा प्रमाण मानबाक अपेक्षा कएल जा सकैत छल।

एही प्रकारक एक भिन्न प्रसंग मैथिली भाषा-रूपक मानकीकरण सँ सम्बन्धित हुनक मान्यता कें ल' क' अछि। हम सभ जनैत छी रमानाथ झा गहन अन्वेषण सँ प्राप्त एहि तथ्य कें उदारतापूर्वक स्वीकार केलनि जे मैथिली साहित्यक आदिकालीन उद्‌भव मूलतः आ प्रमुखतः ब्राह्मणेतर शूद्रादि वर्गक उद्यमक प्रसादें भेल। ओ इहो मानैत छथि जे मैथिली साहित्यक विकास संस्कृतक विरोध मे भेल अछि। मुदा आधुनिक युग मे आबिक' जखन भाषारूपक मानकीकरणक प्रश्न उठल तँ ने केवल ओ संस्कृत-शैलीक आग्रही बनल रहलाह अपितु आभिजात्य कुल-मूलक सीमित लोक द्वारा प्रयुक्त मैथिलिए कें मानक मैथिलीक दरजा देलनि। जनताक कोनो अस्तित्व हुनका सोच मे नहि रहलनि, ओहि जनताक जे अपना आवश्यकतावश अपन उद्यमक बलें एहि भाषा-साहित्यक विकास केने छल।

आजुक साहित्य आ आलोचना कें देखी तँ पबैत छी जे परिस्थिति पूराक पूरा बदलि गेल अछि। आब ने ओ चिन्ता आ ने ओ आग्रह केन्द्र मे रहि गेल अछि, जकरा तहिया सभ सँ पैघ मुद्दा कहि क' बूझल जाइत छल। जनता कें प्रमाण मानबाक प्रवृत्ति सर्वस्वीकृत नैतिकता जकाँ ग्रहण कएल गेल अछि। प्राचीनताक पक्षपातक सोच जे कि यथास्थितिवादक झण्डाबरदार छल आ जकर पर्यवसान अन्ततः भाववाद मे आबि क' होइत छल, अप्रासंगिक भ' चुकल अछि। एकर पछाति जे परिस्थिति बनल अछि, ताहि प्रसंग मे मोहन भारद्वाज कहैत छथि- *'साहित्य जेना-जेना अभिजात सँ जन दिस बढ़ैत गेल अछि तेना-तेना मैथिली समीक्षा सेहो भाववादी सँ जनवादी होइत गेल अछि। गत शताब्दीक आठम-नवम दशक धरि वस्तुवादी समीक्षा कें एतेक साहित्य उपलब्ध छलैक जे ओ अपन विचार आ दृष्टिकोण कें तथ्य आ तर्क सँ सम्वलित क' सकय। तकरा बाद तँ स्थिति क्रमशः प्रभावकारिये होइत गेल अछि।'*[21]

एहि स्थिति कें प्रभावकारी बनेबा मे जे उपकरण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भेल अछि, से थिक आलोचक लोकनिक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण।

वस्तुवादी इतिहास-दृष्टि, से एम्हर बेस केन्द्रीयता प्राप्त केने अछि। वर्त्तमान समाज, वर्त्तमान संस्कृति आ साहित्य आब चिन्तनक केन्द्र मे अछि आ तकरा परखबाक हेतु इतिहास मे उतरल जाइत छैक। इतिहासो आब ओ नहि रहलैक, जे तहिया गरिमामय आसन पर विराजमान छल। जनताक जीवन, ओकर दशा-दिशा, ओकर परम्परा आ प्रयोग एहि वस्तुवादी इतिहास-दृष्टिक केन्द्र मे अछि।

हमरा लोकनि अवगत छी रमानाथ झाक क्यो उत्तराधिकारी नहि भेलथिन। से हएब सम्भवो नहि छल। हुनक सतत शिष्योपशिष्य-परम्परा सेहो कोनो विकसित नहि भेलनि। तखन, एतबा अवश्य भेल जे हुनक साक्षात शिष्यत्व तथा मार्गदर्शन मे किछु मेधावी पुरुष किछु महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न क' सकलाह। एहन लोक मे सं डॉ. जयधारी सिंह तथा डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' आदि मुख्य छथि। डॉ. जयधारी सिंहक अनुसन्धान एक मानक कार्य थिकनि। आगू चलि क' मैथिली विषयक अनुसन्धानक जे दुर्दशा भेल से ककरो सँ नुकायल नहि अछि। विश्वविद्यालय सभक मैथिली विभाग चारि दशक मे अनुसन्धानक क्षेत्र मे की महत्त्वपूर्ण अवदान द' सकल अछि से जँ पूछल जाय तँ कोनो काजक उत्तर भेटब कठिन हएत। मिथिला-मैथिली विषयक आइ जँ कोनो महत्त्वपूर्ण काज भैयो रहल अछि तँ से साहित्यक अनुशासन सँ बाहर जा क' भ' रहल अछि, इतिहास-समाजशास्त्र आदि अन्यान्य विषयक अनुसंधित्सु द्वारा कएल जा रहल अछि आ मैथिली सँ इतर भाषा मे सम्पन्न भ' रहल अछि। हम निश्चिते, एकरा मिथिला-विषयक व्याप्तिक प्रसार क' क' बुझैत छी।

मैथिली मे आइ अनुसंधान आ आलोचना अलग-अलग रूप मे विकसित अछि। अनुसंधान-प्रकृतिक मैथिली लेखन, आइ जे सार्थक कोटिक भ' रहल अछि, तकर उदाहरणार्थ पण्डित गोविन्द झा (भाषाक क्षेत्र मे) डॉ. भीमनाथ झा तथा रमानन्द झा 'रमण' (साहित्यक क्षेत्र मे)क काज कें देखल जा सकैत अछि यद्यपि कि हिनका लोकनिक सेहो अपन स्पष्ट सीमा छनि।

जनपक्षधर आलोचनाक अग्रणी पुरुषक रूप मे डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नाम लेल जाइत अछि। हुनक कएल काज ओहि अधिकांश

सीमा सभक अतिक्रमणक बाट देखौलक, जाहि सँ हमरा लोकनि रमानाथ झाक लेखन कें आबद्ध पबैत छी। व्यावहारिक आलोचनाक सिद्धान्तीकरणक एक सबल प्रयास हमरा लोकनि आगू कुलानन्द मिश्रक लेखन मे पबैत छी। भाषा आ शिल्पक स्तर पर मुदा ओ काञ्चीनाथ झा 'किरण'क प्रति नहि, अपितु रमानाथ झाक प्रति ग्रहणशील पाओल गेलाह। आइ, जँ जनपक्षधर आलोचनाक अनुकूल एक सबल आलोचना-भाषा सेहो विकसित अछि, तँ एकर एक पैघ श्रेय मोहन भारद्वाज कें छनि, यद्यपि कि हुनकहु अपन गंभीर सीमा छनि जकरा किछु गोटे हुनकर 'चालाकी' क' क' बुझैत छथिन।

एम्हर, आलोचनाक लोकतांत्रिक स्वभाव बेस फड़िच्छ भ' क' सामने आएल अछि। आ से, विचार आ भाषा--दुनू स्तर पर। अप्रियो निष्कर्ष कें स्वीकार करबाक साहस जँ आलोचक आ रचनाकार दुनू मे विकसित भेलनि अछि तँ तकर मूल कारण थिक--इतिहास-दृष्टिक उत्तरोत्तर विकास।

तखन, कमी जे आजुक आलोचना मे छैक, सेहो अपना जगह पर गंभीर अछि। रमानाथ झा जाहि तरहें आधार-सामग्रीक चयन, अन्वेषण, विश्लेषण प्रचुर श्रम आ अतन्द्रताक संग कएल करथि, आ ताहि कारण सँ हुनक रचना तथ्य आ तर्कक स्तर पर जतेक सबल भेल करनि, ताहि मे ह्रास भेल अछि जखन कि हुनका लेल तहिया ई करब जते कठिन छलैक, आइ विभिन्न स्रोत उपलब्ध रहलाक कारण तते कठिन नहि रहि गेल अछि। दोसर, देश-विदेशक चिन्तन-विचारक प्रतिबिम्बन तँ आजुक आलोचना मे खूब भ' रहल अछि, मुदा मिथिला-आधारित निष्पत्तिक अभाव देखार पड़ैत अछि। जेना मिथिलाक प्रति प्रतिबद्धता मे ह्रास भेल हो। आजुक भूमण्डलीकरणक काल-परिस्थिति मे तँ एकर आरो बेगरता छैक।

(2006)

सन्दर्भ :

1. तुलनीय : काञ्चीनाथ झा 'किरण'क आलेख मै. सा. मे आधुनिकताक आरम्भ : सन्धान-2

2. रमानाथ झा : विद्यापति : साहित्य अकादेमी
3. मोहन भारद्वाज : रमानाथ झाक महत्त्व
4. रमानाथ झा : समीक्षावृत्ति : विविध प्रबन्ध
5. उपर्युक्त
6. उपर्युक्त
7. रमानाथ झा : समालोचना : विविध प्रबन्ध
8. उपर्युक्त
9. द्रष्टव्य--'सारस्वत सरमे हे मराल'--डॉ. अमरनाथ झा तथा डॉ अमरेश पाठकक मोनोग्राफ 'रमानाथ झा'
10. रमानाथ झा : मिथिलाक उत्कर्ष : विविध प्रबन्ध
11. उपर्युक्त
12. रमानाथ झा : समालोचना : विविध प्रबन्ध
13. रमानाथ झा : विद्यापति-पर्व बिसपी, 1967 अध्यक्षीय भाषण
14. विशेष सन्दर्भ हेतु देखी-- 'मिथिला विभूति मांगनि' : डॉ. चण्डेश्वर झा
15. रमानाथ झा : विद्यापति-संगीत : मिथिला मिहिर, 23.02.1969
16. ई. एच. कार : ह्वाट इज हिस्ट्री
17. रमानाथ झा : भूमिका : विविध प्रबन्ध
18. रमानाथ झा : समालोचना : विविध प्रबन्ध
19. उपर्युक्त
20. रामानुग्रह झा : 'प्रो. रमानाथ झा' : आरम्भ तथा मैथिली अकादमी पत्रिका : संयुक्तांक 05-06
21. मोहन भारद्वाज : मैथिली साहित्य मे समीक्षाक स्थिति : मैथिली दर्शन : अप्रैल-जून 05

किरणजीक महत्त्व

विगत वर्षक उत्तरार्ध मे, पटना मे एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी आयोजित कयल गेल। ई आयोजन मैथिलीक ओहन वरेण्य रचनाकार लोकनि, जिनकर जन्मक शताब्दी-वर्ष 2006 छल--आचार्य रमानाथ झा, काशीकान्त मिश्र मधुप आ काञ्चीनाथ झा 'किरण' पर केन्द्रित छल। 'प्रतिमान' द्वारा दू चरण मे कुल पाँच दिन मे संयोजित एहि संगोष्ठीक दू पृथक दिन काञ्चीनाथ झा 'किरण'क अवदान आ प्रासंगिकता पर केन्द्रित छल। मुदा, ओहि ठाम देखल गेल जे पाँचो दिनुका आयोजन मे, भने कोनो आने व्यक्ति अथवा विषय पर बात भ' रहल होउ, 'किरण' चर्चाक केन्द्र मे बनल रहलाह। कतहु जँ बात हुनके चौबगली घुमल तँ कतहु ओ विकल्पक तौर पर सामने आनल गेलाह।

वर्त्तमान समय मे मिथिला आ मैथिली कें ल' क' जे क्यो जागरूक चिन्ता रखनिहार लोक छथि, ओ भने ज्ञान आ कर्मक कोनहु अनुशासन सँ जुड़ल होथि, सभक ध्यान एहि दिस आकृष्ट भेल अछि, जकर ब्योंत बैसेबा लेल किरणजी जीवन भरि अपस्याँत रहलाह। 'मिथिला' जकरा हमरा लोकनि कहै छी, मोन रखबाक चाही जे ओहि मिथिलाक भीतर दू टा मिथिला अछि--बुनाबटि, चरित्र आ लक्ष्य तीनू मे भिन्न-भिन्न। एक टा जँ दरभंगा राजक बबुआन आ हुनकर लगुआ-भगुआक मिथिला थिक तँ दोसर हुनका लोकनिक शोषण सँ सीदित, असमानताक डाँग सँ डेंगाओल रैयत लोकनिक एक भिन्न मिथिला थिक, जकर ने मात्र अस्मिता भिन्न छै अपितु जीवन-दर्शन सँ ल'क' चिन्तन-परम्परा धरि भिन्न छै। एक टा

मिथिला जँ सामन्तवादी-ब्राह्मणवादी लोकनिक मिथिला थिकनि तँ मोन रखबाक थिक जे एक टा आर मिथिला अछि--किसानी संस्कृतिक मिथिला, जकर खास पहिचान थिक--जीवन आ तकर संरक्षण लेल अनन्त आत्मीय राग, आध्यात्मिकताक हद धरि पहुँचल बेलौसपन आ प्रगतिशील तत्त्वक प्रति सतत पक्षधरता, सत्य कें सत्य कहबाक साहस। वस्तुवादी ढंग सँ सोचनिहार लोक मिथिलाक इतिहास मे साफ-साफ देखि सकैत छथि जे मिथिलाक किसानी समाज सँ जीवन-तत्त्व ग्रहण क'क' एतुक्का पंडित-समाज अपन व्यक्तित्व आ विद्या कें खूब चमकाबैत रहल, मुदा सभ दिन, लोकपक्ष आ जन-संस्कृतिक कट्टर दुश्मन बनल रहल, ओकरा सैंतबाक ब्योंत बैसबैत रहल।

स्वयं मैथिलीक संग समस्या की थिक? सभ जाननिहार लोक जनैत छथि जे मैथिली भाषा आ एकर साहित्यक उद्‌भव सनातनी ब्राह्मण लोकनिक पण्डित समाज सँ विद्रोह क'क' ब्राह्मणवादी गतिहत परम्परा कें एकात क'क' भेल छल। एतुक्का श्रमशील जनता अपन ठेठ भाव-विचारक माध्यमक रूप मे एहि भाषाक विकास केने रहए। ज्योतिरीश्वर वा विद्यापति-सन प्रतिभावान लोक जँ एहि भाषा कें अपन रचना-माध्यम बनौलनि तँ मोन रखबाक थिक जे ओहो लोकनि कट्टर पण्डित-मर्यादा कें भंगे क'क' एहि दिस डेग उठौने छलाह, आ एहि लेल पण्डित समाज हुनका लोकनिक पर्याप्त दुर्गंजन सेहो केलकनि। मुदा, आगू चलिक' हमरा लोकनि देखै छी जे ई मैथिली सामन्तवादी-ब्राह्मणवादी पण्डित समाजक गछाड़ मे सकपंज क' लेल गेलीह। एत' धरि जे एहि श्रमशील आमलोकक भाषाक मानकीकरण जखन कयल जाय लागल तँ उच्च कुलक सम्भ्रान्त भोगीश्वर लोक सभक द्वारा 'इस्तेमाल' कयल जायबला भाषा कें 'शुद्ध मैथिली'क नाम देल गेल।

एम्हर, जकरा भाषाक संग ई सभ घालमेल होइत रहल, ओहि श्रमजीवी समाजक मुँह मे बोल नहि, हाथ मे कलम नहि, एत' धरि जे नस मे खून नहि जे अपन शोषकक पिट्ठू लोकनिक मंशा कें देखार क' सकय। ई पिट्ठू लोकनि 'मैथिल'क अर्थ तय केलनि--मिथिलाक ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ। बीसम शताब्दीक दोसर-तेसर दशक मे जखनकि सौंसे भारतक

लोक अपन-अपन भाषा-संस्कृतिक प्रति आत्मीय अनुराग रखने, ओकर विकास करैत, राष्ट्रीय मुख्यधाराक अंग भ' रहल छल-एत' ई पण्डित लोकनि मिथिला समाज कें खण्ड-पखण्ड बाँटि देने छलाह आ वेदोच्चारण-पूर्वक राजभक्तिक गीत गाबै मे मस्त छलाह।

एहि समस्त घालमेल कें देखार केनिहार, सक्क भरि यथार्थक उद्‌घाटन केनिहार आ जान अड़पि क' जन-संस्कृतिक पक्ष लेनिहार जे वरेण्य लोक अपना समाज मे भेलाह, ताहि मे अग्रणी छथि काञ्चीनाथ झा 'किरण'। एहि भाषा आ संस्कृतिक उन्नयन लेल जुनूनी हद धरि ओ उद्यमशील रहलाह आ अपन कएल काजक बदौलति जीवित आदर्श बनि गेलाह।

काञ्चीनाथ झा 'किरण'क जीवन मे ततेक मोड़ आ घुमान हमरा लोकनि देखैत छी जे कतोक बेर चकित भ' जाय पड़ैत अछि। ओ हद दरजाक रगड़ी लोक छलाह। उद्यमशील तेहन जे जाहि काज मे लगलाह, ओकरा एक निष्पत्ति धरि पहुँचाइये क' दम लेलनि। अपना परिसर मे ओ अभूतपूर्व प्रेरणा-पुरुषक रूप मे स्मरण कयल जाइत छथि।

सामाजिक गतिविधिक क्षेत्र मे हुनक प्रवेश स्वतंत्रता-आन्दोलनक माध्यमे भेलनि। काशीक अन्तर्प्रादेशिक परिवेश मे, जत' ओ आन-आन क्षेत्रक लोक कें अपन-अपन भाषा-संस्कृतिक उन्नतिक वास्ते प्रयत्नशील पाबथि, मैथिली-भाषी लोकनि मे व्याप्त स्पन्दनहीनता हुनका सक्रिय गतिविधि सँ जोड़लकनि। आम लोकक सम्बद्धता सुनिश्चित करबाक हेतु ओ यात्री जी आ आन किछु सहयोगीक संग मिलि क' हस्तलिखित पत्रिका बहार केलनि आ तेकरा जखन सामग्रीक खगता भेलै तँ अपनहुँ साहित्य-रचना दिस उन्मुख भेलाह। गाम-घरक परिसर मे एला पर जखन ओ सांस्कृतिक प्रश्न सभक प्रति, भाषा आ साहित्यक प्रति, आम लोकक निस्पृहता आ किंकर्त्तव्यविमूढ़ता देखलनि तँ भाषा-आन्दोलन, विद्यापति गोष्ठी आदि मे लगलाह, जे कदाचित हुनक सभ सँ पैघ अवदानक रूप मे स्मरण कएल जाइत अछि। एही क्रम मे हुनकर ध्यान मैथिलीक वरेण्य विद्वान लोकनिक वैचारिक स्खलनक दिस गेलनि जत' ओ देखलनि जे वस्तुस्थितिक विपरीतो जाक' तथ्यक उपस्थापन मे पण्डित-संस्कृतिक वर्चस्व बनौने रखबाक हेतु

पक्षपात कएल जा रहल अछि, ओ आलोचनात्मक लेखन मे प्रवृत्त भेलाह। साहित्य सृजनक क्षेत्र मे निस्सन्देह ई हुनक सभ सँ पैघ अवदान थिक। ओ सदैव एक जुझारू आ संग्रामी व्यक्तित्व जकाँ तथ्यक अन्वेषण आ उपस्थापन केलनि आ एहि लेल पण्डित-समाज मे खिधांसोक पात्र बनलाह। हुनका 'प्रतिक्रियाक रचनाकार' कहल गेल। आइयो हुनक लेख सभ कें आलोचना नहि अपितु 'प्रत्यालोचना'क कोटि मे रखबाक आग्रह देखल जाइत अछि। तखन ओ गवेषणाक क्षेत्र मे प्रवृत्त भेलाह। वर्णरत्नाकर पर अकादमिक तौर पर शोध प्रबंध लिखैत ओ प्रचलित मान्यताक विरुद्ध जाक' स्थापना देलनि जे वर्णरत्नाकर गद्यक ग्रन्थ नहि थिक अपितु लोकगाथाक प्रयोक्ता आ प्रस्तोता लोकनिक उपयोगार्थ, लोकगाथेक शैली मे लिखित एक काव्य-ग्रन्थ थिक जाहि मे काव्यक सभ उपकरणक विवरण रूपायित भेल अछि। हुनक ई शोध-प्रबन्ध आब प्रकाशित अछि।

'किरण'क अस्सल महत्त्व हुनकर संस्कृति-चिन्तन ल'क' अछि। मिथिला, मिथिलाक आम लोक, आ एहि आम लोकक संस्कृति--एहि तीनूक प्रति हुनकर ततेक गहन प्रतिबद्धता छलनि जे तकर वर्णन नहि हो। एहि मामिला मे ओ भीषण रूप सँ एकनिष्ठ रहथि। हुनक ई एकनिष्ठता सेहो ततेक संक्रामक जे ई तीनू नहि, सभ मिलिक' एक भ' गेल छल आ जत' कतहु ओ गेलाह चाहे देह सँ, चाहे मन सँ, सभ कथू कें ई (एकनिष्ठता) एकमएक क' लेने छल। ओ एतुक्का आम लोक कें, आ एतुक्का किसानी संस्कृति कें मुख्यधारा मे देख' चाहैत छलाह। ताहि दिनुका हिसाब सँ हुनक ई लक्ष्य बहुत भारी छलनि--से दू कारण सँ। एक तँ मुख्यधारा पर सामन्तवादी-ब्राह्मणवादी वर्चस्वक कारण दोसर एहि मुद्दा पर आम लोकक निस्पृहता आ जागरण-विहीनताक कारण। मुदा ओ एकान्त निष्ठा रखैत अपन उद्यम मे लागल रहलाह। यैह चीज हुनका पैघ बनबैत छनि।

हुनक आलोचनात्मक लेखन मे हुनकर जुझारू तेवर ने मात्र सभतरि विद्यमान भेटैत अछि अपितु समयक संग ई बढ़िते जाइत अछि। एहि सभ मे हमरा लोकनि जनसंस्कृतिक प्रति हुनक निस्सन पक्षधरता कें बहुआयामी स्वरूप मे देखि सकैत छी। सभ गोटे जनैत छी जे विद्यापतिक प्रति हुनका बहुत श्रद्धा आ गौरव छलनि। आइ जे 'विद्यापति-पर्व' कें मिथिला-मैथिलीक

केन्द्रीय आयोजनक पहिचान प्राप्त छै, से ई हुनके सन लोकक चलाओल थिक। मुदा, जखन जन-संस्कृतिक प्रश्न अबैत छै तँ ओही विद्यापति पर, जनिका कि ओ बहुतो अर्थ मे आधुनिक आ प्रगतिशील मानैत छलाह, कतेक तीक्ष्ण प्रहार करैत छथि, तकर एक बानगी 'फकड़ा' शीर्षक हुनक लेख मे देखल जा सकैत अछि। 'मिथिला भाषा रामयण'क रचना केनिहार चन्दा झा कें आधुनिक कालक 'युग प्रवर्तक' कवि हेबाक सुस्थापित मान्यता पर ओ आपत्ति उठौलनि। ओ कहलनि, *'हमरा दुःख सँ बढ़ि लाज होइत अछि अपन समाजक अविवेक पर। राजा-महाराज आ मुँहगर पण्डित दू-चारि पाँती जोड़िक' अपन दुःख-दर्द अथवा धनपूत-कामना भगवान भगवती कें सुनौलनि, से सभ इतिहास मे जगजिआर बना देल गेला। हुनका लोकनिक फकड़ा काव्यक नाम सँ पाठ्य-ग्रन्थ मे देल गेल आ समस्त मिथिलाक माटिक दुःख दर्दक सजीव चित्र समाज कें देनिहार कवि कें ने इतिहास मे स्थान गेल ने ओकर दुइयो पाँती छात्र-पाठक मे परसल गेल।'* ओ लोक-कवि फतूर लाल सँ आधुनिक युगक आरम्भक अर्जी-दाबी पेश केलनि। ओ ओहि हेराएल लोक-परम्परा कें सामने अनबाक प्रयास मे मुखर रूप सँ लागल रहलाह, जकरा लतमिर्दन क'क' पण्डित-संस्कृति मैथिलीक दुनिया पर राज क' रहल छल।

साहित्यक प्रायः सभ प्रचलित विधा मे 'किरण' लेखन केलनि। मुदा हुनक लेखन प्रचलित रूप सँ थोड़े भिन्न प्रकारक छल। ओ अपन एक्के टा बात, एक्के टा लक्ष्य कें सौंसे जीवन भिन्न-भिन्न शब्द मे, भिन्न-भिन्न रूप मे विस्तार दैत रहलाह। हुनक लेखन एक चिन्ताग्रस्त कार्यकर्त्ता (एक्टिविस्ट)क उद्‌बोधन थिक। ओ अपन लेखन कें सभ दिन आपद्‌धर्मक रूप मे देखलनि आ एकरा गंभीरता सँ लेल जाएब कहियो हुनका जरूरी नहि लगलनि। गंभीरता ततबे दूर धरि हुनका काम्य रहनि जे ई रचना लोक धरि पहुँचओ आ लोक मे जागरण आबौ, जेना कि एक एक्टिविस्टक कामना होइत अछि, ठीक तहिना। अपन एक व्याख्यान मे अपन साहित्य-रचनाक हिसाब दैत ओ कहने छलाह, *'आइ बूझि पड़ैए जेना क्यो कोशिकन्हा मे कतराक झाड़ आ झौआ-कास-पटेढ़क जंगल कटबा मे लागल छल, सुगर हरिन कें बैलेबा मे लागल छल आ तकरा सँ साँझखन पूछल गेलै जे तों कतेक खेत*

रोपलें, कतेक बीआ उपाड़लें तकर हिसाब दे, तँ हमर सैह स्थिति भ' जाइए।' अत्यन्त स्वाभाविक थिक जे 'जंगल' साफ केनिहार आ 'सुगर-हरिन' कें बैलेनिहार रचनाकारक कथ्य, तथ्य, भाषा, भंगिमा आ कला दरभंगा नरेशक कृपा-कटाक्ष पर निर्भर घी-मलीदा खाक' कविता-कामिनीक वक्ष सजेनिहार कवि-पुंगव लोकनि सन नहि भ' सकैत अछि। तकरा ओहन हेबाको किएक चाही?

'किरण' गीत लिखलनि, कविता लिखलनि, महाकाव्य धरि लिखलनि, जाहि लेल बाद मे हुनका साहित्य अकादेमी पुरस्कारो देल गेलनि। ओ कथा लिखलनि, उपन्यास लिखलनि, नाटक आ एकांकी आ बाल-रचना धरि लिखलनि। ओ निबन्ध लिखलनि, शोध-प्रबन्ध लिखलनि। एहि सभ कथू मे एक अलबत्त एकसूत्रता आ एकतानता अछि। से थिक हुनकर वैचारिक तेज। अपन अन्तिम कविता मे सँ एक 'हमर कामना' मे जेना कि ओ कहैत छथि, *'उचित सत्य कहबाक चेतना साहस बनल रहय आजीवन। नहि ताकी यश-अपयश।'* एहि अर्थ मे ओ निस्सन्देह कृत-कार्य भेलाह जे हुनक ई कामना फलवती भेलनि।

तखन, 'किरण'क जे आन सीमा छलनि, हमरा लोकनि कें तकरो नहि बिसरबाक चाही। अपन जीवनक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कालखण्ड मे ओ प्रतिपक्षक भूमिका मे बनल रहलाह। ई 'झंझ-मंझ' हुनकर बहुत शक्ति ल' लेलकनि, से ओ अपनहि कहलनि अछि। हुनका समक्ष निस्पृह निस्पन्द जनता छलनि, जकरा मे चेतना जगेबाक ब्योंत करब हुनका लेल दुनियाँक सभ सँ जरूरी काज छलनि। एम्हर जन-संस्कृति पर तोपल जंगल जे छल जत' सुगर-हरिनक राज रहय से मात्र कोनो मध्यकालीन किरदानी नहि छल--ओ सभ तखनहुँ हुनका आँखिक आगू विद्यमान आ क्रियमाण छल। से एहि सभ कारण सँ, भविष्यक मिथिला, जखन कि साधारण लोक साक्षर शिक्षित भ' जाएत, कमाएत-खाएत, ओकरा मे सभतरि चेतना औतै--तखनुक मिथिला, मिथिला-समाज आ मैथिली भाषाक कोनो सुचिन्तित प्रारूप हुनका लग मे नहि छलनि। दुखद तँ ई थिक जे एहन कोनो प्रारूप आचार्य रमानाथो झा लग मे नहि छनि। तखन हँ, आइ मिथिला जाहि सांस्कृतिक संक्रमणक दौर सँ गुजरि रहल अछि, विसंस्कृतीकरणक जाहि घात-प्रतिघातक

सामना क' रहल अछि निस्सन्देह एकर एक काट किरण लग मे छनि आ से भाषा आ भूमिक प्रति ओही एकान्तनिष्ठा लग मे ल' जाक' हमरा लोकनि कें ठाढ़ क' दैत अछि।

पण्डित-संस्कृतिक संग लड़ाइ मे विद्याक नाम पर लांछन पाबि क' थोड़े व्यक्तिगतो महत्त्वाकांक्षा सभ हुनका भीतर जोर मारलकनि आ से हुनका थोड़े आर सीमाबद्ध केलकनि, सेहो प्रतीत होइत अछि। हुनक स्वभावक रगड़ीपनक उल्लेख हम ऊपर केलहुँ अछि। टीपनि मे तरहत्थीक केशवत विद्या छनि (माने विद्या नहि छनि) ज्योतिषीक एहि कथन कें गलत साबित करबा लेल ओ अपन जीवनक एक बेस महत्त्वपूर्ण समय आ ऊर्जा लगौलनि। कहब आवश्यक नहि जे हुनका सन लोक सँ एहि महत्त्वपूर्ण समयक उपयोग मिथिलाक वैकल्पिक विकास-दृष्टि आ मसौदा तैयार करबा मे कएल जेबाक अपेक्षा भ' सकैत छल।

मिथिलाक लोक-मानसक ओ अपूर्व पारखी आ व्याख्याकार भेलाह। हुनक दृष्टि सभ दिन एक ठेठ ग्रामीणक दृष्टि रहलनि। तकरा राष्ट्रीय मुख्यधाराक परिप्रेक्ष्य मे मिथिलाक भविष्यद्रष्टाक रूप मे प्रस्तुत हेबाक चाहैत छल, जकर पलखति हुनका नहि भेटलनि।

किछु लोक, मिथिलाक पुनर्स्थापनाक आग्रह कें ल'क' 'किरण'क लेखन कें थोड़े शंकालुताक दृष्टि सँ देखैत छथि। एहन लोकक एक सहज जिज्ञासा होइत अछि जे प्राचीन वा मध्यकालीन मिथिलाक पुनर्स्थापनाक माने की? ओही सामन्तवादी-ब्राह्मणवादी व्यवस्थाक वापसी!

'किरण'क लेखन मे विद्यापति आ हुनका सँ पूर्वक स्वतन्त्र मिथिला कें ल'क' बेस सम्मोहन देखार पड़ैत अछि। सभ गोटे जनैत छी जे 'किरण' मिथिला-राज आन्दोलनक समर्थक छलाह जखन कि यात्री एकर विरोधी रहथि।

ई निस्सन्देह थिक जे स्वतन्त्र मिथिलाक मिथक सभ दिन किरण कें सम्मोहित केने रहलनि। स्वतन्त्रताक लड़ाइ लड़ैत सर्वनष्ट भ' गेनिहार राजा शिवसिंह कें ओ महानायक मानैत रहलाह। आ, एम्हर दरभंगा-राजक ओ घोर विरोधी रहथि। ब्रिटिशक दास कहि क' ओ दरभंगा-राज कें धिक्कारैत रहलाह। स्पष्ट थिक जे मिथिलाक पुनर्स्थापनाक अर्थ हुनका

लेल दरभंगा-राजक सामन्वादी-ब्राह्मणवादी पुनर्स्थापना नहि भ' सकैत छल। यात्री कें शंका रहनि जे कोनो-ने-कोनो छल-छद्‌म सँ सामन्तवादी-ब्राह्मणवादी प्रेत-वैताल मिथिला राज कें दफानि लेत। किरण कें ई शंका निर्मूल लगैत छलनि।

दुनू गोटे मे सँ के सही छलाह, मिथिलाक जनता आ आगामी राजनीतिक परिदृश्य कें ल'क' किनकर आकलन ठीक छलनि, ई एक प्रश्न अछि, जकर उत्तर भविष्यक गर्भ मे छैक। एहि सम्बन्ध मे 'किरण'क जे आकलन छलनि, तकरा हुनकर एकांकी 'जय जन्मभूमि' मे देखल जा सकैए।

तहिना 'किरण'क दुर्लभ आरम्भ-कालीन उपन्यास 'चन्द्रग्रहण' सेहो देखल जा सकैत अछि। मैथिली उपन्यासक इतिहास मे एकर अपन विशिष्ट स्थान अछि, अनेक सीमाक अछैतो। मुसलमान कें ल' क' 'किरण' जीक विवादास्पद मान्यताक प्रश्न समय-समय पर उठाओल जाइत रहल अछि। से एहि उपन्यासो पर।

काञ्चीनाथ झा 'किरण'क धर्मनिरपेक्ष व्यक्तित्व कें ल'क' हमरा मोन मे कोनो सन्देह नहि अछि। तखन, 'धर्मनिरपेक्ष'क अर्थ जँ 'मुसलमान-समर्थक' होइत हो तँ 'किरण' सन 'मिथिलाइट' लोकक मूल्यांकन लेल थोड़ेक सावधानी राखब उचित आ जरूरी थिक। जहाँ धरि एहि उपन्यासक प्रश्न अछि, 'किरण' अपन इन्टरव्यू मे बेर-बेर तत्काल समय आ परिस्थिति कें ध्यान मे रखैत एहि उपन्यास पर विचार करबाक आग्रह करैत छथि। तकर एक प्रयास अशोकक लेख मे सेहो कएल गेल अछि।

एक भिन्न प्रसंग 'किरण'क कविता 'ताजमहल' कें ल'क' अछि जत' ओ 'मुगल विदेशी बादशाह शाहजहाँ केर प्रभुता-वैभव-नीतिनिपुणता' आ 'पराभवमय इतिहास पूर्णता केर साक्षी साकार' ताजमहल कें ढाहि धरि देल जेबाक कल्पना सँ भरि उठैत छथि। अपन प्रसिद्ध कथा 'कोन महल नाम रखबै एकर?' मे ओ कहैत छथि-*'ताजमहल थिक शाहजहाँक प्रेमक प्रतीक कि हुनक वैभव-प्रभुत्वक प्रतीक? कोन कृति अछि ताजमहल मे शाहजहाँक? नक्शा वास्तुविदक! लूरि निर्माणकर्त्ताक, परिश्रम मजूरक! आ धन, जनताक!'*

हम तँ स्पष्ट छी जे 'किरण' 'चन्द्रग्रहण' मे जत' मुस्लिम-गुंडागर्दीक विरोध करैत छथि, ओतहि हिन्दू-गुंडागर्दी पर सेहो प्रहार करैत छथि। ओ जँ दरभंगा राजक शोषण-व्यवस्थाक उग्र विरोधी छथि तँ शाहजहाँक पाखण्डक सेहो विरोध करैत छथि। मेल-मिलापक बेर मे तँ हिन्दू-मुस्लिम-सभ ठीक, मुदा गलतक विरोधक बेर मे हमर कलम काँप' लागल, ई धर्म-निरपेक्षता की थोड़े दोयम धर्म-निरपेक्षता नहि कहल जेतै? तखन हँ, 'किरण' हमरा लोकनिक पुरान पीढ़ीक ओहन बुजुर्ग छलाह, जनिका अपना कें हिन्दू कहबा मे ग्लानिक बोध नहि होइत रहनि! मुदा, हुनक ई हिन्दुत्व की संघ के 'हिन्दुत्व' छल?

हमर मत अछि जे नहि, किन्नहु नहि।

(2007)

यात्रीक संस्कृत कविता

सब गोटे जनैत छी जे यात्री जी मैथिली, हिन्दी आ बंगलाक अतिरिक्त संस्कृत मे सेहो कविता लिखने छथि। हुनकर तारुण्य आ युवावस्था मे जाहि तरहक परिवेश आ वातावरण हुनका भेटल रहनि, ताहि मे काव्यत्व के कसौटी संस्कृते लेखन छल। संस्कृत मे लिखबाक लेल प्रोत्साहन छलैक आ यश सेहो एही मे छलैक। कविताभ्यासक तौर पर जे ओ समस्या-पूर्तिक सैकड़ो छन्द लिखने रहथि, से जँ आइ उपलब्ध रहैत तँ हमरा लोकनि हुनकर विराट उड़ान कें देखि सकितहुँ। कैक गोटे हुनका मुँहें ई छन्द सभ सप्रसंग सुनने हेताह। हमहूँ सुनने छी। मुदा, आब ई कविता सभ उपलब्ध नहि अछि। हुनकर रचनावली मे संस्कृतक मात्र अठारह टा कविता संकलित छैक। मुदा, देखनिहार देखि सकैत छथि जे एतबो कविता हुनकर, संस्कृत-कविक रूप मे, काव्य-स्वभाव आ सौन्दर्य-दृष्टिक समुच्चा कथा कहि जाइत अछि।

संस्कृत मे काव्य-रचनाक प्रेरणा हुनका अपन संस्कृतमय वातावरण सँ भेटल रहनि। संस्कृत साहित्यक विधिवत अध्ययन ओ पाठशाला मे, आ मर्मज्ञ लोकनिक सत्संग मे केने छलाह। कविता संग मिथिलाक सम्बन्ध बहुत पुरान अछि। एतए तँ हमरा लोकनि देखैत छी जे शुष्क-निर्मम तर्कशास्त्री लोकनि सेहो एक सँ एक सुन्दर कविताक रचना केलनि अछि, जकर आस्वाद संस्कृतज्ञ लोकनिक टोली मे मुखामुखी लेबाक रेवाज आइयो धरि मौजूद अछि। दोसर, हमरा लोकनि ईहो देखैत छी जे एक्कहि संग कैक भाषा मे काव्य-रचना कें एतए विशिष्टताक दरजा प्राप्त छैक।

विविध भाषा-ज्ञानक एतए बड़ प्रशंसा। संगहि ईहो मानल जाइत अछि जे ककरो भाषा-ज्ञानक इयत्ता तखनहि प्रमाणित भ' सकैत अछि जँ ओ, ओहि भाषा मे कविता लिखथि आ से कविता प्रशंसा-योग्य पाओल गेल हो। हमरा लोकनि देखैत छी जे ज्योतिरीश्वर कैक भाषा मे लिखलनि आ विद्यापति सेहो। तेसर, मुक्तक कविताक प्रधानता मिथिला मे सभ दिन सँ रहलैक अछि। आ, एतए 'मुक्तक कविता'क अर्थे थिक--लीक सँ हँटि क' चलब, वस्तु कें किछु एहन नजरिया सँ देखब जे सत्ताधारी लोकनि कें, लीकवादी लोकनि कें ओ कने उकडू जरूर लागय। एगारहम शताब्दी मे, कर्णाट शासनक महामंत्री श्रीधर दास एहन मुक्तक सभक एक विशाल संग्रह 'सदुक्ति-कर्णामृत' नाम सँ केने छलाह। आब ई पुस्तक साहित्य अकादेमी सँ प्रकाशित अछि। मिथिलाक कविता-कर्मक ठाठ हमरा लोकनि एत्तहु देखि सकैत छी। चौदहम शताब्दीक ज्योतिरीश्वरक कविता देखी कि सोलहम शताब्दीक शंकर मिश्रक, मिथिलाक मुक्तक-परम्पराक पकठोस धुआधजा हमरा लोकनि सभ ठाम पाबैत छी।

अपन लोकमुखी परम्परा सँ बहुतो रास तत्त्व यात्री जी अपन कविता मे लेलनि, आ उल्लेखनीय रूप सँ ओहि मे बहुतो रास नव तत्त्व जोड़लनि। अपन एक कविता 'वाग्विभूतिः' मे ओ अपन कविताक चेहरा चिन्हबैत कहैत छथि जे मंगलक अभीप्सा सँ जनमल छनि हुनका भीतरक क्रोध आ हुनकर कविता ओहि क्रोध सँ जनमल छनि। विक्षोभ आ उद्रेक एकर रूप छिऐक आ स्वभाव एकर एहन छैक जे अहाँक (पाठकक) नित्र कें ई फाड़ि-चीड़ि क' राखि देत। सब क्यो मानताह जे ई एक नवीन दृष्टि छिऐक जे प्रगतिशील संस्कृत काव्य-परम्परा मे नव आयाम जोड़ैत अछि।

आ, अपन एही कविता मे, किछु एहि बाना मे जे बाबू, हम तँ एहने छी, ओ कहैत छथि जे हमर मनरूपी घोड़ा (मनोघोटक) एही छान्दसी वाग्विभूतिक रस मे लीन, विना कोनो दीनता आ भ्रान्तिक, सौंसे पृथ्वी पर विचरण करैत अछि। एतए 'सौंसे पृथ्वी' कने गंभीर अर्थ मे अछि। ई केवल भूमि वा क्षेत्रक विस्तार मात्र नहि थिक--विषय, सरोकार आ सम्बन्ध-बन्धक सेहो विस्तार थिक। ई वस्तुतः यात्री जीक कवि स्वभाव छियनि, जकर विरुद्ध ओ कहियो नहि जा सकलाह। सभ कें जोड़ब, सभ धरि पहुँचब।

यैह कारण थिक जे हुनकर कविता-कर्म मे स्थूल रूप सँ सेहो विराट विस्तार देखाइत छैक। ई विस्तार केवल रूपे टाक विस्तार नहि छिऐक, भाव आ विचारक विस्तार सेहो छिऐक। 'अपन लोक' बला सीमाक विस्तार सेहो छिऐक।

अपन एक कविता 'गोविन्दाय नमो नमः' मे सम्भवतः पहिल बेर आ आखिरी बेर सेहो, यात्री जी अपना कें गम्भीरता सँ लैत, कहलनि अछि जे यात्री नामक प्रथितयश एहि कवि कें के नहि जनैत अछि? -- *'यात्रीनाम्ना प्रथितं यस्य यशः को न जानाति'* --- तँ से सहिये कहलनि अछि। अवश्ये ओ एहन भाग्यशाली कवि लोकनि मे सँ छथि, जिनकर कविता दूर-दूर धरि पहुँचल, अर्थात अबडेरल एकात मे कतिआएल ओहि अन्तिम मनुक्ख धरि, जकरा केन्द्र विन्दु मे राखि क' ओ कविता-कर्म करैत छलाह।

संस्कृत मे लिखल हुनकर कविता सभ विविध विषय आ भावभूमि पर केन्द्रित अछि। प्रकृतिक बहुरंगी ताल-भास तँ एहि कविता सभ मे अछिये, ओहो गुण सभ भरल-पुरल अछि, जकरा लेल यात्री जी सुप्रसिद्ध छथि। एक तँ हुनकर राजनीतिक रुझान, जकरा सम्बन्ध मे ओ कहल करथि जे प्रतिहिंसे हमर स्थायीभाव थिक। दोसर आमजनक प्रति गंहीर, निस्सन सरोकार, जकरा प्रति ओ अपना कें आबद्ध, सम्बद्ध आ प्रतिबद्ध मानैत छलाह। एहन लोक यात्री जी कें बहुत पसिन्न छलनि, जे तमाम विपरीत परिस्थितियोक अछैत जीवन मे किछु सृजनात्मक करबाक चेष्टा केने होथि। अपन एहन किछु समकालीन सभ पर सेहो ओ कविता लिखलनि। एही कोटिक मिथक-पुरुष महामुनि अगस्त्य पर हुनकर कविता छनि। तहिना, बेस विस्तार मे जा क' ओ युगपुरुष लेनिन पर कविता लिखलनि। हुनक संस्कृत कविता अपन देश भारतक माहात्म्य पर सेहो छनि, आ पैघ लोकक तुच्छ चरित्र पर व्यंग्य-रूप मे सेहो।

राजनीतिक कविता यात्री जीक खास पहचान रहलनि अछि। राजनीतिक दू अलग-अलग रूप पर ओ कविता लिखने छथि। एक रूप थिक ओ, जे जनविरोधी थिक, जनताक हित आ पैरोकारी के ने तँ ओकरा लग मे इच्छाशक्ति छैक ने चिन्ता। यात्री जी सदति एहि रूपक राजनीतिक विरुद्ध जाइत छथि। दोसर रूप जनपक्षीय राजनीतिक छियनि, जखन कि एहू मे

हुनकर अपन किछु शर्त्त छनि। मुदा, कुल मिला क' एकरा प्रति ओ प्रशंसाक भाव रखैत छथि। हुनकर दूटा संस्कृत कविता-- 'हिंसा-महिमा' तथा 'लेनिन-स्तोत्रम्' मे एहि दुनू रूपक राजनीति पर अलग-अलग हुनकर प्रतिक्रियाक आकलन कएल जा सकैत अछि।

'लेनिन-स्तोत्रम्' संस्कृत मे लिखल हुनकर सर्वाधिक दीर्घ कविता थिकनि, लेनिनक प्रति हुनक श्रद्धाक अनुरूपे। 25 गोट श्लोक मे एतए ओ लेनिनक पृष्ठभूमि, हुनकर विचारधारा, कृत्य, हुनकर अवदान तथा यशक वर्णन केलनि अछि। अपन रूस यात्राक क्रम मे ओ (कवि) क्रेमलिनक प्रासाद देखए गेल छथि, जतए स्फटिकक बनल शवाधानी मे राखल लेनिनक शव देखैत छथि। लेनिनक आँखि मे ताकैत कवि कें अनुभव होइत छैक जे ई दुनू आँखि ततेक भास्वर अछि जे कोनो सुप्त अथवा मृत व्यक्तिक आँखि नहि भ' सकैत अछि। एही अनुभव सँ एहि कविताक जन्म भेलैक अछि। एहि कविता मे यात्री जी कार्ल मार्क्स कें 'मुनि लोकनि मे सर्वश्रेष्ठ मुनि' कहैत छथि आ बतबैत छथि जे लेनिन हुनकर प्रथम शिष्य भेलथिन जे हुनकर विचार कें परमसिद्धि धरि पहुँचा देलनि। ओ कहैत छथि जे क्यूबा, अंगोला, वियतनाम आदि देश सभ मे लेनिनक नाम दीप्त छनि आ पृथ्वी परक नगर, गाम, सिकता, हिमानी, वनप्रान्तर मे विराजमान ओ (लेनिन) समकालीन मनुष्यक मन, वचन आ कर्म मे शामिल भ' क' विश्वात्मा बनि चुकलाह अछि। ओ पुछैत छथि जे जखन पृथ्वी पर एना अछि तँ एहि पुण्यश्लोक व्यक्तिक गाथा अन्तरिक्ष मे आ अन्यान्य ग्रह पर सेहो की नहि गूजि रहल हेतै?

जारक संग भेल युद्धक वर्णन करैत यात्री जी एहि ठाम एक पुरान मोहाबरा कें उठबैत छथि आ ओहि मे नव चमक उत्पन्न क' दैत छथि। ओ कहैत छथि--

गगनं गगनाकारं सागरः सागरोपमः।
जार-लेनिनयोर्युद्धं जार-लेनिनयोरिव।।

आकाश ककरा समान अछि? ओकर उपमा ककरा सँ देल जाय? ककरो सँ नहि। क्यो ओतेक विशाल अछिये नहि। कहैए पड़त जे आकाश आकाश-समान अछि। यैह बात सागरक संग लागू होइत अछि आ ठीक

यैह बात ओहि अनुपम युद्धोक संग लागू होइत अछि जे जार आ लेनिनक बीच भेल छल।

एहि कविता मे नवीन विषय-क्षेत्रक अन्वेषण तँ अछिए, यथार्थ कें साफ-साफ परिभाषित करबाक चेष्टा सेहो अछि। ई बात हमरा लोकनि हुनकर आनो संस्कृत कविता मे देखि सकैत छी। यैह कारण थिक जे परम्परावादी कवि लोकनि जकां आलंकारिक शैली कें नहि ल' क' ओ यथार्थवादी शैली कें अपनेलनि अछि। अत्यन्त सरल शब्द मे, विना कोनो तामझामक, विना कोनो छान्दस जटिलताक तथ्य आ भावना कें साफ-साफ उपस्थापित क' देब--निश्चित रूप सँ समकालीन संस्कृत कविताक क्षेत्र मे ई यात्री जीक पहल थिकनि। ऊपर सँ हुनकर खूबी ई जे सामान्य संस्कृत कवि जकाँ ओ भावुक कवि नहि छथि, तर्कक कसौटी पर हुनकर आकलन कदापि असंगत सिद्ध नहि होइछ। लेनिन-स्तोत्रे कें ली। साधारण पाठक कें ई जिज्ञासा सहजहि भ' सकैत छनि जे ओहि राजनेता (लेनिन) मे आखिर एहन कोन विशेषता छैक जे यात्रीजी हुनकर गुण गबैत नहि अघाइत छथि। ई तँ हुनका बतेबाके चाहियनि जे एहन कोन खूबी रहनि हुनका मे जे ओ हुनक अभ्यर्थना मे स्तोत्रक रचना क' रहल छथि! यात्रीजी बतबैत छथि। लेनिनक व्यवस्था-वर्णनक क्रम मे यात्रीजी कहैत छथि--

दरिद्रा लुंठिता भीता ध्वस्तप्रज्ञा निरक्षराः।
त्वयानुशिष्टास्ते सर्वे स्वयं शासकतां गताः।।

एहि श्लोक मे जतेक विशेषण आएल अछि, स्पष्ट अछि सभटा 'सर्वहारा' लेल प्रयुक्त भेल अछि। दरिद्र, लुंठित, भीत के संग-संग 'ध्वस्तप्रज्ञ' शब्द सेहो आएल अछि। एहि शब्द पर कने गौर कएल जाय। हित आ अहित, सद् आ असद्--एहि तत्त्वक निर्णय करबा मे समर्थ बुद्धि कें सामान्यतः प्रज्ञा कहल जाइत अछि। प्रज्ञाक पराकाष्ठा थिक--स्थितप्रज्ञ हएब, जकर गीता मे बहुत गुण गाओल गेलैक अछि। आ दोसर दिस, एहि स्थितप्रज्ञताक साफ विपरीत, दोसर ध्रुव पर ठाढ़ अवस्थाक नाम थिक-ध्वस्तप्रज्ञता। ओहि सर्वहारा सभक प्रज्ञा ध्वस्त भ' चुकल रहैक, ई बात कहैत यात्रीजी वस्तुतः कहए ई चाहैत छथि जे ओकरा सभ कें अपन वास्तविक शत्रु आ मित्र धरि कें चिन्हबाक क्षमता समाप्त भ' चुकल

रहैक। अद्‌भुत बात ई जे एक ध्रुव पर ध्वस्तप्रज्ञताक ई अवस्था, आ दोसर दिस ओहि सभ लोक कें एहन शिखर उच्चता धरि पहुँचाएब जे ओ स्वयंशासकता (अपन शासन अपनहि चलाएब) के स्थिति मे आबि जाय! ई असम्भव-सन काज सम्पन्न क' सकल छलाह लेनिन। तें ओ अभ्यर्थनाक योग्य छथि। आ जें कि कविक अभीप्सित राजनीति यैह छिऐक, यात्रीजी लेनिन पर स्तोत्रक रचना केलनि।

मुदा, राजनीतिक एक दोसरो रूप छैक, जे सभतरि प्रचलित छैक। एहि मे नाना प्रकारक तामझाम होइत अछि। नहि होइछ तँ मात्र ओ सरोकार जे आमजन लेल एकरा काम्य बना पबैत। ई राजनीति व्यक्ति-केन्द्रित होइत अछि। नहुँ-नहुँ एक थेथर किसिमक निर्लज्जता हाबी भेल जाइत अछि जे घी पीबाक लेल कम्बल ओढ़बाक बेगरतो खतम केने जाइछ आ आगू चलि क' तँ नुका क' अनीति करबाक आवश्यकता सेहो नहि रहि जाइछ। जे करबाक अछि तकरा लेल एकटा कानून बना लिय'। सभक मुँह बन्द। विरोध जँ हो तँ ओकर वार्त्ता नहि लेल जाइछ। तैयो विरोध हो तँ नेस्तनाबूद क' देल जाइछ। लोकतंत्र आ जनकल्याणक नाम पर चलैत तानाशाहीक ई राजनीति दुर्बल रहय तैयो, आ सबल रहय तखन तँ उचिते, की किरदानी करैत अछि, तकर बहुत प्रामाणिक चित्र हमरा लोकनि कें यात्री जीक कविता मे भेटैत अछि। यात्री जीक एक विरल विशेषता थिकनि जे एहि तानाशाही राजनीतिक सबलता-कालक जे ताण्डव होइत छैक, अपन राजनीतिक कविता सभक अधिकांश ओ एहने काल-परिस्थिति कें ल' क' लिखलनि। एहि कोटिक बहुतो कविता आपातकाल मे आ तकर लगले उपरान्त लिखल गेल। एहन कविता सभ हिन्दी मे तँ अछिये, मैथिली मे सेहो अछि। आ, संस्कृत मे सेहो। अपन हिन्दी कविताक नायिका 'हिटलरक नानी' कें ओ संस्कृत मे 'हिंसा देवी' कहैत छथि। एहि देवीक 'अभ्यर्थना' मे ओ 'हिंसा-महिमा' लिखलनि।

'हिंसा-महिमा' बेस लोकप्रिय कविता रहल अछि। एहि मे ओ हिंसा देवी कें 'महाकालक सहोदरा' कहैत प्रणाम निवेदित करैत छथि। हिंसा देवीक 'प्रशंसा' मे ओ कहैत छथि जे हिनकर जीह शोणित पीबैत एखनहु तृप्त नहि भेलनि अछि। तकर कारण ई जे जेना आम-जन लाखो-करोड़ो

छथि तहिना, आनुपातिक रूप सँ हिनकर जीह सेहो हजारो-लाखो छनि। महत्वाकांक्षे तँ ओ वस्तु थिक जे ककरो हिंस्र बनबैत छैक। कवि कहैत छथि जे एखन तँ खाहे क्यो 'भुक्ति' (सफलता-सम्पन्नता) चाहय आ कि 'मुक्ति' (मृत्यु), एकमात्र परमशक्ति हिंसा देवीएक कृपा सँ ई भ' सकैत अछि। कारण, एखन तँ साक्षात यमराज सेहो मात्र ओकरे टा प्राण-हरण क' क' संतुष्ट हेबा लेल बाध्य छथि, जकरा हिंसा देवी सूंघि क' थुकड़ि देने होथि--*यमस्तु हरते प्राणान् त्वयैवाघ्राय थूत्कृतान्।* कहब जरूरी नहि जे ई उत्पीड़न के पराकाष्ठाक चित्रण थिक। नित्य शोणित पिबियो क' अतृप्त रहनिहारि ई महाकाल-सहोदरा ध्वंसावशेष पर विराजमान भइये क' संतुष्ट भ' सकैत छथि, से कविक आकलन छनि।

ई कविता यात्री जी 10 मार्च 1976 कें लिखने छला। साक्ष्य भेटैत अछि जे कविता पूरा केलाक बादो एकर आवेग सँ ओ मुक्त नहि भ' सकलाह। 11 मार्च कें ओ एहि कविता मे एक पाँती आर जोड़लनि। ओहि श्लोक मे ओ हिंसा देवीक वंशवृक्ष देने छथि। देवी जीक प्रवृत्ति आ कृत्य कें देखि क' हुनका लगैत छनि जे नहि, एहन दारुण वस्तु मनुक्खक सन्तान कदापि नहि भ' सकैछ। मनुष्यता पर यात्रीजी कें पूरा आस्था, पूरा भरोस छनि। मनुक्ख कतबो पतित भ' जाय मुदा एहि हदधरि नहि खसि सकैत अछि। ओ कहैत छथि जे एहि देवीक माता थिक विषमता, पिता थिक लोभ आ क्रोध एकर भाइ थिक। एकर एक कोमलांगी बहिन सेहो छैक जरूर, मुदा ओकरा सँ भीषण शत्रुता छैक। कविताक एहि अंश मे हमरा लोकनि काव्यानुभूति कें आक्रोश मे अन्तरित हेबाक दृष्टान्त पाबि सकैत छी।

मुदा, यात्रीजी छलाह कि एतबा लिखि लेलाक बादो कविताक आवेग हुनका पर सँ नहि उतरलनि। जे क्यो हुनका निकट सँ जनैत छथिन, हुनका बूझल हेतनि जे ओहुनो कविताक आवेग लम्बा समय धरि हुनका पर सवार बनल रहैत छलनि। एहि उत्तरवर्ती आवेगक सृजनात्मक उपयोग सेहो ओ करैत छलाह आ एहि सँ निकलबाक तरीका सभक आविष्कार सेहो ओ क' लेने छलाह। अस्तु। 15 मार्च 1976 कें एहि कविता मे एक पाँती ओ आर जोड़लनि।

यात्री जीक कविताक ई स्वभाव छनि जे ओ सदति एक निष्पत्ति धरि पहुँचैत अछि। से कविता खाहे कोनो स्थूल विषय पर लिखल गेल होइ अथवा क्षणमात्रव्यापी कोनो तरल अनुभूति पर--सभठाम हुनक कविताक ई स्वभाव देखार पड़त। क्षणमात्रक अनुभूति सेहो जँ यात्री जीक हाथ लागय तँ ओकरो कतहु ने कतहु पहुँचाइये क' दम लेब' बला कवि ओ छथि। हुनक ई स्वभाव हुनका एक 'महान कवि' बनबैत छैक। एहन कवि, जे अपन पाठक के जीवनक कोनो काज आबि सकय। हमरा बुझनें एही अर्थ मे ओ एक प्रतिबद्ध कवि छथि।

15 मार्च कें ओ ई पाँती जोड़लनि--

कर्णाज्जिलं जलेनैव
कंटकेनैव कंटकान्।
हिंसयैव हि हिंसाऽपि
तदौपम्येन शाम्यति।।

कहैत छथि जे कान मे जँ पानि चलि जाय तँ कोना निकालै छी? ऊपर सँ आर पानि द' क'। तहिना, काँट गड़ि जाय तँ काँटे (सुइये) सँ बहराइत छैक। ठीक तहिना, हिंसाक प्रतिकार जँ हमरा लोकनि करए चाही तँ समरूप हिंसे सँ कएल जा सकैत अछि।

एतय एकटा आरो बात ध्यान देबा योग्य अछि। एहि ठाम जे सभ दृष्टान्त ओ देलनि अछि, से आम जन-जीवनक दैनन्दिन अनुभव सँ लेल गेल अछि। लोक जँ धार-पोखरि मे नहाएत तखने कान मे पानि जा सकैए, कल-कारखाना मे, खेत-खरिहान मे काज करैबला लोके कें काँट गड़ि सकैत छैक नहि तँ सुसज्जित बाथरूम मे नहा क' ब्रान्डेड कम्पनीक जूता पहिरि क' जे कार सँ घूमत तकरा कान मे पानि किए जेतै आ पएर मे काँट किए गड़तै। मुदा, एहि ब्रान्डेड लोक सभ कें तँ हिंसाक प्रतिकारो करबाक बेगतरता नहि छैक कि ने!

प्रायः एही कालखण्डक लिखल हुनक एक आर कविता छनि--'कुमार-लीला'। एहि मे शिव-पार्वतीक प्रणय सँ उत्पन्न दू गोट कुमार--कार्तिकेय आ गणेशक लीलाक वर्णन कएल गेल अछि। खेल-खेल मे ओ लोकनि एहन अजूबा करतब देखबैत छथि जे हुनकर फेकल गेन

करोड़ो शिखर कें स्पर्श करैत एहन वेग सँ गुड़कैत अछि जे धावन-कलाक माहिर शतद्रु (सतलज) धरि लजा जाइत अछि। ई कविता पढ़ैत पाठक कें ओहि दिनक राजकुमारक करतब सभ मोन पड़ि जाइत छैक।

अपन देश भारतक प्रणति मे यात्रीजी 'देश-दशकम्' कविताक रचना केलनि। एहि मे ओ देशक प्रति बड़े भावपूर्ण कृतज्ञता ज्ञापित केलनि अछि। ई कविता पढ़ैत हमरा हुनकर कहल एक बात मोन पड़ि गेल। कहने छला-- *'भारत आ कि बिहार तँ हमरा लेल अमूर्त्त अछि। मूर्त्त तँ अछि मात्र ओ स्थान, जतए हम निवास करै छी।'* ('तुमि चिर सारथि' मे हुनकर एक कथन) वस्तुतः सत्य तँ सेहो यैह थिक। ओ स्थान, ओ लोक जे हमर सम्पर्क--सामीप्य मे अबैत अछि, वैह वस्तुजात जाहि सँ हम कोनो रूप मे जुड़ल रहैत छी, हमरा भीतर हमर देशक निर्माण करैत अछि। मानल जे एक सुनिश्चित चौहद्दी मे अवस्थित क्षेत्र हमर देश थिक, मुदा ओकर अभिव्यक्ति हमर चेतना मे बसल मूर्त्तिए सँ तँ होइछ! देशक स्तुतिगान मे हुनक काव्य-सौन्दर्य देखी--

नाना नदी-नद-शतानि शिरा यदीया
नाना विहंग-विरुतानि गिरा यदीया।
कश्मीर-कूर्म-सुषमा हसितिर्यदीया
तत् पादयोः प्रणतिरस्त्वियं मदीया।।

मुदा, ई तँ भेल प्रणति। देशक जे प्रतिमा हुनका मोन मे छनि, तकर चित्र देखी--

गोधूम-शालि-यव-मुग्द-तिलादिपुष्टा
मध्विक्षु-गव्य-मसृणा सुखिता स्वतन्त्रा।
क्षीरोदकीभवदनेक-विभाग-युक्ता
तिष्ठेत् सदा मनसि मे प्रतिमा त्वदीया।।

हे देश! हमरा मोन मे विराजमान अहाँक प्रतिमा सदा-सर्वदा आबाद रहय, जे गहूम-चाउर-जौ-मूंग-तिल आदि खाद्यान्नक भोग सँ पुष्ट भेल अछि, आ मधु-कुसियार-दूध-दही-घी आदि वस्तु सभ, जाहि सँ ने जानि कतेको तरहक पक्वान्न तैयार होइत अछि, ताहि सभक सेवन जकरा सुख आ स्वतंत्रताक चेतना प्रदान केलकैक अछि। हे देश! हमरा मोन मे बसल अहाँक प्रतिमा सदा आबाद रहय।

हुनकर एक कविता मिजोरम पर छनि तँ एक डल झील पर; मुदा हुनकर कविता डॉलर पर सेहो छनि आ भारत-भवन पर सेहो। 'डॉलराः' कविता मे ओ कहैत छथि जे एकरा अहाँ साधारण नोट नहि बूझी, सोनाक अनार बूझी। ई डॉलर उपरे-उपर सभ सँ उच्च, सभ सँ स्पृहणीय बनल रहैत अछि। एहि ठाम ओ एकटा अद्भुत रूपक के प्रयोग करैत छथि। हवाई जहाज सँ सफर केनिहारि स्त्री। ओहि स्त्रीक केश मे निवास केनिहार ढील आ लीख। स्त्रीक संगे-संग जेना ओ ढील-लीख हवाइ सफर क' लैत छथि, सैह डॉलर कें बुझबाक चाही। एहि ढील आ लीख के औकात सँ ओ डॉलरक औकात तौलैत छथि। एहि तुला-प्रक्रिया मे सेहो एकटा देश छैक। ओ ककर देश छिऐक? खेतिहर-मजूर के, अभावग्रस्त प्रजा के, आक्रोश सँ फटैत नौजवान के। निश्चित रूप सँ डॉलरक सेवा एहि लोकक सेवा नहि छिऐक।

मुदा, एहि भुखल-दुखल नंगा-फरोस, अभावग्रस्त लोकक पीठ, पेट आ माथ पर की लादल छै? अपन एक कविता मे ओ कहैत छथि जे एहि लोकक ओजूद पर भारत-भवन सन के महाविशाल अट्टालिका लादि देल गेल छैक--

कृषकाणां श्रमिकाणां यूनां क्षुत्क्षामकण्ठानाम्।
पृष्ठे जठरे शिरसि च भारत-भवनम् मया दृष्टम्।।

यात्रीजी कें सदैव संघर्षशील लोक सँ स्नेह रहलनि। संघर्षक प्रति आस्थाक ई परिणाम छल। अतीत मे भ' चुकल एहन संघर्षशील महामना लोकनिक प्रति हुनका बहुत श्रद्धा छलनि। जकरा जीवन मे संघर्षक एक महत्त्वपूर्ण अवदान रहल हो, तकरे सोच एहन ठोस भ' सकैत अछि। यैह कारण थिक जे संघर्षशील लोकक जखन ओ चित्रण करैत छथि तँ ओहि मे प्रशंसाक भाव तँ रहिते छैक, सफलताक शुभाशंसा सेहो रहैत छैक। आ, यैह कारण थिक जे हुनकर रचल निर्बल सँ निर्बल पात्र कें सेहो हमरा लोकनि कखनहु हताश होइत नहि देखैत छी। घटाटोप अन्हार हो तखनहु हुनकर साहित्य मे इजोतक, आशाक एक ने एक स्फुल्लिंग अवश्ये देखा जाइत छैक। मिथक सभ मे सँ सेहो ओ एहन-एहन चरित्र कें हेरि अनैत छथि आ हुनकर उत्साह देखबाक हो तँ एहि कविता सभ कें देखि ली। एकटा कविता ओ महामुनि अगस्त्य पर लिखने छथि--

लक्ष्मीः प्रतीक्षते विष्णुं
बहिरागन्तु-मुद्यताम्।
सागरं चुलके कृत्वा
सुखं शेते महामुनिः।।

सूखल समुद्र कें त्यागि क' लक्ष्मी झट द' बाहर आबि गेल छथि आ आब बाहर एबा लेल उद्यत आलसी विष्णुक प्रतीक्षा क' रहल छथि। आ एम्हर ई महाशय अगस्त्य छथि जे समुद्र कें चुरूक मे पीबि निसभेर निन्न सूतल छथि!

प्रसंगवश, एतए हमरा श्रीधरक 'सदुक्तिकर्णामृत' मे संकलित एक सहस्राब्दी पहिनेक मिथिलाक एक सगोत्रीय कविता मोन पड़ि रहल अछि। एहू मे जे विष्णुक दुर्दशा वर्णित भेल छैक, कने देखि ली--

लक्ष्मी-पयोधरोत्संग
कुंकुमायितो हरेः।
बलिरेष स येनास्य
भिक्षापात्रीकृतः करः।।

विष्णुक ई हाथ मात्र लक्ष्मीक स्तन पर टहल मारबाक अभ्यस्त छल। एत्तेक कोमल आ सम्भ्रान्त जे कुमकुम के लाली सँ लाल बनल रहैत छल। धन्यवाद हो ओहि बलिक, जे एहि हाथ कें भिक्षापात्र जकाँ पसारबा लेल बाध्य क' देलक!

अस्तु। ई संघर्षेक महत्ता थिक जे यात्रीजी अपन कनिष्ठ साहित्यकार पण्डित गोविन्द झाक प्रशस्ति मे ई कविता लिखलनि--

निर्भीकाय वरेण्याय
पैशुन्य-ध्वंस-कारिणे।
स्वतेजसैव दीप्ताय
गोविन्दाय नमो नमः।।

अलंकारवादी लोकनि एतय श्लेष तकताह। ताकथि। मुदा तखनहु चरित्रक जे विराटता छैक से तँ देखार पड़िये जेतनि। ने तँ, नाम जँ पण्डित जीक किछु आर होइतनि तँ की ताहि सँ तथ्य सेहो बदलि जाइत? अपन समकालीन कवि-मित्र त्रिलोचनक प्रशंसा मे ओ ई पाँती लिखलनि--

भूतलं सुतलं येन
पदाभ्यामेव संभृतम्।
सूर्याच्चन्द्रमसौ श्रान्तौ
धरिणी हि सुखमास्थिता।।

सूर्य आ चन्द्रमा चलैत-चलैत थाकि जा रहल छथि। मुदा ई पृथ्वी बड़े अराम सँ, सुखपूर्वक विराजमान छथि। कोना? किएक? किएक तँ त्रिलोचन अपना पयरें चलि क' एहि पृथ्वी कें नपलनि अछि! एकरा तँ श्रद्धाक पराकाष्ठे कहबैक!

अपन संस्कृत कविता सभ मे यात्रीजी गुरु-कृपाक बखान सेहो केने छथि आ विद्याक देवी सरस्वतीक प्रार्थना सेहो केने छथि। मुदा, की मांगलनि ओ देवी सरस्वती सँ? माँगलनि--

लुनातु जन-मानसाद्
विमति-तन्तु-जालावलीः।

माँगलनि जे हे देवी! आम जनताक मन सँ विमतिक जाल कें साफ करू, जाहि सँ ओ ठीक-ठीक निर्णय क' सकय जे के हित थिका आ के मुद्दइ!

(2010)

यात्रीक लोक-काव्य आ मीनी मिथिला

याजी जी लोकजीवनक रचनाकार छलाह, ई बात पूर्णतः स्थापित आ सर्वज्ञात अछि। 'लोक' संग आ लोक-जीवनक संग ओ तेना क' गहमागट्ट जुड़ल छलाह जे हुनका लोकबद्ध रचनाकार कहल जा सकैए। एतए धरि जे 'लोक-बिद्ध' सेहो, कारण जे 'लोक'क जँ अभाव होइतए तँ यात्री जीक सेहो अभाव भ' जइतनि। एहि 'लोक' माने की? लोक माने भौतिक संसार। लोक माने मनुक्ख जाति। आ लोक माने आम जनता, आम लोक जे कि कोन्नहु टा तरहें खास नहि अछि। एहि मे सँ यात्री जीक लोक के भेलाह? यात्री जी कें जँ पुछियनु तँ ओ कहताह--संसार आ कि भारत आ कि बिहार, आ कि मिथिला हमरा लेल अमूर्त्त अछि। मूर्त्त तँ अछि मात्र ओ स्थान, जतए हम निवास केलहुँ-ए, ओ लोक जकरा संग जीवन जीलहुँ अछि, ओ जीवन जे हमरा जीवन कें जीबा-योग्य बनौलक अछि। से यात्री जी आइ सौंसे देश मे लोकजीवनक अपूर्व पारखी रचनाकारक रूप मे प्रसिद्ध छथि। बाहरक लोक कहैए आ तकरा संग-संग हमहूँ सभ कहैत छी जे यात्री जीक कविता मे मिथिला टन-टन बाजैए। जीवन्त, जागन्त, स्पन्दनशील मिथिला। तें, यात्रीक रचना मे लोक-जीवनक माने भेल--मिथिलाक लोक-जीवन, भने ओकर अभिव्यक्ति हिन्दिए मे कि बंगले मे किएक ने भेल हो।

मुदा अनेक झंझटिया प्रश्न सभ एहि ठाम आबि क' उपस्थित भ' जाइत अछि। की थिक मिथिला? के थिकाह मैथिल? कथी थिक मैथिलत्व? आदि-आदि-आदि। हम अपनहि एहि प्रश्न सभक संग झंझटि

करी, ताहि सँ नीक थिक जे यात्री जीक रचना मे एकर उतारा ताकल जाय। यात्री जीक एकटा सुप्रसिद्ध कविता छनि--'मीनी मिथिला'। सुनल जाय ओ कविता-

तरुआ-तिलकोड़क पात
भूजल तिसिअउड़ी-दनौड़ी
रुहूक तरल-झोराओल पेटी
कुतरुमक चटनी
मखानक खीर
हमरा दिल्लिओ मे सुलभ भ' जाइए
झाजीक प्रतापें...

अपना देसकोसक सोन्हगर वाक्य-विन्यास
चहटगर इडियम
भृकुटिक इंगितगर्भी आकृति
हमरा दिल्लियो मे सुलभ होइए
झाजीक प्रतापें...

अकस्मात मोन पाड़ि दै छथि झाजी
इशर्गत...
अनन्त...
राखी...
जयन्ती...

ओ प्रतिबर्ख
दड़िभंगा सँ पतड़ा मंगा लैत छथि
हुनका क्वार्टर मे जितिया पाबनि सेहो होइत छनि
एवं प्रकारें हमरा
सुलभ भ' जाइ छथि
'मीनी मिथिला' दिल्लिओ मे...

झाजीक प्रतापें...

मुदा, अइबेर, भेंट भेला उत्तर
बाजल रहथि झाजी--
ई सभ तँ बड़ बेस...
अपने ओतुक मालदहक आंठी
रोपने रहिअइ
बर्ख तिनिएक सँ दस-बीस टा कै
फड़ितो अछि...

कार्पोरेशनक ग्राउण्ड फ्लोरबला ई फ्लैट
आइ सभ अर्थें हमरा बेस धारलक अछि।
पछुआड़ मे, देखितहि छी--
छोट-छीन बगीचा लगा देने छिअइक,

हँ, तखन अपशोचक बात यैह जे
धिया-पूता पंजाबी भेल जाइए...

ई कविता की कहैए? एहिठाम एकटा झाजी छथि, जे मैथिल मानुसक प्रतीक छथि। ओ परम्परा आ आधुनिकताक सीमा-रेखा पर ठाढ़ छथि। ओ 'गामक लोक' थिका, मुदा आधुनिकताक दबाववश दिल्ली मे आबि बसल छथि। झाजी गाम कें नहि डेबि सकलाह, गामक संग मधुर आबाजाही नहि बना क' राखि सकला तँ गाम कें उठा क' दिल्ली आनि लेलनि। मुदा, गाम कें उठा क' कतहु ल' गेल जा सकैए की? अनलनि तँ, मुदा की अनलनि? तिलकोड़, तिसिअउड़ी-दनौड़ी, कुतरुम, मखान आदि खाद्य-पदार्थ, वाक्य-विन्यास-भृकुटि आदि छटा, जयन्ती-जितिया आदि पाबनि-तिहार, रीति-रेबाज; पतड़ा अनलनि तँ पाग सेहो अननहि हेता। हुनका मतियें यैह सभ छल मिथिला, यैह सभ छल मैथिलत्व, यैह छलै गाम। मुदा की सत्ते यैह छलै? तखन, बेटा किएक नहि सन्तुष्ट भ' सकलनि? अपन बाप-पुरखा

सँ जे संस्कृति इनहेरिट केने छला, तकरा अपन सन्तति धरि किएक नहि ट्रान्समिट क' सकला? ओ 80 ईस्वीक समय छल जखन झाजीक धिया-पुता पंजाबी भ' गेल रहनि, पंजाबियो भेला तँ कम सँ कम भारतीय तँ रहलाह। अजुका जँ समय रहैत तँ झाजीक धिया-पुता अमेरिकन भ' जइतथि। आ, टूटल पुल-सन के देसी संस्कृतिक वाहक ई झाजी महाराज, अक्षम एतेक छथि जे अपन धिया-पुता धरि मे एकरा प्रतिरोपित नहि क' पबैत छथि, मुदा आत्ममुग्ध कते छथि? कविताक भाषा मे बेर-बेर एकटा जुमला यात्री जी व्यवहार केलनि अछि--झाजीक प्रतापें--ताहि मे निहित व्यंग्य सँ एकरा बूझल जा सकैत अछि। मुदा, ततबे किएक--जखन अइ बेर कवि कें झाजी सँ भेंट भेलनि, तँ झाजी अपशोचबला बात सुनाब' लेल गप शुरू केने छलाह, मुदा तखनहु, आत्ममुग्धताक पराकाष्ठा देखल जाय जे गामक आनल मालदहक आंठी, ताहि सँ उपजल आमक संग-संग ईहो खिस्सा ओ बयान क' जाइत छथि जे 'ग्राउण्ड फ्लोरबला ई फ्लैट' हुनका बेस धारलकनि अछि। मुदा झाजी कें लगैत छनि जे यैह हुनक 'मिथिला' छियनि, यैह हुनक मैथिलत्व। तकर जँ ओ निर्वाह क' पाबि रहल छथि तँ से अतिशय गौरवक बात थिक। हमरा गाम-घरक परिसर मे, एहने ठाम, एकटा कहबी प्रचलित छै जे 'एही उलाप पर बनगाँव जरलै रहए'। माने जे एही उलाप पर मिथिला उजड़ि गेल।

झाजीक धिया-पुता कें जँ पुछियनु तँ ओ की कहता? अहाँ कें तिसिअउड़ी-दनौड़ी-तिलकोड़ नीक लगैत अछि तँ जरूर खाउ, मुदा ई तँ मात्र 'मैथिल डिश' भेल, मैथिलत्व तँ नहि भेल। जँ अहाँ अपन वाक्य-विन्यास आ इडियम पर मोहित छी तँ सेहो अहाँक परपीड़क निकम्मापनक उल्लास थिक, एकरो जँ कहबै जे मैथिलत्व थिक तँ से नहि थिक। अहाँ अनन्त, जयन्ती आ पतड़ा पर आश्रित छी, सेहो मात्र अहाँक व्यक्तिगत विश्वास थिक जे नेनपनक समये सँ अहाँक अवचेतन मे जाठि जकाँ ठोका गेल अछि। धिया-पुताक नेनपनक परिवेश अहाँक परिवेश सँ भिन्न छै तें ओकरा बुझनें इहो अहाँक मैथिलत्व नहि भेल। असल मे, धिया-पुता किए तिसिअउड़ी-दनौड़ी खाथि आ किए तंदूर आ डोसा नहि खाथि--तकर कोनो तर्क झाजी लग मे नहि छनि। धियापुता किए मैथिल बनल रहथि, आ

किए पंजाबी वा अमेरिकन नहि बनि जाथि, तकरा लेल कोनो तर्क नहि छनि। मिथिला कें उपनिवेश बूझि खोड़ि क' खाएबे (माने उपभोक्तावाद) जँ मैथिलत्व थिक, तँ झाजीक धियापुता हुनको सँ पैघ मैथिल छथि जे अमेरिको कें खोड़ि क' खा सकैत छथि। प्रसंगवश, एहि ठाम अशोकक कथा 'मनसूबा'क दुनू बापूत हमरा मोन पड़ै छथि। बाप जँ सेर छला तँ बेटा पसेरी बहरेलखिन। अस्तु।

सही बात ई छै जे मिथिला आ मिथिलाक गाम आ एकर मैथिल जनता, आ तकरा मे निवास कर' बला मैथिलत्व--एकटा सोधल जीवन-पद्धति थिक। वैदिक काल सँ ल'क' आइ धरि लोक एक जीवन-पद्धति पर चलल अछि, तकर परिचिति काएम केलक अछि, तकर विकास केलक अछि। ई जीवन-पद्धति एक प्रौढ़ सामाजिक सरोकार सँ दीप्त अछि। एहि जीवन-पद्धतिक दू टा बेस पैघ ताकत छैक--करुणा आ प्रेम। एकर समानान्तर एक आर जीवन-पद्धति आधुनिकताक प्रसाद स्वरूप चलन मे आएल अछि-ओ थिक--नागरी जीवन-पद्धति। एहि मे ने करुणा छै आ ने प्रेम, कारण कोनो सामाजिक सरोकार नहि छै। व्यक्तिवाद आ भोगवाद पर अवलम्बित ई पद्धति जत्तहि हरियरी देखैत अछि, ताही पर लतरि जाइत अछि, जे वस्तु जतेक बेसी चमकदार रहलै से तते बेसी अपनाएल जाइ छै एहि मे, ओ पंजाब हो तौं, अमेरिका हो तौं।

यात्रीजी कें लोक-जीवनक अपूर्व पारखी आ उद्गाता कहल जाइ छनि। हुनकर लोक-जीवन कोन जीवन थिक, तकरा 'मीनी मिथिला' कविता स्पष्ट क' दैत अछि। मुदा से स्पष्ट करैत अछि कविता मे अन्तर्निहित व्यंग्य द्वारा। अपन एक दोसर कविता 'धरती' मे ओ ठेठ अभिधा मे यैह बात कहलनि अछि, जतए ओ लोक-जीवन कें धरती कहैत छथि-

धरती धरती है--
पन्हाई हुई गाय नहीं
कि चट से दूह लो कटिया-भर दूध।
धरती धरती है--
चावल या गेहूँ की ढेर नहीं

कि कुर्क करा के उठा ले जाओ
बेच दो मंडियों में जाकर।
धरती धरती है--
नहीं है वह आटोमोबाइल
कि स्वीच दबाकर ड्राइव करोगे
छोड़ दोगे ले जाकर पटना या दिल्ली।

(2011)

बलराम : एक दुर्लभ सृजेता

स्वातंत्र्योत्तर कालखण्डक पहिल दशकक प्रख्यात कथाकार बलरामक निधन भ' गेलनि। हुनक निधनक संग मैथिली कथा-पीढ़ीक एक आर स्तम्भ ढहि गेल। मृत्यु सँ थोड़े दिन पहिने 'अंतिका' मे हुनक एक संस्मरण प्रकाशित भेल छल। ओहि मे ओ अपन रोग आ तकर निदानक क्रम मे प्राप्त अपन अनुभव सभक मादे लिखने छलाह। ओहि संस्मरण सँ कुल्लम ध्वनि ई बहराइत छलै जे अपन जीवन सँ ओ मोटामोटी सन्तुष्ट छथि। जनिक जीवन स्वयं मे एक सन्देश होइत होइनि, तनिकर सन्तुष्टि व्यक्त करब निस्सन्देह समाजोक लेल एक पैघ बात थिक।

पछिला अनेक बर्ख सँ ओ कोनो कथा नहि लिखने रहथि, यद्यपि कि हुनक रचनाशीलता आ प्रक्रिया कें अकानैत ई एक सामान्य बात छल। अपन पहिल प्रकाशित कथा 'दृष्टिदोष' (वैदेही, 1955) सँ ल' क' अन्तिम प्रकाशित कथा 'कागचेष्टा' (सन्दर्भ, 1986) धरि कुल 28 गोट कथा लिखलनि--से पैघ-पैघ अन्तराल पर। रचनाशीलताक आन्तरिक दवाब आ रचनाक वाह्य माँग--एहि दुनूक समरस परिस्थिति बनले पर ओ कोनो कथा लिखि पाबथि। हुनकर अनुभव-जगत बहुत विराट छल आ ततबे संवेदनशील छलनि हुनक हृदय। तें हमरा लोकनि देखैत छी जे हुनक कथा सभ अपन कथ्य मे जतेक स्पष्ट आ बहुआयामी अछि ततबे गझिन अछि। कथा सभक शिल्प, जाहि मे प्रत्येक शब्दक अपन महत्त्व छैक जेना कोनो पारगामी चित्रकृति मे प्रत्येक रेखा महत्त्वपूर्ण होइत छैक। मैथिली कथा-साहित्य मे हुनक कथा सभक ऐतिहासिक महत्त्व छनि। कथा शिल्पक एहन सजग

पारखी मैथिली मे गनल-गुथल लोक भेलाह अछि, एहन जागन्त पुरुष तँ आरो कम, जनिका अपन कालखण्डक एतेक-एतेक आयाम धांगल होइनि।

बलराम एतेक कम लिखि सकलाह--तकर कारण छल जे हुनका जीवन मे एहन अनेको काज उपलब्ध रहनि, जाहि सँ हुनका वैह सन्तुष्टि भेटि जाइत रहनि जे कोनो साहित्यकार कें साहित्य-सृजन सँ प्राप्त होइत छैक। ई एक विरल बात छल। एना ओही व्यक्तिक संग भ' सकैत अछि जे साहित्य आ जीवन कें संग-संग मिला क' जीबैत आ देखैत हो। से विशेषता बलरामक जीवन मे छलनि। चूड़ान्त ओ एक रचनाकारक व्यक्तित्व पौने छलाह। अर्थात सदैव सृजनकामी, सदैव सकारात्मक, सदैव उदार आ सहज। जनिका किनको हुनका सम्पर्क मे थोड़ेक दिन रहबाक अवसर भेटल हेतनि, से बुझि सकैत छथि जे ओ केहन दीब आ पारदर्शी व्यक्तित्वक लोक छलाह। हमरो ई सौभाग्य भेटल छल। हम संस्कृत विश्वविद्यालयक छात्र रही, जखन ओ ओतय कुलपतिक सचिव रहथि। हम देखने छी जे ओहि ठाम बलराम जीक हएब रेगिस्तान मे नखलिस्तानक बराबर छल। हुनक कर्त्तव्यनिष्ठा आ ईमानदारी निर्विवाद आ प्रश्नातीत छलनि। कहबे केलहुँ जे सौंपल गेल कोनो काज ओ ततेक निष्ठा आ पूर्णताक संग सम्पादित करैत छलाह जे हुनका कृति-निर्माण-सन के सन्तुष्टि दैत छलनि। जे क्यो अनीति सँ सीदित छलाह, बलराम हुनका संग छलखिन। जे क्यो बेगरतूत रहथि, जे क्यो मुहदुब्बर हेबाक कारण हक सँ वंचित कएल जाय लागथि, ओ हुनकर मुँह बनि जाथिन। 'निर्बल के बल राम' जे क्यो कहने छथि से की हुनके--सन कोनो लोक कें देखि क' नहि कहने हेताह?

स्वतंत्रताक बाद सियान भेल पहिल पीढ़ीक एहन लोक बलराम छलाह, जनिका लोकनिक जीवन मे आदर्शक एक पैघ महत्त्व छल, स्वतंत्रताक एक विराट अर्थ छल। अपन आदर्शक रक्षाक लेल किछु बलिदान क' देब ओहि पीढ़ीक लेल एक उचित आ जरूरी बात-सन छल। बलरामक विशेषता यैह रहनि जे नव जुआनीक एहि सीख कें ओ सौंसे जीवन अपनौने रहलाह। हुनका संग गप-सप करैत एक सुन्दर दुनिञाक परिकल्पना आ सपना सँ साक्षात्कार कएल जा सकैत छल।

ओ बहुत पढ़ल-लिखल लोक छलाह--अपना पीढ़ीक समवर्गी ललित आ राजकमले जकाँ। आधुनिक अंग्रेजी साहित्य आ पाश्चात्य मिथक शास्त्र पर तँ हुनका अजब मास्टरी हासिल रहनि, जकर विधिवत शिक्षा ओ विश्वविद्यालय सँ प्राप्त केने रहथि। संस्कृत विश्वविद्यालय मे पदस्थापित हेबाक कारण आ अनेको अनेक विख्यात शास्त्रज्ञ-संग निकट सामीप्यक कारण हुनका भारतीय साहित्य, दर्शन आ धर्मशास्त्रक मर्म बूझल भ' गेल छलनि। लोकधर्मी परम्पराक संस्कृतज्ञ लोकनिक संग हुनकर बेस मैत्री देखल जाइनि। ओ जीवनक लेल शास्त्रक उपादेयता मानथि, शास्त्रक लेल जीवनक नहि, से हमरा अनेक अवसर पर बूझल भेल छल।

प्रख्यात आधुनिक कवि-समीक्षक टी. एस. इलियट कहने छथि जे कोनो भाषा-साहित्य मे सामान्यतः दू तरहक रचनाकार होइत छथि। एकटा ओ जे चिन्तन करैत छथि आ दोसर ओ जे चिन्तन नहि करैत छथि। लिखैत तँ छथि दुनू अपन समयक यथार्थे कें मुदा चिन्तन ओ केन्द्र बिन्दु होइत अछि जे हुनका लोकनि कें अलग-अलग कोटिक्रम प्रदान करैत छनि। से हम देखैत छी जे बलराम एक चिन्तनशील रचनाकार छलाह। हुनक प्रत्येक रचना अपना मे एक परिपूर्ण कलाकृति तँ अछिये, चिन्तनक सूक्ष्म तन्तु सँ संयोजित सेहो अछि। चिन्तनक मुख्य केन्द्र मनुक्ख आ ओकर समाजक भविष्य अछि। हुनक मनुक्ख एक मैथिल मनुक्ख थिकनि आ हुनक समाज पूर्णतः मैथिली समाज। स्वातंत्र्योत्तर मिथिलाक प्रायः समस्त वैचारिक उठापटक हुनक रचना मे अभिव्यक्त भेल अछि। केवल भाषा कें ल' क' नहि, कथ्य आ चिन्तनक स्तर पर सेहो ओ मैथिलीक कथाकार छथि। तखन, बात ईहो छैक जे साहित्य मे चिन्तनक अभिव्यक्ति कें ल' क' हुनकर अपन खास विचार छलनि। ओ मानैत छलाह जे सृजनात्मक लेखकक लेल चिन्तन परम आवश्यक छै, आ से ओकरा लेखन मे रचनाक अंग बनि क', कलाकृतिक अंश बनि क' प्रकट होइत अछि। हुनक कथावाचक सदैव एक चिन्तनशील व्यक्ति रहल अछि से चाहे कथा औनपीक लिखल जा रहल हो आ कि चीफ साहेबक। कतोक ठाम तँ हुनक कथापात्र सभ, कथाक सामान्य गतियेक प्रक्रम मे, पैघ-पैघ युगसत्य बाजि जाइत अछि। 'कथाक आरम्भ'क नायक मास्टर साहेब कथावाचक

कें कहैत छथिन- *'हमरा तँ होइत अछि जे 'गाय बिकायल चरबाहिये तर मे' सैह परि एहि देशक होयतैक। नव-नव विचारक, नव-नव पद्धतिक परीक्षण करैत-करैत ई देश कहियो बिकायत।'* तहिना, 'मोटरी' कथाक नायिका कथानायक कें कहैत अछि-- *'जहिना बानर सँ मनुष्यक विकास भेल अछि, तहिना आब पुरुषत्व सँ स्त्रीत्वक विकास भ' रहल अछि। हमरा तँ होइत अछि जे एक दिन एहन आओत, जखन एहि संसार मे केवल मौगिए टा रहि जाएत।'* कतोक ठाम तँ अभिव्यक्तिक हुनक ई शैली दारुण सत्य कें निपट नांगट क' दैत छैक आ से बड़ी काल धरि पाठकक हृदय कें दलमलित केने रहैत अछि। जेना 'झुनझुना'क कथावाचक रामलालक ई बेलाग हाक्रोश- *'डाइनिंग टेबुल पर चीफ साहेबक परिवारक सभ खाइत रहैत छैक तँ बुझाइए, हमर मटियरबा खेतक सतरिया महींस चरि रहल अछि...ढहैत! ढहैत!!'*

एतेक पैघ समयावधि मे बलराम एते कम लिखि सकलाह तकर एक कारण ईहो भेल जे स्वतंत्रताक बाद मैथिली साहित्यक गतिविधि जाहि खास ढंग आ खास आग्रहक संग आगू बढ़ल, ताहि सँ ओ असहमत छलाह आ लगातार अपना कें 'आउट साइडर' अनुभव करैत रहलाह। स्वतंत्रता, समानता आ बन्धुत्वक जाहि आधारभित्ति पर मिथिला-समाजक पुनर्गठनक स्वप्न ओ देखने छलाह, ताहि दिशा मे राजनीति कें तँ निस्पृह आ विध्वंसक बनैत ओ देखबे केलनि, साहित्यकार-संवर्ग सँ जे अपेक्षा छलनि सेहो सकनाचूर होइत गेल। हुनकर सीमा छलनि जे ओ एक्टीविस्ट रचनाकार नहि भ' सकैत छलाह। हुनकर ईहो सीमा छलनि जे निबन्ध वा वैचारिक लेखन करब ओ पसिन्न नहि करैत छलाह, कारण एहि तरहक लेखन कें ओ सृजनात्मक लेखनक स्वायत्तताक प्रतिकूल पाबथि। 'अंतिका' मे प्रकाशित हुनक एक संस्मरण 'बहत्तर हाथक अँतरी' मे हुनक चिन्ताक किछु सूत्र कें पकड़ल जा सकैत अछि। अन्यथा, हुनकर समस्त चिन्ता-विचारक एकमात्र अवशेष हुनक 28 गोट कथे थिक। ओहि कथा सभ मे वंचित समुदाय आ स्त्रीक पीड़ा कें जे दारुण अभिव्यक्ति भेटलैक अछि से मैथिली साहित्यक लेल सेहो एक गौरव आ सन्तोषक बात थिक जे

देखू, तहियो एतए सभ क्यो अँखिमुन्ने लोक नहि छलाह, किछु गोटे रहथि जनिका सभ कथू झकझक देखार पड़ै छलनि।

हुनकर कहल एकटा बात मोन पड़ैत अछि। विश्वविद्यालय कैम्पस मे चाहक दोकान पर बैसि क' हमरा लोकनि चाह पीबैत रही आ मिथिला-समाज पर गप करैत रही। ओही गप-सप मे ओ कहने रहथिन--*ई जे देखै छियै वियोगी जी, मैथिल चरित्रक मुखौटा प्रवृत्ति, आत्ममुग्ध स्वभाव आ मुफ्तखोरीक चतुराइ-वृत्ति से हमरा तँ होइत अछि जे बौद्ध लोकनि कें नष्ट-विनष्ट करबाक पाप मिथिला-समाज कें आइ धरि बिसा रहलैए। के करत एकर प्रायश्चित?*

से, हमरो होइत अछि जे ओ जँ वैचारिक लेखन केने रहितथि तँ हुनकर तेज देख' जोग होइतय। एहन लोक दुर्लभ छथि!

(2008)

रामदेव झा : छोटका लोकक पैघ कथाकार

मैथिलीक आधुनिक कथा-साहित्यक इतिहास मे रामदेव झाक बड़ पैघ स्थान छनि। मैथिलीक कथा-यात्राक विकास मे हुनकर योगदान तँ अविस्मरणीय छनिहे, कथा-प्रासादक ओ एक एहन स्तम्भ छथि, जनिका नहि भेने निश्चिते एकर सर्वांगता खण्डित होइत। मुदा, हुनक कथा-साहित्यक मूल्यांकन ढंग सँ नहि कएल जा सकल। तकर दू गोट कारण भेल। पहिल तँ ई जे एक मर्मस्पर्शी कथाकारक अतिरिक्त ओ मैथिली शोध आलोचनाक एक आचार्य सेहो रहलाह आ मैथिली सम्बन्धी गतिविधिक एक एक्टिविस्ट सेहो। दुर्योग भेल जे हुनकर आचार्यत्व आ एक्टिविज्म हुनक एहि सुन्दर कथाकार कें सभ दिन जँतने रहल आ सामान्यतः एही आलोक मे हुनक रचनाशीलता समीक्षित होइत रहलनि। दोसर कारण भेल जे आधुनिकताक जाहि मुखर कालखण्ड मे रामदेव झा कथा-सृजन केने छलाह से पाश्चात्य प्रभावक धकापेल के युग छलैक आ तैखन अपन माटि-पानि सँ कतहु बहुत बेसी, आयातित नवता-बोधक मूल्य आँकल जा रहल छलैक। आ, एम्हर ओ लिखि रहल छलाह--ठेठ मिथिलाक अन्तिम तल पर ठाढ़ वंचित मनुक्खक कथा, जतए आधुनिकताक कोनो प्रवेश नहि छलैक आ जतए 'मैथिल' हेबाक दीप्त अस्मिता-बोध सेहो नहि छलैक। मुदा, जतए अपन परिपूर्ण ऊष्माक संग जीवन आ जीवन्तता लहराइत छल आ जतए मिथिलाक

सर्वहारा संस्कृति अपन पर्याप्त खिलावट प्राप्त केने विद्यमान छल। आइ जखन भूमण्डलीकरण, नवसामन्तवाद, बाजारवाद आदि नाना रूपधारी दानवक प्रवाह मे गाम उजड़ि रहल अछि, सांस्कृतिक निजता मटियामेट भ' रहल अछि आ समकालीन साहित्य अपन सक्क भरि मिथिलाक अस्मिता आ निजताक विमर्श कें अभिव्यक्ति देबा मे लागल अछि आ एहि प्रकारक बोध-संग पूर्व मे काज क' चुकल अपन पूर्वज-अग्रजक पुनर्मूल्यांकनक प्रयास मे लागल अछि, रामदेव झा आ हुनक कथा-दृष्टि आ हुनक कथा-संसार अपन पर्याप्त महत्त्वक संग दृष्टिपटल पर आबि रहल अछि।

एहिठाम इहो बात मोन रखबाक चाही जे अपन समकालीन कथाकार लोकनि मे रामदेव झा एसकर कथाकार नहि छथि जे तहियाक मिथिलाक ठेठ संस्कृतिक आ वंचित समुदायक आ तकरा भीतर चलैत घात-प्रतिघातक कथा लिखलनि। मुदा, एहन अनेको कथाकार लोकनि मे सँ रामदेव झा आइ जे सर्वाधिक प्रासंगिक आ पठनीय बनल छथि तँ तकर मूल कारण थिक हुनकर कथा-कला। हमरा लोकनि अवगत छी जे कथा अपन मूल स्वभाव मे जीवनक उपस्थापन नहि थिक। ओ थिक वस्तुतः जीवनक पुनर्सृजन। कोनो कथाकार एक संवेदनशील व्यक्तिक रूप मे समाज मे आ जीवन मे जे किछु देखैत अछि, से ओकर अनुभव भ' सकैत छैक मुदा ओकरा एक कथा-कृति बनबाक लेल ठीक ओहिना रच' पड़तैक, जेना कोनो चित्रकार दुनिञा मे देखल कोनो दृश्य कें कैनवास पर पुनर्सृजित करैत अछि। एक सृजन तँ ओकरा मोन मे चलैत छैक, जतय ओ दुनिञा मे देखल-भोगल वस्तु मे सँ किछु कें छाँटैए, किछु कें चुनैए। एहिठाम ओकर माध्यम भने भावना आ बुद्धि होइ, मुदा पुनर्सृजन तँ ओकरा शब्दे सँ कर' पड़ैत छैक। यैह कथाकारक निजता होइत छैक। कहबाक चाही जे रामदेव झा अपन एहि कला मे ततेक माहिर छथि जे हुनका द्वारा पुनर्सृजित मिथिला एक विमर्श बनबाक हद धरि संवेद्य भ' जाइत अछि। यैह कारण थिक जे अपना युग मे अपना विषयक प्रतिनिधि रचनाकार हेबाक यश वैह प्राप्त करैत छथि।

देखबाक चाही जे ओ अपन कथा कें कोना क' रचैत छथि!

कथाकार रामदेव झाक सभ सँ पैघ विशेषता तँ ई थिकनि जे चूड़ान्त

ओ एक खिसक्कड़ व्यक्तित्व पौने छथि। एहि अर्थ मे ओ भारतीय परम्पराक ओहि विरल वर्ग मे सँ अबै छथि जे अपन सम्पूर्ण अनुभव कें मनोरम आख्यान मे रूपान्तरित क' क' नबका पीढ़ी धरि पहुँचा देबाक 'सिद्ध कला' जनैत छल। तथ्य कें खिस्सा मे रूपान्तरित क' देबाक यैह कला परम्पराक संचरण आ ओकर अद्यतनीकरण करैत रहल अछि। हुनक कोनो गोट कथा कें अहाँ देखी, सगरे ई गुण देखार पड़त। जाहि लोकक कथा ओ कहलनि अछि, तकर सांस्कृतिक परम्पराक संचरण आ अद्यतनीकरण, दुनू करैत ओ पाओल गेलाह अछि। 'धरतीमाता' क कथा-नायक अयोध्या जँ शहरक ठीक-ठाक नोकरी कें छोड़ि क' गाम मे किसानी करबाक निर्णय लैत अछि तँ से ओकर छुच्छ भावुकता नहि छिऐक। कथाकार जाहि तरहें घटना आ तथ्य कें प्रस्तुत केलनि अछि, ताहि सँ क्यो पाठक अयोध्याक निर्णयक प्रति असहमत भने भ' जाओ, ओकर औचित्य कें नकारि नहि सकैत अछि। एना कोना भ' पबैत अछि? रामदेव झा अपन एहि कथा मे तथ्यक रूपान्तरण एहि मर्मस्पर्शिता आ कलाकारीक संग केलनि अछि जे परम्पराक संचरण अयोध्या मे तँ होइतहि छैक (जाहि कारणे ओ ई निर्णय करैत अछि), ताहि सँ आगू बढ़ि क' पाठक धरि मे ई प्रवाहित होब' लगैत छैक। ओम्हर पृष्ठभूमि मे छैक शहरक सुविधा आ गामक पिछड़ापन। एहि पृष्ठभूमि मे आबि क' ई तथ्य आरो प्रासंगिक भ' उठैत छैक कारण जे ओ परम्परा कें अद्यतनीकृत करैत अछि।

अपन कथाशिल्प मे रामदेव झा बेस पारम्परिक देखार पड़ैत छथि। अपन कथा सभ मे नव-नव शैल्पिक प्रयोग ओ नहिञेक बरोबरि केलनि अछि। मुदा देखबाक थिक जे हुनकर ई परम्पराशीलता स्वयं मे एक आधुनिकता थिक। कोना? जाहि तरहक आ जाहि तरहें ओ कथा सभ लिखलनि अछि, हम सभ देखि सकैत छी जे तकर कोनो परम्परा ने तँ प्राचीन मिथिला मे छैक आ ने मध्यकालीन सामन्ती मिथिला मे। बारल आ कतिआएल लोकक कथा ओकरे पारम्परिक शैली मे कहबाक ई प्रयोग ठीक ओहिना एक आधुनिकता थिक जेना मुख्यधाराक लोकक कथा फ्रायड आ मार्क्सक निष्पत्तिक परिप्रेक्ष्य मे कहब एक आधुनिकता थिक। की अहाँ सोचि सकैत छी जे समकालीन भाषा मे 'मनुक सन्तान'-सन

कथा लिखब एक सामान्य बात भ' सकैत अछि? आधुनिकताक प्रश्न एत' एहि दुआरे उठा रहल छी जे रामदेव झाक पीढ़ी मे मैथिली कथाक क्षेत्र मे जते तुमुल कोलाहल व्याप्त रहैक आ नित-नवीन प्रयोग कें आधुनिकताक नाम पर चलेबाक तर्क आ औचित्य राखल जाइत रहैक, से इतिहासक एक अविस्मरणीय प्रसंग थिक। हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे छठम दशकक कथाकार लोकनि मे सँ सभक, आधुनिकताक सम्बन्ध मे अपन-अपन अवधारणा छलनि आ से एक दोसरा सँ भिन्न रहनि। ललितक जे आधुनिकता रहनि, से जँ राजकमल चौधरीक आधुनिकता सँ भिन्न रहनि तँ मायानन्द मिश्र वा सोमदेव वा बलरामक आधुनिकता हुनको सभ सँ फराक रहनि। समयक निहितार्थ कें बुझि सकबाक अपन अलग-अलग अवगतिक कारण ई सम्भव होइत छल हएत आ निश्चिते एकरा पाछू हुनका लोकनिक अपन खासम खास जीवनानुभव छल हेतनि। एहना मे रामदेव झाक अपन जे अवधारणा छनि, तकरा चाहे अहाँ हुनकर आधुनिकता कहियनु अथवा केन्द्रीय दृष्टिकोण--तकरा एहि तीन बिन्दु मे आँकल जा सकैत अछि।

मिथिलाक अन्तिम मनुक्ख कें ठीक-ठीक ओही रूप मे कथा मे उतारब, जेना कि ओ अपन धरती पर जीबि रहल अछि। एक तँ यैह बात खास रेखांकित करबा योग्य अछि जे ओ मिथिलाक अन्तिम व्यक्ति-शोषित-पीड़ित-अवडेरल-कतिआएल व्यक्ति कें कथा मे उतारलनि। मुदा मुख्य विशेषता हुनक ओहि कला-कौशलक छनि जे 'ओही रूप' मे उतारलनि जेना कि ओ अपन धरती पर जीबि रहल अछि। एहि ठाम ओहि थालाक दृष्टान्त देल जा सकैत अछि जकरा जखन अहाँ उखाड़ै छी तँ ओकरा जड़िक संग लागल माटि कें सेहो उखाड़ै छी। कहिये चुकल छी जे एहि माटिक सृजन कथाकार रामदेव झा अपन शब्द द्वारा, कला-कौशलक द्वारा केलनि अछि जे कि हुनक गहन जीवनानुभवक प्रसादें सम्भव भ' पाओल अछि।

ई एक भिन्न प्रसंग थिक जे कोनो लेखक कें अपन कथा मे वस्तु कें 'ठीक-ठीक ओही रूप मे' उतारबाक चाही आ कि ओहि मे अपन सेहन्ता, अपन अभीप्सा कें शामिल क' देबाक चाही। परवर्त्ती कथा-यात्रा मे हमरा

लोकनि देखैत छी जे ई 'अन्तिम मनुक्ख' लोकनि हथियार उठा लैत छथि। एहि बात कें स्वीकारबा मे कोनो बेसी भांगठ नहि छैक जे हिनका लोकनिक ई हथियार उठायब वस्तु स्थिति आ वास्तविकता सँ बेसी, लेखक लोकनिक सेहन्ता आ अभीप्सा थिकियनि। आइ भारतीय साहित्य मे चहुँ दिस दलित-लेखनक चर्चा छैक। दलित साहित्यक प्राथमिके शर्त्त ई छिऐक जे वस्तु कें ठीक-ठीक ओही रूप मे साहित्य मे उतारल जाय, जेना कि ओ अपन धरती पर विद्यमान अछि। हम बेर-बेर अनेक ठाम कहने छी जे आब दलित साहित्य कें अपन एहि सीमाबद्धता कें तोड़बाक चाही जे खाली दलितेक लिखल जीवनानुभव दलित-साहित्य भ' सकैत छैक। अन्तर बस एतबे छैक जे जे त्वरा दलित लेखक कें अपन सहज जीवनानुभव सँ सिद्ध रहैत छैक, तकरा आन लेखक कें अपन अचूक कला-कौशल सँ साध' पड़ैत छैक। प्राथमिक शर्त्त मुदा ई अछि जे ओहि लेखन मे, लेखक अपन सेहन्ता कें शामिल नहि क' सकैत अछि।

रामदेव झाक कथा सभ कें ध्यान सँ पढ़ी तँ देखब जे ओहि ठाम एक खलनायकक उपस्थिति निरन्तर बनल रहैत छैक। के थिक ई खलनायक? के थिक ई, जे एहि अन्तिम मनुक्खक सहज जीवन कें निरन्तर दुरूह आ दुर्वह बनबैत रहैत छैक? बहुत झांपल-तोपल रूप मे जखन ओ देखबैत छथि तँ ई खलनायक देखार पड़ैए--समाज। कनेक खोलि क' कहैत छथि तँ कहै छथि--बाबू। आ पूरापूरी देखार क' क' कहैत छथि तँ कहै छथि--बाभन, जकरा लेल ओ कतोक ठाम 'बभना' शब्दक प्रयोग केलनि अछि। किएक ई थिकाह खलनायक? जातीय आ लिंगगत असमानताक आधार पर विभाजित समाज कहियो न्यायपूर्ण भइये नहि सकैत अछि। आ एहि विभाजित समाजक सभ सँ पैघ लाभुक रहलाह अछि 'बाभन', जनिका रामदेव झाक कथा सभ मे निरन्तर एहि अन्तिम मनुक्ख कें पएर तर दाबि क' आतंककारी वर्चस्व बनौने रखबाक लेल अपस्यांत देखल जा सकैए। 'मंगली मायक बकरी' मे बिना कोनो आक्रोश वा प्रतिरोधक ओ परिणाम प्राप्त करैत देखाइत छथि, 'भितरिया धधरा' मे हुनका ठोर पर 'सिहकल मुसकान' कें देखार क' कथाकार हुनका कनेक उघार करैत छथिन, तँ 'मनुक सन्तान' मे हुनक विद्रूप शाब्दिक प्रतिक्रिया प्राप्त क'

लैत अछि, जतय रामदेव झाक पात्र अपना मे कहैत छैक- *'बभना सभक खेत मे छै बांगो-बथुआ नै आ अनेरे भें-भें करैत रहत...बड़ी चंठा छै बभना! बेतुकारे गारि पढ़ि दै छै... ।* आदि-आदि। मुदा, ओ चाहे आक्रोशक निःशब्दता होइक वा प्रतिक्रियाक शाब्दिक अभिव्यंजन--रामदेव झा सदति अपन कथा मे एक एहन मार्मिक वातावरण सृजित करैत छथि जाहि मे समाजक हृदयहीनता झकझक देखार पड़' लगैत छैक। ओ चाहे 'जलक तल पर लिखल नाम' सन विशुद्ध प्रेमकथा होउक, 'पराजयक मुद्रा' सन के विशुद्ध दाम्पत्य कथा होउक आ कि 'बट गाछक छाहरि' सनक दलित-विमर्शक कथा--समाजक हृदयहीनता कें नांगट-उघार करब जेना कथाकारक मुख्य चेष्टा होइक, से प्रतीत होइत अछि। ई देखार क' क' आखिर ओ कह' की चाहैत छथि? हम बुझैत छी जेना हुनकर आशय होइन--एहि जाति-लिंगक असमानताक आधार पर विभाजित समाज मे सुख आ शान्ति असम्भव थिक। दोसर दिस हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे दलित--साहित्यक घोषित लक्ष्य थिक एक एहन समाजक स्थापना जाहि मे जाति आ लिंगक असमानताक आधार पर कोनो विभाजन नहि हो। तथापि, हम ई नहि कहैत छी जे रामदेव झाक कथा-साहित्य दलित-साहित्य थिक, तखन ई जरूर जे ओ दलित-विमर्शक मुखर पक्षकार थिकाह।

रामदेव झाक कथाक दोसर प्रमुख विशेषता छियनि जे ओ घोषित रूप सँ ठेठ मिथिलाक जीवन-शैली, चिन्तन-शैली आ अभिव्यक्ति-शैली कें एक विमर्शक रूप मे प्रस्तुत करैत अछि। ई 'ठेठ मिथिला' की भेल? मुदा ताहू सँ पहिने प्रश्न अछि जे ई 'मिथिला' की थिक? की थिक एकर पहचान? आधुनिक समाजशास्त्री (यथा डॉ. हेतुकर झा) लोकनिक कहब छनि जे मिथिलाक अस्मिता (Identity) थिक--विद्या आ व्यक्तित्व। हम प्रश्न कर' चाहब जे ई विद्या आ व्यक्तित्व कोन मिथिलाक अस्मिता थिक? जकरा लग मे ने विद्या छैक आ ने व्यक्तित्व, आ एखनहु मिथिलाक बहुसंख्यक आबादी एहने छैक, तँ तकर कोनो 'मिथिला' छैक कि नहि? आ तकर कोनो अस्मिता छैक कि नहि? आ तकर सभक अस्मिता सँ मिथिलाक कोनो अस्मिता बनैत छैक कि नहि, जे कि समाजशास्त्री

लोकनिक दृष्टि सँ एखनहु ओझल छनि! यैह थिक 'ठेठ मिथिला'। एहि मिथिला मे किसान बसैत छथि, मजूर-बोनिहार बसैत छथि, श्रमशील स्त्री समुदाय बसैत छथि आ हुनका लोकनिक सखा-सन्तान बसैत छनि। यैह मिथिला भरण-पोषण करैत रहलनि अछि ओहि पण्डित वर्गक, जनिकर अस्मिता छियनि--विद्या आ व्यक्तित्व!

रामदेव झाक कथा सभ कें देखि जाउ। हुनकर कथानायक सभ, पात्र सभ कि तँ किसान छथि, मजूर छथि वा स्त्री जँ छथि तँ श्रमशील स्त्री छथि। कहबे केलहुँ जे हिनका लोकनिक एकदम जीवन्त आ मुखर चित्रण केलनि अछि ओ, जाहि मे सांस्कृतिक तत्त्व पूरमपूर भरल छैक। स्वाभाविक थिक जे एहन गहमागट्ट चित्रांकन मे एहि वर्गक अस्मिता उभरि क' सामने आबि जाइक। से निश्चिते आबि गेलनि अछि। आ से भकरार भ' क' एलनि अछि। हम प्रस्ताव करै छी जे रामदेव झाक कथा-साहित्यक आधार पर पद्धतिबद्ध ढंग सँ 'ठेठ मिथिला'क समाजशास्त्र लिखल जाय आ एकर अस्मिता जोखि सहियारि क' आ तकरा शामिल क' क' अखण्ड मिथिलाक अस्मिता निर्धारित कएल जा सकैत अछि। अन्यान्य अनेक क्षेत्र मे साहित्यक आधार पर समाजशास्त्रीय अध्ययन आ निर्धारण भेबे केलैक अछि, से मात्र मैथिलीए टा मे एखन धरि नहि भेल अछि, से हो।

एहि अस्मिता-विमर्श कें ल' क' कथाकार रामदेव झा पूर्ण प्रतिबद्ध देखाइत छथि। हुनक प्रायः सम्पूर्ण कथा-लेखन तँ एहि वंचित समुदायक 'ठेठ मिथिला' कें ल' क' कएले गेल अछि, हुनकर कथा सभ मे जतय कतहु सम्भ्रान्त वर्ग आएल अछि, ओकरा चरित्र मे एकटा स्फुट खलनायकत्व आरोपित कएल गेल अछि। 'एक खीरा : तीन फाँक'क हरदेव सिंहक ई खलनायकत्व जतय एक दिस मुखर रूप मे पाठकक सोझा उपस्थित होइत छैक तँ दोसर दिस 'बसातक दाम' मे प्रोफेसर साहेबक, दलित वर्गक नैतिक अवधारणाक प्रति हुनक अज्ञानताक सांकेतिक व्यंग्यक रूप मे।

कोनो साहित्यिक रचना एक 'पाठ' सँ आगू बढ़ि क' एक विमर्शक रूप मे परिणत भ' जाय, एकरा लेल ईहो जरूरी छैक जे कलात्मक स्तर पर ओ एक परिपूर्ण कृति हो। आ हमरा बुझने कोनो कलाकृतिक पूर्णता एहि बात पर निर्भर छैक जे लेखक जे किछु मानैत अछि, अपन

रचना-कौशल, वातावरण-निर्माण आ वस्तु-विवरण द्वारा एहन परिस्थिति उत्पन्न क' दैक जे तकरा मानबाक लेल पाठक सेहो बाध्य भ' जाय। ई बात हमरा लोकनि रामदेव झा मे प्रचुरताक संग देखैत छी। 'बसातक दाम' कथा मे ओ दलित-वर्गक नैतिकता-सम्बन्धी चिन्तन-पद्धतिक प्रश्न उठौलनि अछि। जखन एक दिन अकलबेरिया मे सरबन, प्रोफेसर साहेब कें भरि मोन जांति दैत छनि तँ ओ आन दिन सँ बेसी मजूरी ओकरा देबाक लेल प्रस्तुत होइत छथि, मुदा सरबनक नैतिक स्तर ई अछि जे उचित सँ बेसी मजूरी लेबा सँ ओ इनकार करैत अछि, एहि आधार पर जे एहि भयाओन गरमी मे ओ तँ समय काटबाक लेल आ पंखाक बसात खेबाक लेल प्रोफेसरक कोठली मे जाँतय आएल छल। एहि सूरति मे ओ बेसियात मजूरी कोना ल' सकैत अछि? तहिना, 'हत्थाजोड़ी' कथा मे ओ स्त्रीक हक के प्रश्न उठौलनि अछि, जतए हमरा लोकनि देखैत छी जे पत्नीक हक सँ किछु आगाँक वस्तु स्त्रीक हक छिऐक जे लिंगगत समानताक सिद्धान्त पर अवलम्बित छैक आ जकरा पाबक लेल कोनो निष्ठावानो पत्नी अपन पति कें आन सँ पिटबा सकैत छैक। एहि तरहक विशेषता रामदेव झाक कथा सभ मे अधिकांश ठाम भेटत। कहबे केलहुँ जे काल परिस्थितिवश हुनका कथा सभ कें ठीक सँ देखल नहि जा सकल अछि। तें एहि दिस आलोचकक ध्यान नहि गेल होइन, से सम्भव।

रामदेव झाक कथा-कलाक विशेषता छियनि जे ओ बहुत आराम सँ 'पाठ' कें 'विमर्श' मे रूपान्तरित क' दैत अछि। हुनक हरेक कथाक कथ्य किछु कहैत, किछु प्रस्तावित करैत प्रतीत होइत अछि। पाठक ई रूपान्तरण ठेठ मिथिलाक अस्मिता कें चिन्हार करैत देखाब दैत अछि। हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे एहि बात सभक एकटा ऐतिहासिक महत्त्व छैक। हमरा लोकनि अवगत छी जे स्वतंत्रताक बादो, जखन देस-दुनिआक परिस्थिति बदलि गेल छल आ दरभंगा-राज समापन दिस अग्रसर छल तखनहु, मैथिल महासभाक 1954क सहरसा अधिवेशन मे जखन ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ सँ इतरो जाति कें 'मैथिल' मानि लेबाक प्रस्ताव राखल गेल छल तँ एकर बहुत विरोध भेल छलैक आ ई प्रस्ताव अमान्य क' देल गेल छल। यैह कालखण्ड छल जखन कथाकार रामदेव झाक मनोनिर्माण आ पक्षनिर्धारण

भ' रहल छलनि आ ओ कथा लिखब आरम्भ क' रहल छलाह। एहना स्थिति मे 'ठेठ मिथिला'क दशा कें एक विमर्शक रूप मे कथा मे उठायब आ ताहि मे स्वायत्त अस्मिताक खोज करब आ एहि प्रयास मे निरन्तरता सेहो बनौने राखि सकब--एक मौन आन्दोलन सँ कम नहि थिक। ई एक एहन बात-सन हमरा देखाइत अछि जे जेना-जेना समय आगू बढ़ैत जेतै, रामदेव झाक कथाकारक कद उत्तरोत्तर पैघ होइत जेतनि।

रामदेव झाक कथाकलाक एक आर विशेषता ई छनि जे ओ जीवन-राग आ पीड़ा कें संग-संग उपस्थापित करैत छथि, एतेक साहचर्यपूर्वक जे ओकर अनुपात आ व्याप्ति ठीक-ठीक आँकल जा सकए आ साफ भ' जाय जे एतेक पीड़ाक अछैत आखिर मनुक्ख जीबि कोना रहल अछि आ अपन 'स्व' कें बचब' किऐ चाहैए! कहब आवश्यक नहि जे ई दुख आ सुख के सहकार थिक जे रामदेव झाक कथा सभ मे प्रकृत रूप मे प्रकट भेल अछि। स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथाक परिप्रेक्ष्य मे देखी तँ ई बात चलन सँ अलग हँटि क' अछि। स्वातंत्र्योत्तर कथाक सामान्य चलन थिक जे जीवन मे बहुत दुख, मोहभंग, कुंठा, संत्रास आदि-आदि अछि। मुदा कथालेखकक सदिच्छा वा सेहन्ता एहि सँ हारब नहि गछैत अछि आ से कथाक अन्त मे एक सकारात्मक संकेतक रूप मे अभिव्यक्त होइत अछि। एकर उदाहरण हमरा लोकनि ललितक कथा 'रमजानी' मे देखि सकैत छी। स्वातंत्र्योत्तर कथाक ई सामान्य प्रवृत्ति हमरा लोकनि देखैत छी।

रामदेव झाक कथाक प्रवृत्ति एहि सँ भिन्न अछि। जीवन कें ओ सामान्यतः जीवन जकाँ देखैत छथि, जाहि मे जँ दुख अछि तँ सुख सेहो अछि, मोहभंग अछि तँ मोह सेहो अछि आ संत्रास जँ अछि तँ उल्लास सेहो अछि। खास बात ई जे ई सभ अलग-अलग नहि अछि। हुनक कोनो कथा ऐकान्तिक रूपें दुख वा संत्रासक कथा नहि भ' सकैत अछि, जेना कोनो मनुक्खक जीवन मे निछच्छ पीड़ा-मात्र पीड़ा नहि होइत छैक। ओ जँ कोनो रिक्साबलाक 'पराजयक मुद्रा' पर कथा लिखताह तँ ओहि मे दाम्पत्य-सुखक कोमल आ स्पृहणीय चित्र सेहो खचित करताह। 'मनुक सन्तान'क दलित-उत्पीड़ित परिदृश्य कें जँ अंकन कर' बैसताह तँ ओकर जीवनक भव्य सुन्दरता कें सेहो जगजगार क' देताह जे बरबस पाठकक भीतर

'सहयोग सँ सृजित सुन्दर दुनिञा'क स्पृहा जगा देतैक। हुनक एक मार्मिक कथा छनि- 'पहुना'। एहि कथाक नायिका बसन्तीक उत्तर-जीवन दुख आ संघर्ष सँ गछारल अछि। कथाक पृष्ठभूमि ओ तेना रचने छथि जे बसन्ती एक व्यक्तित्ववान स्त्रीक रूप मे सामने अबैत अछि--माने एक श्रमिक स्त्री होइतो ओ जीवन-धाराक विश्लेषण क' सकैत अछि, स्नेहक मूल्य बूझि सकैत अछि, अपन हक आ दायित्वक लेल साकांक्षता राखि सकैत अछि। आब ओकर जे हालति भेल छैक तकरा मादे रामदेव झा अपन पारदर्शी कथा-भाषा मे एकटा वाक्य लिखैत छथि- *'जेना औन्हा अल्हुआ अपने भाफ सँ सीझि जाइत छैक तहिना ओकर यौवन अपने आगि मे झरकि गेल छलैक।'* हमरा लोकनि देखैत छी जे जखन बसन्ती छोट उमेरक रहय, तखने ओकर माय दोसर पुरुख-संग 'सम्बन्ध' क' लेने छलैक आ आगू जखन ओ एक बेटीक माय भेल तँ ओकर 'परमप्रिय पहुना' दोसर मौगी-संग सगाइ क' लेलकै। मुदा ओकर यौवन अपने आगि मे झरकि क' किए खतम भ' गेल? हम सभ देखैत छी जे जखन नेनपन मे ओकर माय ओकरा छोड़ि क' चलि गेल छलैक तँ बसन्ती कें बहुत दुख, बहुत पीड़ा भेल छलैक। ओ ओकरा मोन छै। ओ पीड़ा ओकर धरोहर छिऐक। ओ अपने कोनो दोसर पुरुख-संग सगाइ नहि क' सकैत अछि, कारण ओकर ई धरोहर, ई पीड़ा, ओकरा अपना बेटी कें होब' बला पीड़ा संग जोड़ैत छैक। पीड़ाक तल पर पाओल जाइबला जुड़ावक कथा थिक 'पहुना'। बहुत प्रसिद्ध कथन अछि आ एहि पर हिन्दी-कवि अज्ञेय एक कविता सेहो लिखने छथि जे दुख सभ कें माँजैत छैक, ई दुख भनें अपन सभ भोक्ता कें मुक्ति नहि प्रदान क' पाबौ, मुदा जकरा-ककरो ई माँजै छै, तकरा भीतर ई बोध दैत छै जे ओ अनका एहि दुख सँ मुक्त राखय! एही बोधक कथा थिक 'पहुना'। बहुत उद्दाम लालसा जगैत छैक एहन जीवनक प्रति, जतए दोसरक दुखक मर्म कें बुझबाक बोध पाओल जाइत हो। हमरा तँ लगैत अछि जे यैह 'सत्साहित्य' थिक, जकर पैरबी आचार्य रमानाथ झा जीवन भरि करैत रहलाह। राजा राम आ धर्मनिष्ठ युधिष्ठिर महराजक कथा सत्साहित्य नहिञो भ' सकैए मुदा छोट सँ छोटो लोकक ओ कथा जे हमरा भीतर एहि मर्म कें, एहि बोध कें अनुभव करबाक स्पृहा

जगबैत हो, ओ निश्चिते सत्साहित्य थिक। बसन्तीक जीवन मे बहुत पीड़ा छैक मुदा एक मिशन कें पूरा करबाक उत्साह ओ उल्लास सेहो छैक। पीड़ा आ उल्लासक यैह संतुलित सम्मिश्रण कथा कें जीवनक लग अनैत छैक। पीड़ा आ उत्साह के ठीक-ठीक अनुपात कथा मे उतरि पाबैक, ई बहुत कठिन बात छैक मुदा रामदेव झा बहुत जतन सँ एकरा संभव करैत रहलाह अछि। एकरा लेल दूटा वस्तु आवश्यक होइत अछि--एक तँ ई जे लेखक कें अपन कथ्यक ठीक-ठीक पता रहबाक चाही आ निर्मोह भ' क' अपन कथ्यरूपी लक्ष्य कें प्राप्त करबाक दिशा मे ओकरा गमन करबाक चाही। कथा लिखैत काल कतेको बेर लेखक कोनो पात्रक प्रति, दृश्य आ कथनोपकथनक प्रति मोहासक्त भ' जा सकैत अछि आ तकरा आवश्यकता सँ बेसी जगह भेटि जा सकैत छैक। तहिना, लेखक अपन अभिव्यक्ति-आकुलताक आन्तरिक दबाववश किछु बिन्दु कें स्पष्ट करबा सँ चुकियो जा सकैत अछि वा ओकरा, आवश्यकता सँ कम जगह द' क' अनबूझ बनल रहबाक लेल बाध्य सेहो क' द' सकैत अछि। एहि दुनू स्थिति मे मुदा कथाक संतुलन आ ओकर ई अनुपात टुटि जयतैक आ एहि परिस्थिति मे लेखकक कथा एक नीक कथा हेबा सँ वंचित रहि जाएत। हम कह' चाहैत छी जे निर्मोह आ निर्भ्रान्त भ' क' लेखन करब, एक नीक कथाक रचना लेल , परम आवश्यक अछि आ से रामदेव झा निश्चिते क' सकलाह अछि। हुनका ठीक-ठीक पता रहैत छनि जे अपन कथा मे हुनका की कहबाक छनि आ ताहि लेल कोन बात पर कतेक जोर आ तकरा कतेक स्थान देबाक छनि। हुनक कथा-लेखन मे एहि तरहक त्रुटि नहि भेटैत अछि आ ई बात हुनका एक पैघ कथाकार साबित करैत छनि।

एहि सन्तुलन लेल दोसर जे गुण चाही से थिक--वातावरण-निर्माण। रामदेव झा एहू वस्तुक मास्टर छथि। सभ गोटे जनैत छी जे छोट, सोझ, एकहरा आ कथानकमुखी हएब मैथिली कथाक खास पहिचान भ' गेल अछि। दोसर तरहें देखी तँ वातावरण-निर्माणक दुर्बल हएब सेहो मैथिली कथाक एक पहिचान बनल अछि। कथा छोट आ कथानकमुखी होइते अछि एहि दुआरे जे कथाकार वातावरण-निर्माण पर कि तँ अपेक्षित श्रम

नहि क' पबैत छथि आ कि से करब हुनका सम्हारे मे नहि रहैत अछि। आइ धरिक इतिहास मे थोड़बे एहन कथाकार भेल छथि जे एहि गुणक आगर छथि आ जनिकर कथा सभ मैथिली कथा--साहित्य कें 'धनधान्यपूर्ण' बनबैत अछि। एहन 'ग्रैण्ड स्टोरी मास्टर्स' मे सँ एक कथाकार रामदेव झा छथि।

हमरा लगैत अछि जे रामदेव झाक कथा मे पाओल जाइबला सभ सँ पैघ वैशिष्ट्य कदाचित ओकर वातावरणे थिक, जकर निर्माण मे प्रतिभा आ श्रम दुनू हुनकर सहायक होइत रहलनि अछि। अपन निर्माण-दक्षता सँ कथा मे ओ एहन वातावरण बना दैत छथि, जाहि मे हुनकर कथ्य कारी-कारी आकाश मे उगल पूर्णचन्द्र जकाँ भासमान भ' उठैत छनि। हुनक रचना-प्रक्रियाक अवलोकन करी तँ पबैत छी जे एहि लेल दू-तीन टा कलाकारी ओ करैत छथि। लगैत अछि जे दूर-दूर धरि पसरल जीवन मे सँ कोनो एक खण्ड ओ अपना कथाक लेल बेरा लैत छथि जेना क्यो एक किलोमीटर दूर धरि टांगल तार मे सँ पाँच मीटरक अंश अपन अवलोकन लेल चूनि लियय। जीवनक जे खण्ड ओ अपन कथा लेल चुनैत छथि, तकर क्रमानुक्रमिक विवरण देब शुरू करैत छथि। ओहि मे जीवनक स्वरूप अपन परिपूर्ण विस्तार मे विवेचित होइत छैक। छोट-छोट घटना रहैत छैक, मुदा तकर पृष्ठभूमि आ तकर संगति पूरे डिटेल मे सामने अबैत अछि। ओहि ठामक माटिपानि आ पर्यावरण टनटन बजैत रहैत अछि। कथा मे थोड़बे दूर आगू बढ़ला पर लाग' लगैत अछि जे भने ओ जीवनक एक छोटे खण्ड अपन कथा लेल चुनने होथु, मुदा जे चुनलनि सैह खण्ड ओहि पात्रक जीवनक निहितार्थ छिऐक। ओ कथा कें अपन सामान्य गति मे चल' दैत छथि, एक-एक घटना, एक-एक आयाम कें देखबैत-विश्लेषित करैत। ई सभ कथू एक एहन सहजता आ निर्दोषिताक संग होइत छैक जे पाठक पूरेपूरी अपना कें हुनक कथा मे इन्वॉल्व क' दैत अछि। केवल रामदेव झा जनैत रहैत छथि जे हुनका जेबाक कतए छनि, आ पाठक कें अपना संग लेने जतए ओ पहुँचैत छथि से बहुत सुन्दरताक संग जीवनक मर्म कें उद्घाटित क' दैत छैक। 'मनुक सन्तान' कथा, सन्तान लोकनिक द्वारा दू-अढ़ाइ घंटाक भीतर खेत मे डोका बिछबाक कथा थिक। 'मंगली

मायक बकरी' बकरीक निछा जयबाक दिनक कथा थिक। 'परमिलिया' किछु घंटाक भीतर मे परमिला दाइक, जाँत पर पिसिया करबाक कथा थिक। आदि-आदि। मुदा लगैत छैक जे यैह किछु काल ओकर जीवनक अर्थ आ व्याप्ति उद्घाटित क' दैत छैक। आ से सम्पूर्ण परिवेश, अखण्ड पर्यावरणक संग। ई भइये एहि दुआरे पबैत छैक जे कथा-समयक वातावरण जबर्दस्त बनल रहैत छैक।

लक्षित वर्गक दैनन्दिन जीवनक निरीक्षण रामदेव झा बहुत सूक्ष्मताक संग केने रहैत छथि। एक-एक वस्तु आ प्रक्रियाक डिटेल हुनका बूझल रहैत छनि। ओ वर्ग, अपन खास वर्गीय शैली मे कोन स्थिति मे कोना प्रतिक्रिया करत, तकर हुनका ठीक-ठीक आकलन रहैत छनि। ओकर बौद्धिक आ नैतिक स्तरक ओ समझ रखैत छथि। ओकर अभिव्यक्ति-शैली सेहो हुनका बूझल छनि। ई सभ मिलि क' हुनकर कथा-सृजन कें आसान करैत अछि। एहि सभ कथू पर रामदेव झाक ततेक पकड़ छनि जे हुनकर कथावाचक बहुत आत्मविश्वासक संग कथा सुनबैत देखल जाइत छथि। यैह कारण थिक जे हुनकर कथा सभ अधिकतर पूर्वदीप्ति (फ्लैश-बैक) मे कि तँ जाइते नहि अछि आ जँ जाएब जरूरियो भेल तँ बहुत कम क्षणक लेल जाइत अछि। पूर्वदीप्ति मे कथा कें ल' जाएब कथाकारक काज कें हल्लुक बनबैत छैक, वातावरणक जँ ओकरा बहुत निरीक्षण नहिओ कएल हो तँ से पूर्वदीप्तिक चमक मे नुका जाइत छैक आ ओ कम श्रम मे बेसी यश प्राप्त करबाक लाभ ल' सकैए। रामदेव झा मुदा, एना करैत नहि देखल जाइत छथि। ईहो हुनका पैघ कथाकार बनबैत छनि। हुनकर पात्र सभ बहुत-बहुत दिन धरि अहाँ कें मोन पड़ैत रहत--ओकर जीवनक पीड़ा, ओकर परिस्थितिक विडम्बना, ओकर कहल कोनो बात, ओकरा द्वारा लेल गेल कोनो निर्णय! विश्लेषण क' क' देखी तँ एहि स्मृति मे कथानकक ओते भूमिका नहि होइत छैक जते वातावरणक। हम 'परमिलिया' कें नहि बिसरि पबैत छी--ओकर ठोस व्यक्तित्व, श्रमशील स्वभाव आ ताहि सभ सँ निर्मित उद्दाम लालसा। स्त्रीक एही लालसाक कथा थिक ओ, जे बिसरने नहि बिसरल जाइछ। कहबे केलहुँ जे तकर कारण कथानक ओते नहि अछि जते वातावरण।

'मंगली मायक बकरी' कथा मे ओ कनेक कालक लेल फ्लैशबैक मे जाइत देखल जाइत छथि। कथाक एहन अंश मोश्किल सँ पूर्णकथाक दशमांश हएत। मुदा एतबे मे दू टा भिन्न-भिन्न वर्गक सामाजिक सोच आ प्रच्छन्न अस्मिता अपन ठोस पृष्ठभूमि रचि लैत अछि आ फेर जखन ओ अपन मूल कथा-समय मे घुरैत छथि तँ कथाक मर्म उद्‌घाटित भ' उठैए। किछु आनो कथा सभ मे जे ओ फ्लैशबैक मे गेलाह अछि तँ प्रायः एही तरहें गेलाह अछि। मुदा किछु ठाम तँ ओ आरो संक्षिप्त भ' क' कमाल क' गेल छथि। एही तरहक हुनक एक कथा छनि--'एकटा रहय उतमी'। कथानायिका उतमी घास काटि क' बजार मे बेच' बाली एकटा श्रमशील स्त्री थिक, जकरा जीवन मे बहुत विडम्बना, बहुत संघर्ष भरल छैक। वोट पड़बाक दिन थिक, जखन बजार मे कोनो राजनीतिक पार्टीक दलाल उतमी आ ओकर संगतुरियाक संग ई सौदा करैत अछि जे बोगस वोट खसेबाक एवज मे ओकरा सभ कें दू-दू टाका भेटतैक। दू टाका ओकरा लेल बहुत छैक मुदा ओकर मानस-निर्माण एहि तरहें भेल छैक जे एना क' क' दू टाका कमाएब कें ओ बड़ भारी अपकर्म बुझैत अछि। दोसर दिस, ओ भारी अभाव मे जीबि रहल अछि। घर मे अन्न-पानिक कोनो असरा नहि छैक, पति बीमार छैक, बेटा कें सेहो इलाजक बेगरता छैक, ओकर घास उचित दाम पर बिकि नहि पबैत अछि आदि-आदि। उतमी-सन सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति मे जीबैत स्त्रीक आत्मसंघर्षक ई कथा थिक। एहि कथा मे रामदेव झा करैत की छथि जे समुच्चा कथा अपन सामान्य गति मे चलैत रहैत अछि जतए बजार छै, घास आ ओकर गंहिकी छै, वोट छै, लफन्दर आ दलाल छै। मुदा जतए-जतए अपन पूरा रौनक के संग ई सभ छैक ओतहि कथाकार एक वाक्य मे उतमीक परिस्थिति कें मोन पाड़ि छैत छथि, पूरा कथा मे अनेको बेर, आ से प्रायः समान शब्दावली कें दोहरबैत- *'मोन ओकर दौड़ि गेलैक गाम पर--सांगरहीवला सांय, चाली भरल पेटवला बेटा, अन्न पानि सँ खाली ओ घर।'*

कहबे केलहुँ जे वातावरण-निर्माण लेल रामदेव झा बहुत जतन करैत छथि। से हुनकर कथा कें मार्मिक आ अविस्मरणीय बनेबाक लेल सभ सँ महत्त्वपूर्ण कारक बनैत अछि।

दोसर दिस हमरा लोकनि देखैत छी जे परवर्ती फेजक हुनक कथा-लेखन मे फ्लैश बैकक प्रयोग बढ़ि गेलनि अछि। एम्हर जे हुनकर कथा सभ आयल अछि, ताहि मे सँ किछु मे तँ पचास प्रतिशत सँ बेसी कथा पूर्वदीप्ति मे अबैत अछि। एना किएक भेल अछि? एकटा सामान्य-सन बात हमरा ई देखाइत अछि जे जाहि वर्गक कथा ओ लिखैत रहलाह अछि, तकरा सँ एम्हर काल परिस्थितिवश दूर भ' गेलाह अछि। एतेक दूर तँ नहिञे जे ओकर कोनो हाले-सूरति नहि बूझल होइनि नहि तँ फेर कथे कोना लिखितथि! मुदा एतेक लगो नहि जे एहि तीस-चालीस बर्ख मे ओकर समाजार्थिक परिस्थिति कोन तरहें ओकर मानसिक संरचना आ सांस्कारिक ग्रन्थन कें प्रभावित केलकैक अछि तकर विस्तार मे जाथि। तें जखन कथा लिखैत छथि तँ अपन साख आ प्रतिष्ठाक रक्षा करैत, अधलाह कथा लिखबाक बदला फ्लैश बैक मे जाएब स्वीकार करैत छथि। ओना देखी तँ ई आजुक कथा--लेखनक युगधर्म बनि क' सामने आएल अछि। उत्तर-आधुनिक कथा प्रारूप मे पूर्वदीप्ति एक दिस जँ 'पोपुलर फैशन' छिऐक तँ दोसर दिस 'लचारक लाठी' सेहो छिऐक कारण एकर सहारा ल' क' कथाकार अपन कतेको कमजोरी कें झाँपि ल' सकैत अछि।

मुदा अपन एहि कमजोरीक भरपाइ रामदेव झा बहुत सकारात्मक तरीका सँ करैत छथि। सुरुहे सँ हम सभ देखैत आएल छी जे हुनका जखन कोनो विषय मे, कोनो वस्तु पर कथा लिखबाक रहैत छनि तँ बहुत धैर्यपूर्वक ओ, ओहि विषय-वस्तुक सम्बन्ध मे सूचना एकत्रित करैत छथि। सूचना माने ओकर रहनी-सहनी सँ जुड़ल समस्त वस्तुजात, शब्दावली, ओकर विश्वास, ओकर तकनीक, ओकर गुणावगुण आदि-आदि। सम्भव थिक जे एहि सभ कथूक जानकारी हुनका पहिनहि सँ रहैत होउनु, मुदा तकरा संयोजित करबाक काज धरि अवश्य ओ बहुत धैर्यपूर्वक करैत छथि। एहि सँ कथा झमटगर बनैत छनि आ ओकर विश्वसनीयता असंदिग्ध बनैत छैक। एहि सँ हुनका कथा मे ग्राह्यताक गुण अबैत छनि। से हमरा लोकनि देखैत छी जे जखन ओ पूर्वदीप्ति मे जाइत छथि, तखनहुँ ई सभ कथू यथावश्यक मात्रा मे विद्यमान रहैत छैक जे कि हुनक समकालीन आन कथाकारक संग प्रायः कम भ' पबैत छनि। विगत केर घटनाबहुलताक सारांशीकरण मे लेखक तेना क' व्यस्त भ' जाइत अछि जे

एहि सभ कथू पर सँ ओकर पकड़ छूटि जाइत छैक। रामदेव झाक एक प्रसिद्ध कथा छनि--'फडिच्छ भ' गेल छलै।' किसुन नामक एक राजमिस्त्रीक जीवन-संघर्ष आ दाम्पत्य-लालसाक ई कथा थिक। एकर एक पैघ भाग पूर्वदीप्ति मे चलैत छैक। मुदा ई देखब रोचक थिक जे राजमिस्त्रीक कार्यप्रक्रियाक मेही-सँ-मेही सूचना, ओकर औजार-पातीक ठीक-ठीक परिचय, ओकर तकनीक आ तकनीकी शब्दावली कें ततेक जीवन्त रूप मे आ कथाक अंग बना क' ओ प्रस्तुत केलनि अछि जे सैह एहि कथा कें मोन रखबा योग्य बना दैत छैक, जखन कि असली बात थिक--कथा-संवेदना, जकर ओतबे ओस्ताद रामदेव झा छथि, जतबा अपन धंधाक ओस्ताद किसुन मिस्त्री छथि।

कथा-सम्वेदनाक बहुत ठीक-ठीक आकलन रामदेव झा कें छनि। एकरा पकड़बाक प्रति अत्यन्त सुरुहे सँ ओ सजग रहल छथि। हुनक अभ्यासकालीन कथा सभ कें देखी, जे कि हुनक पहिल संग्रहक 'एक खीरा : तीन फाँक' मे संकलित छनि। कथा-कलाक दृष्टि सँ एहि मे सँ कतेको कथा कमजोर कथा अछि। मुदा, एकटा बात धरि निर्विवाद अछि जे अपन तरुणावस्थो मे, जखन कि ओ कथा-कलाक मर्मज्ञ नहि भेल रहथि, तखनहु, कथा-सम्वेदना कें पकड़बाक हुनक दृष्टि अचूक रहनि। से सम्वेदना एहू कथा सभ मे जगजियार देखाइत छैक। तहिना किछु कथा मे हमरा लोकनि देखब जे ओ बेस 'एडिटोरियल मूड' मे देखाइत छथि। कथा कहैत-कहैत अपन वक्तव्य, अपन विश्लेषण प्रस्तुत कर' लगैत छथि, सदुक्ति आ सुभाषित के झड़ी लगा दैत छथि। सभ बूझि सकैत छी जे एना ओ अपन कमजोरी कें झपबाक लेल क' रहल छथि। कमजोरी एहि बातक जे वातावरण-निर्माण लेल ओ अपेक्षित श्रम नहि क' सकलाह अछि। तकर कारण प्रायः ई भ' सकैत अछि जे एहन कथा सभ कि तँ ओ कोनो दबाव मे लिखने हेताह अथवा हड़बड़ी मे। मुदा, ध्यान देबाक थिक जे हुनकर एहनो कथा सभ जँ पठनीय बनल रहि सकल तँ तकर असली कारण थिक--कथा-सम्वेदना। रामदेव झाक लेल यैह ओ वरदान-सन थिक जे आम पाठकक नजरि मे हुनकर कोनहु गोट कथा कें 'अधलाह कथा'क कोटि मे रखबा सँ बचा लैत अछि।

मैथिली कथा-साहित्य मे रामदेव झा-सन कथाकारक हएब बहुत आश्वस्तिदायक थिक। अपना समय मे वा तकर बादो भने ओ नहि चिन्हल गेल होथु, आगू हुनकर बहुत सम्मान हेतनि। आइ मैथिलीक समकालीन कथा-साहित्य ओही लाइन पर आगू बढ़ि रहल अछि, जकर परिकल्पना ओ, अपना लेल अपना युग मे केने रहथि! कोनो कथाकारक जीवनक साफल्य एहि सँ बेसी आर की भ' सकैत अछि?

(2008)

चर्चा-प्रभास

प्रभास कुमार चौधरी मैथिलीक एक एहन अपूर्व कथाकार छथि, जनिका रचना मे कइएक टा नव क्षितिज पहिल बेर खुजल। हुनकर रचना सभ मे अनुस्यूत यथार्थ बहुत विविधतापूर्ण अछि। ई विविधता सभ कैक बेर तते बहुआयामी भ' जाइत अछि जे परस्परविरोधी सन लगैत अछि। हम कहए चाहैत छी जे प्रभासक यथार्थ परस्परविरोधी लगैत अछि मात्र, ओ वस्तुतः परस्परविरोधी अछि नहि। जीवन कते विविधतापूर्ण होइत अछि! गणितक फार्मूला पर की जीवन कें कसल आ बूझल जा सकैत अछि? एक्के व्यक्तिक जीवन मे कते-कते यथार्थ नुकायल रहैत छैक जे परस्परविरोधी प्रतीत होइत अछि।

एक तँ हमरा लोकनि 'जीवन' कें देखबाक दृष्टिकोण मे उदार नहि छी--जीवन मे विद्यमान विरोधाभास सभक तात्त्विक एकतानता ताकबा मे महाग मूढ़ भेल रहैत छी। मुदा, रचनाक प्रसंग मे तँ ताहू सँ बेसी अनुदार छी हमरा लोकनि।

प्रभास कहि गेल छथि जे ओ जे किछु लिखलनि, स्वयं अप्पन अभिव्यक्ति लेल। अपन जीवनक अन्तिम वर्ष मे ओ कहने रहथि जे अगिला बीस टा उपन्यास आ दू सय कथा जँ ओ लिखए चाहथि (से ओ चाहितो रहथि) तँ हुनका अपना गाम सँ बाहर (कथानक लेबाक वास्ते) नहि जाय पड़तनि।

मैथिलीक प्रायः शत-प्रतिशत लेखक तँ गामे मे जनमलाह आ पललाह-बढ़लाह अछि। मुदा, गामक जीवन केर सर्जनात्मक उपयोगक प्रति

जे आश्वस्ति आ आत्मविश्वास प्रभास मे भेटैत अछि, से अन्यत्र दुर्लभ थिक। तकर की कारण? हमरा बुझाइत अछि जे तकर कारण थिक--जीवनक सतत प्रवाहक प्रति द्रष्टा-भाव आ साक्षी-भाव। कथानकक चयन तँ हम जरूर करब, से मुदा अपन सुविधा आ अपन शौकीन मिजाजीक वशीभूत भ' क' नहि। अपना दिस सँ कोनो जिद, कोनो अर्जित प्रतिबद्धता नहि। मात्र साक्षी-भाव। आब ई जीवनक समकालीनता पर निर्भर करैत छैक जे ओकर प्रवाहक गति की छैक आ ताहि सँ की आशय ध्वनित करैत अछि ओ!

युग आबि रहल अछि जखन प्रतिबद्धता नहि, साक्षी-भाव जीवनक ऊर्जा आ लेखनक सम्बल बनतैक। प्रगतिशीलता जँ हमर दृष्टिकोण मे एकमएक हो तँ की फरक पड़ैत छैक से हम ककरा बारे मे आ की लिखि रहल छी!

प्रभास जीक विविधतापूर्ण कथा-साहित्य कें देखैत छी तँ ओ 'पायोनियर' सन लगैत छथि!

अपन बाल्य आ तरुणावस्थाक जे विवरण प्रभास जी द' गेलाह अछि, ताहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे कथा-रस हुनका माइक दूधे संग-संग पियाओल जाय लागल छल। जेना जेना ओ पैघ होइत गेलाह, कथा सुनबाक आ कहबाक--दुनूक--तमीज हुनका मे विकसित होइत गेलनि। अपन साहित्यिक जीवनक प्रारम्भिक दौर मे ओ कवितादि लिखैत छलाह। छन्दोबद्ध रीति मे लिखित हुनक एहि कविता सभ कें सुनल जाय तँ ओ अपन फाइनल इफैक्ट मे कथा-सुनबा-सन केर तृप्ति दैत अछि। यैह हुनक मौलिकता छल। मुदा, जखने हुनका प्रतीत भेलनि जे एहि प्रकारक कविता लिखबाक चलन नहि छैक--आ एहन लिखनिहार गैर-प्रगतिशील, गैर-प्रयोगशील कवि करार देल जाइत अछि--तुरत ओ कविता लिखनाइ छोड़लनि आ सुच्चासुच्ची गद्य मे अभिव्यक्त हएब कबूल केलनि।

युगक चलनक प्रति सम्वेदनशीलता छलनि ई हुनकर तँ अपन सामर्थ्य आ सीमाक प्रति परिचिति सेहो छलनि। जँ अधिकाधिक अभिव्यक्ते हएब लेखकीय जीवनक सर्वोच्च काम्य हो तँ प्रभास जी खूब-खूब सफल साहित्यकार भेलाह। सफल होयबाक लेल अपन सामर्थ्य आ सीमा सँ वाकिफ रहब हद दरजा धरि जरूरी अछि।

मैथिली कथा मे आधुनिकताक प्रवेश परिवेश-विश्लेषणक रूप मे भेल। प्रारम्भिक कालक मैथिली कथा सुच्चा-सुच्ची खिस्सा छल, सुनाओल जायबला खिस्सा, जाहि मे कि घटनाक विवरण परसल जाइत छैक। एहि प्रकारक कथा मे परिवेशक विश्लेषणक तँ कथे कोन, विवरण धरि विस्तारपूर्वक देबाक अवकाश नहि होइत छलैक। हरिमोहन बाबू जखन कथा मे परिवेशक विश्लेषण प्रारम्भ केलनि, तँ वस्तुतः से मैथिली कथा कें आधुनिकताक प्रथम स्पर्श छलैक। यद्यपि कि हरिमोहन बाबूक परिवेश-विश्लेषण सर्वथा भिन्न कोटिक छल, जकर उपयोग हास्य-व्यंग्यक तरंग उत्पन्न करबाक मंशा सँ कएल जाइत छल। मुदा, जखन ई वस्तु मैथिली कथा मे एलैक तँ ई एक घरौआ चीज बनि गेलै। हुनका बाद जे क्यो कथाकार एलाह (अथवा हुनक समकालहु मे जे क्यो कथा-लेखन केलनि) सभक कथा मे ई वस्तु (परिवेश-विश्लेषण) एक स्वाभाविक आ आवश्यक वस्तु बनि गेलैक।

प्रयोगशील मैथिली कथा, जकर प्रथम पुरुष हमरा लोकनि ललित कें मानैत छियनि, एक भिन्न स्वादक संग सामने आएल। मनुक्खक अन्तर्मन मे प्रवेश करबाक चेष्टा एतहि सँ शुरू भेलै। दृश्य जे हमरा आँखिक सोझाँ अछि, तकर ततबे टा अर्थ नहि जतबा कि हम देखैत छी। दृश्यावलिक फ्रेमक भीतर सेहो आ बाहर सेहो एका पर एक दृश्य-दर-दृश्य होइत छैक, जकरा कि गहन सम्वेदनाशक्ति सँ पकड़ल, बूझल आ अभिव्यक्त कएल जा सकैत छैक। से ई सभ मामला एहि घाराक कथा-लेखन मे प्रयोग मे आनल गेल। बात ई जटिल छल, तें जरूरी तौर पर एहि युगक कथा-रचना जटिल रचना होइत गेल। लेखकक प्रतिभाक कसौटी आब ई भेलैक जे जटिल सँ जटिल कथा-सत्य कें ओ कते संवेद्य आ सम्प्रेषणीय आ सरल ढंग सँ अभिव्यक्त क' पबैए।

प्रभास एहि दौर केर दशक भरि बाद कथा-लेखनक क्षेत्र मे सक्रिय भेलाह। ताधरि प्रयोगशील धाराक चकाचौंध मद्धिम पड़ए लागल रहैक। मनुक्खक अन्तर्मन कें अभिव्यक्त करबाक जे रोमांच छलैक, सेहो नहुँए-नहुँए कम पड़ैत गेलैक आ अर्न्तजगतक रहस्यमयताक सेहो घटैत गेलैक। ई एकटा एहन समय छल, जखन मैथिली कथा कें अपन नव दिशा सन्धान करबाक रहैक आ नव परिचय बनेबाक रहैक। ताहि काल मे जे कथाकार

सभ लिखनाइ शुरू केने छलाह, हुनका लोकनिक बहादुरी एही बात मे निहित रहैक।

प्रभास कुमार चौधरी आ जीवकान्त--ई दू गोटे भेलाह, जे प्रयोगशील दौर सँ मैथिली कथा कें आगाँक बाट पकड़ौलनि। दुनूक अपन भिन्न-भिन्न कथा-संसार आ सम्वेदन-क्षमता छनि, दुनूक अलग-अलग पसिन्न, अलग-अलग तुक आ तेवर, अलग-अलग मोर्चा आ मुद्दा छनि, मुदा दुनू गोटेक कथा-लेखन दू अलग-अलग रूप सँ मैथिली कथा कें आगाँ ल' चलैत अछि।

प्रभासक जे काज हमरा सभ सँ उपादेय बुझाइत अछि, से थिक--पूर्ववर्ती दुनू धारा मे सँ विधायक आ सकारात्मक तत्त्व सभ कें बहार क' तकर आदर्श प्रतिरूप तैयार करब। बात ई जतबे जरूरी छल, ततबे कठिन आ तीक्ष्ण प्रतिभामात्रैकगम्य सेहो छल। प्रभास जी बहुत मुखरतापूर्वक एहि कठिन बात कें सम्भव बनौलनि, आ तकरे उत्साह मे अनेक-अनेक कथा लिखलनि।

हुनका कथा सभ मे परिवेश केर यथावश्यक विश्लेषण सेहो छनि, आ मनुक्खक अन्तर्मन आ दृश्यावलिक आरपार केर दृश्य-दर-दृश्य विवेचन सेहो। ओ पूर्ववर्ती दुनू धाराक प्रतिभाशाली समन्वयक भेलाह। आधुनिक कथा कें वस्तुतः केहन हेबाक चाही, तकर एक सुसंगत मॉडल हमरा लोकनि कें हुनका लग मे भेटि सकैत अछि।

कथ्यक सन्दर्भ मे मैथिली कथा भने आइ बहुत आगाँ चलि आयल हो, शिल्पक स्तर पर एखनहुँ ओतहि अछि, जतय प्रभास छोड़ने छलाह। मैथिली कथाक ई अपंगता छिऐक, से बात नहि। बढ़ि क' आखिर ओ जाइयो कतए सकैत छल? कोनो तँ आखिर अन्तिम बिन्दु, मंजिल, हेतैक।

प्रभासक सम्बन्ध मे हुनक कथा-गुरु आ वरेण्य कथाकार ललित एक बेर लिखने छला-- *'कोनो विसंजोगें यदि हमरा सँ लिखनाइ छुटि जाएत तँ संतोष रहत जे प्रभास लिखैए।'* से, हमरा सभक लेल आब चुनौती ई अछि जे एहिठाम सँ मैथिली कथा कें कोना आ कते आगू ल' जा सकैत छी।

(2006)

जीवकान्त : सोझ जीवनक आख्यान

''नहि, बहुत रंग नहि
बहुत थोड़ रंग उठाउ
रंग उठाउ जेना बेली फूल उठबैत अछि सांझ मे
रंग उठाउ जतबा जरूरी हो जीबा लेल
उठबैत अछि जतबा रंग आमक पात
नबका कलश मे

नहि, बहुत गंध नहि
गंध उठाउ बहुत थोड़
थोड़ गंध जतबा नीम चमेलीक फूल उठबैत अछि
गंध जतबा आमक मज्जर उठबैत अछि

नहि, बहुत शब्द नहि
जोरगर आवाज नहि
आवाज उठाउ जतबा बगड़ा बजैत अछि प्रिया लेल
जतबा जीबा लेल आवश्यक हो
आवाज जतेक बजैत अछि पिपरक पात बसात सँ
थोड़ आवाज जतेक बजैत अछि
आँगनक जाँत गहूम सँ

जीवन अछि सोझ
ओ देखौआ नहि थिक
बरिसैत कालक मेघ होइत अछि जीवन
झहरैत मेघ मे होइत अछि रंग मुदा थोड़
ओकरा मे होइत अछि ध्वनि मुदा साधारण
ओकरा मे होइत अछि गंध
विरल गंध।''

ऊपर जे हम उद्धृत केलहुँ, ई एक समुच्चा कविता थिक, जे कवि जीवकान्त अपन निवास, ड्योढ़, मधुबनी सँ दिनांक 1 अप्रैल 1996 कें एक अन्तर्देशीय पत्र मे हमरा लिखि पठौने छला। ओही दिन, ओही काल ओ एहि कविताक रचना केने रहथि, एकदम टटका-टटकी।

ई हुनकर पुरान हिस्सक छलनि। जाहि काल मे ओ कविता लिखए बैसथि, कविता पूरा क' लेलाक बादो बड़ी काल धरि कविताक आवेग हुनका पर बनल रहैत छलनि। एहि आवेगक बहुत सृजनात्मक उपयोग ओ कएल करथि। करथि की तँ अपन प्रियपात्र लोकनि कें, अपन व्यक्तिगत पत्र मे ओ कविता ओ एक बेर फेर सँ लिखि जाथि। कैक बेर तँ एना होइक जे एक्के कविता ओ अपन कै-कै गोट मित्र, बन्धु, अनुज लोकनि कें लिखि पठाबथि, आ एहि तरहें कविताक आवेग सँ बहराइत छला। एहि काजक वास्ते ओ बजाफ्ता थिन पेपर आ कार्बन धरि अपना लग मे रखैत छला। कविता आ कविता कें लिखनिहार-बुझनिहार लोक हुनका जीवन मे बहुत आपकताक संग शामिल रहथि। दुष्यन्त कुमारक जे ई प्रसिद्ध पाँती छनि जे *'मैं जिसे ओढ़ता बिछाता हूँ। वो गजल आपको सुनाता हूँ।'* ई बात जीवकान्त पर पूरेपूरी लागू होइत छलैक। जीवन जीबाक हुनकर शैली आ दुनियाँ कें देखबाक हुनकर दृष्टिकोण--ई दुनू किछु एहि तरहक छल जे प्रतीत होअय जे कविते हुनकर जीवनक नाभि-केन्द्र छलनि। अपन एहि नाभि-केन्द्र सँ ओ विभिन्न दिशा मे गमन करथि, दिनचर्याक अपन काम-काज निपटाबथि, सरकारी नोकरीक कर्त्तव्य पूरा करथि, सामाजिक दायित्व सभक निर्वाह करथि, आ ई सभ कथू करितो एक उदात्त किसिमक काव्यमयता हुनका पर सवार रहल करनि। आ, ई सभ पूरा क' लेलाक

बाद तँ कविते छल, नाभि-केन्द्र, जतए ओ निचैन भ' क' घुरि अबैत छला। एक बेर अपन पत्र मे ओ हमरा लिखने रहथि जे जँ ओ नीक लिखबाक लोभ छोड़ि देथि, वा कही जे नीक-अधलाहक ओझरा सँ अपना कें मुक्त क' लेथि तँ प्रतिदिन कम सँ कम दसटा कविता, दूटा कथा आ तीनटा लेख ओ अवश्शे लिखि सकै छला।

अपन जीवन-निर्माणक सम्बन्ध मे जे विवरण ओ अपन संस्मरण-पुस्तिका सभ मे लिखने छथि, तकरा सभ कें देखने ई बात सुनिश्चित रूप सँ अभरै छै जे 'एक अत्यन्त साधारण व्यक्ति'क मनोनिर्मिति ओ पेने छला। एक साधारण आदमी, आम जनता। किछुओटा खास नहि, किछुओटा स्पेशल नहि। जेना सभ क्यो, ठीक तेहने ओ। ओहू मे की तँ कने दबल-दबल-सन, काते-कात चलनिहार। काँचे उमेरक छला कि पिताक देहान्त भ' गेलनि। सेहो कोनो साधारण देहान्त नहि, एहन भयाओन जे छव मास धरि एकदम लग सँ, संग-संग भ' क' पिता कें तिल-तिल क' मरैत देखलनि। परिवारक पाँच प्राणीक जिम्मेदारी ओही उमेर मे माथ पर आबि गेलनि। बहुत आगू धरि पढ़ाइ कर' चाहै छला, नहि क' सकला। गामक बसिन्दा भ' क', किसानी संस्कृति मे रचि-बसि क' जिनगी गुदस्त कर' चाहै छला, नहि क' सकला। शुद्ध हृदय आ निश्छल मोन ल' क' जनमल छला, तैयो चाहै छला जे एक सुखी-शान्त जीवन हुनका नसीब होइन। मुदा, जवानीक अधिकांश भाग टुटन आ मोहभंग मे बितलनि। नोकरी कर' पड़लनि। गाम छोड़' पड़लनि। छूटल तँ छलनि मात्र अपन गाम, मुदा बुझना एहन जाइन मानू सौंसे जीवने छूटि गेल होइन। ओ स्कूल-मास्टर भेला। सोचने रहथि जे ठेकान भरि पाइ जुटि जाइन तँ नोकरी छोड़ि देता आ आगूक पढ़ाइ मे लगता, मुदा से समय कहियो आब' बला नहि छलै। एहने स्थिति मे, जेना-तेना घिचैत-तिड़ैत समय कटि रहल छल कि हुनका जीवन मे अचानके एक जबर्दस्त उछाल आएल। एहन उछाल कि जे हुनकर जिनगी बदलि देलकनि। ओ कविता लिख' लगला। ई उछाल ओहिना बिनु किछु केने बैसले ठाम आबि गेल हो, सेहो बात नहि छल। तीस बरखक अवस्था मे पूरे होशो-हबाशक संग आ परिपक्व बुद्धि सँ सोचि-बिचारि क' ओ निर्णय लेने छला जे ओ कविता लिखता। कविता माने मात्र कविता नहि,

साहित्य। हुनकर पहिल कविता जखन 'मिथिला मिहिर' मे छपल छलनि तँ ओ जे अनुभव केने छला, हुनके शब्द मे-- *'हम देखि क' अवाक् भ' गेल रही। मैथिली पत्रिका मे हमर कविता छपल छल। हमरा अपन आँखि पर विश्वास नहि भ' रहल छल। एकटा घटना भ' गेल छल। हमरा जीवनक एक महत्त्वपूर्ण घटना, जे हमरा जीवनक अनेक बर्ख कें काज सँ, यश सँ, सम्मान सँ, अपमान सँ, सम्वाद सँ आ विवाद सँ भरि देबा लेल आबि गेल छल। बहुत चुपचाप आएल छल, मुदा ओ हमर भविष्य छल जे हजार-हजार शब्दक ध्वनि सँ, ध्वनिक आयोजन सँ, एकटा आकाश भरबा लेल आएल छल।'*

विचारि क' देखू तँ ई एक दुर्लभ प्रकारक घटना थिक। अधिकतर कवि लोकनि अपन नेनपने सँ कविता लिख' लगैत छथि। ओही उमेर सँ जखन हुनका ठीक-ठीक बुझलो नहि रहैत छनि जे किएक लिखै छथि। जीवकान्तक संग एना नहि भेल छलनि। अपन एकटा आत्मलेख मे ओ चर्चा केने छथि जे घनघोर उदासीक ओही कालखण्ड मे ओ अधिकतर जखन ई सोचल करथि जे एहि जीवनक सार्थकता की थिक, जे आखिर मनुक्ख की ल' क' की छोड़ि क' एहि दुनियाँ सँ जाएत, एहि समाज सँ हमरा जे किछुओ भेटल अछि, ताहि सँ उऋण हेबाक उपाय की छै, रोजी-रोटीक समस्त जंजालक बीच आखिर मनुक्खक एक सामाजिक दायित्व सेहो होइत छैक तकर कोना निर्वाह कएल जाय, समस्त मानवताक प्रति जे हमर कर्त्तव्य अछि, धर्म अछि तकर अनुपालन कोना, कोन विधिएँ भ' सकैए--आदि-आदि; एही तमाम तरहक प्रश्न सभ सँ मुठभिड़ान लैत कहियो एक दिन हुनका साहित्य लिखबाक विचार मोन मे उपजल छलनि। एहि विचारक स्फुटन-मात्र सँ ओ कोना आ कते ऊर्जस्वित भ' गेल छला, एहू बातक उल्लेख ओ अपन आत्मलेख मे केने छथि।

साहित्य पढ़बाक ललक जीवकान्त मे नेनपने सँ छलनि। कैकटा एहन प्रसंग सभक उल्लेख हुनकर संस्मरण-कृति सभ मे भेल अछि, जाहि सँ स्पष्ट होइछ जे साहित्य बुझबाक अवगति ओहू दिन मे हुनका मे औसत सँ बेसी छलनि। आ एहि ललक आ अवगति मे नवीन भावनात्मक ऊष्मा आ त्वरा भरि देलकनि हुनकर पितृहीनता, गरीबी, एकान्तप्रियता आ

कुतूहल। साहित्य-सृजनक सम्बन्ध मे हुनकर बहुत ऊँच धारणा शुरुहे सँ छलनि। एतेक ऊँच जे ओ अपना कें झूस बूझथि। कतए 'साहित्य-सृजेता'क उच्चासन, आ कतए बौन-सन ई व्यक्ति जीवकान्त--एहि प्रकारक असमंजस हुनका मोन मे शुरुआती दिन मे पाओल जाइत रहनि। यैह सभ कारण छल जे अपन पहिल प्रकाशित कविता कें जखन ओ पत्रिका मे छपल देखने छला तँ अवाक् रहि गेल छला।

ओ स्वयं लिखने छथि जे, साहित्य-सृजन संगें जे हुनकर जुड़ाव भेलनि, से हुनका एक असीम, अन्तहीन पवित्रताक संग गठजोड़ क' देलकनि। हुनकर ई अनुभव हुनके शब्द मे सुनी-- *'हृदय मे पवित्रता अएला सँ हमर आनन्द बहुत बढ़ि गेल। हम बेसी काल आनन्दित रहए लगलहुँ। सभ छात्र लेल तँ हम उदार रहबे करी, समस्त मानव-जाति लेल अनुराग सँ हम भरि गेलहुँ। .... कविता-लेखन हमरा जीवन कें बदलि देलक। हम दोसर मनुक्ख भ' गेलहुँ। जकर लक्ष्य भेल सामने मे उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति कें आदर देब, ओकरा लेल अपन हृदय मे पवित्र भाव राखब, ओहने नीक सम्भाषण करब, कोनो मदति लेल ठाढ़ भ' जाएब। हमर अपन कोनो आकांक्षा नहि रहल। आनक आकांक्षा कें अपन आकांक्षा बना लेब, दोसरक खुशी कें अपन खुशी बना लेब।*

''बच्चा सभ कें एहि सँ लाभ भेलैक। जे छात्र उपेक्षित छल, तकर उपेक्षा दूर भेलैक। जकरा क्यो ने चिन्हैत छलैक, तकरा हम चिन्हए लगलिऐक। जकर माए-बाप तिरस्कार करैत छलैक, तकर सत्कार हम करए लगलिऐक। छात्र सभ कें बुझाइक, हम सर्वदा ओकरा सभक संग छिऐक।''

''पोथी पढ़ब, पोथी लिखब, आ विद्यार्थी लेल सहायक होएब हमर समस्त अस्तित्व कें ऊर्जा सँ, उल्लास सँ, कृतार्थता सँ, तृप्ति सँ भरि देलक। हमरा होअए, हम पृथ्वी पर सभ सँ बेसी भाग्यशाली आ समृद्ध लोक छी।'

कविता कोन तरहें कविक व्यक्तित्व कें रूपान्तरित क' दैत छैक, तकर दृष्टान्त हमरा लोकनि जीवकान्तक जीवनानुभव मे देखि सकैत छी। कविताक प्रयोजन की थिक--एहि बात कें ल' क' रोचक घमर्थन प्राचीने

काल सँ होइत एलैए। एक जबाना मे आचार्य मम्मट भट्ट आन चीजक संग-संग 'शिवेतर-क्षति' कें कविताक एक महत्त्वपूर्ण प्रयोजन बतौने छलाह। कविता कें ल' क' भारतीय परम्पराक जे सामान्य समझ अछि, ओहू मे 'शिवेतर-क्षति' कें सर्वाधिक विशिष्ट प्रयोजन मानल गेलैए। शिवेतर-क्षति अर्थात अमंगलक निवारण। जाहि संकट सभ सँ जीवकान्त अपन जीवनक शुरुआती समय मे घेराएल छलाह, से अमंगले तँ छलैक। विचारि क' देखू तँ अमंगल-निवारणक ई घटना एकतरफा कहियो नहि घटित होइछ। पहिने तँ ई कविक जीवन कें उदात्त बनबैत छैक, आ तखन एहि उदात्तता कें लेने-देने पाठक/श्रोताक जीवन मे प्रवेश क' जाइत छैक।

कविता सँ जीवकान्त कें जे कोनो विधेय आ श्रेण्य वस्तु सभ भेटल छलनि, तकरा ओ भरि मोन बाँटैत-बिलहैत रहलाह। कहबी छैक जे बाँटू तँ विद्या बढ़ैत छैक, एहू बात कें हम सभ हुनका जीवन मे फलित भेल देखैत छियनि। एहि बिलहा-बाँट लेल ओ तीन-चारि गोट तरीका अपनेने छलाह। एक तँ ई जे ओ खूब लिखथि। कतोक बेर तँ ओ एहनो-एहनो विषय/वस्तु पर लिखथि, जे अनका बुझनें बहुत नगण्य प्रकारक वस्तु भेल करैक। एकदम तुच्छ, साधारण, मामूली--जाहि पर कविता लिखब कविताक संग ठट्ठा करब मानल जाय। स्वयं हुनके शब्द मे देखी-- *'हम पोथी लिखबा लेल आसन नहि लगओने रही। हम अपन छोट-छोट अनुभव कें अनुपम आ अनाघ्रात बूझि, अंकित कएने जाइत रही। भेल जे मेटा जएतैक सभटा, कतहु किछु लिखि कए देखी जे ओ कतबा बचैत छैक, कतबा सुरक्षित भ' जाइत अछि। ... मुदा, बेर-बेर लिखए पड़त। बेर-बेर छापए पड़त, तथापि जीवन आ जगतक सौन्दर्यक एकहु अंश सफलता सँ अंकित नहि भ' पबैत अछि। बेर-बेर लिखए पड़तैक, बेर-बेर प्रकाशित करबा लेल देबए पड़तैक। बेर-बेर पृथ्वी पर आबए पड़तैक आ फेर ओकर अनुभव करए पड़तैक। अनेक बेर आबि अनुभव सभक आख्यान लिखए पड़तैक।'*

दोसर तरीका ओ ई अपनेलनि जे पत्र-लेखन कें साहित्य-सृजनक समतुल्य प्रतिष्ठा दैत 'साहित्यिक कार्य'क रूप मे हाथ मे लेलनि। ओ लेखन संग जुड़ल छलाह अपन सामाजिक आ बौद्धिक दायित्व-पूर्त्ति लेल। हजारो लेखकक पुस्तक सभ ओ पढ़ने रहथि। सैकड़ो मनीषी लोकनि हुनका प्रत्यक्ष

रूप सँ प्रभावित केने रहनि। आ, एहि समस्त अनुभव कें मिला क', सभक ऋण कें स्वीकार करैत हुनक व्यक्तित्वक गठन भेल रहनि। हुनक मानब छलनि जे एहि ऋणक अदायगी हेबाक चाही। हुनकर साहित्य-लेखन पर हमरा लोकनि एहि ऋण-अदायगीक धमक स्पष्ट देखि सकैत छी। तखन, हुनकर इहो सोचब छलनि जे कविताक अपेक्षा पत्र-लेखन सँ एहि ऋण-अदायगी कें बेसी नीक जकाँ निमाहल जा सकैए। पत्र-लेखनक माध्यम सँ हजारो लोक सँ ओ सदैव जुड़ल रहलाह, आ अपन अनुभव साझी करैत रहलाह। मैथिली साहित्य मे हुनक सक्रियताक एहि चालीस बरख मे किनसाइते कहियो एहन भेल हएत जे कोनो लेखकक कोनो पुस्तक, अथवा रचना हुनका नीक लागल होइनि आ पत्र लिखि क' ओ लेखक कें बधाइ, धन्यवाद आ कि अपन उद्‌गार व्यक्त नहि केने होथि! एहि चालीस बरख मे नव-नव चारि गोट पीढ़ीक आगमन साहित्य मे भेलैक। आ, जीवकान्त एहि चारू पीढ़ीक गोट-गोट रचनाकार सँ व्यक्तिगत रूप सँ जुड़ल रहलाह। कोनो दोसरो भाषाक कोनो नव पोथी ओ पढ़ने रहथि तँ दस मित्र कें, हुनक रुचि कें परखैत, पोथीक विशिष्टता बतबैत, पढ़बाक सुझाव लिखि पठबथि। साहित्य मे कोनो प्रतिभाशाली नवागन्तुकक प्रवेश होइक, आ ओकर रचना मे हुनका कनिञो तेज देखार पड़नि कि ओ बीस मित्र कें पत्र लिखि सूचित करथि। साहित्य, समाज, संस्कृति कें ल' क' कोनो नवीन विचार, कोनो विरल सूझ, किछु नव करबाक नेयार हुनका भीतर चमकनि कि ओ पचीस मित्र सँ राय-मशविरा करथि। कोनो दिन एहन नहि बीतनि, जहिया पाँच-दस पोस्टकार्ड नहि लिखथि! पोस्टकार्ड किनबाक अपन हिस्सक पर ओ एकटा मजेदार प्रसंगक उल्लेख केलनि अछि-- *'एक दिन डाकघरक किरानी कें कहल--एक सए पोस्टकार्ड दिअ। किरानी बाबू बक्सा खोलि लेलनि। पोस्टकार्ड नहि छूलनि। हमरा मुँह दिस ताकि पुछलनि--पोस्टकार्डक दाम लगैत छैक। हम कहल--दाम, दै छी। पाइ अनने छी। ओ कहलनि--पोस्टकार्ड लेबा मे भरि मासक वेतन अहाँ द' देब, से बेस। मुदा ई कहू, एकर बाद भरि मास अहाँ की खाएब?'*

पत्र-लेखनक ई गंभीर कार्यवाही जीवकान्तक व्यक्तित्व कें बड़ भारी व्याप्ति प्रदान केलकनि। हुनकर समुच्चा जीवन गाम मे बीतल छलनि। महानगर तँ की, नगर धरि सँ कहियो ओ फ्रेंडली नहि भ' सकलाह। अपन

एक पत्र मे ओ एक बेर हमरा लिखने छलाह-- *'हम तँ गाछ छी। जतए रोपि देब, बरखो बरख बाद ततहि ठाढ़ भेटब।'* मुदा, ई सीमा मात्र हुनकर भौतिक शरीरक छलनि। हुनकर आंतरिक यात्रा निरन्तर, अविश्रान्त बहुत दूर-दूर धरि चलैत रहैत छलनि। जाहि मे हुनका रुचि होइनि ताहि विषयक अद्यतन सूचना कहुना ने कहुना कतहु ने कतहु सँ हुनका धरि जरूरे पहुँचि गेल करनि। आ ताहि पर सँ की तँ हमरा सभ-सन किछु एहनो लोक छलाह जे अपन पत्र मे प्रश्न पर प्रश्न पुछैत रहल करनि--लेखक गोंग किए भ' जाइए? एना किए होइए जे बात तँ हमरा लग अनगिनती अछि मुदा लिखि धरि होइए नहि एको लाइन? 'साहित्यक स्वायतत्ता' मात्र एक मिथक छिऐक आ कि बात मे किछु दमो अछि? लिखबाक आ पढ़बाक अन्तःसम्बन्ध कोना आ कते सीमा धरि लेखन कें प्रभावित करैत अछि? आदि-आदि। आ, ओ जीवकान्ते छलाह जे हरेक बेर पूछल प्रश्नक उत्तर बड़ा धैर्यक संग, बड़े मित्र-सम्मितताक संग अपन नमहर-नमहर पत्र सभ मे दैत छलाह। भौतिक रूप सँ हमरा सभक समक्ष उपस्थित नहि होइतहु, ओ हमरा लोकनिक काज आबि सकै छलाह। अद्भुत छलाह ओ!

मुदा, हुनका द्वारा अपनाओल गेल तेसर तरीका अत्यन्त आक्रामक छल आ कैक अर्थें हुनका लेल खतरनाक सेहो, हानिकारक सेहो। ई छल---हुनक टिप्पणी-लेखन आ वक्तव्य लेखन। अंदाजन तीन सय सँ ऊपर हुनकर टिप्पणी आ वक्तव्य पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित अछि। एहि मे सँ थोड़बे किछु एहन हएत जे साहित्य अथवा कविताक स्थायी सरोकार वा मापदण्डक विषय मे हएत। ने तँ बाँकी सबटा समकालीन आ सामयिक मुद्दा पर, अवरोध पर, झमेला पर केन्द्रित अछि। एहि समस्त लेखन मे अधिकतर ओ एक आक्रामक प्रतिपक्षक भूमिका मे छथि। एतए ई मोन रखबाक चाही जे मिथिलाक समाज एक बन्द समाज रहल अछि, जतए सांस्कृतिक मुख्यधारा पर आ साहित्यक प्रतिष्ठान सभ पर पुरातनपंथी लोकनिक वर्चस्व कायम अछि। प्रगतिशील आ नवाचारी लोकनिक संग हिनका लोकनिक शत्रुता विद्यापतियेक समय सँ चलैत आबि रहल अछि। एक दिस तँ ई पुरातनपंथी लोकनि, दोसर दिस उग्र वामपन्थी। जीवकान्त कतहु लिखने छथि जे दुनू दलक दिस सँ ओ पीटल जाइत रहलाह। मोन पड़ैए जे 2001 मे, जखन हिन्दीक प्रतिष्ठित 'पहल-सम्मान'

वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना कें देल जेबाक छलै, तँ ज्ञानरंजन ई इच्छा जाहिर केने छलाह जे ई सम्मान मैथिली कवि जीवकान्तक हाथें देल जाइन। मने नरेश-सन कवि कें सम्मानित करबाक लेल जीवकान्त-सन हाथ हुनका सटीक बुझाएल छलनि। सम्मानक दिन जीवकान्त भोपाल आबथि, ताहि लेल ज्ञानरंजन कें लगातार दू मास धरि प्रयास करए पड़ल छलनि--कतेको-कतेको टेलीफोन कॉल आ चिट्ठी-पतरी। जीवकान्त नहि जाय चाहै छलाह। बाद मे ओ भोपाल-यात्राक पछाति पाँच टा लंबा-लंबा पत्र एहि प्रसंगे हमरा लिखने छलाह, जे 'भारती मण्डन' मे प्रकाशितो अछि। एही पत्र सभ मे ओ ईहो रहस्य खोलने छलाह जे भोपाल जेबा मे की असमंजस, की तारतम्य हुनका छलनि, ज्ञानरंजन-सन आत्मीय वरिष्ठक एते आग्रह-अनुरोधक बादो। हुनका मोन मे ई बात बैसल रहनि जे कविताक हुनक मुद्रा आ कविताक बारे मे हुनक दृष्टिकोण वामपंथी लोकनि कें पसिन्न नहि पड़तनि। मैथिल वामपंथी लोकनि कें ओ देखने छलाह। वामपंथक यैह स्तर हुनका अखिल भारतीय बुझाइत रहनि। आ तें, ओतए, भोपाल मे ओ चकित भेल छला ओहि स्वर-साम्य कें पाबि, ओइ लोकनि सँ भेटल सम्मान कें पाबि।

मैथिली मे पुरातन पंथक लल्लुओ पंजू साहित्यकार (?) जँ अहाँ कें भेटता तँ बुझबा मे आएत जे कि तँ ओ 'मिथिला-विभूति' सम्मान सँ सम्मानित छथि, अथवा साहित्य अकादेमी पुरस्कार सँ पुरस्कृत छथि। मुदा, जीवकान्त-सन लोक कें एहि सभ सँ वंचित राखल गेल। बाद मे, जँ ई पुरस्कार हुनका देलो गेलनि तँ कहल जाइए जे कोनो जूरी-मेम्बरक गद्दारीक कारण, जकर सजाइ ओ (जूरी-मेम्बर) आइ धरि भोगि रहल छथि।

ई सभ जीवकान्तक टिप्पणी-लेखनक दण्ड छल। मैथिलीक ख्यातनाम एहनो आलोचक अहाँ कें भेटता जे जीवकान्त कें कायदाक लेखको मानै लेल तैयार नहि छथि। इतिहास मे जा क' हुलकी देब तँ पता लागत--कहियो जीवकान्त एहि महाशय पर अथवा हुनक पिता-पितामह पर, हुनकर सोच पर वा कृत्य पर एकटा टिप्पणी लिखि देने छलाह, जकर आगि मे ई एखन धरि झरकि रहलाह अछि!

एहि डॉक्टर-प्रोफेसर-नामधारी आलोचक आ एहन अकादेमी-टाइप प्रतिष्ठानक सम्बन्ध मे जीवकान्तक केहन राय रहनि, से जनबाक लेल

हुनकर एक संस्मरण देखी, हुनके जुबानी--

'साहित्य अकादेमी मे सदस्य रहथि डॉ. प्रो. जयकान्त मिश्र (आब दिवंगत)। हुनका समय मे सचिव रहथि केलकर साहेब। अकादेमी हमरा मैथिली परामर्शदात्री समिति मे एक सदस्य मनोनीत कयलक। तकर हमरा सूचना पठौलनि केलकर साहेब।

'खजौली मे हम शिक्षक रही। छात्रावासक एक कोन मे निवास रहय। चिट्ठी खोलि क' पढ़ैत रही। लग मे रहथि शिक्षक मित्र ठाकुर धीरेन्द्र सिंह। ओ पुछलनि तँ कहलियनि की बात रहै। ओ कहलनि--आब तों सदस्य भ' गेलहो, महत्त्वपूर्ण आदमी भ' गेलहो।

'हम कहलियनि--तों देखबहक, हम अस्वीकार क' देबै। हम ई ल' क' की करब? हम लिखै छी। लिखबाक काज नीक लगैए, ताहि मे ई की मदति करत?

'ओ कहलनि--ई कोना छोड़ि देबहो! हम कहै छिअ, तों नहि छोड़बहो।

'हमरा झोंक उठल। हम हुनके सोझाँ मे कागज उठा क' लिखि देल--हमरा ई प्रस्तावित सदस्यता अपमानमूलक (डेरोगेट्री) लगैत अछि। हम ई अस्वीकृत करै छी।'

'केलकर साहेब नम्रतापूर्वक उत्तर देलनि--ई उत्तरदायित्व अहाँ कें सम्मान देबा लेल देल गेल छल, अहाँ कें अपमान-समतूल बुझाएल, से आश्चर्यक बात थिक।'

'बाद मे ई सुनल जे रिक्तिक पूर्ति लेल मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक एक प्रोफेसर कें पत्र गेलनि।'

हमरा बूझल अछि जे ई खिस्सा सुनला पर अहाँ कहब--ई जँ जीवकान्तक सुन्दरता छलनि तँ हुनकर सीमो यैह छलनि। जी हँ। हमहूँ सैह मानैत छी। मुदा जे छलनि, से छलनि। समुच्चेक समुच्चा देखौआपनक नेओ पर ठाढ़ एहि ब्राह्मणवादी सभ्यता मे जीवकान्त-सन लोकक हएब एक दुर्लभ बात छल, जे कहि सकथि-- 'जीवन अछि सोझ, ओ देखौआ नहि थिक'---आ जिनका बस थोड़बेटा रंग चाहै छलनि, थोड़बे टा गंध, थोड़बे टा शब्द, कारण जीवन अछि सोझ।

(2014)

सुभाष चन्द्र यादवक कथा-सम्वेदना

सुभाष चन्द्र यादवक नवका कथा-संग्रह 'बनैत-बिगड़ैत' हमरा हाथ आयल, ताहि सँ पहिनहि कैक दिस सँ एहि पर होइत टीका-टिप्पणी हमरा धरि पहुँच चुकल छल। बेसी निगेटिव। किछु एहन जे एहि पुस्तक कें 'नहि पढ़' जोग' पुस्तकक कोटि मे रखबाक आग्रह सँ भरल छल।

कोनो संग्रह कें, चाहे ओ कथा-संग्रह हो वा कविता वा निबन्ध-संग्रह, एक नीक अथवा अधलाह संग्रह कोन आधार पर मानल जाय? अंग्रेजी सँ ल' क' मैथिली धरिक संग्रह कें देखैत हमर एक सामान्य मान्यता बनल अछि जे जाहि मे पाठक कें साठि प्रतिशत रचना, अपन पसन्दक, अपन काजक भेटैत हो, तकरा एक नीक संग्रह मानल जेबाक चाही। एहि सँ बेसी प्रतिशतक निर्वाह कठिन छै आ ताहि मे प्रधान कारण अछि पाठकक रुचि-भिन्नता। जे से। हम तँ जखन पढ़लहुँ तँ बुझाएल जे कोनो कारण नहि छै जे सुभाषक एहि संग्रह कें अधलाह संग्रह मानल जाय।

चालीस बरख सँ ऊपर भेल जे सुभाष मैथिली मे कथा-लेखन शुरू केने छलाह। ओ शुरुहे सँ कने 'दोसर तरहें' लिखै छलाह। तकर तात्विक कारण छलै जे ओ जीवन कें आ जगत कें कने दोसर तरहें देखै छलाह। 'दोसर तरहें' माने मैथिली मे जाहि तरहें देखबाक रेबाज रहलैए, ताहि सँ भिन्न तरहें। कोनो लेखक यदि जीनियस हैत आ ओरिजिनल लिखत तँ ई चीज हेबे करतै। से कैक गोटे मे भेलैए। सुभाषो मे भेलनि अछि। तें हमरा लोकनि देखैत छी जे मैथिली मे जे गंभीर लोक सभ छलखिन से सुभाष कें बहुत मान देलखिन। सुभाष मे, मैथिली साहित्य कें अपना लेल एकटा

नैतिक समर्थन देखार पड़लै। प्रख्यात आलोचक कुलानन्द मिश्र कहलनि जे मैथिली कथाक क्षेत्र मे एक टा निश्चित सीमाक अतिक्रमण सुभाष चन्द्र यादवक बादे आरम्भ भेल।

कुलानन्द मिश्र 'बुधियार कें इशारा काफी' वला अंदाज मे अपन बात कहलखिन आ एहि बात कें नहि साफ केलखिन जे मैथिलीक 'एक टा निश्चित सीमा' की छलै आ सुभाष कोन तरहें ओकर अतिक्रमण केलखिन। मुदा, हम पुछै छी जे मैथिली साहित्य अन्ततः थिक की? जीवन-जगत कें देखबाक एक टा ब्राह्मण-दृष्टि। अपना संतोषक लेल हमरा लोकनि कहि सकैत छी जे एहि दृष्टि मे बहुत विविधता छै-अनेक वाद अछि, अनेक पीढ़ी अछि आदि-आदि। से बड़ बेस। मुदा, तैयो ई तँ एकर बड़ पैघ सीमा भेलै कि नहि! मानै लेल तँ संसारक अधिकांश लोक आइयो यैह मानैत अछि जे मैथिली साहित्य आर. एस. एस.क एक टा सांस्कृतिक उपनिवेश थिक, मुदा ई लोकनि अविश्वनीय छथि कारण मैथिलीक सार्थक लेखनक यथार्थ हिनका लोकनि कें नहि बुझल छनि। दोसर दिस हमरा लोकनि देखैत छी जे एकटा दृष्टिवान सम्पादक अशोक जखन समकालीन कथा पर 'संधान' क विशेषांक प्रकाशित करैत छथि तँ आयासपूर्वक सुभाषक कथा सँ आरम्भ करैत आगामी विकासक आकलन करैत छथि। कुलानन्द मिश्रक मान्यताक दमदार हेबाक ई एक दृष्टान्त थिक।

सुभाष कने दोसर तरहें जीवन कें देखैत छथि। कोन तरहें? हुनक एक कथा 'एक टा अंत' मे आयल एक टा चित्रण हमरा एहिठाम मोन पड़ैत अछि। कथावाचक अपन बीमार ससुरक जिज्ञासा मे सासुर गेल अछि। ओतय ससुरक संग ओकर देखा-देखीक चित्रण कथाकार करैत छथि, *'जखन हुनका सँ विदा लेब' गेल रही तँ हुनकर आँखि मे ताकने छलियनि। ओहो हमर आँखि मे ताकने छलाह। आ हमरा दुनू कें बुझायल रहय जेना ई ताकब अंतिम ताकब थिक, जेना आब फेर कहियो भेंट नहि होयत।'* देखल जाय। दुनू दूनूक आँखि मे ताकैए। दुनू दुनूक आँखिक भाषा बुझैए। एक दोसरक भावनाक आदान-प्रदान बहुत प्रामाणिकता संग भ' रहल अछि। अलग सँ एहि दूनू कें कोनो भाषाक प्रयोजन नहि छै। कने अखियास कयल जाय जे एहि तरहक कम्यूनिकेशन मे संवेदनशीलताक

कोन तल वांछित अछि, जीवनक मर्मक भीतर कतेक गहराइ धरि पैसब जरूरी अछि। ई सुभाष छथि! हुनकर सीमा छनि जे कलाकारी क' नहि सकै छथि। ज्ञान छनि दुनियाँ भरिक। मुदा जखन रचबाक बेर अबै छनि तँ ततेक प्रकृत भ' जाइत छथि जे 'प्राइवेसी'क सर्वस्वीकृत मानक धरि टूटि जाइत अछि। अहाँ देखि सकै छी जे ई चित्रण मात्र एक चित्रण नहि थिक। सुभाष दुनियाँ कें कोना देखै छथि तकर उदाहरण थिक। ई अपन पाठक सँ डिमाण्ड सेहो थिक जे हुनका देखू तँ एहिठाम सँ देखू, एतबा सम्वेदन-क्षमता राखिक', जीवन-मर्म मे एतबा डूबिक'। देखबाक प्रचलित रेबाज की अछि? ककरो वा कथू कें देखू तँ विचारक संग देखू जे कि देखै छी, कते देखै छी, कोन ठाम सँ देखै छी! आदि-आदि। आ जखन विचारक संग देखबै तँ चयनबुद्धि सक्रिय रहबे करत! देखल मे काँट-छाँट करब! जे प्रयोजनीय नहि बुझायत तकरा छाँटि देबै। ततबे कें राखब जाहि सँ अहाँक अभिप्राय स्फुट भ' जाय। साहित्य मे आमतौर पर यैह रेबाज छै। परम्परित साहित्य शास्त्र सेहो एकरे कवि-प्रक्रिया कहैत छै। सुभाष कने दोसर तरहें देखैत छथि। देखबाक संकल्प टा खाली हुनकर होइ छनि, माने जे ककरा वा कथी कें देखबाक अछि। तकरा बाद, कोनो चयन-बुद्धि नहि, कोनो विश्लेषण नहि, कोनो सिंगार-पेटार नहि, बस ओ खाली देखै छथि, जेना हुनकर कथावाचक अपन ससुरक आँखि मे देखने छल।

जीवन कें देखबाक दृष्टि अनिवार्य रूप सँ कथाक भाषा कें आ शैली कें आ रचना-विधान कें नियंत्रित करैत अछि। जेहन अहाँक दृष्टि अछि तदनुरूप अहाँक शिल्प हैत। सुभाषक कथा मे हमरा लोकनि देखै छी जे व्यापक पसरल जीवनक कोनो एक टा क्षण सँ कथा शुरू होइ छै। आ जतय सँ शुरू होइ छै, तकर बाद एक-एक प्रक्रमक विवरण दैत आगू बढ़ै छै, बस विवरण दैत--बिना कोनो विश्लेषणक, आ तखन देखै छी जे कथाक ई क्रम आगू बढ़ैत-बढ़ैत कोनो एक ठाम आबिक' समाप्त भ' जाइ छै। कोनो पैघ कालखण्ड हुनका कथा मे नहि भेटत, जेना हुनके समकालीन महाप्रकाशक कथा मे कमोबेश भेटैत अछि। तहिना, घटनावलिक अथवा विचार-सरणिक विश्लेषणो हुनका कथा मे नहि भेटत, जेना हुनके समकालीन सुकान्तक कथा मे भेटैत अछि। हम सभ तँ देखै छी जे अपन जाहि कथा

मे सुभाष अपन प्रकृतिक विरुद्ध जा क' विश्लेषण करबाक प्रयास केलनि अछि, से कथा कमजोर कथाक रूप मे चीन्हल गेल अछि। माने जे जे चीज ओ छथि, सैह बनल रहथु तँ सुन्दर लगैत छथि।

हुनकर एक कथा छनि, 'अपन अपन दुख'। एक परिवारक माने पति-पत्नीक सात-आठ घंटा रातुक समय कोना बितलै, तकर विवरण एहि कथा मे देल गेल छै। पत्नीक मोन साँझे सँ किछु खराब छै जे कि परिवारक लेल एक रेहल-खेहल बात थिक। ओ बिनु भानस-भात केने खाट पर सूतलि अछि। पति देरी सँ घर घुरैत अछि। बच्चा सभक सहायता सँ कहुना भानस करैत अछि। खाइ लेल पत्नी कें उठबैत अछि। ओ नहि उठैत अछि। ओकर भोजन सुरक्षित राखि देल जाइछ। बाँकी सभ लोक खाक' सूति रहैत अछि। पति कोनो आन कोठली मे सूतल अछि। राति मे तीन बेर आबिक' पत्नी पति कें उठबैत अछि। पत्नी कर्कशा अछि। ओकरा मुँह सँ कुबोले बहराइत छै। पति कें उठबैत अछि जे 'एना पाड़ा जकाँ डिकरय' नहि। पति ठरर पाड़ैत अछि। मुदा चिन्तित अछि जे कण्ठ मे कफ फँसने ओकरा घरघरी शुरू भ' गेल छै। भोर मे पता लगैत अछि जे पत्नी राति मे भोजन नहि केलक। पति जँ उठौला पर उठि गेल रहितय, माने अपन बिछौना सँ बाहर, माने अपन सीमा सँ, अपन घेराबंदी सँ, तँ पत्नी भोजनो करितय, ओकर मोनो नीक होइतै आ 'ठरर आ घरघरी'क जाहि दुष्चक्र मे ई दुनू पड़ल अछि, सेहो टूटितय। ई सुखाड़क कथा थिक। एहि ठाम सभ कथू सूखि गेल छै--पति-पत्नीक सम्बन्ध, एक-दोसराक अस्तित्व कें स्वीकारबाक लेल एक टा नमनीयता, एक टा 'स्पेस'--किछुओ बचल नहि देखाइछ। जेहने एकर विषय छै, ठीक तेहने शिल्प आ तेहने कथा-भाषाक प्रयोग कयल गेल छै। दाम्पत्य-जीवनक जे आधारशिला छिऐ--प्रेम, से एहि ठाम कतहु नहि अछि। आ, सुभाष एहि संग्रहक भूमिका मे कहैत छथि जे हम एहन मनुक्ख गढ़' चाहैत छी जे सभ सँ प्रेम करय। ध्यान देल जाय। ओ दुनू पति-पत्नी तँ एक-दोसर सँ प्रेम नहि क' पाबैए, कारण प्रेमक लेल एक टा शर्त छै, सेहो सुभाष भूमिके मे कहने छथि जे *'प्रेम वैह क' सकैत अछि जे सत्यक सर्वाधिक निकट हैत।'* आ, अपन-अपन अहंकारक कारण जकरा सुभाष 'अपन-अपन दुख' कहैत छथि, आ व्यक्तित्वगत आन-आन

मलिनताक कारण ई दुनू एक-दोसर सँ प्रेम नहि क' पबैए। मुदा, जाहि तरहें सुभाष एहि विवरण कें प्रस्तुत केने छथि, से पाठक मे प्रेमक जरूरत, प्रेम करबाक बेगरताक संदेश छोड़ैए। एहना स्थिति मे जखन सुभाष कहै छथि जे प्रेम केनिहार मनुक्ख ओ गढ़' चाहै छथि तँ प्रश्न उठैत अछि जे एहन मनुक्ख ओ कत' गढ़' चाहै छथि--कथा मे आ कि पाठकक स्मृति मे, ओकर संस्कार मे। प्रेम हुनक कथा-विषय नहि थिक, कथा-विषयक प्रतिफलन थिक, से हमरा लगैत अछि।

मुदा, औपचारिक रूप सँ जकरा प्रेमक बारे मे लिखब कहल जाइ, ताहू तरहक कथा सुभाष लिखलनि अछि आ हमरा खुशी अछि ई कहैत जे एहन कथा मैथिली कथा-क्षेत्रक सीमाक सुनिश्चित अतिक्रमण करैत अछि। हुनक एक कथा थिक--'एकटा प्रेम कथा'। एहि कथा मे एक टा लड़की छै जे एक टा लड़का कें बरोबरि फोन करैत अछि। फोनक मालिक कथावाचक थिकाह, जकरा लड़की अंकल कहैत छै आ लड़का जे कि कथावाचकक पड़ोसी थिक, के तँ ओ 'अंकल' छथिहे। एहि त्रिकोणक तेसर कोण--अंकलक--नजरिया सँ एहि कथाक रचना भेल छै। किछु पाँती सभ देखी--*'आब ओ लड़की सीधे प्रेमी सँ सब तरहक गप्प करैत हैत। भरिसक यैह सोचिक' प्रेमी मोबाइल किनने हो। हमरा लागल जेना हमर किछु छिना गेल हो।* आ, ईहो देखी--*फोन राखि देलाक बादो हम ओत्तहि ठाढ़ रहि गेल रही। जेना किछु और कहबाक हो, किछु और सुनबाक हो। हमरा छगुन्ता भेल, ओहि लड़की लेल हम किए उदास भ' रहल छी?'* आ एकटा परिस्थिति एहि तरहक--*'साँझकें बेसी काल ओ किरानाक एकटा दोकानमे बैसल रहैत अछि। पहिने ओत्तहि देखबै। नइँ भेटल तँ ओकर घर जाय पड़त। लेकिन घर पर तँ ओकर माय-बाप छै। माय-बापकें लड़कीक फोन दिआ कहब ठीक नइँ हेतै।'* आ अन्ततः निष्पत्ति किछु एहि तरहक, *'अपन छाँहे जकाँ ओ लड़की हमर संग-संग चलि रहल छल, प्रेमी नामक रौद मे कखनो पैघ आ कखनो छोट होइत।'* आब कहल जाउ जे एहि तरहक सम्बन्ध कें कोन सम्बन्ध कहल जेतै? सुभाष कहै छथि, 'प्रेमकथा' माने ई अंकल महाशय सेहो प्रेम मे पड़ल छथि। एहि प्रेम मे जे दुनू लड़का-लड़की खूब जतन सँ एक दोसर सँ प्रेम करय, तकरा निमाहय।

'प्रेम' जँ ई थिक तँ कहय पड़त जे भौतिक प्रेमक सब्लिमेशन (उदात्तीकरण) थिक। सोचिक' देखी तँ ई कथा मात्र एक टा कथा नहि थिक, मिथिलाक सामाजिक परिवेश मे आ मैथिली कथा मे एक टा नवीन पीढ़ीक आगमनक कथा थिक--एहन पीढ़ीक जे मानैत अछि जे धिया-पुता कें एक-दोसरा सँ प्रेम करबाक चाही। तकरा निमाहबाक जतन करबाक चाही कारण ई दुनियाँ निर्बाध रहय ताहि लेल प्रेम जरूरी छै आ जीवन अपन लय मे आगू बढ़य, ताहू लेल प्रेम जरूरी छै। ई कथा तखन किछु आर पैघ देखार पड़त जँ हमरा लोकनि मैथिलीक सम्बन्ध-कथा सभक परिप्रेक्ष्य मे एकरा देखी। हमरा तँ मोन पड़ैत अछि--दू दशक पहिने मान्य साहित्यकार लोकनिक बीच 'मिथिला मिहिर' मे भेल तुमुल 'सम्मति-विमति' जाहि मे मैथिली कथाक सन्दर्भ लैत बात आएल रहैक जे मिथिलाक लोक प्रेम कइए नहि सकैत अछि, जे ओ क' सकैए से थिक छिनरपन। जकरा प्रेमकथा कहल जाइछ से वस्तुतः छिनरपनक कथा थिक। प्रश्न अछि जे सुभाषक एहि कथा कें छिनरपनक कोन कोटि मे राखल जायत?

अस्तु! हम सुभाष चन्द्र यादवक कथाक स्वभाव पर बात करैत रही। हुनकर कथाक स्वभाव एहन छै जे केन्द्र-बिन्दुक थाह पेबा मे अक्सरहाँ मतान्तरक गुंजाइश भ' जाइ छै। एक मोड़ पर सँ कथा आरम्भ भेल आ अगिला मोड़ अबैत-अबैत समाप्त भ' गेल। आब पाठक निर्णय करथु जे एतबा दूरक विवरणक निरन्तरता मे केन्द्र-बिन्दु कोन छल? एहि मे पाठकक लेल 'बुढ़ारीक लाठी' बनै छै, सुभाषक देल शीर्षक। हुनकर कथा, एहि प्रकारक कथा सभ थिक जाहि मे शीर्षकक निर्णायक महत्त्व होइत छै। आ शीर्षक अन्ततः भेल की? केन्द्र-बिन्दुक संकेत। खतरा ई होइत छै जे जँ शीर्षक केन्द्र बिन्दुक ठीक-ठीक संकेत नहि द' सकल वा संकेत अति दुरूह भ' गेल (कैनरी आइलैण्डक लॉरेल जकाँ) तँ सम्यक सम्प्रेषण कठिन भ' जाइ छै। एक टा दृष्टान्त ली। कथाक शीर्षक थिक, 'एक टा अन्त'। एहि कथा मे एकटा बुद्धिवादी युवक अछि जे कर्मकाण्डक विरोध मे ठाढ़ भेल अछि। अपन पक्षक स्थापनाक लेल ओ बहुत संघर्ष करैत अछि। मुदा ओकर बहुत दुर्गंजन होइत छै आ ओ अपनहुँ कें अपना विचलित आ थाकल अनुभव करैत अछि। तकर डिटेल्स कथा मे आयल छै। शीर्षक देल

गेल छै, 'एक टा अन्त'। प्रश्न अछि, कथीक अन्त? जँ उत्तर हैत--कर्मकाण्डक अन्त, तँ मान' पड़त जे ई कथा नितान्त अधलाह आ असफल कथा थिक, कारण कथ्यक निर्वाह ने तँ कथा-विवरण क' पायल अछि आ ने कथा-समय। मुदा, जँ एकर उत्तर होइ--'कर्मकाण्डक विरोध-परम्पराक अन्त' तँ लगले देखब जे ई कथा खूब सुन्दर कथाक रूप मे मोन राख' जोग देखार पड़त, जे बहुत करुणा सँ भरल अछि आ एक टा संकल्प (संकल्प ई जे एहि युवक कें संरक्षण भेटबाक चाही)क संग समाप्त होइत अछि। फेर वैह बात! संकल्प कथा मे कथित नहि भेल छै, ओ कथाक प्रतिफलनक रूप मे पाठकक मोन मे स्फुटित होइत छै।

ओना, गौर कयल जाय तँ सुभाषक कथा मे एक टा आर समस्या देखार पड़त। एकरा संतुलनक चूक कहल जा सकैए। जेना अहाँ कोनो फिल्म देखैत होइ आ पाबी जे कोनो एक टा दृश्य कें जरूरत सँ बेसी काल धरि देखायल जा रहल हो, जकर कि डिमाण्ड कथा मे नहि छै। कहब आवश्यक नहि जे एना एही दुआरे होइ छै जे दर्शक (वा पाठक)क डिमाण्ड आ फिल्मकार (वा कथाकार)क डिमाण्ड भिन्न-भिन्न भ' जाइत छै। से, हमरा लोकनि कैक टा कथा मे देखै छी जे विवरणक अनुपात-औचित्य टुटलै अछि आ किछु एहनो बात आबि गेल छै जकर आवश्यकता कथा मे नहि छै। एक हद धरि सुभाषक कथा-दृष्टि एकरा लेल जिम्मेवार अछि आ एक हद धरि कथाक शीर्षक-चयन सेहो, जे कि एक खास फ्रेम मे राखिक' कथा कें देखबाक आग्रह करै छै, मुदा स्वयं कथे एहि आग्रहक रक्षा नहि क' पबैत अछि। किछु ठाम तँ एहनो देखैत छी जे विवरण देबाक लेल जाहि शब्दावलीक प्रयोग सुभाष कयलनि अछि से उकड़ू बुझा पड़ैत छै आ सम्पूर्ण कथाक ताना-बाना मे पीयन जकाँ देखाइत छै। हुनकर एक बहुत सुन्दर कथा छनि, 'हमर गाम'। कोशी-परिसर मे बसल लोकक जीवन-संघर्षक ई अप्रतिम दस्तावेज थिक। एहि कथा मे बस एक ठाम, सेहो प्रसंगात एक टा स्त्री परमिलिया अबैत छै। एहि कथा मे पुरुषक जीवन-संघर्ष के ओ बहुत जीवन्त आ प्रामाणिक विवरण देलनि अछि, ताहि मे कतहु पुरुख-देहक अलग सँ कोनो वर्णन नहि भेल छै। मुदा जखन स्त्री अबैत अछि, आ सेहो श्रम करैत स्त्री, गहूमक बोझ उठा-उठाक' थ्रेसर लग पहुँचबैत स्त्री, तँ

कथाकारक नजरि ओकर श्रम पर नहि, ओकर देह पर पड़ैत छनि आ हुनकर शब्दावली देखी, *'ओकर जोबनक उभार पुरुष-सम्पर्कक साक्षी छै।'* लगे हाथ ओ ईहो बता जाइत छथि जे ई परमिलिया सूर्यास्तक बाद घास छील' जाइत अछि! कारण संध्या-अभिसार के ओकरा खगता छै। किऐ? एतेक 'सेन्शेसनल' ओ किऐ होइत छथि जखन कि कथा मे एहन कोनो माँग नहि छै, उनटे कथाक समेकित प्रभाव कें ओ खण्डित करैत छै। 'कनियाँ पुतरा' कथा मे 'नेबो सन कोनो कड़गर चीज' कथावाचकक बाँहि सँ टकराइत छै जे कि 'लड़कीक छाती' छिऐ जकरा कथाकार 'फूटैत जोबन' कहलनि अछि। हम नोटिस कयलहुँ अछि जे कथाकार सुभाषक शब्दावली मे आयल ई नवीन प्रभाव थिकियनि। आनो-आन अनेक शब्द, मोहावरा, कथन-भंगिमा नव तरहें हुनका कथा मे आयल अछि। से सभ अधिकतर प्रामाणिक प्रभाव छोड़ैत अछि। मुदा गौरतलब थिक जे ओ 'भिजुअलाइजेशन'मे हाइपर सेन्सेबल भेलाह अछि।

एहि सभ बातक अछैत, कैक कारण सँ सुभाषक ई कथा संग्रह सदैव स्मरण कयल जैत। एक तँ एहि कारणें जे मैथिलीक ई अप्रतिम कथाकार बीस बरस धरि लगातार चुप्प रहलाक बाद फेर कलम पकड़लक आ तकर परिणाम एहि संग्रह मे संग्रहीत भेल अछि। एहि बीचक अवधि मे मैथिली कथा-साहित्यक परिदृश्य मे बहुत बदलाव आबि गेल अछि। कथा आइ ठीक ओत्तहि नहि अछि जतय सुभाषक युग मे छल। बहुतो नव-नव चीज कथा मे आयल अछि। एक सम्वेदनशील सर्जकक रूप मे सुभाष एहि सभ कथूक प्रति ग्रहणशील सेहो छथि। ओ स्वयं कहने छथि जे हुनक एहि दोसर दौरक कथा सभ मे अपेक्षाकृत बेसी सावधानी आ सजगता छनि। हम पबैत छी जे नितान्त सजग रूप सँ सुभाषक साहित्य किछु एहन तथ्य ल' क' आयल अछि जे अक्सरहाँ समकालीन लेखन मे अनुपस्थित पाओल गेल अछि। जेना, एक यथार्थवादी कथा-भाषाक वितान, जकर मास्टर सुभाष छथि। जेना, कथा मे जीवन कें देखबाक एक दार्शनिक दृष्टिकोण, जाहि मे ततबा गहराइ छै जे देखल जायवला वस्तु कें अधिक पारदर्शी बना दैत छै। आ सभ सँ जबरदस्त मोन राखल जायवला चीज तँ छै-- कोशी-प्रांगणक जीवन-संघर्ष पर केन्द्रित हुनकर तीन टा कथा एहि संग्रह मे संग्रहीत छनि।

सुभाष कहियो कहने छला, *'जीवनक लेल जे नीक आ सुन्दर चीज अछि, हमर कथा तकरे आग्रही अछि। हमर कथाक प्रेरणा जीवन-प्रेम अछि। जे कोनो चीज जीवन-विरोधी अछि, हमर कथा तकरा प्रति वितृष्णा उत्पन्न करैत अछि।'*

से ठीके। ई काज सुभाषक कथा अवश्य करैत अछि। से चाहे कथानक मे करय आ कि ओकर भाषा मे, कथा-भाव मे करय, आकि ओकर प्रतिफलन मे, सुभाषक कथा काज तँ जरूर सैह करैत अछि।

(2009)

महाप्रकाश : चालीस बर्खक इतिहासक संग

महाप्रकाशक कविता-संग्रह 'संग समय के' वर्ष 2007 मे प्रकाशित भेल अछि। महाप्रकाश मैथिलीक वरिष्ठ कवि छथि। हुनक वरिष्ठता दू अर्थ मे निहित छनि। एक तँ ई जे ओ मैथिलीक समकालीन कविताक एहन थोड़ गनल-गुथल कवि मे सँ एक छथि जनिका कविता सिद्ध भेलनि अछि। व्यापकतापूर्ण जीवन सँ कविता कें बीछि लेबाक कला हुनका सधल छनि। दोसर जे ओ पछिला चालीस वर्ष सँ मैथिली कविताक क्षेत्र मे लगातार सक्रिय रहलाह अछि। बहुतो एहन अवसर एलनि जखन ओ लिखब छोड़ि सकैत छलाह, बहुतो लोक छोड़ि देलनि। अथवा लिखितथि तँ हिन्दी मे लिख' लगितथि, बहुतो लोक सेहो केलनि अछि। मुदा एकान्त निष्ठाक संग मैथिली कविताक क्षेत्र मे ओ काज करैत रहलाह। ओ कथा सेहो लिखने छथि। हुनक कथा सभक संख्या दू दर्जन सँ कम नहि हएत। आ से कथा सभ सेहो एतबा महत्त्वपूर्ण, जकरा छोड़िक' आधुनिक मैथिली कथाक इतिहास लिखब अव्याप्तिपूर्ण हैत। मुदा ओ अपनहुँ गछैत छथि जे ओ मूलतः कवि थिकाह। जीवनक मर्म कें पकड़बाक हुनकर ढंग काव्यात्मक होइत छनि।

महाप्रकाशक कविता सभक एक पुस्तिका 'कविता संभवा' 1972 मे प्रकाशित भेल छलनि। बहुत थोड़ प्रसार एकर भ' सकल रहै। मुदा, तैयो कविता-मर्मज्ञ लोकनि मे एकर बेस चर्चा भेल रहै। समकालीन मैथिली कविताक एक अनिवार्य नाम तँ महाप्रकाश थोड़े आगाँ आबिक' भेलाह, मुदा तहियो तकर झलक देखार पड़' लागल रहै।

'संग समय के' संग्रह मे महाप्रकाशक 83 गोट कविता संकलित छनि। ई कविता सभ 1968-70 सँ ल' क' हालक समय धरिक लिखल छियनि। महाप्रकाशक कविता-संसार बहुत व्यापक छनि। ई व्यापकता ओकर गहराइ मे निहित छै। काव्य-विषयक विविधता बहुत नहि होइतो ई कविता सभ व्यापक प्रभाव छोड़ैत अछि। तकर एक कारण तँ थिक कवितागत सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि, जे पाठकक लेल हुनकर कविता कें अविस्मरणीय बना दैत अछि। दोसर जे जतबे काव्य-विषय ओ उठौलनि अछि, पूरे मनोयोगपूर्वक ओ तकर गहराइ मे गेलाह अछि। अपन कार्य-प्रणालीक परिचय दैत एक कविता (अग्रजक स्वागत) मे ओ कहैत छथि--*'हम अपनहि पयरें नापब देस-कोस/हमरा अपनहि मुट्ठी मे अछि कालखण्डक मानचित्र/ हम अपनहि हाथें टोबैत छी, टोबैत प्राणशिरा।'* एहि ठाम देखल जाय जे देसकोस, कालखण्ड आ प्राणशिरा--एहि तीनूक सन्दर्भ मे जे कवि अपन स्वाधीनता प्रतिपादित करैत छथि से वस्तुतः दैहिक, दैविक आ भौतिक शक्तिक संदर्भ मे आधुनिक मानवक आत्मनिर्भरताक द्योतक थिक आ प्रकारान्तर सँ ई कविता-विधाक स्वायत्तताक घोषणा सेहो थिक। स्वाभाविक थिक जे परम्परा एकर अनुमति नहि देने अछि--से अपन जड़ताक कारण। ओ काल-परिस्थितिक संग अपना कें अद्यतन नहि क' क' राखि सकल अछि तें। तें ओ मृतवत अछि। तें सभतरि ओकरा प्रति असहमति आ नकारक भाव कवि मे व्याप्त छै। एहि तरहें देखी तँ महाप्रकाशक कविता परम्पराक अद्यतनीकरणक मुखर प्रस्तावक अछि।

उनैसम शताब्दीक उत्तरार्ध मे मिथिला मे आ मैथिली साहित्य मे आधुनिकताक उदय भेल आ से आधुनिकता एखनहु मिथिलाक अन्तिम मनुक्ख धरि पहुँचबाक अपन प्रक्रिये मे अछि। जखन महाप्रकाश परम्परा सँ असहमत होइत छथि तँ एकर एक अर्थ ईहो थिक जे ओ आधुनिकताक एक पक्षकार बनैत छथि। राजकमल चौधरी, जे कि हुनकर परमप्रिय कवि छथिन आ बहुतो सन्दर्भ मे हुनकर उपजीव्य सेहो, पर 1978-79 मे लिखल एक कविता (फूल बाबूक लेल एकटा कविता) मे ओ कहैत छथि--*'कर्मकांडी मैथिल लोकनिक शास्त्रीय आँखि/नहुँए-नहुँए आब खूजल अछि/कि पूजाक आसन आ वेश्याक ओछाओन धरिक/पीड़ा सँ भरल प्रार्थनाक स्वर/आब*

चीन्हल जा रहल अछि।' राजकमल चौधरीक मृत्यु (1967)क बारह बर्खक बाद ई कविता लिखल गेल अछि। एहि बारह बर्ख मे मिथिला-समाज मे जे परिवर्तन भेल अछि, तकर झलक एहिठाम देखल जा सकैए। ई परिवर्तन वस्तुतः आधुनिकताक दिस बढ़ैत डेगक प्रक्रम थिक।

एहिठाम प्रसंगवश हमरा लोकनि कवि महाप्रकाशक आधुनिकता-प्ररूपक सेहो अवलोकन क' सकैत छी। आधुनिकताक हुनक परिभाषा थिकनि जे मनुक्खक पैघत्व लेल चूड़ान्त संवेदनशीलता सर्वोपरि थिक, ओकर आचारगत सीमा कें कात करैत। एही कारणें राजकमल चौधरी हुनका लेल पैघ लोक छथिन आ समाज मे हुनकर स्वीकृति देखि क' हुनका अपन स्वीकृति-सन के हर्ष होइत छनि।

अपन कविता-वस्तुक चयन लेल महाप्रकाश जाहि समाज कें लेलनि अछि से निम्न मध्यवर्गीय मिथिला-समाज थिक। पढ़ल-लिखल। महत्त्वाकांक्षी। सपना देखनिहार। सोच आ दृष्टिकोण राख'वला। दीन-दुनियाक प्रति उन्मुखता राख'वला, आशान्वित। जनतंत्र, संविधान, विकास आ राजनीतिक प्रति साकांक्ष। भारतीय स्वतंत्रताक प्रति आकांक्षा आ मोह राख'वला। तात्पर्य जे विचारशील मैथिल समाज हुनकर कविताक केन्द्र मे अछि। स्वयं महाप्रकाश एक निपुण विचारशील कवि छथि। टी. एस. इलियट कहने छथि जे कवि विचारहीन सेहो भ' सकैत अछि आ तैयो ओ अपना समयक श्रेष्ठ कविता लिखि सकैत अछि। विचारहीन अर्थात् कविता मे कोनो विचार आबय ताहि सँ परहेज केनिहार। मुदा एहन कवि महाप्रकाश नहि छथि। विचार हुनकर कविताक धूरी थिकनि। ई विचार हुनका कविताक संग तेना गहमागट्ट जुड़ल अछि जे कतोक बेर ओकरा अलग क' क' देखब परिश्रमसाध्य भ' जाइत छै। कुल छः पाँतीक एक टा सुन्दर कविता छनि हुनकर 'आत्मीयता', ताहि मे ओ कहै छथि--*मृत व्यक्तिक आँखि मे अपन/प्रतिबिम्ब देखि हम अपन/माँ सँ कहलियै--मैया! अहाँक आँखि सँ/कहुना अधिक चमक छै/एहि मृत व्यक्तिक आँखि मे।'* प्रश्न छै जे एक मृत व्यक्तिक आँखि मे अधिक चमक किऐ छै? प्रायः एहि दुआरे जे जीवनजन्य अभाव आ पीड़ा जीवित व्यक्ति कें कम आत्मीय बना दैत छै। ई अभाव आ पीड़ा दू मे सँ ककरो मे केन्द्रित भ' सकै छै--माँ मे सेहो, 'हम'

मे सेहो। मुदा मूल बात छै जे ई अभाव, ई पीड़ा किऐ अछि? एकर कारण कत' निहित छै? की ई कविता बुद्धक दुखवाद लग हमरा ल' जा सकैत अछि? नहि, महाप्रकाशक कविताक ताना-बाना आ मिजाज ततेक यथार्थवादी छनि जे कविता सीधे हमरा जनतंत्र, राजनीति आ विकासक स्वप्न सँ होइत मोहभंग, आक्रोश आ विद्रोह धरि पहुँचा जाइत अछि। तें, हम देखैत छी जे नितान्त वस्तुवाद सँ लैस महाप्रकाशक कविता विचारहीन किन्नहुँ नहि भ' सकैत अछि, हुनकर सुन्दर आ कोमल कविता सभ सेहो नहि।

दाम्पत्य, दोस्ती, प्रेम आ प्रकृति--महाप्रकाशक प्रिय काव्य-विषय सभ छियनि। चारू सकारात्मक ऊर्जा सँ दीप्त। मुदा यैह चारू आइ सर्वाधिक संकटग्रस्त अछि। ई संकटग्रस्तता अपन विश्वसनीयतम रूप मे हुनकर कविता मे चिन्हार भेल अछि। एहि संकटक काल-परिस्थितिक ओ बहुत प्रौढ़ शब्दांकन केने छथि। ओ एहि संकटक तह धरि जाइत छथि, एकर कारण सभ कें तकैत छथि। ओ देखैत छथि जे भारतीय स्वतंत्रताक आदर्श सभतरि ध्वस्त भ' चुकल अछि। व्यक्तित्वहीन-चरित्रहीन शातिर लोक सभ नेतृत्व पर कब्जा जमा लेलक अछि, जकरा लेल जनाकांक्षा वा जन-प्रतिबद्धताक कोनो टा मूल्य आ महत्त्व नहि छै। अनिवार्य परिणति थिक जे एहन नेतृत्व द्वारा संचालित व्यवस्था मनुखमारा भ' गेल अछि। अपन एक कविता मे ओ आश्चर्य व्यक्त करैत कहैत छथि जे कतेक कम कील ठोकनहि ईसा मसीह महान बना देल गेलाह जखन कि *आबक सभ टा ईसा/एहि जनतंत्रक जनता/व्यवस्थाक पटरी पर/चिथड़ा बनल लहास अछि।*

भारतीय जनतंत्रक विफलताक जतेक प्रौढ़ आ विचारोत्तेजक चित्र महाप्रकाशक कविता मे आएल अछि, से मैथिली संसार मे दुर्लभ थिक। हम तँ देखैत छी जे हुनक कोनो गोट कविता, भने ओ दाम्पत्य वा बसन्ते पर किएक ने लिखल गेल हो, अपन अभिप्राय मे एक निस्सन राजनीतिक कविता थिक। 1975क दीपावली पर ओ एक कविता लिखने छथि-- *'दीपक धुआँ/छाड़ि लेलकैए सौंसे आकाश/आ अन्हार मुस्काइत अछि/हमरा सोझाँ-रस्ता छेकने/यात्रा लेल पाँखि फड़फड़बैत हम/मुन्नी, किनका समर्पित करू ग'/अपन अंतिम प्रणाम?'* 1975क दीपावली माने इमर्जेन्सीक अनुशासनपर्व। व्यवस्था दीप जरौलक अछि जे जनता कें आगूक बाट सुझौक। मुदा भेल

की अछि वास्तव मे? दीपक धुआँ सौंसे आकाश कें छाड़ि लेलकैए। अन्हारक जे चित्र ओ प्रस्तुत केने छथि से देखिते छिऐ जे विशाल भुजाधारी करियाठ जमदूतक दृश्य उपस्थित क' दैत छै। इमर्जेन्सी पर मैथिली मे अनेको कविता लिखल गेल अछि। महाप्रकाशक विशेषता छियनि जे अपन अभिप्रायक समर्थन लेल ओ प्रकृति आ वस्तुजगत कें आमंत्रित करैत छथि आ अपन कौशलक प्रसादें से समर्थन प्राप्त क' लैत छथि।

मुदा, महाप्रकाशक काव्य-बोध बहुत आधुनिक छनि। हुनका दुनिया भरिक कविता पढ़ले टा नहि छनि, अपना भीतर पचायलो छनि। तें कतोक बेर हम देखैत छी जे मैथिली कविताक एक सामान्य पाठक एहिठाम आबिक' कतोक बेर दाँत चियारि दैत अछि। कहै तँ छी हमरा लोकनि जे मैथिल लोकनि बड़ विद्या-विनोद प्रेमी होइ छथि, मुदा ओकर संस्कार जड़ बनल रहौक तकर प्रबल चेष्टा मे हमर आचार्य लोकनि सभ दिन सँ अपस्याँत रहलाह अछि। विद्यापतिक समय मे हमरा लोकनि 'लुब्धनगरयाचक' कहि क' हुनकर कविता कें खारिज करैत छी आ आइ ओही कविताक बदौलति हुनकर जयजयकार करैत छी। एकर की माने भेल? हम तँ यैह बुझैत छी जे हमरा लोकनिक जड़ काव्य-संस्कार पाँच सय बर्ख पाछू चलि रहल अछि।

मैथिलीक आधुनिक कविताक विकास मे महाप्रकाशक महत्त्वपूर्ण स्थान छनि। बहुत प्रसिद्ध कथन अछि जे यात्री जी दूध बेच'बाली फेकनीक जीवनक पीड़ा आ यथार्थ कें कविताक क्षेत्र मे प्रतिष्ठापित केलनि, मुदा ओ ओकर मनोजगत, ओकर चेतना, ओकर आत्माक हाहाकार धरि नहि पहुँचि सकलाह। तत' पहुँचलाह राजकमल चौधरी। यात्रीजीक कविता-धाराक विकास हमरा लोकनि अनेक कवि मे देखैत छी। आगाँ तँ जेना ओ फैशन बनि गेल। मुदा की राजकमल चौधरीक कविता-धारा गतिहत भ' गेल? एहन जँ किनको लगैत छनि तँ तकर अर्थ थिक जे मैथिली कविताक विकास कें ओ कने कम समझि रहलाह अछि। अस्तु, जाहि सर्वप्रमुख कवि मे राजकमलक धारा अपन स्पष्ट विकास पौलक अछि, से महाप्रकाश छथि। महाप्रकाशक शब्द-संसार, हुनक कथन-भंगिमा, हुनक मिथक आ प्रतीक आ बिम्ब--सभ कथू एक एहन आधुनिक प्रभामण्डल रचैत अछि

जत' संपूर्ण दुनियावी यथार्थ, मनोजगतक विश्लेषण सँ खुजैत छै। तें हमर तँ मान्यता थिक जे मैथिलीक जाहि थोड़ेक कवि लोकनिक रचना मे मैथिली कविता अपन प्रौढ़तम रूप मे अभिव्यक्त भेल अछि,ताहि मे सँ एक महाप्रकाश छथि। तें, हमरा तैखन धक्का नहि लगबाक चाही, जखन ओ अपन कवि कें संबोधित करैत ई कवितांश लिखि जाथि--*'हे हमर कवि! अक्षत यौवनक कविता कत' भ' सकैत अछि। कविता आब सुन्नरि नहि भ' सकैत अछि।'* तखन हमरा वस्तुतः हुनकर मर्म धरि पहुँचबाक प्रयास करबाक चाही जे परम्परित काव्यशास्त्रक आधार पर आब कविता कें नहि बूझल जा सकैत छै। आजुक कविताक सुन्दरता ताहि दिनक सुन्दरता (अक्षत यौवनक कविता) सँ भिन्न अछि।

समयक संग कविताक कोन आ केहन संबंध होइत छै आ कोन-कोन रूप मे समय अपन व्याप्ति मे लिखल गेल कविता कें स्पर्श आ प्रभावित करैत छै--एहि विषय पर मैथिली मे एखन धरि किछुओ नहि लिखल गेल अछि। जँ एहि मादे लिखल जाय तँ हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे एक्कहि कालखंड मे जीबैत विभिन्न कवि लोकनिक अन्तर्सम्बन्ध, समयक संग, भिन्न-भिन्न होइत अछि। कहल जाय जे समय अलग-अलग ढंग सँ अलग-अलग कवि कें व्यापैत अछि। कोनो कविक कविता मे ओ एक तरहें मुखर भ' सकैत अछि तँ कोनो आन कवि मे ओकर मुखरता भिन्न रूपक भ' सकैत छै। किछु कवि मे ओ मौन सेहो भेटि सकैत अछि।

से हम देखैत छी जे मैथिलीक किछु गनल-चुनल कविक कविता मे जँ समय अपन सुस्पष्ट पहिचानक संग विद्यमान अछि तँ ओ कवि महाप्रकाश सेहो छथि। आ से महाप्रकाश पछिला चालीस वर्ष सँ निरंतर सृजनरत छथि। एहना मे स्वाभाविक थिक जे पछिला चालीस बर्खक समय अपन एक खास व्याप्तिक संग महाप्रकाशक कविता मे उतरल अछि। महाप्रकाशक कविता सभ कें एक बेर फेर सँ पढ़ि गेलाक बाद, आब तँ हम ई कहबाक स्थिति मे छी जे हुनकर कविता सभ कें जँ ठीक-ठीक अनुक्रम मे जोड़ि देल जाइक तँ पछिला चालीस बर्खक इतिहास लिखल जा सकैत अछि जाहि मे आम आदमीक संग राजनीति द्वारा कएल गेल मजाक कें साफ-साफ देखल जा सकैए।

जाननिहार जनैत छथि जे ठीक यैह बात यात्री नागार्जुनक कविताक सन्दर्भ मे कहल गेल अछि। मुदा ताहि मे, मुख्य भूमिका हुनकर हिन्दी कविताक छनि जाहि मे समयक मुखरता सुस्पष्ट छै। संभव जे मैथिली मे सेहो एहन कवि भेल होथि, एहन कविता सभ लिखल गेल हो। किन्तु, एहि तरहक कविता-संकलन दुर्लभ अछि जे अपन देशकाल आ सृजन-समयक ठीक-ठीक पहचान ज्ञापित करैत हो। स्वतंत्रता-आन्दोलनक आदर्श, ओकर प्रभामण्डल, तकरा प्रति लोकक आशा-आकांक्षा सँ ल' क' शुरू होइत महाप्रकाशक कविता मोहभंग, दमन, नक्सलबाड़ी आन्दोलन, इमर्जेन्सी, खिचड़ी व्यवस्था आ तकर नकारात्मक प्रतिफलन आदिक तह खोलैत मुक्त बाजार आ भूमण्डलीकरणक नतीजा पर आबिक' दम धरैत अछि। हुनकर पहिल कविता संग्रह 'कविता संभवा'क कविता सभ सेहो एहि संग्रह मे लेल गेल अछि, से एहि चित्र कें आरो पुष्ट करैत छै। हम तँ चकित छी जे एहि संग्रहक नाम 'संग समय के' कतेक सटीक आ तूलमतूल छै। महाप्रकाशक कविताक जे अपन खास प्रकृति छनि, तकर ठीक-ठीक कथन एहि नामकरण मे देखाइत छै। ईहो एक दुर्लभ बात थिक। अधिकतर तँ हमरा लोकनि देखैत छी जे पोथीक नाम सँ ओकर विषय-वस्तुक कोनो तार्किक मिलान नहि देखाइत छै--पोथीक नाम जँ रहैत अछि 'लक्ष्मी' तँ भीतर सनातन दरिद्रताक पुश्तैनी चास-बास देखाइत अछि!

कविताक संग महाप्रकाशक बहुत आत्मिक संबंध रहलनि अछि। कविता कें ल' क' राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर जे कोनो चहल-पहल होइत रहल अछि, ओ सभ कथू सँ परिचितो रहलाह अछि, आ तकरा अपन सृजन मे स्थान छेक' सेहो देलनि अछि। तें, हमरा लोकनि भारतीय कवि-समाज मे, पछिला चालीस बर्खक भीतर भेल महत्त्वपूर्ण विमर्श आ प्रयोगक झलक सेहो हुनक कविता मे पाबि सकैत छी। तखन, हुनकर अपन सीमा सेहो छनि। आइ समकालीन कविता, चारू दिसुका निराशा सँ निस्तार तकैत, अपन माटि-पानि, अपन परम्परा कें नव तरहें पुनर्मूल्यांकित आ संस्थापित करबाक उद्यम मे लागल अछि। भूमण्डलीकरणक परिप्रेक्ष्य मे, मैथिली-सन भाषा-संस्कृति कें, अपना कें टिकौने रखबाक लेल ई एक अनिवार्य बुद्धिमत्तापूर्ण डेग थिक। महाप्रकाशक सीमा छनि जे ओ सातम

दशकक काव्य-बोध आ शब्द-संसार आ अभिव्यक्ति-भंगिमा सँ अपना कें आगू नहि बढ़ा पबैत छथि। अपन एक टा कविता मे ओ कहैत छथि--*'हमरा दुःख अछि जे हम अपन/कल्पनाक ओहि ऊँचाइ धरि/नहि जा पबैत छी जतय/ खिड़की खुजल हो--हवा-दृश्य-रंग/गति दिशा कें इंगित करैत हो।'* निस्सन्देह, एहि सभ इंगितक लेल कल्पनाक ओहि ऊँचाइ धरि पहुँचब बेजाय बात नहि थिक। आ, कतेक सुन्दर बात थिक जे कवि मे ई अभीप्सा मौजूद छैक।

(2008)

हरे कृष्ण झा : सघन कविताक ऊष्मा

आधुनिके युग मे नहि, सभ युग मे, किछु कविता एहन लिखल जाइत छैक जे अपन अनुभूति मे ततेक सूक्ष्म आ बिम्ब मे ततेक सघन होइ छैक जे ओकर ऊष्मा कें सहि पायब कठिन बनल रहैत छैक। कोनहु कालखण्ड मे एहन कविता निश्चिते कम्मे लिखल जाइछ। मुदा, एहने कविताक सम्बन्ध मे कहल जाइत अछि जे ओ (कविता) अपन देश-कालक अतिक्रमण करैत अछि। एहन कविता अपन युग सँ बाहर धरि जा क' चमक देखबैत अछि। बात मुदा ईहो जे एहि कोटिक कविता अपन सृजेता सँ ओकर सर्वस्व न्योछावर करा लैछ। सुनल अछि जे प्रसिद्ध हिन्दी कवि निराला जखन कविता लिख' बैसथि तँ एक अनुच्छेद लिखैत-लिखैत पसेना सँ लथपथ भ' गेल करथि आ कोनो दोसरो काजक जोग नहि रहि जाथि।

मैथिली मे, प्रायः एहने कविता सभक एक स्मरण-योग्य संग्रह हाल मे प्रकाशित भेल अछि--एना तँ नहि जे। एकर कवि हरे कृष्ण झा छथि।

हरे कृष्ण झा कें मिथिला-समाज चिन्हैत-जानैत आयल अछि। अपन कवि-कर्मक आरम्भ ओ तीन दशक पहिने कयने छलाह। हुनकर हिन्दी कविता सभक एक संग्रह 'धूप की एक विराट नाव' 'साम्य' पत्रिकाक दिस सँ प्रायः पन्द्रह बर्ख पहिने बहरायल छल। हरे कृष्णक कविता-प्रकृति, हुनक दृष्टि तथा वस्तुक तहिया बहुत प्रशंसा भेल रहय। बाद मे, ओ हिन्दी मे कविता लिखब छोड़ि देलनि आ प्रतिबद्ध भ' क' मैथिली कविताक क्षेत्र मे काज कर' लगलाह। आब, एत्ते दिनका बाद, हुनक कविता सभक पहिल संग्रह प्रकाशित होयब महत्त्वपूर्ण थिक। छपिते देरी

ई पुस्तक कविताप्रेमी लोकनिक ध्यान व्यापक रूप सँ अपना दिस आकृष्ट कयलक अछि।

'एना तँ नहि जे' मे हरे कृष्णक एकहत्तरि गोट कविता संकलित छनि। ई कविता सभ 1979 सँ 2006 ईस्वीक बीच लिखल गेल अछि। एहि अठाइस बर्ख मे कवि हरे कृष्ण जीवनक अनेक उतार-चढ़ाव देखलनि, अनेक बीहड़ अनुभव सभ सँ गुजरलाह आ वैचारिक तल पर सेहो एक दीर्घ यात्रा पूर्ण केलनि। अपन कवि-कर्मक आरम्भिक दौर मे ओ मार्क्सवादी-लेनिनवादी-माओवादी राजनीति आ गतिविधि संग गहराइ सँ जुड़ल छलाह। ओहि कालखण्ड मे लिखल हुनकर कविता 'हे लिअ ई धधराक चेरा' सेहो एहि संग्रह मे संकलित अछि जे अपन तीक्ष्णताक कारण ओही दिन सँ मैथिली-संसार मे खूब चर्चित रहल अछि। आ, अपन वैचारिक यात्राक जाहि पड़ाव पर ओ आइ पहुँचल छथि, तकर स्वर आ शैली कें तँ कैक आयाम मे, कैयैक परिणति मे एहि ठाम देखले जा सकैत अछि। संग्रहक भूमिका 'अहं जनाय समदं कृणोमि' मे एक ठाम ओ कहैत छथि जे कोनो एक गोट विचारधारा कें पकड़ि क' जीवन-जगतक सत्य मे प्रवेश नहि कयल जा सकैछ। से प्रवेश सम्भव अछि तँ दुइये तरहें--कि तँ विभिन्न विचारधारा सँ प्राप्त दृष्टिक संश्लेषणजनित स्वतंत्र चिन्तन सँ अथवा ध्यानमूलक अवलोकन आ अवगाहन सँ। ठीक यैह बात कहैत प्रतीत होइत छथि ओ संग्रहक पहिल कविता 'वाग्देवी' मे जतय काव्यक चरम प्रयोजन हेरैत ओ कहैत छथि--

बेर-बेर पुछैत छथि वाग्देवी
...की चाही अहाँ कें?
शुद्ध प्रकाश
अपन कवितामे?
तखन आर किछु
नहि भेटत।

प्रकृति, संगीत आ स्त्री--ई तीनू हरे कृष्णक प्रिय काव्य-विषय थिकनि, जकर अनेक-अनेक प्रतिच्छवि एहि संग्रहक कविता सभ मे देखल जा सकैत अछि। विषय हुनकर पुरातन थिकियनि अवश्य मुदा कथ्य मे सदति

नवीन अर्थवत्ता भरबाक लेल हरे कृष्ण जानल जाइत रहलाह अछि। हुनकर कविता मे, जे वस्तु जतय अछि ततहि सँ गति दिस उन्मुख अछि, ठीक लयकारी जकाँ। नीक सँ नीकतरक प्रयत्न हुनक स्थायीभाव थिकियनि। कहल तँ जेबाक चाही जे हरे कृष्णक काव्य-चेष्टाक मूल प्रयोजन यथास्थितिक प्रतिरोध आ मुक्तिक खोज थिक। अपन अभीप्सा व्यक्त करैत एक ठाम ओ कहैत छथि--

होमक छाह/ सँ सुखायल
माटिक भीतरी कनबह
जमकल धुआँ
सँ ठमकल ओस
स्वाहा भेल गाब, हरियरीक
कलहान्त छी गाछपातक रसधार लेल
आब छाती पर माझ ठाम
ब'ह पनघाब' चाहैत छी...

(सव्य-अपसव्य)

हरेकृष्णक कविता मे, किछु लोक अछि जे मनुष्यता कें नष्ट-भ्रष्ट करबा पर तुलल अछि। उत्तर आधुनिक सभ्यता आ मृख्यधाराक राजनीति, दुनू, एहने लोक कें अपन नायक मानैत अछि। ई लोक सभ, हरे कृष्णक कविता मे कतहु तँ शस्त्रास्त्रक दम्भ भरैत, कतहु स्त्रीक सर्वनाश लेल लोकाचार रचैत तँ कतहु वर्णवादक मठ तर मे अत्याचारक जाल बुनैत देखाब दैत अछि। कवि 'हाहुत्ती' कहि क' एहन लोकक भर्त्सना करैत छथि। ई लोक सभ कहियो हमरा सभक अपन लोक नहि भ' सकैत अछि, ओकर सभ्यता कहियो अपन सभ्यता नहि भ' सकैछ। एक ठाम ओ कहैत छथि--

खाहे कतबो अनूप होथि
सूर्ज आनक
आखिर कतेक दूर धरि
काजक हेताह ओ
हमरा सभक लेल?

(एना तँ नहि जे)

एहि संग्रह मे तिलक-दहेजक सम्बन्ध मे सेहो कविता छैक आ बम बरिसबैत विमानक सम्बन्ध मे सेहो। कतहु कवि बुद्धिजीवी वर्गक क्रियाहीनताक आलोचना करैत छथि तँ कतहु मायक चिन्ता सँ ग्रस्त होइत छथि। माय, जे जीवन कें टेक देबाक खातिर जतन-पर-जतन करैत आयल मुदा जकरा लेल आजुक सभ्यता लग मे कोनहु जगह नहि रहि गेलैक अछि। खखरी सँ अनाज कें बिलगबैत स्त्रीक बिम्ब, हुनका कविता मे अयलनि अछि। कवि कहै छथि जे ओसौनी करैत ओहि स्त्रीक लग सँ उड़ि क' अबैत खखरी भरल जाइत अछि हमरा-अहाँक आत्मा मे, सड़ा देत ओ हमरा सभक आत्मा कें जाधरि धानक फूल नहि छिटकतैक एहि स्त्री सभक जीवन मे! एहि सभक अतिरिक्त, एक गंभीर आशावादिता सेहो छनि कविक भीतर, जकरा बदौलति ओ देखैत छथि-

करिछौन खोइँचाक भीतर सँ
बहराइत तरबूज जकाँ
बाहर अबैत अछि भोर

भोरक एहि तरहें बाहर आयब हरे कृष्णक कविताक चरम इष्ट थिकनि। संग्रहक भूमिका मे हरे कृष्ण झा अपन काव्य-यात्राक विषय मे, आ कर्तृत्वक विषय मे जे किछु कहलनि अछि, ताहि मे किछु गोटे कें अतिरंजना देखार पड़ि सकैत छनि। ओहुनो, मैथिली कविताक परम्परा नगण्य नहि अछि आ यात्रीजीक काव्य-साधना सँ तँ एहि मे अप्रतिम अध्याय जुड़ल अछि। तखन, हरे कृष्णक जे उक्ति छनि, तकरा एक समर्थ कविक आत्मविश्वासक रूप मे देखल जेबाक चाही।

(2008)

अशोकक कथा-स्वभाव

तीस बरखक अमल भेल हेतै जे अशोक मैथिली मे कथा लिखब आरम्भ केने छलाह। एहि तमाम बरख मे अशोक एकमात्र कथे विधा पर एकाग्र रहलाह। मुदा, हुनकर कथा सभक गिनती करी तँ मोश्किल सँ पचास टा कथा हुनकर खाता मे जेतनि, जखन कि एतबे दिन मे किछु बन्धु दू सय सँ ऊपर कथा लिखि मारलनि अछि। एकर कारण थिक अशोकक जटिल रचना-प्रक्रिया। ओ कोनो एकटा कथा शुरू करै छथि आ ओकरा संग जीयब शुरू क' दैत छथि। छव-छव मास अपन पात्र सभक संग बनल रहैत छथि। लम्बा-लम्बा बहस होइत अछि। पसंद-नापसंद पर रग्गड़ चलैत अछि। कखनो ई ऊपर तँ कखनो क्यो आर नीचाँ। मित्र लोकनिक राय-विचारक सत्यापन पात्र सभ सँ कराबै छथि। तकर बाद पुनः एकटा नव ड्राफ्ट। एक बेर की भेलै जे हुनकर एकटा डाक्टर, जे टाका कमबै लेल जबानिएक दिन मे लन्दन गेल छला, झुल-झुल बूढ़ भ' क' आ अफरजात टाका जमा क' क' गाम घुरला। (कथा 'डैडीगाम') गाम जे ओ घुरल छला से असल मे मरै लेल घुरल छला--पुरातन संस्कार हृदय मे छलनि जे मिथिला आबि क' मृत्यु हो, तँ बात जमै छै। किछु दिन डाक्टर गाम मे रहलाह आ ओ देखलनि जे मरबा मे एखन देरी छै तँ हुनकर मोन मे एलनि जे गाम मे एकटा भव्य मन्दिर बनबाओल जाय। कमी की छलनि, होअए लागल तैयारी।

मुदा, तीन-चारि मासक बाद एक दिन अशोक सँ भेंट भेल तँ कहए लगला--'जनै छियै? डाक्टर आब अपन विचार बदलि देलनि अछि। आब

ओ मन्दिर नहि बनबौता, अस्पताल बनबौता। हुनकर बेटा सभ सेहो यूरोप सँ एलनि अछि। सभ क्यो हुनका सपोर्ट क' रहल छनि। ग्रामीण लोकनिक सेहो सहयोग भेटि रहल छनि।'

--भाइ, ई सूझ डाक्टर कें कोना भेटलनि यौ? ई सद्‌विचार तँ हुनका संस्कार कें शोभा नहि दैत छनि। ई कोना भेलै? --हम पुछलियनि।

अशोक कहए लगला--'असल मे, गाम मे ओ बेसी दिन रहि गेला ने। हुनकर जीवनी-शक्ति घूरि एलनि अछि। आब ओ मृत्यु कें बिसरिए गेला अछि बुझू। असल मे मारि तँ हुनका पच्छिम रहल छलनि कि ने?'

तँ, मैथिलीक एहि विलक्षण कथाकारक ई छियनि रचना-प्रक्रिया! हम तँ हुनकर दर्जनो कथा कें लिखल जाइत देखने छी। चर्चा मे शामिल भेल छी। कैक बेर तँ उचिती-मिनती धरि पहुँचि आएल छी--'भाइ, हद्द छी मुदा अहूँ। भेलै तँ बहुत। आबो तँ अहाँ हिनका सभ सँ, मने पात्र सभ सँ मुक्त होउ।' मुदा, अशोक छथि जे संसारक सर्वाधिक मनपसन्द काज छियनि--कथा लिखब। ओ कथा लिखब, जकरा ओ एहि दिन मे जीबि रहल होथि। बारम्बार लिखैत छथि जे ओहि समस्त सम्भावना सभक पड़ताल क' लेल जाय, जाहि सँ ककरो संगे न्यूनतम सहमतिक गुंजाइश बनि पाबय। आ जँ ई सहमति नहिञे बनि सकल हो अंत-अंत धरि, तखन फेर अहाँ देखि लिय' हुनकर प्रहार। हुनकर प्रहार बड़े घातक, बड़े मारक होइत अछि। बड़का-बड़का कें हम हुनकर प्रहार सँ छरपटाइत आ तलमलाइत देखने छी।

अपन कथा सभ मे मिथिलाक खोज अशोकक प्रधान लेखन-चेष्टा होइत छनि। ओ मिथिला, जकर श्रमशील आ सृजनोत्सुक संतान लोकनि, हजार-हजार बरखक कठिन उद्यम सँ, दुर्वह परिस्थिति सभक सामना करैत, जकर निर्माण केलकनि अछि। मिथिलाक ओ संतान लोकनि, जिनका मे जीव-जगतक प्रति अटूट स्नेह छलनि आ गति-प्रगतिक प्रति असंदिग्ध स्वीकार्यता! मुदा, मध्यकालक भोगवादी राजपुरुष लोकनि आ सम्वेदनशून्य पण्डित लोकनि जकरा (मिथिला कें) नष्ट-भ्रष्ट क' देलखिन। तथाकथित राजा-महाराजा आ पण्डितप्रवर लोकनिक विन्यासपूर्वक भोग-विलास-प्रक्रिया कें स्वर्णिम मिथिलाक प्रतीक कहि क' प्रचारित कएल गेल। वास्तविक

मिथिला तँ जे छल, जतय छल, बनल रहल आ यथाशक्ति अपन विकास सेहो करैत रहल, मुदा सैकड़ो बरख धरि ओ एहन बौद्धिक लोकनि कें पाबि नहि सकल, जिनकर पएर भूमि पर टिकल होइनि आ जिनका आंखि मे क्षमता होइनि जे राजभवन कें चीरि क' ओकरा आगू धरिक यथार्थ कें देखि पाबथि। ओही मूल मिथिलाक खोज अशोकक प्रधान लेखन-चेष्टा छियनि। केवल खिस्सा लिखबाक लेल ओ खिस्सा लिखने होथि, हमरा बुझने, एहन कहियो नहि भेल। जहिया कहियो ओ लिखलनि तँ किछु खोजबाक लेल, अन्वेषण करबाक लेल ओ लिखलनि। एहि प्रयास मे सफलताक लेल ओ अपन सीमा सँ बाहर धरि गेलाह। सांस्कृतिक आयोजन सभ करबौलनि। अकारण नहि थिक जे अपन आयोजनक नाम ओ 'प्रतिमान' रखलनि, आ इहो अकारण नहि थिक जे अपन निबन्ध सभ कें जखन ओ प्रकाशित करौलनि तँ पोथीक नाम 'मैथिल आँखि' रखलनि। मैथिल आँखि अर्थात जीव-जगत कें देखबाक लेल आ स्वयं मिथिला कें देखबाक लेल अपेक्षित दृष्टिकोण।

मिथिला कें ओ पूरे व्यापकताक संग अपन रचना सभ मे उठबैत छथि। मिथिलाक पर्यावरण, ओकर इतिहास, ओकर सांस्कृतिक आयाम--सभ कथू पूरे सज-धज के संग हुनकर रचना उतरैत अछि। अशोकक विशिष्टता ई छियनि जे एहि सभ कथू कें ओ एक एहन विशेष लय मे प्रस्तुत करैत छथि जकर आरम्भ तँ जरूरे अतीतक तीत-मधुर आख्यान सँ होइछ, मुदा जकर अन्त निश्चित रूप सँ प्रगतिशील मूल्य आ जनसरोकारक पक्ष मे आबि क' होइत अछि। वैधव्यक शास्त्रसम्मत आ आडम्बरपूर्ण जीवन मौज सँ जीनिहारि हुनकर एक दादी माँ (राँड़) अपन दुर्गत वर्त्तमान मे सेहो, सासुर-पक्षक कोनो व्यक्ति कें भाव नहि दैछ, कारण ओ एक एहन खन्दान सँ (नैहर सँ) आएल छली, जे स्वदेशी-बिलैंतीक विभाजन मे, तिल भरि महाराजाधिराजक परवाह केने बिना स्वदेशी लोकनिक पक्ष मे ठाढ़ भेल छल। अपन कुल-मर्यादाक रक्षाक लेल ओ अपन पौत्र कें संस्कृत पढ़ब' चाहैत छथि, मुदा पौत्र एहि तरहें आगू निकलि जाइत छनि जे संस्कृतक बदला मेडिकल साइन्स तँ ओ पढ़ैते अछि, रोजी-रोटी लेल समुद्र-लंघन क' क' विदेश सेहो चलि जाइत अछि। जे लोकनि मिथिलाक इतिहास आ इतिहासक कुटिल

गति सँ नावाकिफ छथि, हुनका लागि सकै छनि जे कथाकार एहि ठाम 'स्वदेशी' कहि क' तात्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलनक सन्दर्भ दैत छथि। मुदा नहि। ओ भारतक 'स्वदेशी' भ' सकैत अछि, मिथिलाक नहि। एतए तँ स्वदेशी ओ लोकनि छला जे महाराज कामेश्वर सिंह द्वारा समुद्र-लंघन क' क' विदेश जेबाक विरोध शास्त्र-मर्यादा आ धर्म-रक्षाक नाम पर केने छलाह। अर्थात प्रतिगामी कट्टरपंथी तत्त्व, जिनका आधुनिकता, राष्ट्रीयता, प्रजातन्त्र, संविधान आदि नव मूल्य किन्नहु रुचि-पचि नहि सकै छलनि। तँ, एहि सभ तरहक अनेक-अनेक, कोटि-उपकोटिक अंतरंग मैथिल सन्दर्भ अशोकक कथा सभ मे अहाँ कें भेटि सकैत अछि।

अशोकक कथा-साहित्यक एक विशिष्ट महत्त्व एक आरो सन्दर्भ मे अछि। सभ गोटे जनै छी जे मिथिलाक समाज बहुतो दिन सँ बन्द समाज रहल अछि। जँ कतहु कोनो दिस कनेको खुलापन पाओल जाइतो हो तँ ओकरा घृण्य आ निषेध्य बता क' बन्द करबाक प्रबल प्रयास जारी रहल अछि। प्रश्न अछि जे के बन्द केलनि एहि मिथिला-समाज कें? के छलाह ओ लोक सभ? की छलनि हुनका लोकनिक सिद्धान्त? ओ सिद्धान्त सभ भने कोन्नहु शास्त्र सँ लेल गेल होउ, आखिर हुनका लोकनिक जीवन-शैली, चिन्तन प्रणाली की छलनि? ओ लोकनि अपना हिस्साक जीवन कोना जिबै छलाह? कोन अन्तर्विरोध छलनि हुनका सभक, जँ छलनि तँ? हुनका सभक खुक्खपन कतए उजागर होइत अछि, आ पैरवीकार सभक दरिद्रता कतए उद्घाटित होइछ? किनको आश्चर्य भ' सकै छनि जे आजादीक साठि बरख बीति गेल, मुदा व्यंग्येतर गंभीर साहित्य मे ई मुद्दा सभ उभरि क' आबि नहि सकल। की कारण छल एकर? संभवतः यैह जे समस्त लेखक लोकनि तँ एही जीवन-प्रणालीक उपजा छला तँ एकरा उघार कोना क' सकै छलाह? एकरा सभ कें नांगट करबाक अर्थ छल--स्वयं अपना कें नांगट करब। से क्यो कोना क' सकै छलाह? अधिकांश गंभीर लोक टटका फैशनक मोताबिक लिखि रहल छला, आ टटका फैशन छल--वामपंथी फार्मूलाक कथा-लेखन। आ बाँकी कें तँ धर्मक मर्यादा-रक्षाक झालि बजेबा सँ फुरसत कहाँ छल? अशोकक विशेषता छनि जे ई खतरा उठेबाक हिम्मति ओ रखैत छथि!

स्वयं अपना कें नांगट क' लेबाक हद धरि ओ मैथिल संस्कृतिक विद्रूप कें नांगट करैत चलैत छथि। यैह कारण थिक जे हुनकर अधिकांश लेखन अभिजात-वर्गक विषय मे भेटैत अछि। विषय ओ वर्ग अवश्य थिक, मुदा गौर करबाक चाही जे अशोक अपन पाठक कें ल' कतए जाइत छथि! हुनकर कथा कें बूझि गेलाक बाद सेहो कि क्यो अभागल पाठक अपना के अभिजात्य गौरव सँ दीप्त प्रतिवेदित क' सकैत अछि?

मुदा, एम्हर अहाँ कें अशोक सँ गप हएत तँ सम्भव जे एहि बात पर अपसोच करैत ओ अहाँ कें भेटि जाथि जे दलित लोकनि पर, दलित स्त्री लोकनि पर ओ पर्याप्त लेखन नहि क' सकल छथि। हम मुदा हुनकर बात सँ सहमत नहि होइ छी। कोनो लेखकक लेल ई जरूरी किए हेबाक चाही जे हरेक समुदायक विषय मे ओ अवश्ये लेखन करय। हम तँ हुनका कहबो केलियनि--भाइ, मानल जे अहाँ ओहि वर्गक विषय मे पर्याप्त लेखन नहि केलिऐ, मुदा जे कथू अहाँ लिखने छिऐक से अन्ततः ककरा पक्ष मे जाइत अछि? ओकरे सभक पक्ष मे ने? अर्थात श्रम-संस्कृति, लोकतंत्र, समता, आधुनिकता आ खुलापनक पक्ष मे। मुदा, हुनकर अपसोच अपना जगह पर काएम रहैत अछि। हम हुनकर भावना जानि रहल छी। खण्डनक साहित्य तँ ओ बहुत लिखलनि, आब मंडनक साहित्य लिखबाक ललक छनि। समस्त सभ कथू कें ध्वस्त क' क' आखिर हम स्थापना कथीक करए चाहै छी--तकर तँ मॉडल उभरि क' आबओ। हमरे जकाँ अशोक सेहो एहि बातक आग्रही छथि जे सुन्दर आ सृजनशील जीवनक सम्भावना आ प्रेरणा जँ कतहु अछि तँ से श्रमशीले वर्गक लग मे। तकरे हमरा लोकनि कें तकबाक चाही। अपन दोसर कथा-संग्रह 'ओहि रातिक भोर' (1991)क भूमिका मे ओ कहनो रहथि जे *'नीच विचार बला पैघ लोकक विरुद्ध उच्च विचार बला छोट लोक सभक एकजुटता अपेक्षित अछि। विडम्बना अछि जे उच्च विचार बला छोट लोक सभ बहुमत मे अछि, मुदा मौन अछि। एहि बहुमतक सक्रियता एवं मौन-भंगे सँ लोक साबूत बचि सकत।'*

मिथिला एक अद्‌भुत सांस्कृतिक भूभाग थिक, जतए वर्ण आ वर्गक समस्त सीमा-रेखा युग-युगान्तर सँ ध्वस्त अछि। जे वर्ण मे उच्च छथि, आर्थिक सबलता आ राजनीतिक संरक्षण सेहो हुनके प्राप्त रहलनि अछि।

जे वर्ण मे पिछड़ला, से वर्गो मे पिछड़ि गेला। तें अहाँ देखबै जे एहि ठामक दलित अनुसूचित जातिये टाक लोक नहि, ओहि समस्त जातिक लोक छथि जे ने 'बाबू' छथि आ ने 'भैया'। बाहर जे भोग हमरा लोकनि अछूत लोकनि कें भोगैत देखै छियनि, एहि ठाम से भोग तँ मध्यवर्ती शूद्र जाति कें भोग' पड़लैक अछि। मिथिलाक इतिहास मे एहनो अध्याय अंकित भेटत, जखन कोनो एक शूद्र व्यक्ति पर कुपित भ' क' महाराज ओकरा जातिक समस्त मिथिलावासी शूद्रक सम्पत्ति जब्त क' लेलनि आ ओहि जातिये कें मिथिला सँ उपटा देल गेलैक। मुदा, शातिरपनाक तँ कोनो व्याकरण नहि हो! एखनो अहाँ कें एहन लोक सभ भेटता जे ओहि दिनक स्वर्णिम मिथिलाक वापसी चाहैत छथि। रामराजे जकाँ मिथिला-राजक ओ दिन ओ लोक घुरा आनए चाहै छथि। अपन पवित्र मैथिली साहित्य कें ओही स्वर्णिम अतीतक भजन-कीर्त्तन धरि सीमाबद्ध राखए चाहै छथि। प्रश्न अछि जे एहि समस्त लंद-फंदक उद्घाटन के करता? एहना मे अशोक आ हुनका संवर्गक किछु आन साहित्यकार देखा पड़ैत छथि जे पूरे इमन्दारीक संग अपन काज मे लागल छथि। इमन्दारी अशोकक स्थायीभाव छियनि--से चाहे हुनकर कार्य-व्यवहार कें देखू आ कि हुनकर लेखन कें। ओ पंजी-व्यवस्था पर कथा लिखलनि अछि। अभिजात परम्परा सभ पर लिखलनि अछि। सम्भ्रान्त अस्मिता सभ पर कलम चलौलनि अछि। मुदा, हुनकर कथा मे ई समस्त भव्य-भाव्य लोकनि खलनायक देखार पड़ैत छथि। नायक जँ क्यो अछि तँ से थिक स्त्री, बच्चा आ श्रमजीवी शूद्र। यथार्थ ई थिक जे ई तीनू मिथिलाक दलित-संवर्ग थिक। मुदा, अशोक कें अपसोच छनि जे दलित लोकनिक संग ओ एखन धरि 'अचूक न्याय' नहि क' सकल छथि।

अशोकक कथा सभ एकहरा होइत छनि। अधिकतर अपन बात ओ वर्त्तमान सँ शुरू करै छथि आ फ्लैशबैक के आश्रय ल' क' पृष्ठभूमिक रचना करैत छथि। तखन अन्ततः वर्त्तमान मे घुरि क' हुनकर कथा अपन निष्पत्ति कें प्राप्त करैत छनि। कथाक शिल्प कें ल' क' ओ बहुत कम प्रयोग केने छथि। ओ मानैत छथि जे कथा मूलतः आम पाठक कें ध्यान मे राखि क' लिखल जेबाक चाही। अपन कथाक लेल सरल आ पारदर्शी

भाषाक प्रयोग ओ बहुतो जतन सँ सधलनि अछि, जकर प्रेरणा हुनका वरिष्ठ कवि-गद्यकार जीवकान्त सँ भेटल रहनि। हुनका कथा सभ मे कथावाचकक तते विविधता अछि जे कतोक बेर चकित करैत अछि। कथाक भव्य पृष्ठभूमि रचबा मे कथावाचकक चयन हुनका बेस सहयोग करैत रहलनि अछि। कथाक प्लॉट कोन कोण सँ देखल जाय कि ओकर समस्त मार्मिकता साधारण सँ साधारण पाठकोक हृदय मे उतरि जाय, अशोक नीक जकाँ जनैत छथि। मुदा, कतेको बुद्धिजीवी पाठक कें अशोकक कथा अबूझ लगै छनि। अद्‌भुत! मुदा किएक? हमरा बुझने दू कारण सँ। एक तँ मिथिलाक इतिहास आ एकर वर्गीय विशिष्टि सभ सँ अनभिज्ञताक कारण। दोसर, हुनकर सरल भाषा मे निहित सूक्ष्म संकेत सभ कें पकड़बा मे असमर्थताक कारण। मुदा, मजेदार बात थिक जे अबूझ लागै छनि केवल बुद्धिजीविए पाठक कें! हुनकर नबका कथा 'मनसूबा' कें लेल जाय। प्रोफेसर बहुत होनहार छला, मुदा जीवन मे किछु नहि क' सकला, मात्र प्रोफेसरी करैत रहि गेला। बेटा जँ किछु कइयो सकल तँ हुनकर संगत सँ दूरे रहि क'। मुदा तखनहु पिताक रक्त-संस्कार हुनका मे ट्रांसमिट भेबे केलनि। एहि समस्त बातक तह खोलबाक लेल अशोकक देल संकेत छनि--प्रोफेसरक चुरूट पीयब, जकर व्यवस्था हुनकर बेटा कएल करैत छनि। फल की होइत अछि? दू संस्कृतिक एहि युद्ध मे प्रोफेसर अपन पक्ष स्थापित नहि क' पबैत छथि, बेटा बहुत आराम सँ हुनका टरका दैत छनि। अपन पक्ष ओ एहि दुआरे स्थापित नहि क' पबैत छथि जे अपन पक्षक प्रति कोनो प्रतिबद्धता, कोनो आन्तरिक श्रद्धा, कोनो इमान्दारी प्रोफेसर मे नहि छनि, ने कहियो छलनि। प्रोफेसरक भोगवाद महाराज दरभंगाक विरासत छियनि। बेटा तँ मात्र एतबे केलनि जे अपन भोगवाद ओ महाराज सँ नहि लेलनि, अमेरिका सँ इम्पोर्ट क' लेलनि। आब मोर्चा कें सम्हारय के? ल' द' क' एकमात्र, एसकरुआ जीव बचै छथि रेखा देवी, कारण जे *बाँकी सभ तँ जेना एक्के पाठ पढ़ने अछि।'*

एहि सांस्कृतिक महायुद्ध पर अशोक कैक गोट कथा सभ लिखने छथि। से सभ चर्चितो भेलनि अछि। अस्मिता सभक टकराहट ओहि मे मुखरताक संग अभिव्यक्त भेलैए। मुदा, एहनो अवसर पर ओ आलोचनात्मक

विवेक कें बनौने राखि पबैत छथि, आ यैह चीज हुनका यूटोपियन हेबा सँ बचबै छनि। एही आलोचनात्मक विवेकक बदौलत हुनका कथा मे विश्वसनीयता, आ ताहि सँ उद्भूत आत्मीयताक गुण अबैत छनि। आजुक एहि जटिल समय मे, वर्त्तमान पर ठाढ़ भ' क' अपन परम्परा सँ सकारात्मक मूल्य सभ कें ताकि-हेरि क' बहार क' लेब कोनो आसान काज नहि थिक, मुदा बहुत दिन सँ अशोक एकरा सम्भव करैत रहलाह अछि।

अशोकक कथा मैथिली कथा-साहित्यक एक नव क्षितिजक उद्घाटन करैत अछि आ युगीन राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय चिन्ता सभक सापेक्ष मिथिला कें देखबा-बुझबाक दृष्टि दैत अछि। भूमण्डलीकरण आ मुक्त बाजारक त्रासदी दारुण रूप मे हुनकर कथा सभ मे प्रकट भेल अछि। मैथिलत्व आ भारतीयताक अस्मिता ओहि ठाम एक्के ढेरी मे देखाब दैत अछि। अशोक मे हमरा लोकनि एक एहन समकालीन भारतीय कथाकार कें देखि सकैत छी जे अपन अनुभूति मे ठेठ मैथिल मुदा अभिव्यक्ति मे युगीन भारतीय अछि।

हम तँ हुनका सँ बेर-बेर आग्रह करैत रहैत छियनि आ ओ वचनवद्ध सेहो होइत छथि जे ओ अपन कथानक कें आ ओकर व्याप्ति कें नव विस्तार देताह। से मुदा उपन्यास लिखने बिना भ' नहि सकैत अछि। देखबाक चाही जे मैथिली कथाक ई मास्टर अपन विस्तारित अभिव्यक्तिक लेल एहि नव विधा--उपन्यास--कें कहिया धरि अपनाबै छथि!

(2008)

मैथिली स्त्री-विमर्श आ सुस्मिता पाठक

अपना सभक समाज मे युग-युग सँ एक रेवाज चलि आबि रहल अछि जे स्त्रीक अप्पन कोनो परिचय नहि हो। स्त्रीक अप्पन कोनो अस्मिता, अप्पन कोनो 'विमर्श' नहि हो। हमरा लोकनि मे सँ सभ क्यो अपन अवचेतन मे नीक जकाँ अवधारि लेने छी जे अपन स्त्री कें अपन परिचय देबाक अछि। एकरा हमरा लोकनि 'पौरुषक दर्प' के रूप मे अपन व्यक्तित्व मे ग्रहण केने छी। एहि 'हमरा लोकनि' मे सवर्ण-संस्कृतिक लोक तँ आबिए जाइत छथि, संस्कृतीकृत (Sanskritised) दलित लोकनि सेहो अबैत छथि। से, कोनो हेबनि सँ नहि, वंश-परम्परागत 'सनातन' सँ चलि आबि रहल अछि। हमरा लोकनि स्त्री कें अपन परिचय द' पाबि रहल छियै, एकरा हमरा लोकनि बड़ भारी बात बुझै छी, पुरुषार्थक एक प्रमुख चेन्ह सेहो मानै छी। एहि मान्यता मे हमरा लोकनि तते आत्ममुग्ध भ' जाइ छी जे एहि बातक दिस ध्याने नहि जाइत अछि जे स्वयं स्त्री एहि बारे मे की सोचै छथि, केहन सोच रखैत छथि!

हम एकटा स्त्री कें आनै छी। मानि लिअ ओकर नाम गीता छै। हम गीता कें अपना घर मे आनिक' 'बसबिट्टीवाली' कि 'चैनपुरवाली' बना दै छियै। मने गीता कें मारि दै छियै। एहि मरण कें जँ गीता स्वीकारि लेलक, मने एडजस्ट क' गेल तँ हमरा लोकनि ओकरा प्रतिष्ठा दिय' लगै छियै। काकी, बाबी आदि कह' लगै छियै। गौर करबाक बात छै जे तखनहुँ हमरा लोकनि गीता कें ओकर 'परिचय' देबा सँ वंचिते क' दै छियै। ओ हमर

'इतिहास'क अंग नहि बनि पबैए, कारण जे काकी, बाबी आदि इतिहासक अंग नहि बनि सकैत अछि। से बनबाक लेल ओकरा अपन नाम, अपन परिचय हेबाक चाही। कते साफ बात छै जे स्त्री जँ हमरा सपोर्ट क' दिअए, हमर समर्थक बनि जाय, तखनहु हम ओकरा संग न्याय नहि करैत छिऐक, ओ जँ हमर प्रतिरोध मे ठाढ़ भ' जाए तखन तँ हमरा लोकनि जे करै छियै, तकर आख्यान सँ मिथिलाक जन-इतिहास भरल अछि।

मजा के बात ई छै जे 'राग-विराग' कथा-संग्रहक लेखिका सुस्मिता पाठकक मोन मे यैह बात सभ, यैह महाप्रश्न सभ मेघ जकाँ घुमड़ैत रहै छनि, जखन ओ कथा लिखैत छथि। हुनकर एक-एक कथा मे एहि मेघ कें घुमड़ैत देखल जा सकैत अछि। सुस्मिताक एक पात्र बसबिट्टीवाली छथि, एहि शीर्षक सँ तँ बजाफ्ता हुनकर एक कथे छनि, एक पात्र चैनपुरवाली सेहो छथि, तखन कतेको 'कनियां' हुनकर पात्र छथि, 'भौजी' छथि 'काकी' छथि, 'बाबी' छथि। सभ क्यो अपन निजी परिचय सँ हीन, अपन अस्मिता सँ वंचित, मुदा सुस्मिताक मोनक भीतर चलैत ई महाप्रश्ने थिक जे एहि स्त्री सभ कें आत्मदीप्त बनबैत अछि। हुनका लोकनिक अपन एक व्यक्तित्व छनि, अपन सम्वेदना छनि, अपन विचार छनि- जे पुरुषक सम्वेदना-विचार सँ अलग आ स्वायत्त छनि। कोनो परिवार अपन मुखिया (मने पुरुष-अभिभावक) के विचार आ निर्देश पर कोनो स्टैण्ड लेलक आ तकर कोनो परिणाम निकललै, मानि लिअ' जे भयानक परिणाम निकललै; एहि सँ उनटा, बहुत नीक परिणाम सेहो निकलि सकैत छल जँ ओ परिवार स्त्रीक सम्वेदना-विचार पर कान-बात दैत अपन स्टैण्ड चुनने रहैत। मुदा, ई पुरुषे थिक जे हारैत अछि तँ अपन स्त्रीक लग घुरैत अछि। आ ई स्त्रिये थिक जे पुरुष भने हारय आ कि जीति जाय, दुनूक मारि ओकरे पर पड़ैत छैक। महात्मा लोकनि कहै छथि जे स्त्रीक क्षमादानी स्वभाव ओकर महानता छियै। मुदा, एक स्त्रिये कहि सकैत छथि जे ई वास्तव मे की थिक? हमरा बहुत खुशी अछि जे हमरा लोकनिक कथा-पीढ़ी मे एक स्त्री छथि जे ई सभ बात कहि सकै छथि। ई सुस्मिता पाठक छथि। अपन कथा सभ मे एहि महाप्रश्न सभ कें गूथिक' सुस्मिता एक एहन पठनीय 'पाठ' तैयार करैत छथि जे अहाँ जँ पूरा सचेतन भ' क' हुनकर कथा कें नहि पढ़ी

तँ अस्सल बातक पतो चलब मुश्किल हएत। मोन धरि लागत खूब, से हुनकर कथा-भाषाक बदौलत। सम्वेदना सँ ओ अहाँ कें भिजा देती, तकर कारण जे ओ अपने ततेक भिजलीह अछि जे तकर दशांशो जँ अहाँ धरि पहुँचि जाय तँ अहाँ आप्लावित भ' जाएब। मुदा, मूल बात--स्त्री-विमर्श--एहि सब कथूक भीतर, पदार्थ के केन्द्रक जकाँ नुकाएल रहै छै। ओकरा जँ ओ बेसी खोलतीह तँ हुनकर कथा सभ कथा नहि रहत, नॉन-फिक्शन टाइप के कोनो चीज भ' जाएत। आ जँ ओकरा ओ एकदम्मे सँ प्रकट नहि करतीह तँ अहाँ कें लागत जे पछिला 100 बरख सँ जे मैथिली मे भौजी, काकी, बाबी सभ पर सैकड़ो-सैकड़ा कथा सभ लिखल गेल अछि, सुस्मिता सेहो ततबे केलनि अछि। ई केवल सुस्मिता जनै छथि जे कोनो प्रश्न कें कतबा प्रकट करबाक अछि आ कतबा झाँपल, कतबा पिहित (सत्यस्य पिहितं मुखम्) रखबाक अछि। यैह सुस्मिताक कथा-कला थिकनि।

कथा-कला कें ल' क' सुस्मिता कें हम कहियो असमंजस मे पड़ल नहि देखलियनि। से अहूँ नहि देखबनि। देखबनि जे सुस्मिताक मोनक भीतर कोनो कथा उतरलनि (जेना हमरा-अहाँक मोनक भीतर कोनो विचार उतरैत अछि), आ भितरे-भीतर कथा कें बुनैत रहलीह, सरियाबैत रहलीह आ घर-गृहस्थीक काज खतम केलाक बाद जखन ओ कनेक निचैन भेली तँ सुखत्यागपूर्वक जतय जे कागज भेटलनि, मोन मे उतरल ओहि कथा कें पन्ना पर उतारि देलनि। सुखत्यागपूर्वक एहि दुआरे जे ओ चाहितथि तँ एहि समयक उपयोग सुतबा मे, आराम करबा मे अथवा मनोरंजन करबा मे क' सकैत छली, मुदा से ओ नहि केलनि। हुनकर समस्त कथा सभ मे अहाँ एकटा आवेग देखबनि। ई आवेग गतिक भान करबैत अछि आ कथा मे आर अधिक पठनीयता अनैत अछि। ई आवेग रहिते अछि एहि दुआरे जे हुनका अपन मोनक कथा कागज पर उतारबाक त्वरा रहैत छनि। मोन मे उतरल बात कें कागत पर सीधा-सीधी उतारबा मे जतबा कलाक बेगरता होइत होइ, सुस्मिता कें ततबे कला सँ प्रयोजन रहैत छनि। एक लाइन मे कही तँ यैह थिकनि हुनक कथा-कला। सुस्मिताक एहि कथा-कलाक दू टा विशेषता-- एक तँ जे हुनकर कथा बनाबटी, बलधकेल साज-सिंगार सँ आ तकनीकी जटिलता सँ बेलाग बचल रहि जाइत छनि; आ दोसर जे अपन

विचारधारा कें, अपन सरोकार आ प्रश्न सभ कें ओ बिनु थकमकेने, बिनु अथ-उत बिचारने, अपन प्रकृत रूप मे प्रकट क' जाइत छथि। ई दुनू एहन विशेषता थिक जकर मोल समकालीन साहित्य मे सर्वाधिक छैक, से कहबाक आवश्यकता नहि अछि।

स्त्रीक अस्मिताक प्रश्न कें अपन मूल सरोकार माननिहारि सुस्मिता कें हम बहुत दिन सँ जनैत छियनि। एहि चीजक साक्षात्कार हमरा बहुत नीक जकाँ भेल अछि जे हुनकर कथा-कविता मे प्रकट होइबला सृजेता मात्र एक लेखिकाक आवरण नहि छिऐक, अपितु अपन निजी व्यक्तित्व मे, अपन चिन्तन-विचार, अपन सम्वेदना आ अपन विचारधारा मे सेहो सुस्मिता मूलतः वैह छथि, जेहन अपन रचना मे ओ पाओल जाइत छथि। पूर्वाञ्चलक विरल दार्शनिक परम्परा, जे मण्डन मिश्र, उदयनाचार्य आदि सँ बढ़ैत आजुक युग मे पहुँचल अछि, तकर एक अधुनातन कड़ी थिकाह--आचार्य शैलेश कुमार पाठक। सुस्मिता हुनकर बेटी। आचार्य ने मात्र सुस्मिताक पिता अपितु हुनकर मार्गदर्शक आ सहचिन्तक सदैव बनल रहलाह। सुस्मिताक विवाह भेलनि सुप्रसिद्ध मैथिली साहित्यकार केदार कानन सँ। केदार झा। विवाहक बाद सुस्मिता बसबिट्टीवाली आ कि चैनपुरवाली आदि जकाँ गोढ़ियारीवाली बनि जइतथि, तकर आशंका तँ हमरा किन्नहु नहि देखाइत छल, मुदा 1980 के दशक कें अकानैत एतबा तँ निश्चिते सम्भावना छल जे ओ सुस्मिता पाठक सँ सुस्मिता झा बनि जइतथि। विवाहक पहिनहु सुस्मिता यदा-कदा कविता लिखैत छली आ जेना कि हमरा मोन पड़ैत अछि, हुनकर एक्का-दुक्का कविता मिथिला-मिहिर आदि मे छपलो छल। अपन अस्मिताक प्रति सुस्मिताक ई सावधान साकांक्षता छलनि जे अपना लेल 'पाठक' उपनाम कें ओ कंटिन्यू केलनि आ केदार काननक ई विशालहृदयता अपन पैतृक परम्पराक अनुकूले छलनि जे सुस्मिताक एहि निजताक सम्मान ओ हृदय सँ केलनि।

एतेक बात मात्र एहि दुआरे कहलहुँ जे सुस्मिताक लेखकीय व्यक्तित्व मे जे किछु तत्त्व हमरा लोकनि कें देखार पड़ैत अछि से हुनकर निजी व्यक्तित्व मे सेहो छनि, जखन कि कतेक लोक मे ई नहिञो रहैत छनि। एही बात कें एहू तरहें कहल जा सकैत अछि जे जे सरोकार आ विचारधारा

हमरा लोकनि सुस्मिताक कथा वा कविता मे देखैत छिऐक, तकरा हुनक गृहस्थीक साज-संवार मे, धिया-पुताक जीवन-निर्माण मे, शिष्य-शिष्याक व्यक्तित्व-गठन मे आ अड़ोस-पड़ोस मे स्थापित हुनकर छवि मे सेहो देखल जा सकैत अछि।

सुस्मिताक कथा सभक बारे मे बहुतो प्रशंसात्मक बात सभ कहल जा सकैत अछि। खासक' क' अपन देश-कालक हुनक अवधारणा आ तकर अंगीकरणक बारे मे। तहिना, ओहि ट्रीटमेन्टक सम्बन्ध मे जे ओ अपन देश-काल-पात्रक संग अपन कथा मे केलनि अछि। ओहि टूल्स के सम्बन्ध मे सेहो जकर उपयोग अपन सम्वेदना कें ऐन्द्रिक बनेबाक लेल ओ केलनि अछि। मुदा, सभ सँ पैघ बात थिक हुनकर सामाजिक सरोकार। सुस्मिता एक एहन कथाकार छथि जे अपन सपनो मे कदापि निस्संग आ निःसामाजिक नहि भ' सकैत छथि। एकटा देश अछि। देश मे एकटा प्रान्त आ प्रान्त मे एकटा गाम अछि। ढेर रास लोक अछि, ओकर परिवार अछि। ओकर सुख-दुख अछि। देश वा प्रान्त अपना मे अमूर्त्त अछि। ओकरा मूर्त्त करैत छैक ई गाम आ ई लोकसभ। धार्मिक आ सामाजिक नियम सभ लोक कें अलग-अलग क' क' देखबाक अभ्यस्त अछि। एहि सँ मानवीय अस्मिताक एक इकाइक रूप मे लोक कें देखबाक सामाजिक दृष्टि धूमिल होइत अछि। सुस्मिता एकर विरुद्ध छथि। हुनक विरोध कोनो आन्दोलनी रूप मे नहि, अपितु नितान्त स्वाभाविक लयात्मकताक संग व्यक्त भेल अछि। मनुक्ख कें अलग-अलग क' क' देखबाक ई बाट सुस्मिताक बाटे नहि थिकनि। ओ एक अलगे बाटक बटोही छथि। मैथिली कथा मे एते-एते छोट-छोट मुदा दीप्त-दीप्त लोकक उपस्थिति, एते सामाजिक हब-गब, एते-एते प्रकारक रिश्ता आ जुड़ाव--ई सभ चीज बहुत दुर्लभ प्रकारक चीज सभ अछि। जरूरे ई सभ दिन मोन राखल जाएत।

अपन कथा सभक द्वारा सुस्मिता मैथिली स्त्री-विमर्शक एक मॉडल पेश करैत छथि। कहल गेल अछि जे पृथ्वी पर स्त्री जँ नहि होइतथि तँ मानव-समुदाय व्यवस्थित आ संगठित भ' क' नहि जीबि सकैत छल, ने विकास क' सकैत छल। स्त्री जँ आत्मस्थ हो तँ ओ मात्र जोड़ब जनैत अछि। सुस्मिताक कथा मे अनेक स्त्री, कतिआएल-बारल स्त्री सभ अबैत

अछि। क्यो चमाइन, क्यो मुसलमानिन। सभक अपन-अपन दुख छै। ई सभ एहि आपकताक संग आएल अछि जेना मैथिली कथा मे एहि सँ पहिने कहियो नहि आएल छल। एहि सभ कथू कें जोड़ै छै कथाकारक सम्वेदना। 'प्रतीक्षा' कथाक बुढ़िया कथावाचक कें कहै छै- *'अहाँ कें हमरा पर विश्वास अछि ने? अहाँक पाइ घुरा देब। हम अपन साहेब जकाँ झूठ नहि बजैत छी। ओ कहने रहय-हम चारि दिन मे घुरि आयब, मुदा नहि आयल। मुदा बेटी, हम चारि दिन मे अवस्से घूरब अहाँ लग। हम अपन साहेब जकाँ झूठ नहि बजैत छी... ।'* एहिठाम हमरा लोकनि दूटा अलग-अलग संस्कृतिक परिचय पाबि सकैत छी। एकटा जे 'झूठ' बजैत अछि, दोसर जे नहि बाजि सकैत अछि। झूठ बाजब एहिठाम प्रतीकात्मक अछि--एकटा जे भागब जनैत अछि, दोसर जे ठहरब मात्र ठहरब (माने ठमकि जाएब) जनैत अछि। ई स्त्री थिक!

स्त्रीक मनोनिर्मितिक भीतर धरि सुस्मिता प्रवेश करैत छथि। स्पष्ट दृष्टान्त लेल हमरा लोकनि हुनकर कथा 'कथावाचक' कें देखि सकैत छी। एहि कथाक पुरुष (माने नायक) एकटा प्रोफेसर थिक, जकर यौन-लिप्सा अनन्त आ अनियंत्रित छै। कोनो लड़कीक चक्कर मे ओ अपन पत्नी अम्बिका कें छोड़ि दैत छैक। परित्यक्ता भ' क' ओ अपन नैहर मे आबि बसैत अछि। ओहि ठाम ओकरा सहारा कोनो नहि, गुजर करबाक धरि कोनो निस्तुकी साधन नहि। गरीबी, उपेक्षा, निराश्रयता के मारलि ओ सौन्दर्यविहीन हड्डीक ढाँचा मात्र बचि गेल अछि। ओम्हर, यौन-लिप्साक सीढ़ी पर चढ़ैत-उतरैत, धोखा खाइत, चेतौनी पबैत प्रोफेसर सुन्दरी-विहीन नोकरी-विहीन भेला पर धर्मगुरुक बाना ध' लैत अछि आ धार्मिक कथावाचकक पेशा अपना लैत अछि। कहल जाइत अछि जे मानव-सम्बन्धक तमाम ताना-बाना एकटा अजीब गुरुत्वाकर्षणक डोर सँ बन्हाएल अछि। चाहे अहाँ विकासक कोनो सीढ़ी पर पहुँचि जाउ (एतए धरि जे परमहंस भ' जाउ) मुदा अहाँक योग्यतावाली स्त्री तखनहु अहाँ कें अपना दिस घिचैत रहत। एहि घिचाव मे कथावाचक महोदय अम्बिकाक नैहर अबैत छथि। चारूदिस प्रसिद्धि पसरि गेलैक अछि जे बड़ योग्य कथावाचक एलाह अछि। मुदा, मोनक बात तँ वैह टा जनैत छथि। अस्तु। अम्बिका

गामक लोक कें कहै छै जे ओ हमर पति थिकाह, हुनका रोकियनु। मुदा, एम्हर कथावाचक महोदयक घिचाव समाप्त भ' गेलनि अछि कारण जे अम्बिका मे आब ने सौन्दर्य छै, ने लचक, ने कसक। कहल जा सकैत अछि जे पुरुष लेल पेश क' सकै योग्य देह छैके नहि आब ओकरा लग। प्रोफेसर अपन फैसला बदलि लेलनि अछि आ ओहि गाम सँ घुरि रहला अछि। गौंआ सभ हुनका पर दबौट बनबै छनि जे अपन स्त्री कें ल' जइयौ अपना संग, जोगी-संन्यासीक ढोंग छोड़ू आब।

कथाक अन्तिम पारा देखल जाय-

'कथावाचक आँखि मिचमिचबैत उच्छ्वास लैत बाजल-हमहूँ आएल रही यैह सोचिक' मुदा एकरा कतय ल' जाइ? आब त' सद्यः बुढ़िया जकाँ लगै अछि ई। एहन दशा एकर भ' गेल हेतै, से हम नहि सोचने रही। आब हम एकसरे ठीक छी।'

'जेना क्षण भरि लेल हवा रुकि गेलै। ओहि प्रचण्ड उमस मे जेना सभ क्यो घाम सँ भीजि गेल। सभक ठोर एना सटि गेलै जेना सभ क्यो गोंग भ' गेल हो।'

'हठात अम्बिका आगाँ बढ़लि। सोझाँ मे कथावाचक केर कमण्डल राखल रहय। ओ पित्तरिक ओहि कमण्डल कें उठौलक आ सम्पूर्ण शक्ति लगा क' कथावाचकक कपार पर मारलक आ बताहि जकाँ ओतय सँ चिचियाइत भागि गेल।'

हमरा नहि लगैत अछि जे एहि कथाक कथ्य मे कनेको अस्पष्टता छै। स्त्री सभ किछु सहि सकैत अछि--दुख, अभाव, उत्पीड़न, अन्याय--मुदा, एकटा चीज अछि जकरा पर आक्रमण ओ बर्दास्त नहि क' सकैत अछि। ओ थिक ओकर गरिमा। अपन गरिमाक संग छेड़छाड़ ओ बर्दास्त नहि क' सकैत अछि। आँखि मे एतबा पानि हएब जरूरी जे आइ जँ एहि स्त्रीक ई दशा भेल अछि तँ से एहि पुरुषेक दुआरे। एकर एहन दशा भ' गेल हेतै, से अहाँ नहि सोचने रही। किए ने सोचने रही? अपन देह बेचि क' ओहो सुख-मौज सँ रहैत हएत? अहाँ पहुँचब आ ओकरा एहि दलदल सँ बहार निकालि क' धर्मप्राण तीसमार खाँ बनि जाएब? आ, स्त्रीक दण्ड-विधान देखल जाय। कमण्डलक प्रहार सँ कथावाचक मरि गेल की बचल कहुना,

ताहि बारे मे कथा किछु नहि कहैत छै। मुदा, जाहि तरहें प्रहार चित्रित कएल गेल अछि, एकर स्पष्ट संकेत छै मृत्युदण्ड।

हमरा मोन पड़ैत अछि जे 'देसिल बयना' कथा संग्रह (नेशनल बुक ट्रस्ट सँ प्रकाशित) के भूमिका मे स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथाक स्वभाव पर बात करैत हम 'दलित संवर्ग'क अवधारणा पर बात केने रही। मिथिला-समाज के मानसक जे निर्माण पछिला हजार बरख मे भेलै अछि आ ताहि सँ जे सामाजिक व्यवस्था जनमल अछि एहि मे शूद्र, स्त्री आ बच्चा-ई तीनू मिथिला मे हाशिया परक जीव, कतिआएल-अबडेरल जीव रहलैक अछि। एकरा हम 'दलित-संवर्ग' कहै छी। हमर मानब थिक जे शूद्रक पीड़ा कें आत्मसात केने बिना स्त्री-विमर्शक तँ कथे कोन जे सही ढंग के स्त्री-लेखन धरि सम्भव नहि थिक। हमरा क्षमा कएल जाय जे स्त्री-लेखनक स्तर कें चिन्हबाक हमर यैह कसौटी थिक। क्यो स्त्री जँ संगत के रंगत मे पढ़ब-लिखब सीखि गेल तँ तकर अर्थ ई किन्नहु नहि थिक जे ओकर लेखन एक उपादेय स्त्री-लेखन होइ। एक स्त्री भ' क' ब्राह्मणवादी मूल्यक पैरोकारी करब स्वयं स्त्री हेबाक संग गद्दारी करब थिक।

हमरा खुशी अछि जे सुस्मिता सजग छथि आ अपन अस्मिताक प्रति बिसरभोर अवस्था मे अहाँ हुनका कखनो नहि पेबनि। धर्म आ जातिक आधार पर मनुक्ख कें बाँटबाक ओ सख्त विरुद्ध छथि। एहि विभाजनकारी मानसिकता कें सुस्मिता जल्लाद-मानसिकताक रूप मे चित्रित करैत छथि जे एहि सुन्दर धरती कें बूचड़खाना मे परिणत क' देने छै। एहि मान्यताक धमक सुस्मिताक समस्त कथा सभ मे सुनल जा सकैत अछि। 'बसबिट्टीवाली' एकर एक उपयुक्त दृष्टान्त थिक। 'योद्धा' कथा मे एकरे थोड़ेक भिन्न रूप हमरा लोकनि देखि सकै छी। ओना तँ कोन कथा अछि जाहि मे एहि खलनायक ब्राह्मणवादी सभ्यताक खुक्खपना उजागर नहि भेल अछि! कथानक मे जँ नहियो तँ कथ्य मे, ताहू मे नहि तँ विश्लेषण मे, वर्णन मे, उक्ति मे, शैली मे...।

लगभग तीन दशक सँ भारतीय साहित्यक विभिन्न भाषा-क्षेत्र मे ई घमर्थन चलि रहल छै जे जाहि साहित्यशास्त्रीय कसौटी पर हमरा लोकनि एक सामान्य साहित्यिक कृतिक मूल्यांकन करै छी, ठीक ओही कसौटी कें

ल' क' स्त्री-लेखन अथवा दलित-लेखनक मर्म कें बूझल नहि जा सकैत अछि। मुदा, मठाधीश लोकनिक जिद्द थिक जे एहि बात कें बुझबा लेल एखनो तैयार नहि अछि। एकरे परिणाम भेल अछि जे स्त्री-लेखन आ दलित लेखन मे उत्तरोत्तर विरोध आ प्रतिरोधक, अवज्ञा आ ढीठपनाक तत्त्व बढ़ैत गेल अछि। मैथिली मे तँ लोके कहाँ जे एहि सभ बात पर विमर्श हो। एतुक्का मठाधीश लोकनि तँ एखनहु गद्‌गद् छथि जे सौंसे दुनियाँ भने खराब भ' गेल हो, मैथिल संस्कृतिक पवित्रता एखनो बरकरार अछि। हम मुदा, थोड़े आश्वस्त भेल छी जे सुस्मिताक बहन्ना सँ आ हुनक संवर्गक आन-आन लोकक बहन्ना सँ ई प्रश्न सभ भविष्य मे मैथिली मे सेहो गुंजायमान हएत।

अन्तिम बात। सुस्मिताक कथा सभ कें अहाँ पढ़ैत रहब तँ कतोक बेर अहाँ कें लागत जेना पृष्ठभूमि मे कोनो करुण धुनक, उदास भासक संगीत बजैत होइ। सभ किछु भने ठीक-ठाक होइत देखाब दैत हो, मुदा एकटा मातम जेना अन्तर्लय मे कतहु गुंजित होइत बुझाइत रहत। हम बुझबाक चेष्टा केलहुँ जे एना किएक अछि। अहूँ गौर करब तँ पकड़ि लेबै जे ई इतिहासक धुन थिक, हमरा लोकनिक कलंकित इतिहासक। हम एहि बारे मे किछु कही, ताहि सँ सुन्दर तरीका सँ विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर एहि मादे कहि गेलाह अछि। अन्तर खाली एतबे भेलैए जे विश्वकवि जे बात भारतीय समाजक बारे मे एक सय बरख पहिने कहने छलाह, से मिथिला समाज पर एखनहु अक्षरशः लागू छै। हुनके शब्द मे-

''... बाद मे जखन विरोध तीव्र भ' गेलैक -अनार्य आब बाहरक लोक नहि रहला, ओ घरक भीतर आबि गेला। हुनका लोकनि सँ युद्ध लड़बाक समय आब बीति चुकल छलै। एहि अवस्था मे विद्वेष आब घृणाक रूप धारण क' लेलक। आब यैह सभ सँ प्रबल हथियार भेलै। घृणाक द्वारा मनुक्ख कें केवल दूरे हँटाक' नहि राखल जाइछ, अपितु जकरा सँ घृणा कएल जाइत अछि तकर मन सेहो छोट भ' जाइत छै। ओ सेहो अपन हीनताक संकोचवश समाज मे कुंठित भ' क' बास करैत अछि-जतए रहैत अछि ततए अपन कोनो अधिकारक दावा नहि करैछ। एहि तरहें, जखन समाजक एक भाग अपन छोटपन कें अंगीकार क' लैछ, आ अन्य एक

भाग ओकरा पर अपन आधिपत्य जमा लेबा मे कोनो बाधा नहि पबैछ, एहना स्थिति मे निचला भाग के जतबा अवनति होइत छैक, ओही मात्रा मे उपरका भाग सेहो नीचत्व कें प्राप्त होइत अछि। भारतवर्ष मे आत्म-प्रसारणक युग मे जे अनार्य-विद्वेष छल, ओहि मे आ आत्म-संकोचन-युगक विद्वेष मे बहुत भारी अन्तर छै। पहिल विद्वेष मे मनुष्यत्व समतल भूमि पर ठाढ़ छल, दोसर विद्वेष मे मनुष्यत्व नीचाँ खसल। जकरा पर हम प्रहार करैत छिऐक, सेहो यदि उनटा क' आघात करए तँ एहि मे मनुष्यत्वक मंगल छैक। मुदा, जँ ओ चुपचाप आघात वहन क' लियए तँ एहि मे दुर्गति छैक। वेद मे अनार्यक प्रति जे विद्वेष व्यक्त भेल छै, ओहि मे हमरा लोकनि पौरुष देखैत छी जखन कि मनुसंहिता मे शूद्रक प्रति जे अन्याय आ अवज्ञा देखल जाइत अछि, ओहि मे कायरताक लक्षण भरल अछि।'

विमर्शक प्रश्न अछि जे ई अनार्य मात्र शूद्र टा थिक कि स्त्री सेहो?

(2014)

गौरीनाथ आ हुनक 'दाग'

गौरीनाथ मैथिलीक एक सुपरिचित साहित्य-कर्मी छथि। प्रायः पछिला पचीस बरख सँ ओ कमोबेश मैथिलीक गतिविधि सँ जुड़ल छथि। हुनकर सभ सँ प्रमुख पहचान छियनि--'अंतिका'। 'अंतिका'क माध्यम सँ ओ मैथिली क्षेत्रक कैक टा उस्सर जमीन कें तोड़लनि अछि, कतेको मुद्दा कें मंच प्रदान केलनि अछि। तकर सम्पादकीय सभ मे उभरि क' आएल हुनकर अक्खड़ स्वभाव आ स्थापित मठ आ गढ़ सभ पर आक्रमण करबाक हुनक तेवर। ई चीज मैथिलीक पारम्परिक साहित्यिक समाज कें आहत करैत रहल आ ओ लोकनि धीरे-धीरे गौरीनाथ सँ विमुख होइत गेलाह। गौरीनाथो अपना कें जस्टीफाइ करबाक कहियो जतन नहि केलनि आ ने अपन स्थापना सभ कें तर्कसंगत विस्तारक संग प्रस्तुत करबाक प्रयास केलनि जाहि सँ हुनकर विचार लोक कें सही परिप्रेक्ष्य मे हृदयंगम भ' सकनि। लोक सभ हुनका सँ टुटलनि तँ ओहो लोक सभ सँ टुटैत गेलाह आ अन्ततः ई 'चिन्तक कथाकार' हिन्दी प्रकाशक के पेशेवर धंधा धरि अपना कें सीमित क' लेलनि। एना हेबाक पाछू दोख दुनू दिस सँ अछि। हमरा लोकनि हुनकर पक्ष पर कहियो कान-बात नहि देलियनि, आ मठाधीश लोकनिक निन्दा-अभियानक क्रम मे चुप्पी साधने रहलहुँ। गौरीनाथ दिस सँ कमी ई रहलनि जे अपन चिन्तनक आन्तरिक यथार्थ कें ओ कहियो सामने नहि आब' देलखिन। से प्रायः अपन संकोची स्वभावक कारण, अथवा एहि कारण जे सम्वेदनहीन समाज लग अपन हृदय

खोलनहि की फैदा! एकर घाटा गौरीनाथे कें भेलनि जे लोक हुनका चिन्हैतो रहलनि आ भटकैतो रहलनि। हुनका अपन मैथिली लेखनक लेल अलग नाम 'अनलकान्त' राख' पड़लनि। हुनका अपन, मूल मैथिली मे लिखल कथा कें हिन्दी मे रि-राइट क' छपाब' पड़लनि। ई सभ हुनकर मूल्यांकन मे बाधक होइत गेल।

आब, एते बरखक बाद, गौरीनाथ अपन उपन्यास 'दाग' ल' क' मिथिला-समाजक सामने प्रकट भेलाह अछि। पहिल बेर एहन भेल अछि जे ओ अपन चिन्ताक आन्तरिक यथार्थ कें अपना समाजक सामने अनावृत्त केलनि अछि। ई बहुत प्रीतिकर थिक। एहि उपन्यासक प्रकाशन सँ स्पष्ट भेल अछि जे मिथिला-समाजक विडम्बनापूर्ण यथार्थ कें ल' क' गौरीनाथक अपन एक खास चिन्तन छनि, ओहि चिन्तन कें कथा मे रूपान्तरित करबाक लूरि छनि आ अपन एक विशिष्ट कथा-भाषा सेहो छनि। 'अंतिका'क सम्पादकीय बला हुनकर जुझारू तेवर कें ई उपन्यास जस्टीफाइ करैत अछि आ एक तर्कसंगति सेहो प्रदान करैत छैक।

'दाग' डेड़ सय पृष्ठक औसत कद-काठीक एक मैथिली उपन्यास थिक, जाहि मे मिथिलाक एक गामक पण्डित टोल आ तकर निवासी-प्रवासी लोकनिक कुल पाँच दिनक क्रिया-कलापक खिस्सा कहल गेल अछि। आश्विन नवरात्रक पंचमी तिथि सँ उपन्यास शुरू होइत छैक आ विजयादशमीक राति मे खतम भ' जाइ छैक। मात्र पाँच दिनुका छोट-छीन कालखण्डक कथा। मुदा, उपन्यास कें जखन पूरा पढ़ि जाएब, आ पढ़ब आसानो छैक कारण गौरीनाथक कथा-भाषा मे गजब के पठनीयता छनि, तँ उनटि क' पूरा खिस्सा कें मोन पाड़ब एक महाकाव्यीय विस्तार-सन के आभास दैत छैक। ई आभास वास्तविक थिक। खिस्सा ओ भने पाँचे दिनुका कहने होथि, मुदा खिस्साक फ्लैशबैक पछिला दस बरख मे पसरल-चतरल छैक। आ ताहि पर सँ की तँ एहि खिस्साक तथ्य जे ओ जुटौने छथि से भारतीय संविधानक लागू हेबाक (1950 ई.)क बाद के पछिला साठि बरख मे पसरल छैक, जखन स्वतंत्रता आ समानताक कानूनी राजक बदौलत दलित लोकनिक आगू बढ़बाक अभियान चालू भेल आ वर्चस्वी ब्राह्मण-समाज एहि बदलल परिस्थितिक संग अपन अनुकूलन काएम करबा मे विफल रहि

गेल। मुदा, सत पूछी तँ 'दाग'क कथा-फलक वास्तव मे एहू सँ पैघ छैक। जहिया सँ मिथिला मे ब्राह्मण-सभ्यताक विकास भेल अछि आ ब्राह्मण-वर्चस्व काएम भेल अछि, ओ तमाम इतिहास, पृष्ठभूमि बनि क' एहि उपन्यास मे संग-संग चलैत रहलैक अछि। किनको लागि सकैत छनि जे एते जटिल प्रकारक ताना-बाना ल' क' एक उपन्यास कें बुनब एक कठिन काज थिक। निश्चित रूप सँ ई एक कठिन काज थिक, जकरा गौरीनाथ सम्भव क' सकलाह अछि। आ, थोड़-बहुत दोखक अछैतो एहि मे ओ सफल भेलाह अछि। तें ई उपन्यास जतबा टा अछि, ताहि सँ विशालकाय हेबाक आभास दैत अछि।

एहि उपन्यास मे सुभद्रा मिश्र (जाति-पांजि बला एक निविष्ट पण्डित-कुलक कन्या) आ नारायण राम (माल-महींस खाल' बला आ जुत्ता सीब' बला एक अदना चमार कुलक युवक) के बीच प्रेम आ विवाहक कथा कहल गेल छैक। गाम सँ भागि क' सुभद्रा, नारायण राम संग विवाह करैए आ दिल्ली मे जा क' सेट्ल क' जाइए। नियमतः यैह दुनू एहि उपन्यासक नायक-नायिका छथि। मुदा उपन्यासक बुनाबट एहन अछि जे सभ सँ कम कथा हिनके दुनूक कहल गेलनि अछि। कथा कहल गेल अछि असल मे ओहि गामक, ओहि पण्डित-टोलक, जे एहि विवाहक ओकरा पर की असर पड़लैक, कोना ओ जरल-पजरल, जुन्नाक ऐंठी भ' क' रहल आ अन्ततः कोना गुरिल्ला युद्ध लड़ि क' अपन जीवित बचल रहबाक चोर रस्ता ताकिए लेलक। एहि हिसाबें देखने उपन्यासक नाम 'दाग' बहुत प्रतीकात्मक देखाइत छैक। गौरीनाथ बेर-बेर, अनेको बेर, मनुक्ख हेबाक बात आ महत्त्व एहि उपन्यास मे प्रतिपादित केलनि अछि। सुभद्रा किए नारायण राम संग भागल? ओ मनुक्ख भ' क' जीब' चाहैए मुदा पाबैए जे जाति-पांजि सँ छेकल-बेढ़ल-गछारल ई ब्रह्म-फाँस ओकरा अपना तरहें जीब' नहि द' सकै छै। मनुक्ख बनब ओकर चरम मुक्ति थिक। एम्हर नारायण राम एही ब्रह्म-फाँस मे फँसल, नितान्त अधोगति सँ कूही होइत मनुक्ख बनबाक उद्यम मे लागल अछि। मनुक्ख बनि क' जीबि सकब ओकर परम लालसा थिक। ई चरम मुक्ति आ ई परम लालसा एकाकार होइक, ताहि

मे कोनो विवेकवान लोक कें आपत्ति नहि भ' सकैत छनि। मनुक्ख बनब ब्राह्मण बनबा सँ सदैव पैघ आ कमनीय मूल्य रहल अछि, मुदा से स्वयं ब्राह्मण-समाजक लेल नहि। ओ तँ अपन खोल मे बन्द अछि, आ अपन गर्व-रक्षा लेल खूनी-जेहादी संघर्ष धरि पर बिर्त अछि। एहि लड़ाइ कें अंजाम दैत एक सँ एक वीर-बांकुरा ब्राह्मण लड़ाका सभ एहि उपन्यास मे एलाह अछि, जिनका सभ लग ओना तँ बहुतो तरहक हथियार सभ छैक मुदा सभ सँ पैघ हथियार थिक--बुद्धि-कौशल। ब्राह्मणत्वक अपन जुग-जुग सँ जमा कएल बल आ पूँजी के उपयोग ओ लोकनि एहि लेल क' रहल छथि जे क्यो हिनका लोकनिक सीमाक अतिक्रमण क' क' मनुक्ख नहि बनि पाबय। अद्भुत संघर्ष अछि ई। एकरे 'दाग' कहल गेलैए। जेना अहाँ तारामण्डल (प्लेनिटोरियम) के गोल स्क्रीन पर मनुक्ख सभ्यता पर बनल कोनो फिल्म देखैत होइ, आ ब्राह्मणक अनेक घाट-बाट कें पार करैत फिल्मकारक कैमरा पण्डित टोल पर आबि क' फोकस करैत हो आ से सभ्यताक सुन्दर कैनवास पर लागल एक दाग सन के अहाँ कें देखार पड़ैत हो। मुदा, वर्णित तौर पर उपन्यासक दाग कने दोसर तरहक छै आ से शुद्ध भौतिक छै। विवाहक दस बरसक बाद पहिल बेर नारायण आ सुभद्रा दशमी मे अपन गाम आएल अछि। दशमीक नाटक मे गामक 'गतिशील युवा मोर्चा' एहि दुनूक सम्मान करैत अछि। पण्डित टोल बुतें एकर प्रत्यक्ष विरोध करब पार नहि लगैत छैक। आ सून-बिसून पाबि दशमीक राति नारायणक घर मे आगि लगा देल जाइत अछि। एहि दुनूक तेजस्वी शिशु अंकुर झरकि जाइत अछि। ओ ठीक तँ भइए जाएत, मुदा झरकबाक दाग कहियो नहि छुटैत छैक। ई दाग ओकरा रहिए जेतै। उपन्यासकारक एहि प्रश्नक संग कथा समाप्त होइत अछि जे ई दाग ओहि शिशुक कोन अपराधक सजाइ थिक? असल मे ब्राह्मणवाद एक एहि तरहक जाहिल सोच थिक, जकरा सँ वास्ता रखनिहार हरेक शिशु कि तँ देह पर, कि तँ आत्मा मे एहि दाग कें धारण करबाक लेल अभिशप्त अछि।

सभ सँ मजेदार बात ई थिक जे ब्राह्मण-वर्चस्वक एहि तमाम लड़ाका लोकनि मे सँ एक्कोटा क्यो इमानदार नहि छथि, जिनका अपन लक्ष्यक प्रति प्रतिबद्ध कहल जा सकय। एहि उपन्यास मे नहि छथि, आ वास्तविक

समाज मे सेहो नहि छथि। एतए सुभद्राक पिता पण्डितप्रवर भवनाथ मिश्र छथि, जिनका मे इमानदारीक घोर अभाव छनि। ओ जाग-जनउ पर पेशाब करबाक प्रतिज्ञा करैत छथि, मुदा अपन जीवन-लिप्सा मे लिप्त भ' जेबाक कारण ओकरा बिसरबा लेल बाध्य होइ छथि। प्रोफेसर आ मुखिया अपन निजी वर्चस्व आ सही-गलत पाइ कमेबाक आगू आन कोनो संकल्प कें कोनो स्थान नहि दैत छथि। सुभद्राक भाइ लोकनि मने-मन मनुक्ख बनबाक अभियान मे सुभद्रा-नारायणक संग भ' जाइत छथि। तखन बचलाह के? जखन इमानदारिये नहि तँ एते संघर्ष किए? ई मात्र अपन जाति-दम्भ कें बरकरार राखबाक वायवीय उपक्रम थिक। मात्र एहि सान्त्वनाक लेल जे हम ब्राह्मण छी तँ पैघ छी। हमरा लोकनि देखैत छी जे सुभद्रा आ नारायण विवाह केलाक बाद अपन जीवन-संघर्ष मे लागि जाइत अछि। ओकरा सभ कें ने तँ महिमा-मंडनक कोनो खांहिस छै आ ने कोनो सामाजिक उत्थानक लक्ष्य। सामाजिक उत्थानक लक्ष्य छै--'गतिशील युवा मोर्चा' नामक ग्रामीण संस्थाक। ई संस्था घटनाक पूर्वहि सँ गाम मे क्रियाशील अछि, मुदा एहि मुद्दा पर ओकर नजरि दस बरख विलम्ब सँ खुलैत छैक। से जे किछु। मूल बात अछि--पण्डित मनोवृत्तिक कथा। ई मनोवृत्ति लोकतन्त्रक विरुद्ध अछि। संविधान, स्वतंत्रता आ समानता एकरा पचि नहि रहलैक अछि। मुदा दुनियाँ लोकतंत्र आ संविधानक संग छैक। एहि पण्डित मनोवृत्ति लग मे विरोध करबाक कोनो वाजिब तर्क सेहो नहि छैक। मुदा पचा नहि पाबि रहल छथि। हताशा मे अपन संतान कें शिकार बना रहल अछि। ओहि संतानक आत्मा मे लागल एहि वायवीय दंभक दाग ओकरा भविष्यो मे मनुक्ख-समाजक संग तालमेल बैसा क' प्रगति करबा मे बाधक बनत।

एहि उपन्यास कें कैक दृष्टिञें देखल जा सकैत अछि। हमरा लोकनि अवगत छी जे मैथिली उपन्यास अपन 100 बरखक यात्रा पूरा क' लेलक अछि। सन् 1912 मे जनार्दन झा 'जनसीदन'क पहिल उपन्यास 'सती-सर्वस्व' जखन छपल छल तँ ताहि सँ पहिने मात्र नाम लेबा लेल एकटा उपन्यास-नुमा कथा 'मोहिनी-मोहन' (पुलकित मिश्र--1907-08) हमरा सभ लग उपलब्ध रहए। हमरा लोकनि एहू बात सँ अवगत छी जे मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास वैवाहिक समस्या कें ल' क' आ सुधार हेतु नवजागरणक

लक्ष्य बना क' शुरू भेल छल। ई विवाह-संस्था कतेक आगाँ धरि मैथिली उपन्यास कें खेहारैत आएल, एहू बात सँ सभ गोटे अवगत छी। उपन्यास-लेखन कें वैवाहिक समस्या सँ मुक्ति प्रदान करबाक लेल मैथिलीक उपन्यासकार लोकनि कें बहुत उद्यम कर' पड़लनि अछि। मुदा आइ 100 बरखक बाद फेर एकटा वैवाहिक उपन्यास? 'दाग'क मूल कथा तँ अवश्य सैह अछि जे एकरा वैवाहिक उपन्यास हेबाक भ्रम दैत छैक। मुदा जँ सैह तैयो हमरा लोकनि देखि सकै छी जे हमर समाज आ हमर उपन्यास-लेखन कतए सँ कतए धरि आएल अछि। बेमेल विवाहक हूलि-मालि सँ यात्रा शुरू भेल छल। बहु विवाह, वृद्ध विवाह, बाल विवाह। विधवा विवाहक समर्थन। बेमेल विवाहक विरोध लेल संगठनबद्धता। ई सब कथू हमरा लोकनि मैथिली उपन्यास-संसार मे देखने छी। मुदा स्मरण रखबाक बात थिक जे ई समस्त घात-प्रतिघात ब्राह्मण-समाज मे आन्तरिक सुधार अनबाक प्रेरणावश छल। ब्राह्मण वर आ ब्राह्मण कन्या--ई एकटा एहन लक्ष्मण-रेखा छल जकरा नंघबाक कल्पनो धरि क्यो नहि क' सकैत छलाह। लड़ाइ मे हुसि चुकल आधुनिकताक उत्तर आधुनिक पाठ प्रस्तुत करैत आइ मैथिली उपन्यास मनुक्खक संग मनुक्ख के वैवाहिक सम्बन्ध प्रस्तावित करैत अछि। पूरे गरिमा आ तर्कसंगतिक संग। नवजागरणक लक्ष्य सेहो एक दोसर विशेषता थिक जे 'दाग' कें 100 बरखक मैथिली उपन्यासक परम्पराक संग जोड़ैत छैक। 'गतिशील युवा मोर्चा' मनुक्खक लेल मनुक्ख लोकनिक द्वारा काएम कएल एक संगठन थिक, जे खास ओही तेवरक संग गाम मे ठाढ़ अछि। ओ बर्तोल्त ब्रेख्तक लिखल नाटक सभक मंचन करैत अछि आ मनुक्खताक प्रतिष्ठा मे लागल छोट-छोट मनुक्ख सभक सम्मान करैत अछि। वायवीय ब्राह्मण-वर्चस्व सँ लड़बाक प्रायः ई सर्वोत्तम ग्रामीण हथियार थिक, जकरा गौरीनाथ प्रस्तावित करैत छथि।

एहि उपन्यास कें देखबाक जे सभ सँ सटीक दृष्टिकोण हमरा देखाइत अछि से मुदा, एहि सँ कने भिन्न अछि। हमरा लोकनि देखैत छी जे ब्राह्मण-वर्चस्व के झंडाबरदार लड़ाका लोकनि जे छथि--जे दलित बस्ती मे आगि लगबैत छथि, डकैती आ बलात्कार आ हत्या करैत छथि, जे लुच्चइ-लफुआगिरी सँ ल' क' तमाम तरह असामाजिक क्रिया-कलाप मे

लिप्त छथि, ई समस्त गोटे आर. एस. एस. के कार्यकर्त्ता लोकनि छथि। दैनिक जीवन मे जे ब्राह्मण-वर्चस्वक लड़ाका छथि, वैह बखत पड़ला पर मुसलमान-विरोधी हिन्दू बनि जाइ छथि आ बखत पड़ै छनि तँ हिन्दूवादी पार्टीक लेल बूथ कैप्चरक काज करैत छथि। एहि तरहें, आर. एस. एस. के मूल लक्ष्य की छै आ एकर लाभुक के लोकनि छथि--तकरा सही ढंग सँ ई उपन्यास देखार आ चिन्हार करैत अछि।

मुदा एहि सभ कथूक संगहि एहि उपन्यासक महत्त्व मैथिली साहित्य मे असंदिग्ध रह' बला अछि। हमरा सभक दिस एकटा कहबी छै--*बाहर फीट-फाट, आ भीतर सिमरिया घाट।* यैह थिक ब्राह्मण सभ्यता। 100 बरख भ' गेल मुदा एकर ई 'सिमरिया घाट' एखन धरि अनावृत्त नहि भेल छल। बाहर के जे 'फीट-फाट' अछि, सैह एखन धरि शुद्ध मैथिली साहित्यक अभिधान सँ महिमा-मण्डित होइत आएल अछि। भीतर के यथार्थ, भितरिया दुर्गन्ध, घाव, पील फड़ल सह-सह करैत, जीवन के मोह मे तैयो घिसेट कटैत--ई सभटा यथार्थ पहिल बेर औपन्यासिक कलेवरक संग सामने आएल अछि। ब्राह्मण-समाज के खुक्खपन के दस्तावेजीकरण लेल गौरीनाथ अवश्ये मोन पाड़ल जेताह। ई बात हम एहि जानकारीक बावजूद कहि रहल छी जे प्रो. हरिमोहन झा पहिल साहित्यकार छलाह जे मैथिल ब्राह्मण-समाजक खुक्खपन कें देखार केलनि। मुदा हुनकर बड़ भारी सीमा रहनि। हुनकर सीमा रहनि--व्यंग्य। जाहि मैथिल ब्राह्मण समाज पर ओ व्यंग्य मे प्रहार केलखिन ओ समाजो ओकरा व्यंग्ये मे ग्रहण केलक। लेखक व्यंग्य करथिन 'जाति' पर, मुदा पाठक ग्रहण करनि व्यक्ति-परक व्यंग्यक रूप मे। मतलब, सभ क्यो खतम छथि एक हमरा छोड़ा क'। कहब आवश्यक नहि जे एना करबाक छूट स्वयं हरिमोहन झाक लेखन-शैलिये अपन पाठक लोकनि कें दैत छलनि। फल भेल जे जे लोकनि बुच्ची दाइक जीवन मे अन्हार घोंरैत रहलखिन, सैह लोकनि ओकरा द्विरागमन मे हरिमोहन बाबूक पोथी साँठैतो रहलखिन। संतोषक बात थिक जे गौरीनाथक किताब ठेठ अभिधा मे बात करैत अछि आ एकरा भार-दौर मे सांठबाक हिम्मत क्यो नहि जुटा सकता।

(2012)

रमेश रंजन आ हुनक कविता

बीसम शताब्दीक अन्तिम दशक मे उभरल रचनाकार लोकनि मे रमेश रंजन बेछप आ विशिष्ट छथि। बेछप छथि ओ अपन शिल्प आ तेवर ल' क'। जाहि तेवर कें ल' क' रमेश रचना करैत रहलाह अछि, से तेवर राखनिहार रचनाकार मैथिली साहित्य मे कम भेलाह अछि। अधिकांश लोक एहने भेल छथि जे कि तँ प्रवाहक संग चलैत रहब निरापद बुझलनि अथवा सुरसुर आ मुरमुर दुनू मे शामिल रहि क' अपन भविष्यक रक्षा करैत रहलाह अछि। इतिहास साक्षी अछि जे एहन लोकक अपन कोनो भविष्य तँ नहिञे बचलनि, उनटे ओ मैथिलीक भविष्य पर सेहो बट्टा लगबैत रहलाह। जुलुम बात थिक जे एहन लोक गर्वपूर्वक अपना कें 'निष्पक्ष' कहैत छथि, जखन कि निष्पक्षक अर्थ नपुंसक होइत छैक। एखन तँ आब मुक्त बाजार आ उदारीकरणक दौर थिक। सभ कथूक लेल बाजार मे जगह छैक तँ नपुंसकताक लेल सेहो छैक। मुदा आगू? आगू जँ एहि पृथ्वी पर मनुष्यक प्रजाति कें बचल रहबाक छैक तँ तकर रस्ता की छैक? ओ रस्ता कतय सँ बहराइत छैक? एहने ठाम रमेश रंजन आ हुनक समानधर्मा रचनाकार सभ दिस हमर-अहाँक नजरि जाइत अछि।

भाषाशास्त्री लोकनि जनैत छथि जे मैथिलीक जन्म जन-बोनिहार गरीब-गुरबा द्वारा अपन सांस्कृतिक तत्त्व सभक अभिव्यक्ति हेतु, संस्कृतक विरोध मे भेल छल। आ वैह मैथिली आगू चलि क' तेहन सम्भ्रान्त आ संस्कृतनिष्ठ बना देल गेल जे आम लोक अपन भाषा आ भाव के लेल ओहि ठाम कोनो जगह नहि पौलनि। मुदा, यैह मैथिली जँ संस्कृतक

स्थानापन्न भ' जइतै, एही मे धर्म-कर्म पूजा-पाठ होब' लागितै, शास्त्र-चर्चा होब' लागितै तँ एक बात छल। मुदा से किऐ? संस्कृत अपन बादशाहत तँ कायम कयनहि रहल एम्हर मैथिली रजनी-सजनीक भाषा टा बनि क' रहि गेल। किछु लिखि दियौ मैथिली मे, तँ ओ भ' गेल साहित्य। किछु तुक्कड़ जोड़ि दियौ, कहुना फकड़ा बना लिय'--अहाँ भ' गेलहुँ कविजी। एहि रजनी-सजनी मनोवृत्तिक कारण मैथिली साहित्य सभ दिन दोयम बनल रहल आ विश्व-साहित्यक मानचित्र पर एकरा लेल कोनो जगह बनि नहि सकलैक। घटिया लिखनिहार लोकक दबाव सभ दिन बनल रहलैक। वैह लोकनि मुँहपुरुख होइत रहलाह, वैह लोकनि प्रतिनिधित्व करैत रहलाह।

आब समय बदलि गेल छैक। एहि बाजारवादी कालखण्ड मे सम्वेदनाक लेल आ साहित्यक लेल बहुत कम जगह बचि गेल छैक। एहि लेल ठोस आ श्रेष्ठ साहित्य चाही। श्रेष्ठ साहित्य सदति अपन जनताक प्रत्यक्ष जीवन सँ उठा क' आनल जाइत छैक। जे साहित्य अपना कालखण्डक जनजीवन के जते गँहीर अंकन क' सकै छै, से तते बेसी कालजयी होइत छैक। ई चुनौती आइ हमरा लोकनिक समक्ष अछि। हमरा खुशी अछि जे रमेश रंजन एहि चुनौती कें स्वीकार कइये क' साहित्यक क्षेत्र मे सक्रिय भेलाह अछि। नेपालक मैथिली-परिसर मे तँ ओ हमरा विरल बुझना जाइत रहलाह अछि।

रमेशक कथा-रचना सँ हमरा लोकनि परिचित छी। अनेक सुन्दर आ मर्मस्पर्शी कथा सभक रचना ओ केने छथि। से सभ समकालीन मैथिली कथा-साहित्यक एक उपलब्धि थिक। आब ओ अपन कविता ल' क' समक्ष एलाह अछि। हिनक कविता सभ मैथिलीक गंभीर पाठक लोकनि कें निश्चिते सन्तोष आ आश्वस्ति देतनि, से हम विश्वास करैत छी।

रमेश भावुक कवि नहि छथि। ओ मानवताक हित मे प्रयत्न करैबला एक जुझारू कार्यकर्त्ता छथि, आ सैह छवि ल' क' हुनक कवि प्रकट भेलनि अछि। स्वप्नहु मे ओ कदापि 'निष्पक्ष' नहि भ' सकै छथि--हुनक पक्ष थिक जनताक बेहतरी। राजनीतिक रूप सँ ओ बेस प्रखर स्वर रखैत छथि। हुनक राजनीति छियनि--मिथिलाक राजनीति, मिथिलाक आम लोकक सरोकारबला राजनीति। एहि लेल ओ तमाम शत्रु-पक्ष कें देखार आ नांगट

करैत छथि। मुदा, हुनक जुझारूपन जाहि स्तर पर सर्वाधिक मुखर देखाइत अछि, से थिक--सामाजिक न्याय। स्त्रीक पीड़ा कें ओ अलबत्त रूपें अभिव्यक्ति प्रदान केलनि अछि। मुख्यधाराक सम्भ्रान्त लोकक पाखण्ड हुनक कविता मे खण्ड-पखण्ड भेल देखाइत अछि। कतिआएल आ अबडेरल लोकक जीवन आ संस्कृति हुनक प्रधान काव्य-विषय छियनि। आगू ई कवि अपना स्वर कें आ आयाम कें आर पैघ विस्तार देताह, से हम आशा करैत छी। एक रमेशक बाद अनेक रमेश एताह जे अपन श्रेष्ठ साहित्यक बल पर विश्वसाहित्यक मानचित्र पर मैथिलीक अंकन करताह, से हम आशा करैत छी। रमेशक रचना से आशा करबाक आधार हमरा दैत अछि। कवि पर लिखल एक कविता मे ओ अपनो कहैत छथि--

कवि
राति होइक अन्हार
पहरा पर बैसल होइक भय, आतंक
आ तखन तोहर जीह
घोकचि चलि जाओ कण्ठक भीतर मे
तखनो
आँखि मे दप्प द' बारह मशाल
दूर-दूर तक देखाओ
मात्र लाले-लाल
बान्हल मुट्ठी हवा मे भँजाएल
तँ आगू बढ़ह कवि
पाछू घुरि नहि तकिहह
ठमकिहह नहि
आगू बढ़बिहह डेग
बढ़ैत जइहह।

(2008)

निरंत

''जतुक्का समाज अपन संस्कृति आ साहित्यक प्रति सर्वथा निरपेक्ष हो; बुजुर्ग लोकनि एतबा विवेकशून्य होथि जे अपन मातृभाषा मे रचल जाइबला सार्थक आ निर्घेस साहित्यक हुनका कोन्नहु टा अन्तर चिन्हाइत नहि होइनि; जतुक्का बुद्धिवादी लोकनि अपन देस आ अपन भाषा कें ततेक पिछड़ल बुझैत होथि जे कनेक पलखति बहार क' यथार्थक सत्यापन क' लेब धरि हुनका फालतू लगैत होइनि; जतुक्का संस्थापति लोकनि कें मिथिलाक भविष्यक कोनो टा आकलन नहि होइनि आ अपने मुइने जुग बुड़ै छै के कहबी कें चरितार्थ करैत अपन कब्जा टा बरकरार रहौ संस्था पर, तकरे टा चरम उपलब्धि बुझैत होथि; जतुक्का राजनेता लोकनिक लेल संस्कृतिक प्रश्न एक सर्वथा निरसित-निष्कासित मामला हो; आ जतुक्का साहित्यकार लोकनि कि तँ कोनो तरहें महन्थ धरि पहुँच बनेबाक जोगाड़ मे अपस्याँत होथि अथवा बहुत दबाव भेला पर बरख दिन मे एकाध टा कविता लिखि क' अपन जीवित हेबाक प्रमाणे टा प्रस्तुत करबाक लेल मैथिली लिखैत होथि; ताहि भाषा मे काज करैत अहाँ जे चाहब लोक अहाँ दिस उन्मुख भेटताह, से की यथार्थ सँ बेसी चाहब नहि भेलै?

मुदा तैयो लिखू। अपन पुरुषार्थ लेल लिखू। मैथिली मे काज करब एक कठिन चुनौती थिक, ताहि लेल लिखू। चहुँ दिस अन्हार व्याप्त होइ कतहु कोनो स्पन्दन नहि देखैत होइऐक ककरो मे, तैयो लिखू। भविष्यक लेल लिखू। हाल मे जे शिशु जनमलाह अछि अहाँक पत्नीक गर्भ सँ, तनिका मे अपन सोच, अपन संस्कृति 'ट्रांसमिट' करैक लेल लिखू। लिखू एहि दुआरे जे अपना जुगक सर्वाधिक प्रामाणिक आख्यान अहीं, केवल अहीं लिखि सकै छी।''

युवा-मित्र कें पत्र

हम यात्रीजीक शिष्य छी। यात्रीजी मानै छलाह जे मित्रता तँ ओना अपन समसोची समस्त व्यक्ति सँ रखबाक चाही मुदा जे मित्रता सभ सँ बेसी सार्थक होइ छै ओ थिक युवा-वर्गक संग मित्रता। ई दुनू दिस सँ लाभ करै छै। एक तँ हम, अहाँक मैत्री सँ अपडेट होइत चलै छी। दोसर, अहाँ कें हमर ओ अनुभव शेयर होइत अछि जे कि एतबा दिन एकनिष्ठ भ' क' काज कयने हम अर्जित केलहुँ। तखन, दुनू गोटेक निष्ठा समान आधारशिला पर टिकल हो, ई तँ मित्रताक लेल जरूरी छैके। तें हे मित्र, भने अहाँ हमरा सँ तीस बरख पाछू अपन काज शुरू केने होइ, भने साहित्य कें हमरा सँ भिन्न दृष्टिञे देखबाक आग्रही होइ, भने अहाँक प्राथमिकता हमरा सँ अलग इयत्ता रखैत हो, मुदा एहन कोनो कारण नहि देखैत छी जे अहाँक संग संवाद लेल हमरा हृदय मे कम व्याकुलता हो अथवा एहि बातक लेल कम चिन्ता करैत होइ जे कोना अहाँ कें सही-सही स्पेस भेटत आ कोना हम अहाँक संग एकाकार होइत, अहाँक कर्तृत्व मे अपना कें निमज्जित करैत संभाव्य सार्थकता प्राप्त करी।

हमरा लोकनिक सौभाग्य जे हम सभ मैथिलीक लेल काज करै छी। एक तँ ई जे मैथिली मे उच्च स्तरक लेखन करैबला लोकक बहुत कमी छै। जँ हम एक उल्लेखनीय काज करै छी तँ परम संतुष्ट हएब बहुत आसान छै। दोसर जे मैथिली हमर मातृभाषा थिक आ हमर अस्मिता (आइडेन्टिटी) थिक। पूर्वज लोकनिक गलत सोच आ उपेक्षाक कारण ई कमजोर बनल रहि गेलीह। आइ जुगे बदलि गेल छै। आजुक सभ्यता लग

मे, साहित्यक लेल बहुत कम स्पेस बचल रहि गेल छै। जतबा बचलो छै से दोसर-दोसर भाषाक साहित्य (जेना अंग्रेजी, जेना हिन्दी) दफानि लैत अछि। साहित्य कहियो खतम होइबला चीज नहि अछि। केहनो जुग आबि जायत मुदा साहित्यक भूख साहित्ये सँ मेटेतैक। मुदा, मैथिली साहित्य तँ एक दिन खतम भ' जाएत जँ एकर साहित्यकार पीढ़ीक निरन्तरता नहि बनल रहलैक। अहाँ सभ एक सँ एक प्रतिभाशाली लोक सभ अबैत छी मुदा अपन स्पेस हिन्दी मे ताकै छी, पत्रकारिता मे ताकै छी। एहू सालक, हिन्दीक प्रतिष्ठित भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार दरभंगाक मनोज कुमार झा कें भेटलनि। हम मनोज कें पुछलियनि--'यौ मनोज, अहाँ जे कविता लिखै छी से तँ एकदम्म सँ मैथिली लिखै छी, तखन मैथिलीए मे किए ने लिखै छी यौ!' ओ जे हमरा उतारा देलनि तकरो अपन तर्क छै। ओ कहलनि- 'एह भाइ, एहि ठाम बहुत मारा-मारी छै। माछ आ मिठाइ पहुँचाब' पड़ै छै।' मानल मनोज, मानल। जे गलत सोच मैथिली कें डुबौलक, से आइयो निष्क्रिय भ' गेल हो एहन बात नहि छै। सही बात छै जे बिना साहित्येतर सेटिंग केने बिना ककरो कोनो पुरस्कार प्रायः नहि भेटि पाबै छै, आ ने बिना प्रायोजित केने ककरो प्रशंसा भ' पाबै छै। मुदा तें की हमरा अपन कार्य अभियान कें अधूरा छोड़ि देबाक चाही? बड़ सुन्दर बात कहियो किरणजी लिखने छलाह--

सेवक की है कमी उसे कब जिसका हो भंडार भरा
सेवा तो उसकी कहलाती जो पथ पर हो विवश पड़ा
धन-बल से पल भर में हिन्दी वैभव-शान बढ़ा सकती है
किन्तु मैथिली मेरे शोणित बिना न जीवित रह सकती है।

तँ, इहो तँ एकटा सोच भेलै! दोसरक उपकार जखन लोक करैत अछि तँ अपन किछु क्षति तँ ओकरा सहैए पड़ै छै।

अपन क्षति मे अपन लाभ ताकू मित्र! ईहो हमरा लोकनिक परम्परा अछि।

अक्सरहाँ ई बात कहल जाइ छै जे हमरा लोकनिक पीढ़ीक बाद साहित्यकारक कोनो अगिला पीढ़ी पहिचान मे नहि आएल अछि आ हमहीं सभ अन्ततः मैथिलीक आखिरी पीढ़ीक लेखक लोकनि छी। चारू दिस

ताकि क' देखी तँ ई बात मुदा, सरासर गलत अछि। पछिला शताब्दीक अन्तिम दशक मे आ एहि शताब्दीक प्रथम दशक मे जे अहाँ सभ अपन काज शुरू केलहुँ अछि, हम तँ देखै छी जे दू दर्जन सँ बेसी अहाँ सभक संख्या अछि जे प्रतिभाशाली छी आ गँहीर सेहो छी। कविताक क्षेत्र मे की कृष्णमोहन झा सँ ल' क' रघुनाथ मुखिया धरि एक दर्जन सँ कम लोक हएब? आ कि कथे मे अजित कुमार आजाद सँ ल' क' आशीष अनचिन्हार धरि? आ कि आलोचनेक क्षेत्र मे गौरीनाथ सँ ल' क' अतुल कुमार ठाकुर धरि? तखन बात बचलै जे पहचान अहाँ सभक काएम नहि भेल अछि! मुदा प्रश्न छै जे के करत अहाँक पहचान? दोसर प्रश्न छै जे मैथिली मे ककर पूरा पहचान आइ धरि काएम भ' सकलै? आजुक समयक सर्वाधिक ज्ञानवृद्ध साहित्यकार पण्डित गोविन्द झा धरि कें शिकाइत छनि जे हुनक अतिशय उल्लेखनीय कतेको वस्तु सभक संज्ञान नहि लेल गेलनि! लग जाक' देखबनि तँ पाएब जे एही तरहक शिकाइत अमरजी कें सेहो छनि, मायानन्द मिश्र आ जीवकान्त कें सेहो। एहना स्थिति मे युवा रंग-चिन्तक आ सम्पादक प्रकाशक एहि शिकाइतक कोन औचित्य रहि जाइत छैक जे अनेक महत्त्वपूर्ण काजक बादो हुनकर नोटिस नहि लेल गेलनि। के लेत बन्धु अहाँक नोटिस? के?

जतुक्का समाज अपन संस्कृति आ साहित्य सँ सर्वथा निरपेक्ष हो, बुजुर्ग लोकनि एतबा विवेक-शून्य होथि जे अपन मातृभाषा मे रचल जाइबला सार्थक आ निघेंस साहित्यक हुनका कोन्नहु टा अन्तर चिन्हाइत नहि होइनि, जतुक्का बुद्धिवादी लोकनि अपन देस आ अपन भाषा कें ततेक पिछड़ल बुझैत होथि जे कनेक पलखति बहार क' यथार्थक सत्यापन क' लेब धरि हुनका फालतू लगैत होइनि, जतुक्का संस्थापति लोकनि कें मिथिलाक भविष्यक कोनहु टा आकलन आ अवगति नहि होइनि आ अपने मुइने जुग बूड़ै छै के कहबी कें चरितार्थ करैत अपन कब्जा टा बरकरार रहौ संस्था पर तकरेटा चरम उपलब्धि बुझैत होथि, जतुक्का राजनेता लोकनिक लेल संस्कृतिक प्रश्न एक सर्वथा निरसित-निष्कासित मामला हो, आ जतुक्का साहित्यकार लोकनि कि तँ कोनो तरहें महन्थ धरि पहुँच बनेबाक जोगाड़ मे अपस्यांत होथि अथवा बहुत दबाव भेला

पर बरख दिन मे एकाध टा कविता लिखिक' अपन जीवित हेबाक प्रमाणे टा प्रस्तुत करबाक लेल मैथिली लिखैत होथि; ताहि भाषा मे काज करैत अहाँ जे चाहब से लोक अहाँ दिस उन्मुख भेटताह से की यथार्थ सँ बेसी चाहब नहि भेलै?

एतय तँ स्थिति ई अछि जे सड़क पर जँ चलब तँ पहिने सड़क बनाउ। अनुकूल माहौल मे जँ जीबय चाहै छी तँ पहिने माहौल बनाउ। समालोचित जँ होब' चाहै छी तँ पहिने समालोचना-पद्धति विकसित करू। एहि बात पर जँ अहाँ कहबै जे बहुत झंझटि अछि (जेना मनोज कहने छलाह) तँ बाबू झंझटि तँ ठीके बहुत अछि। मुदा, एतबा मोन राखब जे अहाँक पूर्वज लोकनिक समय सँ एखन झंझटि कम अछि। जतेक लोक अहाँ सँ पहिने आबि क' काज क' गेल छथि ताहि सभक कर्तृत्व सँ झंझटि कम सँ कमतर होइत गेल अछि। कने अनुमान करू जे विद्यापतिक समय मे कतेक झंझटि रहल छल हेतनि! ओ तँ ठठि गेलाह जे हुनका राज्याश्रय रहनि!

एकटा जुग छलै जहिया कहल जाइ जे 'धर्मस्य निर्णयो ज्ञेयो मिथिलाव्यवहारतः।' धर्म माने पण्डित लोकनिक चलाओल कर्मकाण्डक ओझरा। एहि जुग मे आबिक' ओ ओझरा तँ जरूर टूटि गेल मुदा हजार बर्खक झमारल मैथिल मनुष्य आइयो नहि प्रकृतस्थ भ' सकल अछि। लगैत अछि जेना धर्म मिथिला कें गीड़ि गेल, जकर कण्ठ मे ई लसकल अछि आ नवाचारी लोकनि सैकड़ो बरख सँ मिथिला कें धर्मकण्ठ सँ मुक्त करबाक अभियान मे लागल छथि। मैथिलीक पुरातनपंथी साहित्य-परम्परा कें, हमरा बुझने, एहि तरहें बूझल जा सकैत अछि। ई असल मे गुलाम मिथिला बनाम आजाद मिथिलाक संघर्ष थिक। आजुक मनुष्य कें भाषा जोड़ि सकैए, धर्म नहि। यथार्थ यैह थिक।

जुग बदलि गेल। आजुक मनुष्य सेहो बदलि गेल। ओकर प्राथमिकता भिन्न-भिन्न भ' गेलै। ओकर दृष्टिकोण सेहो बदललै। तँ, हमरा संस्कृति-कर्म कें, हमर साहित्य कें किएक नहि समयक संग अद्यतन हेबाक चाही? की मैथिली साहित्य सदा-सर्वदा कर्मकाण्डीय आस्था-लेखनक साहित्य बनल रहौक? अन्ततः की हएत? समयक संग आगू बढ़ल मनुष्य एकरा पिछड़ल

बूझिक' त्यागि देत! सैह तँ एखन भ' रहल अछि। मैथिल पण्डित लोकनि भने सर्वस्व त्यागियोक' धर्मक रक्षा करैत रहल होथु मुदा आगू धर्म मैथिलीक रक्षा नहि क' सकत, से पक्का अछि! धर्म तँ अपनहि समयक संग बदलि गेल अछि!

एहना स्थिति मे, हे बन्धु, अहाँक प्रिय मातृभाषा जे कि अनिवार्यतः अहाँक आइडेन्टिटी थिक, तकर साहित्य-वाटिका उजड़' जा रहल अछि। संगत आ सम्मत लेखन करैबला पीढ़ीक निरन्तरता जँ बनल नहि रहलै तँ ओहि उजाड़ दिन कें अयबा मे बेसी विलम्ब नहि छै।

लिखू। अपन पुरुषार्थ लेल लिखू। मैथिली मे काज करब एक कठिन चुनौती थिक, ताहि लेल लिखू। चहुँ दिस अन्हार व्याप्त होइ, कतहु कोनो स्पन्दन नहि देखैत होइएक ककरो मे, तैयो लिखू। भविष्यक लेल लिखू। हाल मे जे शिशु जनमलाह अछि अहाँक पत्नीक गर्भ सँ, तनिका मे अपन सोच, अपन संस्कृति 'ट्रांसमिट' करैक लेल लिखू। लिखू एहि दुआरे जे अपना जुगक सर्वाधिक प्रामाणिक आख्यान अहीं केवल अहीं लिखि सकै छी।

(2010)

नवतुरिया लेखक-संग सम्वाद

अहाँ पुछलहुँ जे की कोनो शिकाइत अछि तँ हम कहै छी जे हँ, अहाँ लोकनि सँ हमरा दू टा शिकाइत अछि। ई बात हम ठाम-ठीम कहनहु छी। कैक गोटे कें ई गप्प बुझलो हेतनि।

पहिल शिकायत तँ अछि जे अहाँ सभ बहुत धड़फड़ी मे रहै छी। मानै छी जे ई धड़फड़ी आजुक युगधर्म छियै। अहाँक जीवन मे बहुत संघर्ष अछि। महत्त्वाकांक्षा जँ अछि तँ तेहने कड़गर प्रतिस्पर्धा सेहो अछि। मुदा तें की जाहि कार्यसिद्धिक लेल जे प्रक्रिया विहित छै, तकरा अतिक्रमण कयने सफलता भेटि सकैत अछि?

कोनो वैज्ञानिक जखन कोनो नवीन मशीनक आविष्कार कर' चाहैए वा कोनो नव अन्वेषण कर' चाहैए--तँ सभ सँ पहिने ओ की करैए? सभ सँ पहिने तँ ओ अपना विषयक आधारभूत ज्ञान प्राप्त करैए। तखन ओ ओहि मशीनक मद मे भेल अद्यतन शोधक जानकारी प्राप्त करैए। जे कोनो लोक, ओकरा सँ पहिने, एहि विषय पर काज क' गेल छथि, सभक प्रक्रिया आ निष्कर्ष सँ परिचित होइत अछि। एहि समस्त प्रक्रिया मे अध्ययन, अवलोकन आ मनन--तीनू संग-संग चलैत छै। आ एतबा सभ केलाक बाद ओ एहि स्थिति मे आबि पाबैए जे चिन्तन क' सकय जे ओकरा जे किछु नव करबाक छै, से कोन तरीका सँ भ' सकैए आ ताहि लेल ओकरा की करबाक चाही।

अहीं कहू जे एहि मे कोनो धड़फड़ी चलि सकैत अछि? शार्टकट तलाश कयने ओकरा कार्यसिद्धि भेटि सकै छै? आ ईहो बात नहि जे

वैज्ञानिके टा एतबा करैत हो, मानवशास्त्री करैए, इतिहासकार करैए, समाजशास्त्री करैए। फिल्मकार आ पत्रकार धरि करैए। जे एतबा नहि करैए तकर कएल काज 'कोनो काजक काज' नहि मानल जाइत छै। आ जे एतबा करितो सफलता-सिद्धि नहि क' पाबैए, तखनहु ओकर कएल काजक एकटा ऐतिहासिक महत्त्व होइ छै, ओ अगिला पीढ़ीक सम्बल आ उत्प्रेरक बनैए, यात्री जी सन कवि ओकरा अभ्यर्थना मे छन्द लिखैत छथि-
'जे भ' नहि सकला पूर्ण-काम, हम करइत छी हुनका प्रणाम'।

अपना ओतक परम्परा मे साहित्य-लेखन कें साधना कहल गेल अछि। ई एक विशेष जीवन-शैली सेहो थिक। जेना खेती मात्र एकटा पेशा नहि थिक, एकटा संस्कृति एकटा जीवनशैली थिक, ठीक तहिना साहित्य-लेखनक काज अछि। अहाँ कें अपन जीवनक सर्वश्रेष्ठ (द अल्टीमेट) लिखबाक अछि, से अपन जीवन-यात्राक क्रम मे कोनो एक समय मे कहियो अहाँ लिखि पाएब। मुदा, ओहि अल्टीमेट लेखनक वास्ते जे उद्यम करैत अहाँ निरन्तर सृजनोन्मुख रहैत छी, से अहाँ कें संस्कारित करैए। से निश्चये एक साधना थिक।

आजुक युगक एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक विचारक ओशो कें एक बेर क्यो पुछलकनि जे 'आधुनिक मनुष्यक लेल अहाँ अनेको प्रभावकारी ध्यान-विधि अन्वेषित कएने छी। से, खास क' क' कविक लेल, जकर मनोनिर्माण निश्चिते आम लोक सँ थोड़े भिन्न होइ छै, अहाँ कोन ध्यान-विधि सजेस्ट करै छिऐक?' तँ ओशो कहलखिन जे *'कविता-रचनाक प्रक्रिया स्वयं एक उन्नत ध्यान-विधि थिक आ तें कविक लेल अलग सँ कोनो ध्यानक आवश्यकता नहि अछि, बशर्ते कि ओ वास्तविक अर्थ मे एक कविक जीवन जीबैत हो, जेना रवीन्द्रनाथ।'*

हमरा बूझल अछि जे अहाँ मे सँ कैक गोटे ईहो बात नहि स्वीकार कर' चाहब जे कविक मनोनिर्माण आमलोक सँ थोड़े भिन्न होइ छै, तखन साधना आ आध्यात्मिकताक बात तँ दूरक बात भेलै। मुदा आगू समयक संग एहि बातक अनुभूति अहाँ कें अवश्ये हएत जे अहाँक कएल हरेक काज एक आभा-मंडलक निर्माण करै छै, अहाँ सही करू तैयो, गलत करू तैयो।

मुदा जँ दोसर तरहें एहि बात पर विचार करू तैयो ई चीज तँ अहाँ कें अवश्ये मानबाक चाही जे जँ अहाँ कविता लिखै छी तँ कोशिश करू जे अपना जुगक सर्वश्रेष्ठ कविता अहाँक कलम सँ लिखाबय। कोशिश करू जे एहन कविता अहाँ लिखि पाबी जकर धमक दोसरो-तेसरो जुग धरि पहुँचय।

ई चीज धड़फड़ी मे नहि भ' सकैत अछि। आ ने शॉर्टकट ताकने भ' सकैए। ई भ' सकैए तखने जखन साहित्य अहाँक जीवन-शैली मे शामिल हो, अहाँक जीवन-दर्शनक अंग हो। अहाँ दुनियाँक समस्त संघर्ष मे लागल रहू मुदा खास अपन शैली मे, अप्पन जीवन-दर्शनक संग। साहित्य कोनो अभिशाप नहि छिऐ जे लोक कें असमर्थ बनाक' छोड़ि दैत हो। एना जँ कतहु होइत देखाइत हो तँ बुझबाक चाही जे कोनो दोसर कारणे भेल अछि, जकरा अपूर्ण जीवन-दृष्टि हेबाक कारण साहित्य (घटित हेबा सँ) रोकि नहि सकल। साहित्य बहुत ताकत दैत छैक जँ ओ अहाँक जीवन मे शामिल हो। हमरा देलक अछि। लाखों कें देलकनि अछि।

से, हम कहैत रही जे जाहि क्षेत्र मे, जाहि विधा मे अहाँ काज करै छी, तकर पृष्ठभूमि बूझल रहब तँ बहुत जरूरी अछि ने! मुदा, अहाँ लोकनि मे हम देखै छी जे मैथिली लिखै छी मुदा मैथिली पढ़ैत नहि छी। मानल जे मैथिली मे पढ़बा जोग वस्तु कम छपैत छै। मुदा हम आजुक छपैत पत्रिका टाक बात नहि करै छी। मानल जे मैथिली मे छपल पोथियो सभ मे सँ अधिकांश पढ़बा जोग नहि रहैत अछि। किन्तु, हमरा विचारें एहि ठाम दू टा बात अहाँ कें ध्यान रखबाक चाही जे मैथिली आम लोकक भाषा थिक। आम लोक मे बहुतो एहन छथि जनिका कि तँ 'भावना' छनि अथवा 'सेहन्ता' छनि। तकर वशीभूत ओ बिनु कोनो पृष्ठभूमिक ज्ञान रखैत, स्वान्तः सुखाय लिखैत छथि आर लिखि क' अपना कें कृतकार्य बुझैत छथि। तखन तँ एकटा संस्कृत कवि कहि गेल छथि जे किछु लोकक कविता हुनका मित्र-मण्डली धरि जाइत अछि, किछु लोकक हुनका गाम-क्षेत्र धरि, तँ किछु लोकक अपन देश-काल धरि मुदा किछुए रहन कवि होइत छथि जनिकर कविता देश-कालक सीमा कें पार करैत एहि युग सँ ओहि युग धरि पहुँचि जाइत अछि। हम जखन अहाँ

कें पढ़बा लेल कहै छी तँ मोन राखब जे एहने साहित्य पढ़बा लेल कहै छी। आ लिखबा लेल कहै छी तँ सेहो एहने।

साहित्यकार-समुदाय मे किछु लोक एहू सिद्धान्त कें माननिहार भेलाह अछि जे लेखक कें आन लेखकक रचना नहि पढ़बाक चाही। तकर कारण ओ लोकनि बतबैत छथिन जे आनक रचना लेखकक भावाभिव्यक्ति कें संक्रमित (इन्फेक्टेड) करैत छैक। माने जे एहि सँ ओकर अपन मौलिकता दूरि होइत छैक। दृष्टान्तक रूप मे ली तँ अपना ओतक महान लेखक फणीश्वर नाथ रेणु किनकहु कोनो वस्तु नहि पढ़ैत छलाह। पढ़बाक बड़ खगता होइनि तँ मनोरंजनार्थ इब्ने शफी वा कर्नल रंजीतक जासूसी उपन्यास टा पढ़ैत रहथि। हम तँ स्वयं जाँचि क' देखलहुँ अछि जे सिद्धान्त ईहो निराधार नहि छैक। पैघ लेखकक लेल ओकर अपन मौलिकता बचाक' राखब एक अत्यन्त चुनौतीपूर्ण काज थिक, ताहि दृष्टिञे ई उपयोगी थिक। मुदा, बन्धु ई सिद्धान्त हमरा-अहां सन लेखक लेल उपयोगी नहि अपितु बाधक अछि जे एखन लूरि सिखिये रहलाह अछि, सिद्ध नहि भेलाह अछि। से एहन लोक कें तीन कारण सँ पढ़बाक अछि-- (क) अपन पृष्ठभूमि जनबाक लेल (ख) आनक औकात नपबाक लेल, जाहि सँ श्रेष्ठतर रचनाक जन्म सम्भव भ' सकैक (ग) कहबाक लूरि, लिखबाक शैली सिखबाक लेल। (ओना, हमर अनुभव अछि जे ई लूरि लिखिये क', लिखिते-लिखिते सीखल जा सकैए, पढ़िक' सीखल लूरि अपूर्ण होइ छै, यद्यपि कि जानकारीक लेल ई परम आवश्यक अछि)

प्रसंगवश हम ईहो कही जे रचनाक जन्म दू तरहें होइत अछि। एक तँ आत्म-अनुभूति सँ, जे कि प्रत्यक्ष दर्शन आ निरीक्षण पर आधारित होइछ। दोसर, कोनो आन लेखकक रचना पढ़बाक क्रम मे, जखन कि आनक अनुभूति अहाँ कें तेना आविष्ट क' लैए जे अहाँ आत्म-अनुभूतिक तल पर उतरि अबैत छी। ओना तँ एकरा दोयम मानल जाइछ मुदा इतिहास कहैत अछि जे अनेको महान रचनाक जन्म एहू तरहें भेलै अछि। एहि लेल मुदा अहाँ कें सन्तुलन-सिद्ध हएब आ विवेकपूर्ण हएब अति आवश्यक अछि। एकटा दृष्टान्त दै छी। अहाँ लोकनि मे एक प्रतिभाशाली कवि छथि। हुनक अनेक रचना एहनो छनि जकर जन्म दोसरक काव्य-रचना

पढ़लाक अनन्तर भेलनि अछि। कविता ओ परिपूर्णतः हुनक थिकनि मुदा किछु गोटे कें ई कहबाक अवसर भेटि गेलनि जे ओ चोर-कवि थिकाह। हम तँ देखैत छी जे चोर-कवि ओ कदापि नहि छथि। मुदा तखन एना किएक भेल? एही दुआरे भेल जे आनक रचना पढ़िक' अपन अनुभूति मे उतारैत काल ओ आनक आभामण्डल सँ तेना आक्रान्त छलाह जे तकर छाप कविताक दृश्य मे देखार पड़ि गेल। ई वस्तुतः संतुलनसिद्धताक कमी थिक, जकरा क्यो रचनाकार रचिते-रचिते सिद्ध क' सकैत अछि। तात्पर्य जे एक तँ पढ़ल चीज सँ आक्रान्त नहि हेबाक चाही आ जँ हेबो करी तँ से देखार नहि पड़बाक चाही। मुदा तें, पढ़बे छोड़ि दी, ई किन्नहु विधेय नहि थिक।

दोसर गप्प ईहो छै जे हमरा की पढ़बाक चाही, तकर निर्णय बहुत सावधानी सँ करबाक चाही। की पढ़ी, तकर निर्णय हम अक्सरहाँ अपन रुचि आ आवश्यकताक आधार पर करै छी। सभ कथू, सभक पढ़बाक लेल नहि होइ छै। तखन कोन वस्तु हमरा पढ़बाक योग्य अछि से हम कोना बुझबै? सत्संगति सँ आ पल्लवग्राही अध्ययन सँ। यात्रीजी कहल करथि जे लेखककें 500 पृष्ठक पोथी पाँच मिनट मे पढ़बाक अभ्यास करबाक चाही। एहि सँ अहाँ ई निर्णय क' लेब जे ई पोथी हमरा पढ़बा जोग अछि कि नहि। जँ अछि तँ आब मनोयोग सँ पढ़ू, नहि तँ बाते खतम करू।

ओना तँ औ बाबू, लेखक किऐ लिखैए ताहि मे एकटा सिद्धान्त ईहो छै जे दुनियाँ मे जते किताब लिखल गेल जकरा कि ओ (लेखक) पढ़लक, ओहि मे सँ जें कि एक्कोटा किताब ओकरा पूर्णतः मनोनुकूल नहि भेटलै, तें ओ अपन मनोनुकूल किताब हेबाक अभीप्सा मे स्वयं लिखैत अछि।

तँ, एहन-एहन बात छै!

दोसर शिकाइत अछि जे अहाँ सभ समुच्चा दुनियाँक सम्बन्ध मे, ओकर रीति-रेबाज, चालि-प्रकृति, सोच-समझक सम्बन्ध मे, ओकर दर्शन आ परम्परा, ज्ञान आ सम्वेदनाक सम्बन्ध मे बहुतो-बहुत ज्ञान आ जानकारी सँ भरल छी मुदा जेना दीयाक तर मे अन्हार होइ छै तहिना अपन मिथिलाक सम्बन्ध मे अहाँक जानकारी बहुत कम अछि, अगम्भीर

अछि। जे सभ सँ पहिने हेबाक चाही से सभ सँ अन्त मे अछि वा किछु गोटे कें तँ अछियो नहि। नहि नहि, ई नहि उचित विचार!

मिथिला कें ल' क' अहाँक सोच आ विद्यमान यथार्थ पर हमरा बहुतो किछु कहबाक अछि। से हम अगिला पत्र मे कहब। एखन तँ हम एतबे कहै छी जे दुनियाँ मे हरेक सम्वेदनशील व्यक्ति कें अपन हेबाक (अस्मिताक) औचित्य ताक' पड़ैत छै जे कि पृष्ठभूमिक ज्ञानक बिना सम्भव नहि अछि।

ध्यान राखब जे अहाँ जेहन केहनो छी से अपन परम्पराक विकास छी। जँ अहाँ बहुत क्रान्तिकारी छी तँ ताकला पर देखबै जे क्रान्तिकारिताक एक सुस्पष्ट परम्परा मिथिला मे रहलैक अछि। जँ अहाँ शीर्ष पर फुलाएल फूल छी तँ से ओहिना नहि भ' सकै छै। फूलक एकटा गाछ अवश्य हेतै आ तकर जड़ि सेहो हेतै।

से अवश्ये अछि। से हमरा लोकनि कें ताकबाक चाही।

(2010)

परम्परा आ लेखक

अहाँ पुछलहुँ अछि जे परम्पराक प्रति नवतुरिया लेखकक की रुख हेबाक चाही। हमर जबाव अछि जे अपन परम्पराक प्रति हमरा लोकनि मे आलोचनात्मक आस्था हेबाक चाही। प्राथमिक बात ई अछि जे आस्था हेबाक चाही। से आस्था केहेन हेबाक चाही, से भिन्न बात थिक।

ई 'आस्था' शब्द बड़ व्यापक। सामान्यतः एकरा विश्वासक लगीच क' क' देखल जाइ छै। लोक कहितो अछि--आस्था-विश्वास। दुनू शब्द मे मुदा, बड़ अन्तर। विश्वास तँ लोक ओहुना, बिना कोनो कारणोक, क' सकैत अछि, करिते अछि। मुदा, 'आस्था'क लेल 'ज्ञान झाक योग पड़ब' आवश्यक। माने बौद्धिक स्तर पर ओकरा प्रति अहाँ सजग होइऐक, तखन भेल--आस्था। अपन परम्पराक प्रति हमरा आस्था हेबाक चाही। से आस्था केहन, तँ आलोचनात्मक। तात्पर्य जे नीक कें ग्रहण करबाक आ अधलाह कें त्याग करबाक बुद्धि आ साहस हमरालोकनि मे हेबाक चाही।

आधुनिक मैथिली साहित्यक जन्म कोना भेल? एकर उत्स के मूल प्रेरणा की छल? खोज कयला पर देखबै जे आरम्भिक दशकक लेखक लोकनिक इष्ट छलनि--अपन परम्परा मे सुधार। एही दुआरे एहि युग कें सुधारवादी युग कहल गेलै। एकर मूल प्रेरक छल--भारतीय नवजागरण। भारतीय नवजागरणक जे प्रभाव मिथिला पर देखार रूप मे पड़लै, तकरे हम 'मैथिली जागरण' कहैत छिऐक। एकरे बदौलत हमरा लोकनि कें आधुनिक मैथिली साहित्य प्राप्त भेल। प्रश्न अछि जे सुधार के जरूरति ककरो किएक पड़ैत छैक? पहिने सँ जे परम्परा चलि आबि रहल अछि, ताहि मे जखन

निर्घेस वस्तु सभक मात्रा बढ़ि जाइत अछि, तखन सुधारक जरूरति पड़ैत छैक। ई निर्घेस वस्तु सभ मृत आ गतिहत्या करै बला होइत अछि एकरा देखार करब साहित्यक मूल दायित्व थिक, एही प्रेरणा सँ आधुनिक मैथिली साहित्यक आरम्भ भेल अछि। सुधारवादी साहित्यक चरम विकास हमरा लोकनि हरिमोहन झाक साहित्य मे देखैत छिऐक। निर्घेस वस्तु सभ कें ओ सर्वाधिक त्वराक संग आ बेस निर्मम ढंग सँ देखार केलनि, तें हुनकर साहित्य एतेक महत्वपूर्ण अछि। आगू चलि क' जबाना बदलि गेलै। जबाना बदलैत अछि, ताहि मे साहित्योक अपन विलक्षण योगदान जरूर होइ छै। मुदा असल कारक होइत अछि--युग-प्रवृत्ति। युग-विशेषक जे ध्वनि होइ छै से तमाम माध्यम सभ संगक एक्कहि द्वारा अनुगूंजित होइ छै। एक जिम्मेदार लेखक सँ ई आशा कएल जाइत अछि जे ओ बदलैत युगक ध्वनि कें ठीक-ठीक अकानय, अखियास करए। पॉजीटिव आ निगेटिव तत्त्व सभ कें बेराबए। पॉजीटिव कें प्रोमोट करए आ निगेटिव के तर्कसंगत ढंग सँ खण्डन करए। दोसर एकटा रस्ता छै जे युगक पॉजीटिव ध्वनि मे जे सौन्दर्य, जे आदर्श निहित छै, तकरा अपन रचनाक माध्यम सँ प्रकाश मे आनए। यात्रीजी यैह काज केलनि।

आगू चलि क' अपन साहित्य मे एकटा एहनो युग आएल, जखन परम्पराक सम्पूर्णतः निषेधक मांग कएल गेल। जतेक गतिहत समाज छल मिथिलाक, तकरा देखैत 'सामाजिक सुधार' कें ई लोकनि पर्याप्त नहि मानैत छलाह। हिनका लोकनिक मतें आवश्यकता छलै--सामजिक परिवर्त्तन के। ई पीढ़ी बहुत पढ़ल-लिखल लोकक पीढ़ी छल। ई लोकनि प्रश्न उठौलनि जे परम्परा माने की? एकटा सड़ल लहास, जाहि मे सुधारक आशा क्यो बताहे लोक क' सकैत अछि। परम्परा जँ किछु थिक तँ किछु सुविधाभोगी लोकक इच्छा-पूर्ति आ विलासक साधन थिक। ओ लोकनि कहलनि जे युगक संग चलबाक लेल सामाजिक परिवर्तन आवश्यक थिक। व्यापक समाजक हित एही सँ सधि सकैत अछि। एहि पीढ़ीक नेतृत्वकर्त्ता राजकमल चौधरी छला।

ध्यान सँ जँ अहाँ देखब तँ पाएब जे बात ई बहुत उचित आ व्यावहारिक छल। कतेक डोज के दबाइ पड़बाक चाही, ई एहि बात पर

निर्भर करैत अछि जे रोग कतेक जड़िआएल अछि। मिथिलाक रोग ततेक जड़िआएल छल जे निषेधक मांग जरूरी छल। युगक संग चलबाक लेल अहाँ तैयार नहि छी, कारण जे बाप-ददा सँ अहाँ कें बहुत मोह अछि। ई परम्पराक बचल रहबाक कोनो तर्क तँ नहि भेलै। माने जे तर्कहीनता। परम्परावादी लोकनिक सभ सँ प्रधान तर्क थिक--तर्कहीनता। ओ लोकनि एही पर प्रहार केलनि। आब हमसभ युगक समक्ष ठाढ़ छी तँ अपन पूर्वज लोकनिक आशय कें बुझैत छी। निशां मे मातल समाज कें चेतेबाक लेल पूर्ण निषेधक नारा जरूरी छै। ओ लोकनि ठीक कहै छला। मुदा जुलुम बात जे हुनका लोकनिक रचना कें देखू तँ परम्परा ओहूठाम विद्यमान भेटत। अपन सम्पूर्ण निहितार्थक संग। मुदा कमाल, जे ओ परम्पराक निषेध केलनि। बेसी की कहू, आशय पर जेबाक चाही। कथित शब्दे टाक ओझरा मे फँसबा सँ बचबाक चाही।

आब हमसभ साहित्यक द्वार पर ठाढ़ छी आ कहै छी जे लेखक कें परम्पराक प्रति आलोचनात्मक आस्था सँ परिपूर्ण हेबाक चाही। सुधारक फेज बीति चुकल अछि। आब सुधार कएल नहि जा सकैछ। निषेध सेहो उचित नहि थिक, कारण हमर परम्परा आइ मात्र परम्परा नहि रहल, हमर अस्तित्वक अस्मिता (आइडेन्टिटी) बनि गेल अछि। एहि भूमण्डलीकृत आ बाजारवादी समय मे जँ हमसभ जीयब, आ अपन पहिचान ताकब तँ से हमर परम्परा आ, सैह टा भ' सकैत अछि। आब परम्पराक निषेध नहि, ओकर पॉजीटिव तत्त्व सभक समाहार चाही हमरा, हमर अपन पहिचान प्रख्यापित करबाक लेल, सौंसे दुनियाँ मे। एहना स्थिति मे की करबाक चाही? नीक कें पकड़बाक चाही, अधलाह कें छोड़बाक चाही। बिना कोनो मोहक। बिना कोनो ममताक।

मुदा, प्रश्न अछि जे परम्परा माने कोन परम्परा? ध्यान सँ देखबै तँ पाएब जे परम्परा कौखन एकटा नहि होइ छै। सभ युग मे ई चलन रहल अछि जे एकटा जँ मुख्यधाराक परम्परा, तँ दोसर अवान्तर परम्परा अथवा अंतःसलिला परम्परा। एकटा खिस्सा हमरा एहिठाम मोन पड़ैत अछि। खिस्सा थिक शान्तिनिकेतनक। गुरुदेव टैगोर के युगक। एकबेर की भेल जे आश्रम मे काज कर'बाली एक विधवा ब्राह्मणी युवती एक आन स्टाफ

सँ प्रेम करै छली। रवीन्द्रनाथ एहि प्रेम कें लक्ष्य करै छला। रवीन्द्रनाथ कें चिन्हैत छियनि? आधुनिक भारतीय साहित्यक ओ एहन अनुपम लेखक थिकाह, जिनका मे परम्परा, राष्ट्रीयता आ वैश्विकता--तीनूक तूलमतूल संतुलित विकास हमरा लोकनि कें भेटैत अछि। सही माने मे ओ एक 'भारतीय लेखक' छला। आ, से रवीन्द्रनाथ शुद्ध हृदय सँ चाहै छला जे जँ संभव हो तँ एहि दुनूक विवाह भ' जेबाक चाही। मुदा संकट ई जे ब्राह्मण-समाज मे विधवा-विवाह मान्य नहि। व्यवस्था जँ क्यो देताह, तँ से क्यो पण्डिते। गुरुदेव आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कें बजौलनि। हजारी बाबू महान लेखक तँ छलाहे, तकरा संग-संग बड़ भारी ज्योतिषी सेहो छला आ 'पण्डितजी'क नामें मशहूर छला। गुरुदेव पुछलखिन--विधवा-विवाहक सम्बन्ध मे अपन परम्परा की कहैत अछि? पण्डितजी शास्त्र सभक अवलोकन केलनि आ जा क' कहलखिन--परम्परा आज्ञा नहि दैए। गुरुदेव मुदा, बहुत सहानुभूतिपूर्ण छला। बजला--पण्डितजी, कोन परम्परा आज्ञा नहि दैए? अहाँ तँ कोनो एक परम्पराक बात कहैत छी। सभ परम्पराक तँ अपन-अपन मान्य आचार्य सभ छथि। हम ई कोना कहि सकै छी जे एक परम्पराक आचार्य हमर आदरणीय आ दोसर परम्पराक आचार्य निषेध्य? कने देखि क' कहू जे दोसर परम्परा की कहैए? अगिला दिन हजारी बाबू दोसर-दोसर परम्पराक आचार्य लोकनिक मतक परायण केलनि आ गुरुदेव कें जा क' कहलखिन जे दोसर परम्परा विधवा-विवाहक अनुमति दैए। गुरूदेव कें मानवताक हित मे आ युग-धर्मक अनुरूप जे करबाक छलनि, तकर रस्ता भेटि गेल छलनि।

हमरा लोकनि कें एतबा बुद्धिमान आ विवेकपूर्ण हेबाक चाही जे अपना ओतक समस्त परम्परा हमरा अपन परम्परा बुझना जाय। ब्राह्मण हएब, आ कि ब्राह्मण नहि हएब बिल्कुल आकस्मिक आ निजी मामिला थिक। तहिना, जेना हम राति कें पैजामा पहिरि क' सुतै छी कि लुंगी पहिरि क', ई हमर निजी मामिला छी। युगधर्मक उपेक्षा नहि करबाक चाही। दुनू परम्परा हमर अपने परम्परा थिक। कट्टर सनातनी हेबाक जे थोड़ेक हानि सभ छैक, तकरा सँ आब हमरालोकनि कें मुक्त हेबाक चाही, ई बात जखन हम कहै छी तँ किछु लोक हमरा ब्राह्मण-विरोधी बुझैत छथि। मुदा ताहि

डर सँ की हम ई बात कहब छोड़ि दी जे एकैसम शताब्दीक एहि संश्लिष्ट युग मे हमरा लोकनि कें टिकल रहबाक लेल कोन रणनीति विधेय थिक। दुनू परम्परा हमर अपन परम्परा थिक, से हमरा युगानुरूप समायोजन लेल पॉजीटिव सजेस्ट करय, से ताहिकाल हमरा लेल विधेय थिक। मिथिलाक समन्वित परम्पराक हम अन्वेषी थिकहुँ। सौंसे मिथिला हमर अपन मिथिला थिक। हमर जे समन्वित परम्परा अछि, तकर संरक्षण आ विकासक वास्ते हमरा अग्रसर हेबाक अछि। से आलोचनात्मक आस्था राखि क'। हमरा लोकनि जँ समाजक जागरूक वर्ग छी, तँ हमर यैह कर्त्तव्य थिक।

एखन चहुँदिस उत्तर-आधुनिकता (Post modernism) के खूब हल्ला मचल छै। कहियो अखियास केलियैए जे ई कोन चीज थिक आ एकर दार्शनिक आधार-भित्ति की छिऐक? हम तँ सनातन सँ चलि आबि रहल काल-प्रवाह कें देखै छी तँ लगैए जे ई दुनियाँ लगातार वर्ग-न्याय दिस बढ़ि रहल अछि। पहिने सामन्तवादक युग छल। थोड़ेक लोक ऐश्वर्य-मदमत्त छला आ बहुसंख्यक लोक न्याय सँ वंचित छल। युग बदलल तँ तखन आधुनिकता आएल। एहि बहुसंख्यक न्याय-वंचित लोक मे सँ थोड़ेक कें न्याय भेटलैक। मुदा, की सभ कें भेटि सकलैक? जतेक आबो न्याय-वंचित रहि गेला, तिनका अहाँ 'बहुसंख्यक' सँ कम कहबै? आधुनिकताक तँ सेहो अपन जटिलता छै। लोकतंत्री शासन आ व्यवसाय-मुखी विज्ञान नित्त एकर जटिलता बढ़ौने जाइत अछि। तात्पर्य जे आधुनिकता सँ सेहो समस्त मनुक्ख कें न्याय नहि भेटि सकलैक। एम्हर आबि युग-प्रवृत्ति देखैत छी जे जे कोनो वर्ग वा समूह आधुनिकताक मुख्यधारा मे नहि आबि सकल, छूटल-पिछड़ल रहि गेल, से सभ अपनहि कें अपन केन्द्र मानि, अपन अस्तित्व सँ अपनहि संतुष्ट होइत, अपन दाबीदारी ठोकि देलक। दाबीदारी कथीक लेल? आन कथूक लेल नहि। मात्र एही लेल जे अहाँक सर्टिफिकेटक खगता हमरा नहि अछि। अहाँक नीक कहने ने हम नीक आ खराब कहने ने हम खराब भ' सकैत छी। हम जे छी, स्वयं मे पूर्ण आ महत्त्वपूर्ण छी। एक तरहक स्वयंभू आत्मविश्वास एकरा अहाँ कहि सकै छिऐक। सौंसे दुनियाँ मे, सभ देश, सभ वंचित समुदाय मे आइ ई प्रवृत्ति देखल जा रहल

छै। ई स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श आदि-आदि की थिक? क्षरणशील पर्यावरणक चिन्ता, विलुप्त होइत जीवजन्तु-वनस्पतिक चिन्ता, अप्पन जड़ि कें चिन्हबाक चिन्ता--ई सभ की थिक? आजुक युगक प्रवृत्ति थिक। आधुनिकताक विफलताक पश्चात जे प्रतिक्रिया सभ सौंसे दुनियाँ मे भेल अछि, ई तकर देन थिक। मुक्त बाजार एकरा अपना लेल नीक बुझैए, से एक बात। दोसर दिस मार्क्सवाद एकरा शंकालुताक दृष्टियें देखि रहल अछि। कारण, एहि बात मे ओकरा संदेह बुझाइत छै जे एहि बाट पर चलने वंचित समुदाय अपना लेल न्याय प्राप्त क' सकत। अस्तु, एहि पॉजीटिव-निगेटिव के तसफिया चिन्तक लोकनि अपन करथु। युग-प्रवृत्ति तँ जे थिक, से थिक।

स्त्री-विमर्शक प्रसंग कें लिय'। मिथिलाक गामो घर मे आइ अहाँ देखबै जे अहाँ छोट उमेर मे बेटीक बियाह करियौ तँ स्वयं बेटिये अहाँक प्रबल विरोधी भ' क' ठाढ़ भ' जाएत। कहुना ठकि-फुसिया क' जँ अधलाह वर संग बियाह कराब' लगियौ तँ मड़बा पर सँ भागि पड़ाएत। अनजाति संग बियाह करबाक दण्डस्वरूप जँ ओकरा चाँप चढ़ा क' मारि दियौ तँ पुलिस-कचहरी तँ छोड़ू, सौंसे दुनियाँक समाज तेना क' क' अहाँक दुश्मन भ' जाएत जे लाख घूस-पेंच लगाइयो क' बचि नहि सकब। एखन निरुपमा पाठकक हत्या-काण्ड मे यैह भेल अछि।

एहना स्थिति मे लेखकक की दायित्व थिक? पहिने तँ अहाँ पॉजीटिव-निगेटिव के निर्णय करू। आ, अहाँक जे समन्वित परम्परा अछि, तकरा संग युगक पॉजीटिव ध्वनि कें जोडू। युगक मोताबिक जकर औचित्य बनैत होइक, तकरा अपन समर्थन दियौ। रचनात्मक लेखन (Creative writing) मे ओकरा उतारू जे अहाँक समाज एहि युगक संग कोन तरहें समायोजन बैसा सकैत अछि। की अहाँ के बूझल अछि, यात्रीजी 'लिव-इन-रिलेशनशिप' के समर्थन केने छलखिन। आ, नवतुरिया लेखक लोकनि सँ अपील सेहो केने छलखिन जे एकर सकारात्मक पक्ष पर ओ लोकनि कथादि लिखथु। मुदा, मैथिलीक ई दोसर पहलू सेहो देखू जे हमर चुनौटा मंचीय हास्यकवि, जनक जी महाराज जान-प्राण अड़पि क' स्त्री-विमर्शक विरोध करैत छथि, जागरूक होइत स्त्रीक एक सँ एक हास्यास्पद आ वीभत्स वर्णन क' क' पुरुख श्रोता लोकनि कें हँसी लगबैत

छथि। स्त्री लोकनि एहि पर की सोचैत हेती? अहाँ पुरुख छी तँ स्त्रीक निन्दा तँ करबे करबै। युग-युग सँ करैत एलियैए। सोचू, एहि तरहें एकभग्गू भ' क' चलने की हम अपन घरोक रक्षा क' सकब? समाजक रक्षाक तँ बाते छोड़ू। हम तँ बन्धु, यैह कहब जे युग-प्रवृत्ति सँ आँखि मूनि क' हमरालोकनि युगक सामना नहि क' सकैत छी।

अपन परम्पराक प्रति दृष्टिकोण कें हमरा लोकनि आलोचनात्मक कोना बनौने राखि सकैत छी, तकर एक बहुत सटीक दृष्टान्त एखन हाल मे सामने आएल अछि। ई पण्डित गोविन्द झाक नवीनतम शोधक परिणाम थिक। पण्डित गोविन्द झा कें अहाँ 'चिन्है' छियनि? ओ आयुवृद्ध भने होथु, मुदा कोनो युवे-सन ओजस्वी-तेजस्वी छथि। उत्साह आ उत्सुकता सँ एकदम भरल-पुरल छथि, जे हुनका सदति नव-नव संधान-अनुसंधान लेल प्रेरित करैत रहैत छनि। ओ विद्यापतिक विशेषज्ञ छथि। हमरा मोन पड़ैए, आचार्य रमानाथ झा भारी मन सँ कतहु लिखने छथिन जे विद्यापतिक विशेषज्ञ, समूचा संसार मे आब एक हमही टा बचि गेल छी, आन ककरो मे तकर प्रवृत्तियो नहि देखैत छिऐक। मैथिलीक सौभाग्य जे हुनका बादो, आइयो पण्डित गोविन्द झा-सन अनुसंधानी पुरुष हमरा लोकनिक बीच छथि। पण्डित जीक एक नव पोथी एहि बीच बहार भेलनि अछि--'अनुचिन्तन'। एहि पोथी मे एक लेख अछि--'विद्यापतिक प्रसंग'। एहि लेख मे ओ विद्यापति-गीतक मादे अपन नवीनतम शोधक किछु निष्कर्ष प्रस्तुत केलनि अछि।

हमरा लोकनि अवगत छी जे विद्यापति-गीतक छव गोट प्राचीन स्रोत अछि--रामभद्रपुर तालपत्र, नेपाल तालपत्र, तरौनी तालपत्र, भाषागीत-संग्रह, रागतरंगिणी आ हरगौरी-विवाह। हमरा लोकनि एहू बात सँ अवगत छी जे मध्यकालीन मिथिला मे दर्जनो एहन ज्ञात-अज्ञात-अल्पज्ञात कविलोकनि भेला जे गीत-रचना केलनि। बाद मे हुनको लोकनिक गीत जे भेटल तँ ताहि मे 'भनहि विद्यापति'क भनिता जोड़ल अथवा विद्यापतियेक गीत-रचनाक रूप मे प्रसिद्धि-प्राप्त। हमरा लोकनिक परम्परा गौरवपूर्वक स्वीकार केलक जे ई सभटा गीत विद्यापतियेक छियनि। तखन, आब? आलोचनात्मक आस्था जँ हो तँ तकर मांग थिक जे हमर विशेषज्ञ लोकनि निर्णय करथु

जे सत्य की थिक। पण्डितजी सैह केलनि अछि। विद्यापति-गीतक निर्लेप पहिचान देखार करबाक लेल ओ एक कसौटी बनौलनि अछि। विद्यापतिक निर्विवाद प्राचीन गीत सभक तुलना मे अन्यान्य गीतक विश्लेषण जँ (1.) भाषा (2.) शब्द (3.) शैली (4.) अन्त्यानुप्रास (5.) भनिता मे पुनरुक्ति (6.) भाव (7.) आ, महाभाव--एहि सभक आधार पर कएल जाय, तँ ठीक-ठीक निष्कर्ष निकालल जा सकैए जे कोन गीत विद्यापतिक थिक कोन नहि। पण्डितजी सैह केलनि अछि। हुनक अनेक निष्कर्ष(कुल 48 सुप्रसिद्ध गीत कें ओ विद्यापति सँ भिन्न कविक रचना मानलनि अछि) सभ मे सँ एक निष्कर्ष ई थिक जे 'जय जय भैरवि' विद्यापतिक गीत-रचना नहि थिक। तखन, आब? जानिते छी जे ई गीत मिथिला मे राष्ट्र-गीत-सनक गौरव-महिमा हासिल क' लेने अछि। एकरा लोक तेना क' विद्यापतिक गीत मानि लेलक अछि जे सपनो मे नहि सोचि सकैछ जे ई विद्यापतिक गीत नहियो भ' सकैत अछि। प्रायः एही परिस्थिति कें गमैत, पण्डितजी अपन लेख मे ईहो विनम्र वचन जोड़लनि--*'प्रथमदृष्ट्या तँ इएह प्रतीत होइत अछि जे ई गीतसभ विद्यापतिक रचना नहि भए सकैत अछि। परन्तु हमरा से कहबाक साहस नहि होइत अछि किएक तँ सम्भवतः हमरा छाड़ि प्रायः सभ कें प्रगाढ़ विश्वास छनि जे ई गीत विद्यापतिक रचल थिक। विश्वासे नहि, सभ कें एहि गीतसभ पर प्रगाढ़ आस्था सेहो छनि। हम कथमपि नहि चाहब जे कनिको आस्था पर चोट पड़य।'*

पण्डितजी कें कहबाक साहसो भेलनि अछि आ हमरा लोकनिक आस्था पर चोटो नहि पड़ल अछि। कारण, मात्र आस्था नहि, हमरा लोकनि अपन परम्पराक प्रति आलोचनात्मक आस्था रखैत छी। जे सत्य थिक, से तँ अन्ततः सत्य थिक। आ, ओकर अपन लाभो तँ छै। आइ धरि दुनियाँ कहैत छल--मिथिला कें विद्यापति छोड़ि क' आर की छै? पद्धतिबद्ध ढंग सँ उद्‌घाटित सत्य दुनियाँ कें जवाब द' सकैत अछि जे मध्यकालो मे, एक विद्यापतिये नहि, मिथिला कें बहुत किछु छलैक।

(2010)

शास्त्र आ जीवन

अपन एहि आलेखक प्रारम्भ हम एक संस्मरण-प्रसंग सँ करए चाहब।

1987-88 मे हम संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगाक रिसर्च-स्कॉलर रही। थीसिस हम लिखि चुकल रही। विधिवत डिग्री पएबाक हेतु किछु कर्मकाण्ड सभ हेबाक रहै छै। से भ' रहल छल। हमरा बरोबरि दरभंगा जाय-आबए पड़ै छल।

से, एक बेरुका वृत्तान्त थिक जे हमरा लोकनि साहित्य विभाग मे बैसल रही। वेदाचार्य जी गप-सप करबाक लेल ओहि काल मे साहित्य विभाग आएल रहथि। परम निष्णात वैदिक रहथि ओ। जेहने विशालकाय हुनक शरीर आ खास तौर पर धोधि, तेहने भयानक पकड़ हुनक वेदशास्त्र पर। विद्यार्थी लोकनि मे ई चुटुक्का प्रसिद्ध छल जे जँ वेदाचार्य जीक कुरता उठा क' देखल जाय तँ हुनक धोधि चारि गोट स्वतन्त्र कोठलीक आकारक देखार पड़त। ओ चारू कोठली चारू वेदक बखारी छिऐक। तात्पर्य ई जे चारू वेद हुनका लेल हस्तामलकवत् छलनि। संस्कृत विश्वविद्यालय मे हुनक डंका बजै छल। कहि नहि, ओहि डंकाक प्रतिध्वनि देश मे कतय धरि सुनाइ पड़ै छलै!

से, ओहि दिन जे गपसप होइ छल, से कोना-ने-कोना राजनीति पर चलि आएल। सुच्चा-सुच्ची राजनीतियो ओकरा नहि कहल जाय। देश-दशा कहल जाय। तँ से ताहि विषय पर गप चलए लागल। उचिते छल जे वेदाचार्य जी देश-दशा सँ बहुत रुष्ट छलाह। हुनका दृष्टि मे देश रसातल मे पहुँचि चुकल छल आ एकरा लेल सभ सँ जवाबदेह 'प्रधानमंत्रिणी'

(हुनके शब्द मे) छलीह। ओ अपन साफ-साफ अभिमत प्रकट कएलनि जे स्त्रिगणक काज चूल्हि-चौका देखब थिक आ से जँ देशक प्रशासन कें चलबए लागए तँ देश रसातल नहि जाएत तँ कतए जाएत?

हुनक गप सुनि कए आर गोटे तँ मुस्कियाएल रहथि मुदा हम भयानक ढंग सँ चौंकि पड़ल रही। अरे! तँ की आचार्य कें बूझल नहि छनि जे इन्दिरा गांधी आब भारतक प्रधानमंत्री नहि छथि। प्रधानमंत्री रहब तँ दूर ओ आब जिबितहु नहि छथि। आ ओ जे मुइलीह से हुनक सहज मृत्यु नहि भेलनि। हत्यो तखन भेलनि जखन कि ओ गद्दी पर छलीह। हुनक हत्या कें देश पर आएल महान विपत्तिक रूप मे प्रसारित कएल गेल। फलस्वरूप भीषण दंगा भेलै सौंसे देश मे। हजारक संख्या मे हिन्दू आ सिक्ख मारल गेल। बुझू इतिहास घिना गेलै। फेर चुनाव भेल। इन्दिरा गांधीक बेटा प्रचण्ड बहुमत सँ जीति क' प्रधानमंत्री भेलाह। हत्यारा जे पकड़ल गेल, तकरा पर केस चलि रहल छै। सनसनीखेज मामला अछि। रोज अखबार मे छपैत रहै छै। वेदाचार्य जी कें किछु बूझल नहि छनि की?

हमर ई पुरान हिस्सक अछि जे बात कें पचाएब हम नहि जनै छी। एतेक प्रतिक्रिया हमरा मोन मे भेल तँ हम आन गोटे जकाँ मुस्किया क' नहि रहि सकै छलहुँ। हम आचार्य जी कें कहलियनि-'गुरुजी, इन्दिरा जी तँ मरि गेलीह। हुनका हत्याक बाद की-की ने भेल! देशक इतिहास कतेको नव अध्याय देखि चुकल। आब तँ हुनक बेटा प्रधानमंत्री थिकथिन। अपने कें नहि बूझल अछि?

हमर ई प्रश्न सभ गोटे कें अप्रिय लागलनि। मुदा, ईहो हमर पुराने हिस्सक थिक! हम उमेद करैत रही जे गुरुजी आब थोड़े अप्रतिभ हेताह, झेंपब जकरा कहै छै हिन्दी मे, तकरो थोड़े भाव हुनका आकृति पर अभरतनि, तखन ओ खेद प्रकट करताह आ हमरा पुछताह--एँ औ बाबू, की सभ भेलै एते दिन मे?

मुदा नहि, ई हमर सदिच्छा भ' सकै छल, परिस्थितिक विद्यमानता नहि। वेदाचार्य जी सूखल-टटाएल-सन हँसी हँसए लगलाह (जकरा कठहँसी सेहो कहल जा सकै छल कदाचित) आ बजलाह-'बौआ, हमरा लेल देशक इतिहासक आब कोन अर्थ? कतबो अध्याय व्यतीत होउक,

क्यो जीबौ क्यो मरौ, हमरा कोन मतलब? औ, हमरा लेल तँ एहि देशक इतिहास ओही दिन समाप्त भ' गेल जहिया वैदिक-युग समापन कें प्राप्त कएल!'

भ' सकैए जे वेदाचार्य जी 'देशक इतिहास समापन कें प्राप्त कएल' नहि कहने होथि, एकरा बदला 'देशक विकास ओही दिन रुकि गेल' कहने होथि। मुदा, हमरा ठीक-ठीक स्मरण अछि जे ओ कहने धरि छलाह एही आशयक बात।

विश्वविद्यालय मे हुनक धाख रहनि। से हुनकर गप सुनि कए सभ क्यो कहए लगलाह-जी गुरुजी, ठीक कहल गेलै। एकदम्म उचित कहल गेलै गुरुजी!

हमरा जीवनक किछु भीषण अध्याय सभ अछि आ ताहि सभ मे सँ एक भीषण अध्याय ईहो थिक! ओहि क्षण कें हम कहियो बिसरि नहि सकलहुँ। एक अर्थें कहल जाय तँ ओ हमर ज्ञानप्राप्तिक दिन छल।

एहि वृत्तान्त कें जे हम एते रस ल' क' सुनेलहुँ, तँ अहाँ सभ सोचबै जे निन्दावृत्ति मे हमरा आनन्द होइए आ अतीतजीवी प्रकारक लोकक हम विरोधी छी। मुदा, हमर परिस्थिति एहि सँ भिन्न अछि। वेदाचार्य जी तँ पुरान परम्पराक लोक छलाह, पुरान ढंगक पढ़ल-लिखल, पुरान तरहें सोचै-विचारैबला लोक छलाह। हमरा प्रतीत होइए जे हमरा लोकनि जे 'आधुनिक' आ 'प्रगतिशील' आदि तामझामपूर्ण बाना धारण कएने छी, से हमरो लोकनिक हिसाब-किताब वेदाचार्य जी सँ भिन्न नहि अछि। हमहू सभ अतीत मे कतहु ने कतहु ठमकल छी। हमरो लोकनिक कोनो स्वर्णयुग छल, जे व्यतीत भ' गेल आ आब जे परिदृश्य हमरा सभक समक्ष अछि, ताहि सँ हमरो लोकनि कें बहुत अर्थ नहि भेटि रहल अछि। हँ, ई भ' सकैए जे आचार्य जी वैदिक काल मे ठमकल छथि आ हमरा लोकनि भारतीय इतिहासक आधुनिक कालक कोनो चरण मे आबि क' ठमकल छी। कालगत अन्तर भ' सकैए, प्रवृत्तिगत अन्तर हमरा नहि देखार पड़ैए।

विद्वान लोकक यैह गति होइ छै। ओकरा लेल प्रमाण होइ छै ओकर शास्त्र। आब ईहो तँ जरूरिये छैक जे जाहि शास्त्र मे अहाँ परिश्रम कएने छी, तकरा प्रति अहाँ मे प्रतिबद्धता हो। सैह जँ नहि हो तँ ओहि परिश्रमक

की मूल्य? आ, शास्त्र बनै छै कोना? अतीत के अनुभव सभ कें जखन अहाँ सैद्धान्तिक स्वरूप द' दै छिऐ तँ ओ होइए शास्त्र। शास्त्रक अपन बहुतो रास विशिष्टता सभ छैक मुदा ओकर सभ सँ पैघ सीमा यैह छिऐक जे ओ अतीतक अनुभव पर आधारित होइए। तँ, एहना स्थिति मे जाहि शास्त्रक अहाँ निष्णात छी, तकर जे निर्माण-काल छिऐक, ततए अहाँ कें ठमकए पड़त। वैदिक जी जँ वैदिक-काल मे ठमकल छथि तँ मार्क्सवादी लोकनि मार्क्सक काल मे ठमकल छथि।

कोनो कालखण्ड मे ठमकि जएबाक ई हमर उक्ति अहाँ लोकनि कें सरलीकृत-सन लागि सकैए, तें एहि ठाम एकर थोड़े स्पष्टीकरण हम जरूरी बुझै छी। मार्क्स समाजक गँहीर अवलोकन कएलनि। चिन्तन आ विचार कएलनि। स्थितिक आकलन करैत ओ समुच्चा मामला कें एक सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य देलनि। ई जे सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य देनिहार लोक सभ होइ छथि से तत्त्वद्रष्टाक संग-संग भविष्यद्रष्टा सेहो होइ छथि। अतीतक अनुभव के हुनक विश्लेषण तते घनीभूत आ एकाग्र होइ छनि जे भविष्यक एक पूर्वाकलन हुनका सामने स्पष्ट भ' जाइ छनि। एहि तरहें देखल जाय तँ प्रत्येक शास्त्रक परम काम्य मानवजातिक भविष्य-निरूपण थिक। मुदा बन्धु, दुनियाँक जे लोक होइत अछि जे शास्त्र देखि क' भविष्य-यात्रा नहि करैत अछि। पतरा देखि क' जतरा करब किछु आत्मचिन्ताग्रस्त समूहक गुलामी भ' सकैए, मानवजातिक ई स्वभाव नहि थिक। तें सतत एहि बातक आवश्यकता बनल रहै छै जे शास्त्र जँ मानव-जीवनक संग-संग चलबाक आग्रही हो तँ ओकरा मे वर्तमान स्थितिक विश्लेषण आ सिद्धान्तीकरणक उत्साह बचल होइक। आ जँ से नहि तँ नवीन शास्त्रक जरूरति हएत। दुनियाँ मे एते जे शास्त्र बनल से किऐ बनल? एक्के टा शास्त्र पर्याप्त किऐ ने भेलै? एहि दुआरे नहि भेलै जे मानव-यात्रा ओहि ठाम सँ आगाँ बढ़ि गेल। आ, अतीतक ओ सिद्धान्तीकरण ओकरा काजक नहि रहि गेलै। मुदा बन्धु, ई दुनियाँ बहुत अर्थ मे विचित्र अछि आ एक एहू अर्थ मे विचित्र अछि जे आइ जखन कि आसमान मे ध्वनि सँ तेज गति मे उड़ान भरैबला वायुयान चलि रहल अछि, तखन सड़क पर रेल, बस आ एसी कारक संग-संग कठही गाड़ी सेहो चलिये रहल अछि, मानव-रिक्शा

सेहो चलिये रहल अछि। ई केवल भौतिक दुनियाँक स्थिति नहि थिक, वैचारिक दुनियाँक सेहो यैह स्थिति थिक।

ई तँ भेल एहि स्थितिक विवरण जे आइ जँ आँखि खोलि क' हम अपना चारू दिस ताकी तँ भारतवर्षक पाँच हजार बर्खक इतिहास हमरा एक्कहि संग चलैत-बुलैत, जीवन्त रूप मे दृष्टिगोचर हएत। क्यो तीन हजार बर्ख पाछाँ ठमकल रहि सकैत छथि तँ क्यो सए बर्ख पाछाँ। मुदा जँ अहाँ अस्सल विद्धान छी तँ कतहु ने कतहु अहाँ कें ठमकैए पड़त। ई अभिशाप अछि विद्वान कें। विद्वान लोकनि अपन विद्वत्तेक पद्धतिबद्धता सँ अभिशप्त छथि।

अपना लोकनिक भारतीय समाज जे अछि ताहि मे विद्वान कें बहुत सम्मान देल गेलैए। संस्कृतक एक श्लोक हमरा मोन पड़ैए जाहि मे कहल गेलैए जे अनेकानेक उपाधि-धारी लोक सभ जँ सड़क पर चलि रहल होथि, ओहि मे राजा सेहो होथि, विद्वान सेहो, तँ सिद्धान्त कहैत अछि जे सभ सँ पहिने विद्वान कें आगाँ बढ़बाक, सड़क पार करबाक सुविधा देल जयतनि, राजा सेहो स्वयं बिलमि क' हुनका अगुआबए देथिन। अपना मिथिला समाज मे तँ विद्वानक आरो बेसी कदर रहनि। एना किऐ छल, बन्धु? हमरा लगैए जे पुरनो समाज बहुत मारल समाज नहि छल। बदलैत परिस्थितिक संग ओ बदलि रहल छल। मुदा, छल ओ अन्तर्विरोधग्रस्त। शास्त्र ओकरा गछाड़ने छलै। ब्राह्मणवाद ओकरा पजियौने छलै। अप्रासंगिक अतीत के शास्त्रीय व्यवस्था ओकरा अपना सामने झुकबा लेल बाध्य करै छलै। राजा जे होइ छल, तकरा अपन सत्ता-टा सँ मतलब ओहू दिन मे ओहिना रहै छलै जेना आइकाल्हि नेता सभ कें होइत अछि। एहि मे राजाक सहायक बनै छल ब्राह्मणवाद। ब्राह्मणवादी व्यवस्था मे राजा कें ईश्वरक अवतार मानल जाइत छल। अहाँ हमरा ईश्वरक अवतार कहू, अहाँ कें हम मुक्त व्यापारक लाइसेन्स देब--ई परस्पर व्यवस्था छल। आइ जे अमेरिकी दादागिरी चलि रहलैए दुनियाँ मे, से एहि बात कें स्पष्ट करबाक एक दृष्टान्त भ' सकैत अछि। आब ओहि जनताक दशा कें अहाँ अकानियौ! ओ तँ बेचारा कतहु नहि अछि। लय छै ओकरा मे गतिमान जीवनक, मुदा गतिहत जीवनक बहन्ना करबा लेल बाध्य भ' रहल अछि। 'गति'क अर्थ

हएत--मृत अतीत सँ विद्रोह। आ अतीत-द्रोह आ राजद्रोह दुनू एक्के बात भेल।

मुदा बन्धु, मैथिली मे एकटा कहबी अछि जे प्यास ने मानए धोबी-घाट, निन्न ने मानए टूटल खाट। सहज प्रगति जे भवितव्य छै मानवजाति के, तकरा तँ रोकल नहि जा सकैए। कोनो ने कोनो तरीका सँ तँ ओ अपन बाट पकड़त। विद्रोह तँ अवश्यंभावी छै। शासनव्यवस्था चाहे ओ ब्राह्मणवादी होअए कि समाजवादी, सदति ओ विद्रोहक विरोधी होइत अछि तँ तकर एक अर्थ ईहो थिक जे प्रगतिक विरोधी होइत अछि। जे लोकनि, ओहि दिन मे ब्राह्मणवादी सत्ताक एहि चक्रचालि कें नहि बुझलनि अथवा जानि-बूझि क' स्वार्थवश एकरा अंगीकार कएलनि आ से अंगीकरण संस्कार मे तँ भेबे केलै, पद्धतिबद्ध विशेषज्ञता हासिल करबा मे सेहो भेलै, ओ लोकनि भेलाह विद्वान आ ओ लोकनि भेलाह कुलीन। अहाँ कें हम सम्मान दै छी आ अहाँ लग हम झुकै छी, भने से देखाबटिए किऐक नहि होउक, अहाँ अपने मे टर्र रहू आ हमरा अपना अनुसार अपन जीवन जीबए दिय'। समाज मे विद्वानक आदर जे छल, से एक तरहें ओकरा बेकूफ बनेबाक बहन्ना छल, से हमरा लागैए। शास्त्रीय आचार आ लोकाचारक बीच सभ दिन दूरी बढ़िते गेलै, से एही दुआरे सम्भव भेल। हमरा बेर-बेर लगैत अछि जे शूद्र लोकनि सौभाग्यशाली छलाह जे हुनका अधिकांशतः ब्राह्मणवाद अवर्ण-कुवर्ण कहि कए बकसि देने रहनि। भविष्यक लेल जँ हमरा लोकनि प्रगतिकामी मिथिला-समाजक ढाँचा बनाबए चाही तँ एहि लेल सभ सँ उपयोगी आ उपकारी वस्तु हएत ओ जीवनशैली आ ओ प्रतिसंस्कृति जे ब्राह्मणवादक गछाड़ सँ कमोबेश बचि सकल। शूद्र समुदाय अपन जीवन-दर्शनक रूप मे विकसित कएलक। ई अलग प्रश्न अछि जे ई चीज हमरा लोकनि कें भेटत कतए, कारण ओहि युग मे कलम जँ ब्राह्मणवादक हाथ मे छल तँ जिन्दाबादक रेबाज सेहो ओकरे पक्ष मे रहैक।

मुदा जे रहै से रहै। आइ हमरा लोकनिक युग थिक। हमरा लोकनि कें अपना लेल, अपन सन्ततिक लेल एक विधेय जीवन-मूल्य तकबाक अछि। एतबा होश आ एतबा उत्साह तँ हमरा लोकनि मे हेबाके चाही जे कोनो वस्तु कें हम ओही ठाम ताकी जतए ओकर हेबाक सम्भावना बनैत

हो। एहन तँ नहि हो जे हमरा दबाइ किनबाक हो, आ से किनबाक लेल हम हार्डवेयर के दोकान मे जाइ!

(1998)

बाल-साहित्य पर किछु गपसप

हमरा ई दुख सालि रहल अछि जे हमरा लोकनि मे सँ कतेको, यदा-कदा बाल-साहित्यो लिखैत रहबाक अछैत, ठीक-ठीक ई नहि बुझैत छथि जे बाल-साहित्य आखिर थिक की? ओ लोकनि, 'आम'क तुक 'लताम' संगे बैसा देबे कें बाल-साहित्य मानि लैत छथि। नहि नहि। तुक तँ अहाँ बैसा देबै मुदा भाव कत' सँ अनबै? आ, बिनु भाव भरने ओ की प्राणवन्त रचना भ' सकै छै? आ, प्राण जँ रहलै नहि तँ ओ की बाल हृदय धरि पहुँचि सकतै? मुख्यधाराक (चेतन लोकनिक) साहित्य मे कतेको बेर एहन होइ छै जे प्राणहीनो रचना स्थान पाबि जाइ छै। तकर कारण साहित्येतर होइ छै। हमर अपन लोकक लिखल छी, अपन गुटक, अपन खेमाक तँ हम ओकरा फूकि क' फुक्का बना देलियै। पाठक जँ क्यो कतहु अछियो तँ से कि तँ चुप अछि अथवा चकित। एना बाल साहित्य मे नहि चलि सकैत अछि। आइयो धरि, ई शुद्धरूप सँ पाठक पर आश्रित साहित्य-लेखन छी। एकर समीक्षाक लेल कोनो आलोचना-शास्त्र विकसित नहि छै। कोन्नहु आलोचक कें ने तँ हुनर छनि आ ने बेगरता, जे ओ बाल-साहित्यक समीक्षा करथि। से मैथिली-ए टाक स्थिति नहि समस्त भारतीय भाषाक स्थिति थिक। जँ कदाचित क्यो आलोचक कोनो समीक्षा लिखियो देलनि तँ ओ (समीक्षा) चेतन लोकक लेल हेतनि, बाल-पाठक कें एहि सँ कोनो लाभ हेतनि, से ने तँ बाल पाठक मानै छथि आ ने बाल-लेखके। एहना स्थिति मे कहल तँ यैह टा जा सकैत अछि जे जे बात हृदय सँ बहराइत छै, सैह टा हृदय धरि पहुँचि पबैत छै। बाल साहित्यक लेखन लेल

चाही--बाल हृदय, बाल-मन। जाहि आयुवर्गक बच्चा कें टारगेट क' क' लेखक लिखलक अछि, तकरा ठीक-ठीक अनुकूल भाषा आ शैली चाही, कथन-भंगिमा चाही। बिम्ब आ प्रतीकक जँ प्रयोग होअए तँ ओहने जे ओहि बच्चाक लेल सुपरिचित होअए। कथन-शैली ओहन व्यवहार कएल जाय जे ओहि बच्चाक लेल रेहल-खेहल होइ। व्यंग्य होअए तँ कतबा, जतबा कें ओ ठीक-ठीक पकड़ि पाबए। इतिहास आ परम्परा आबए तँ ओतबे जतबा ओकरा लेल सुपरिचित-सन होइ। आ, सभ सँ बढ़ि क' तँ बात ई जे एहि सभ कथू कें लेखन-बद्ध कएल जाय तँ एना, एहि तरहें जे बाल मन पर ओ अपन एक आभामण्डल काएम क' सकय। एतेक रुइया के धुनत? ताहू मे, एहना स्थिति मे, जखन कि बाल-लेखकक लेल समाज मे आ कि साहित्य मे कोनो सम्मानजनक स्थान नहि छै। ओकरा लेखन कें दोयम क' क' बूझल जाइ छै। जँ आन्तरिक बेगरता अथवा अतिरिक्त खांहिस नहि हो तँ कहू जे के एहि दिस हुलकी देत?

मुदा, दोसर दिस देखी तँ बुझना जाएत जे मैथिली साहित्य कें जँ अहाँ भविष्य मे जीवित देख' चाहै छी तँ काल्हि तैयार होब' बला पाठकक तैयारी लेल हमरा लोकनि कें आइ उद्यम करब अपरिहार्य भ' गेल अछि। आजुक बच्चा जँ आइ कोनहुना मैथिलीक किछु पोथी पढ़ि गेल, वा कही जे जँ हमरा लोकनि बच्चा सँ मैथिली पोथी पढ़बा सकलहुँ तँ काल्हि ओ बच्चा भने कारपोरेट अमेरिका मे एम. डी. हो आकि गाम मे खेती करैत हो, मैथिली ओकरा लेल कोनो अबूझ, कोनो अज्ञेय वस्तु नहि रहि जेतै।

समस्याक आकलन हमरा लोकनि दू टा बात कें देखि क' क' सकैत छी। आइ ग्लोबलाइजेशनक जबाना छै। नित्तह छोट-छीन भाषा सभक मृत्यु भ' रहल छै। लोक जे अछि आजुक तकरा व्यक्तित्व मे गंभीरताक जगह एक निर्लज्ज उत्थरपन व्याप्त छै। लेकिन, दोसर दिस ईहो देखि रहल छी जे आगू बढ़ल लोक मे अपन आइडेन्टिटीक प्रति, अपन भाषा आ संस्कृतिक प्रति लगाव सेहो तहिना बढ़लैक अछि। कोनो एहन लोकक कल्पना करू जे आर्थिक आ बौद्धिक रूप सँ सबल अछि आ ओकरा हृदय मे अपन भाषा-संस्कृतिक प्रति बहुत ममता छै। मुदा दुखद बात ई थिक जे ओकर ममता मैथिलीक कोनो उपकार नहि क' पाबि रहल अछि। ओ

मैथिली पढ़ि नहि सकै छथि, उसरिते नहि छनि। आधुनिकीकरण के दौर मे अपना मातृभाषा कें अयोग्य आ अक्षम मानि क' ओ ओकरा त्यागि देलनि। मुदा आइ उत्तर आधुनिकताक एहि दौर मे ओ अपन 'आइडेन्टिटी' तकैत छथि आ मातृभाषा सँ जुड़' चाहैत छथि। हिनकर तँ हालनि जे छनि से छनि। मुदा, हिनकर बच्चा सभक की हालति हेतनि? हुनका सभक मिथिला आ मैथिली कोन मिथिला-मैथिली हेतै? किताब मे लिखल बला? आ कि गमार लोक सभ द्वारा बाजल जाइबला? तें कहलहुँ जे एहि बच्चा सभ धरि, कोनो ने कोनो तरहें प्रवेश बनाएब, हमरा सभक भविष्य लेल, हमर साहित्यक भविष्य लेल अपरिहार्य छै।

आइ मैथिली बाल साहित्यक की स्थिति अछि? एक वाक्य मे जँ कही तँ कहब जे गुणवत्ता आ स्तरीयता मे अवश्य ई उच्च कोटिस्थ अछि, मुदा गतिविधि, प्रकाशन आ प्रसार मे ई अतिशय दुर्गत अवस्था मे अछि, ताहि मे एकर तुलना कश्मीरी वा संथाली संग कएल जा सकैए।

इतिहास उनटा क' देखियौ तँ गौरवशाली अतीत छै मैथिली बाल साहित्यक। एहि भाषा मे आधुनिक गद्यक श्रीगणेशे बाल साहित्य सँ भेल अछि। हमर आशय अछि--विद्यापतिक 'पुरुषपरीक्षा'क चन्दा झा-कृत मैथिली अनुवाद। अहाँ कें आश्चर्य नहि हो, पुरुषपरीक्षा घोषित रूप सँ एक बढ़ियाँ बालसाहित्य थिक, जकर लेखन-उद्देश्य फड़िछाबैत विद्यापति कहने रहथि- 'शिशूनां सिद्ध्यर्थम्'। मुदा, ई बात बहुत पुरान बात भेल। मैथिली मे, बालसाहित्यक क्षेत्र मे सभ सँ बेसी सक्रियता हमरा लोकनि साठिक दशक मे देखैत छिऐक। ओ जुग छल जखन हमर पैघ-सँ-पैघ रचनाकार बच्चाक लेल लिखलनि। यात्रीजी, राजकमल चौधरी, धीरेन्द्र, रामदेव झा आदि-आदि-आदि। मैथिली मे लिखल सभ सँ सुन्दर बालकथा ओही पीढ़ीक लिली रेक लिखल छनि। बच्चाक लेल तहिया पत्रिका छल- 'बटुक' आ 'धियापुता'। एकर अपन उज्ज्वल इतिहास छै। 'मिथिला मिहिर' मे स्थायी स्तम्भ छलै। मुदा गौर कएल जाउ। ई सभटा बात तहियाक छी, जहिया मिथिलाक साक्षरता-दर एकैस प्रतिशत रहय। आइ अड़तालिस प्रतिशत अछि तँ वाजिब छलै जे गतिविधि मे आरो बढ़ोत्तरी होइत। कने इहो ध्यान देल जाय। एकैस सँ जे अड़तालिस प्रतिशत भेल

अछि, एहि बढ़लाहा प्रतिशत मे ओहू परिवार सभक बच्चा शामिल छै, जकरा खन्दान मे पहिल बच्चा पैदा भेल जे 'अ-आ' आ 'क-ख' लिखब-पढ़ब सिखलक। एहि बच्चा सभ कें हम सभ ककरा भरोसें छोड़ने छिऐक? ई बच्चा सभ काल्हि पैघ हेता। आइ जँ मैथिली संग हिनकर चिन्हारए कायम नहि भ' सकल तँ काल्हि भ' सकत, तकर सम्भावना हमरा पाँचो प्रतिशत देखार नहि पड़ैत अछि। तें हम कहैत छी, आजुक जुग मे जे बड़का लोक छथि, आ जे छोटका लोक छथि--दुनूक बच्चाक हृदय मे हमरा सभक प्रवेश अपरिहार्य अछि, कारण एही पर मैथिलीक भविष्य टिकल अछि। एना कहिया धरि चलत जे लेखक द्वारा, लेखकक लेल, लेखकक उद्यम सँ लेखकीय स्तर पर हमरा सभक साहित्य समेटल रहत आ तकरा हम सभ गौरवक संग 'मैथिली साहित्य' कहबैक?

आब बचल बात स्तरक। हम पहिनहि कहलहुँ जे मैथिली मे जे श्रेष्ठ बाल साहित्यक रचना भेल छैक से कोन्नहु टा भारतीय भाषाक उच्चकोटिस्थ रचनाक समानान्तर राखल जाइ जोग अछि। एहि लेल हमरा सभ कें जीवकान्तक कविता, लिली रेक कथा, मणिपद्मक उपन्यास आदि देखबाक अछि।

हमर बात कदाचित अपूर्ण रहत जँ हम थोड़ेक दृष्टान्त अहाँक समक्ष नहि राखि सकी। जीवकान्तक कविता-पंक्ति देखी--

1. बच्चाक पीठ पर लटकल भारी बस्ता पर जीवकान्तक एक कविता छनि-

बस्ता हम्मर भारी अछि
फीता लटकल बाँहिक ऊपर
असली बोझ पछारी अछि।

शिक्षकक बड़ाइ मे जीवकान्त कहै छथि-

पिपरक पात हवा मे डोल
मैडम हमरा देलनि बोल
गगन भसइए नैया चान
मैडम हमरा देलनि कान

अपन देश भारतक प्रशस्ति मे जीवकान्तक एक कविता छनि--

धोन्हि फाड़ि क' उगइ गोसैंया हमर देश मे
चारि रंग के छइ सतभैयाँ हमर देश मे
पर्वत टपि क' पक्षी आबइ हमर देश मे
लोल भिजौलक बहुते जल मे हमर देश मे
हमर देश मे हर आँकुर कें
माटि सुलभ छै
डेन पकड़ि क' ठाढ़ करइ
से हाथ सुलभ छै।

2. लिली रेक कथाक की आस्वादन-क्षमता छै, तकरा लेल हम हुनकर एकटा कथाक आरम्भिक अंश उद्धृत करै छी-

आश्विन राजाक जूता मे थाल लागल रहनि। अतः ओ बाहरे जूता खोललनि। कठरा मे राख' गेला तँ देखलनि ओहि मे एकटा बिलाड़ि अपन दू बच्चाक संग पड़लि। बिलाड़ि बाजल--मियाउँ।

आश्विन राजा कहलनि--ई गंदा जूता रखबाक कठरा थिकइ। हम जूता कत' राखब?

बिलाड़ि बाजल--मिआऊँ।

आश्विन राजा चिकरला--मम्मी! जल्दी आउ।

खैर! जे-से। बेसी दृष्टान्तक झमेला मे हम नहि पड़ब, ने चाहब जे अहाँ पड़ी। बातक मर्म कें बूझी, से हम कहए चाहैत छी। आ, अहाँ जरूर बूझब से हमरा विश्वास अछि।

(2011)

बाल-साहित्यक खगता

(साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (15.11.2010) मे वक्तव्य)

आदरणीय अध्यक्ष महोदय आ मित्र लोकनि, साहित्य अकादेमीक एहि विशेष समारोह मे हम सभ गोटे आइ, एतय एकत्र भेलहुँ अछि। भारतीय साहित्यक जीवन्त-जागन्त उपवन एतय मौजूद अछि, जाहि मे किसिम-किसिम के, रंग-बिरंग के फूल फुलाएल अछि। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ कहल करथि जे हमर भारत माता बीसो-पचीसो भाषा मे बजैत छथि। से ठीके, ओहि भारत माता कें एतय जीवन्त अनुभव कएल जा सकैत अछि। एहन महत्वशाली अवसर पर हम अपना कें एतए, अहाँ सभक बीच पाबि क' गौरवान्वित अनुभव क' रहल छी। हम साहित्य अकादेमी कें, हमर मैथिली भाषाक प्रतिनिधि कें, हुनकर सहयोगी लोकनि कें हृदय सँ धन्यवाद दैत छियनि।

हमरा सँ अनुरोध कएल गेल अछि जे एहि अवसर पर हम अपन किछु अनुभव, किछु चिन्ता अपने लोकनिक बीच शेयर करी। ई जरूरियो बहुत अछि। हमरा लोकनिक भारतीय साहित्य आइ जाहि दौर सँ गुजरि रहल अछि, जे संकट आ चुनौती आइ एकरा सामने विद्यमान छै, तकरा अकानैत तँ ई आरो बेसी जरूरी अछि। बन्धु, हम कोशी क्षेत्रक बसिन्दा छी। हमर मिथिला नदीमातृक देस थिक। कैक गोट नदी सभ सँ घेराएल। एहि मे सँ कैक नदी बहुत विकराल, बहुत मनमौजी नदी छैक। दू दिस सँ एहि नदी सभ पर बान्ह बान्हल गेल छै। अक्सरहाँ एहन होइ छै जे कोनो ने कोनो नदी बान्ह तोड़ि दैत अछि। पानिक भयावह रेला बहि चलैत अछि। लोक जहाँ-तहाँ फँसि

जाइत छथि। सरकारी, गैर-सरकारी एजेन्सी सभ तँ बाद मे पहुँचैए, पहिने तँ ई होइ छै जे लोक आपस मे मिलि-जुलि क' अपन मदद करै छथि, एक दोसराक जान बचबैत छथि। कोशीक विकराल रेती मे जँ क्यो एसकर पड़ि जाय तँ ओकर जान बचब कठिन होइत छैक। एहना स्थिति मे लोक की करै छथि जे एक-दोसराक हाथ मे हाथ ध' क' मानव-शृंखला बना लैत छथि, टेकक लेल दोसर हाथ मे लाठी ल' लैत छथि, आ एहि तरहें सुरक्षित स्थान धरि पहुँचि जाइत छथि। सभ गोटे साइत अनुभव करैत हएब जे आइ हमहूँ सभ, भारतीय साहित्यक साहित्य-कर्मी लोकनि, एहने परिस्थिति सँ गुजरि रहल छी। भूमण्डलीकरणक एहि दौर मे छोट-छोट भाषा सभक नित्तह मृत्यु भ' रहल छै। साहित्य कें निरन्तर अप्रासंगिक करार देल जा रहल अछि। भावाभिव्यक्ति मे एक जाहिल प्रकारक उत्थरपनी चारू दिस देखार पड़ि रहल छै। एत्तेक तेजी सँ दुनियाँ रोज-रोज बदलि रहल अछि जे युग आ काल सँ सम्बन्धित हमरा सभक परम्परित अवधारणा कतोक बेर धोखा मे पड़ैत प्रतीत होइत अछि। ई तँ भेल मुदा एक पहलू। दोसर दिस हम सभ इहो पाबि रहल छी जे हमर जे पीढ़ी युवा भ' क' आइ दुनियाँक मुकाबला करैक लेल तैयार भ' रहल अछि, ताहि पीढ़ी मे अपन आइडेन्टिटी, अपन अस्मिता कें ल' क' एक सात्विक तड़प सेहो साफे देखाइत अछि। एक व्यापक आ परिपूर्ण भारतीयताक समझ ओकर सभक आत्माक मांग बनि रहल छै। तँ, एहि तरहें, ई एक एहन समय थिक जे बूझि लिय' --थोड़े खट्टो अछि, थोड़े मिट्ठो अछि। चुनौती हमरा सभक सामने ई अछि जे एहना परिस्थिति मे हम सभ, आ हमरा सभक साहित्य एहि पीढ़ीक, आब' बला पीढ़ीक कोन काज आबि सकैत अछि? एकटा जबाना रहय जखन बड़का-बड़का लोक छोट-छोट बच्चाक लेल लेखन केलनि। रवीन्द्रनाथ लिखलनि, प्रेमचन्द लिखलनि, जाकिर हुसैन लिखलनि। मुदा, ओ जबाना आब बीति चुकल अछि। एहन हाल मे, एक तँ हम बुझै छी जे संग-संग मिलि-जुलि क' लगातार काज करबाक प्रयोजन छै, दोसर, युग के चुनौती कें एहि तरहें स्वीकार करब सेहो जरूरी छै जे आगू आब'बला पीढी हमरा सभ पर दोख नहि लगाबए जे जखन रोम स्वाहा भ' रहल छल तँ नीरो बंसुरी बजा रहल छला।

भाइ लोकनि, अहाँ अधलाह नहि मानब, एहि तरहें हम सोचै छी तँ घटाटोप अन्हार मे बिजलौकाक चमक सन जे चीज हमरा देखाब दैत अछि, से थिक--बाल साहित्य। सार्थक ढंग सँ लिखल बाल साहित्ये ई काज क' सकैत अछि जे आब' बला पीढ़ीक लेल साहित्यो एक प्रासंगिक चीज, ओकरा सभक जीवनक काज आब' बला चीज बनि क' रहि सकय। आब' बला युगक अनुभूति आ संस्कार कें ई परिमार्जित क' सकैत अछि। भावाभिव्यक्तिक उत्थरपनीक बदला एक स्थैर्य, एक गहराइ कें ओकर जीवन-शैलीक अंग बना सकैत अछि। भूमण्डीक एहि बजारक जीवन-पद्धति अछि--द्विआयामी, जाहि मे बस वस्तु अछि आ क्रिया अछि। त्रिआयामी जीवन-पद्धति, जाहि मे वस्तु आ क्रियाक संग-संग चिन्तन सेहो हो, तकर विकास बाल साहित्य क' सकैत अछि। हमरा तँ लगैत अछि जे ठीक ढंग सँ लिखल गेल बाल साहित्यक प्रसार छोट-छोट भाषा सभक मृत्यु-दर कें कम क' सकैत अछि आ हमरा सभक उखड़ैत पएर कें एक ताजगी भरल मजगूती प्रदान क' सकैत अछि।

जे चिन्ता आइ हमर अछि, हमर ख्याल अछि जे ई अहूँ सभक चिन्ता अछि, सौंसे देशक, सौंसे दुनियाँक चिन्ता अछि। एहना मे हम बहुत आभारक संग साहित्य अकादेमी कें आ संस्कृति मंत्रालय कें धन्यवाद दैत छी जे भारतीय भाषा सभ मे बाल साहित्यक विकास हेतु ओ लोकनि नव तरहें सोचब शुरू केने छथि।

लगधग चारि साल भेल, जे एही चिन्ता सभ सँ जूझैत हम, अपन भाषा मैथिली मे, एहि दिशा मे किछु काज करबाक शुरुआत केने रही। मैथिली मे बाल साहित्यक स्थिति अत्यन्त दुर्बल अछि। दोसर बात इहो छै जे हमरा ओतय, मैथिली-प्रकाशनक सम्बन्ध मे ई कहबी बहुत प्रचलित छै जे लेखकक छपाओल किताब बिकैत नहि अछि आ पाठक कें ओकर पसन्दक किताब भेटैत नहि अछि। हम सभ किछु नव तरहें समाधान तकबाक कोसिस केलहुँ। युवा लेखक आ साहित्य-कर्मी लोकनिक हम सभ टीम बनेलहुँ। बाल साहित्य पर गम्भीरताक संग काज शुरू कएल। सतमा-अठमा क्लासक बच्चा कें हम सभ टारगेट

केलहुँ। विषय एहन-एहन चुनलहुँ जे एकैसम सदी मे वयस्क होब'बला हमर बालपाठकक जीवनक काज आबि सकय। उपजीव्यो ग्रन्थ जँ चुनबाक हो, तैयो हम सभ लीक सँ हटि क' चलबाक मन बनाओल। हमरा ओतय दुइये टा उपजीव्य मुख्यतः चलन मे रहल अछि--रामायण आ महाभारत। हम सभ उपनिषद कें पकड़लहुँ, जातक कथा कें पकड़लहुँ। मिथिला मे लोककथा, लोकगाथा आ लोक-किम्वदन्ती सभक विशाल भण्डार एखनो श्रुति-परम्परा मे विद्यमान अछि। हम सभ ओकरा पकड़लहुँ। अहाँ देखबै जे महाभारत मे जंगल कें जराओल जाइ छै; जखन कि उपनिषद मे जंगल-संग दोस्ती कएल जाइ छै। प्रश्न अछि जे आइ हमरा की चाही? आ, तै पर सँ, किताब कें फॉरमेट सेहो हम सभ किछु अलग तरीका सँ केलहुँ। भाषा, अभिव्यक्ति-शैली, कथन-भंगिमा--एहि सभक प्रति सेहो हम सभ बहुत सजग रहलहुँ। लोक-किम्वदन्तिये सभक पुनर्सृजन करैत हमर महाकवि विद्यापति कहियो 'सुपुरुष' के अवधारणा प्रस्तुत केने छला। हमरा सभक लक्ष्य भेल--'सु-मानुस', जाहि मे सुपुरुषक संग-संग 'सु-नारी' सेहो सम्मिलित हो। हमरा सभक ई 'सु-मानुस' एक्कहि संग जतबा मैथिल छथि, ततबे भारतीय आ ठीक-ठीक ततबे वैश्विक।

मुदा, हम सभ इहो अनुभव केलहुँ जे ई काज जँ भ' सकैए तँ अपन मातृभाषेक माध्यमे। जाहि भाषा मे बच्चा अपन माय संग गप करैए, अपन दादी-नानी सँ खिस्सा-कहानी सुनैए, ठीक ताही भाषाक माध्यमे ओकरा दुनियाँ-जहान मे प्रवेश करए देबाक चाही। साहित्यक द्वारा 'सु-मानुस' के विकासक साइत ई अनिवार्य प्रक्रिया थिक। हमरा बच्चाक लेल ओकर सर्वश्रेष्ठ साहित्य अनिवार्यतः ओकरा मातृभाषे मे लिखल जा सकैत अछि। ई सभ करबाक कोसिस हमरा लोकनि कएल। हमरा टीमक युवा साहित्य-कर्मी लोकनि मिड्ल स्कूल, हाइ स्कूल मे पहुँचथि आ सस्त संस्करण बला ई पोथी सभ प्रत्यक्षतः अपन पाठक सभ कें सौंपि आबथि। जाहि घर मे पोथीक एक प्रति पहुँचय, परिवारी-जन आ अड़ोसी-पड़ोसी मिला क' औसतन पन्द्रह-बीस पाठक हमरा सभ कें भेटि जाथि।

बन्धुगण, अहाँ कें लागि रहल हएत जे हम विषयान्तर भ' रहल छी। अहाँ कहि सकै छी जे साहित्यकारक काज लिखब थिक। एतेक तूर धुनब साहित्यकारक क्षेत्र सँ बाहरक बात थिक। ई तँ शुद्ध एक्टीविज्म भेल। मुदा, विश्वास करू। हमहूँ मूलतः एक साहित्यकारे छी। सृजन करबाक लेल सघन एकान्त हमरो चाहबे करी। किन्तु, अपन अनुभवक बात कहै छी...साहित्यक संग निरन्तर जीबैत कहियो एहनो स्थिति बनै छै जे अहाँ कें टीम बनेबाक खगता होइए। ओना तँ अहाँ अदृश्य पाठकक लेल लिखै छी मुदा कहियो एहन मोड़ आबै छै जखन अहाँ कें अपन पाठक कें दृश्यमान करबाक बेगरता होइए। हमरा लागल अछि जे एहन मोड़ पर 'साहित्यकार' आ 'साहित्य-कर्मी' के फरक मेटा जाइ छै।

मित्र लोकनि, हमरा सभक विडम्बना तँ अथाह अछि। उत्तर आधुनिकताक एहि दौर मे आइ जखन हमरा सभक मध्यवर्गीय लोक अपन अस्मिताक प्रति साकांक्ष भेलाह अछि, तँ अपन जड़ि सँ, अपन भाषा सँ जुड़' चाहैत छथि। एम्हर संकट ई अछि जे दुनियाँ भरि के बात हुनका बूझल छनि, मुदा अपन मातृभाषा पढ़ब नहि जनैत छथि। एक दौर छल, जखन मातृभाषा कें अयोग्य मानि क' ई लोकनि ओकर उपेक्षा केलनि। हिनका सभक सोचब रहनि जे मातृभाषा कें पकड़ि क' रहब विकास-विरोधी थिक। मोन पाडू जे एही तरहक मनोवृत्ति बला लोक सभ, दुनियाँ भरि मे, अपन-अपन मातृभाषा कें उजाड़लनि। मुदा, आइ ई लोकनि आइडेन्टिटी तकैत छथि आ अपन मातृभाषा-संग जुड़' चाहैत छथि। हम सभ जे लिखै छी से तँ असल मे हिनका सभक लेल नहि, हिनक धियापुताक लेल लिखै छी। मुदा, बच्चाक लेल लिखल ई पोथी सभ जखन हमर ई बन्धु लोकनि पढ़ैत छथि तँ अपनो मातृभाषा पढ़बाक हुनर सिखैत छथि। हमरा सभ कें तँ बुझू दुगूना खुशी भेटैए। भविष्य कें ठीक करबाक प्रयास मे वर्तमानो ठीक होइत जाइए। ई बाल साहित्य क' रहल अछि। बाल साहित्ये ई कइयो सकैत अछि।

एखने हम कहने छलहुँ जे मैथिली मे बाल साहित्यक स्थिति दुर्बल अछि। मुदा हम साफ करए चाहब जे ई दुर्बलता निज आजुक समयक यथार्थ थिक। अतीत मे ई हालति नहि रहए। साठिक दशकक समय, ओ काल छल, जखन बड़का-बड़का साहित्यकार लोकनि छोट-छोट बच्चाक लेल

लिखलनि। यात्री नागार्जुन लिखलनि। राजकमल चौधरी लिखलनि। मैथिली मे सभ सँ सुन्दर बालकथा सभ जकरा कहबै, से ओही पीढ़ीक लिली रेक लिखल छनि। ओहि दिन मे बड़का घरानाक पत्रिका 'मिथिला मिहिर' मे तँ बाल साहित्यक लेल स्थायी स्तम्भ होइते छल, बच्चा सभक लेल अलग सँ पत्रिका सेहो प्रकाशित होइत रहए। 'बटुक' आ 'धीयापुता'क अपन उज्ज्वल इतिहास छैक। मुदा ई सभ तहियाक बात थिक, जहिया मिथिला-क्षेत्रक साक्षरता-दर मात्र एकैस प्रतिशत रहैक। आइ साक्षरता अड़तालीस प्रतिशत अछि। साक्षरताक ई बढ़ल प्रतिशत ओहि परिवार सभक कथा कहैत अछि, जकरा खन्दान मे पहिल बेर अक्षरक इजोत जरल, पहिल बच्चा जन्म लेलक जे 'अ आ क ख' लिखब-पढ़ब सिखलक। लोक संग अबैत गेला, कारवाँ बनैत गेलैक। मुदा, बच्चाक लेल लिखै बला लोक सभ अलोपित भ' गेला। बच्चा सभक पत्रिका बन्द भ' गेलै। आन पत्रिका सभ मे सँ बाल साहित्यक कॉलम हँटा देल गेलै। गाम-घर मे टी. वी. पहुँचल आ हमर एहि होनहार बच्चा सभ कें इल्मी-फिल्मी लुच्चा सभ हथिया लेलक। एकर कारण सभ निकाल' लगबै तँ बहुतो कारण निकलतै। मुदा, एतबा तँ साफ अछि जे हमरा लोकनि छोड़ि देलियै तखने क्यो आन हथियौलक। आइ जखन आरो अधिक लोकक जरूरति रहै, आरो बेसी तत्परताक संग काज करबाक खगता रहै, बाल साहित्यक मैदान खाली अछि। हम बड़का-बड़का लेखक लोकनि बड़का-बड़का बात लिखै छी आ दुखी होइत रहै छी जे हमर बात क्यो नहि सुनैए। के सुनत? जे सुनत, तकर निर्माणक वास्ते हम की क' रहल छी? आ, साँच पूछी तँ हमरा सभक टारगेट एही परिवारक बच्चा थिक भाइ, जाहि मे अक्षरक इजोत पहिल बेर बरलैए।

बन्धुगण, एतेक बात एही लेल कहलहुँ जे अपना सभक सुख आ दुख दुनू साझी अछि आ अहाँ सभ कें सामने पाबि सुख-दुख बतियेबाक एक अवसर हमरा भेटल। एहि अवसरक लेल पुनः धन्यवाद। हमर अपन भाषाक कर्णधार लोकनि कें, अपन टीमक युवा साहित्य-कर्मी लोकनि कें सेहो धन्यवाद। आ, एतेक ध्यानपूर्वक अहाँ सभ हमरा सुनलहुँ, ताहि लेल तँ बहुते धन्यवाद।

(2010)

अन्हरमारि आ इजोतक रेख
(सांस्कृतिक कार्यक्रमक मैथिली मंच)

मैथिली सँ सम्बन्धित जे कोनो आयोजन जतए कतहु कएल जाइत अछि, सांस्कृतिक कार्यक्रम ओकर एक प्रधान अंग होइत अछि। विचारगोष्ठी आ कवि सम्मेलन धीरे-धीरे पतराएल जाइत अछि आ सांस्कृतिक कार्यक्रम झमटगर भेल जाइत अछि। सांस्कृतिक कार्यक्रमक अर्थ मुख्यतः गीत-संगीत सँ लगाओल जाइछ। मैथिली गीत-संगीत अपन कोनो पहिचान काएम क' सकल हो वा नहि, मैथिली कार्यक्रम मे जुट' बला श्रोता-दर्शक एकर खूब आनन्द उठा रहल छथि। मैथिली आयोजन मे सेहो आब हुल्लड़बाजी, छेड़खानी सँ ल' क' मारिपीट-दंगाफसाद धरि होअए लागल अछि। आर्केस्ट्राक नाम सँ प्रचलित फूहड़ नाच-गानक आयोजनक ई पहिचान रहल अछि, से आब मैथिलीक आयोजन सेहो अपन पहिचान एहि रूप मे बनेबा पर अछि।

मैथिली गीत-संगीतक क्षेत्र मे नित नव-नव कलाकार लोकनिक प्रवेश भ' रहल अछि। ई लोकनि अपन ख्याति लेल आ यत्किंचित उपलब्ध आर्थिक लाभ लेल एक सँ एक नव प्रयोग केने चल जा रहल छथि। हुनका लोकनि लग देखाउँस लेल उपलब्ध अछि--भोजपुरीक गीत-संगीत। से, मैथिली मंच आइ फिल्मी पैरोडी आ अश्लीलताक जंगल बनि क' रहि गेल अछि।

विचारवान लोक सभ एहि पूरा परिदृश्य सँ अपना कें कात केने छथि। जे लोकनि एहि क्षेत्र मे ढुकि क' परिस्थितिक आकलन करैत छथि, हुनका

अधिकतर दू बिन्दु पर चिन्तित होइत देखल जा रहल अछि। पहिल चिन्ता तँ ई जे एक सम्पन्न विरासत हेबाक अछैत मैथिली गीत-संगीत अपन प्रसार मे व्यापक किए नहि बनि पाबि रहल अछि आ दोसर ई जे विजातीय अपसांस्कृतिक तत्त्व सभ मैथिली मंच पर हाबी किए भेल चलि जा रहल अछि। एहि चिन्ताक गहराइ मे थोड़ेक प्रवेश कएल जाए तँ कदाचित अपना सभक सांस्कृतिक संकट कें हमरा लोकनि बूझि सकैत छी आ तकर निस्तारक वास्ते उपाय सोचि सकैत छी।

हमरा प्रतीत होइत अछि जे अपना देश भारतक जे विविध क्षेत्र सभक लोक-संगीत अछि से अपन मूल स्वभाव मे दू सर्वथा भिन्न गुणक अछि। बंगाल-आसाम-उड़ीसा एवं ओम्हर गुजरात धरिक लोक-संगीत विलम्बित स्वभावक अछि। मिथिलाक लोक-संगीत सेहो अपन मूल स्वभाव मे विलंबित अछि। जखन कि एकर विपरीत, पंजाब-राजस्थानक लोक-संगीत द्रुत स्वभावक अछि। स्वाभाविक थिक जे क्षेत्र-विशेषक निवासी जनताक मूल स्वभावे ओकर लोक-संगीते मे मात्र नहि, अपितु समस्त प्रकारक लोक सांस्कृतिक निजता मे अभिव्यक्त होइत अछि। पंजाब-राजस्थानक रणबाँकुरा स्वभाव ओतुक्का संगीत मे अभिव्यक्त होइत हो तँ कोन आश्चर्य!

हमरा लोकनि देखि रहल छी जे दुनियाँ आइ द्रुत संगीतक पाछू भागि रहल अछि। संगीतक मूल स्वर मे जँ द्रुतता हो तँ ठीक आ जँ नहि हो तँ ओ आन-आन विजातीय तत्त्व सभक मिलावट सँ ओहि मे उत्तेजकता आनल जाइछ आ से अन्ततः द्रुत स्वभावक सम्मोहन प्रकट क' क' लोक कें आनन्दित करैत अछि। एहि परिस्थितिक धमक एखन हमरा लोकनि भारतीय फिल्म संगीत सँ ल' क' घनेरो संगीत चैनल सभ मे आ विभिन्न प्रकारक मंच सभ पर सुनि सकैत छी।

मैथिली गीत-संगीत मे इल्मी-फिल्मी नकल आ अश्लील उच्छृंखलता बढ़ि रहल अछि तँ एकर अर्थ ई लगाओल जा सकैछ जे गीतकार-संगीतकार लोकनि एहि विलम्बित स्वभावक संस्कृति कें द्रुतता प्रदान कर' चाहैत छथि। सत्य पूछी तँ एना करबाक दबाव युवा श्रोता-समुदाय दिस सँ पड़ैत अछि। ई युवा लोकनि सांस्कृतिक निजताक सन्दर्भ मे 'बिन माय-बापक

बच्चा' छथि। जेहन सौंसे दुनियाँ मे होइत देखैत छथि, तेहन करबाक दबाव अपन घरहु मे बनबैत छथि।

जकरा अपन सांस्कृतिक अस्मिताक कोनो बोधे नहि होइक, ताहि श्रोता-वर्ग कें आधार बना क' तँ कोनो काजक निष्कर्ष पर पहुँचले नहि जा सकैत छैक। रहल पारखी श्रोता-समुदायक बात, तँ स्पष्ट अछि जे ईहो समुदाय अपन बहुलांश मे द्रुत केर आग्रही अछि। ई एखनुक समयक प्रवृत्ति थिक। कोनो संस्कृति एहि प्रवृत्तिक सामना कइए क' अपन प्रासंगिकता साबित क' सकैत अछि। ई संस्कृति कें आजुक समयक चुनौती थिक।

हमरा लोकनि देखि सकैत छी जे बंगाली गीत-संगीत आइयो ने मात्र अपन गौरवपूर्ण अस्मिता बरकरार रखने अछि अपितु अपन एक व्यापक पहिचान सेहो काएम केने अछि। प्रश्न स्वाभाविक जे ठेठ विलम्बित स्वभावक बंगाली गीत-संगीत जखन अपन पहिचान काएम राखि सकैत अछि तँ एही स्वभावक मैथिली गीत-संगीत से किए नहि क' सकैत अछि? एकर कारण हमरा लोकनि ताकी तँ सभ सँ पहिल तँ ई जे 'बंगाली जाति' जकाँ हमरा ओतए 'मैथिल जाति'क, कोनो अस्तित्व नहि अछि आ स्वाभाविके जे ओ निस्सन संस्कृति-बोध हमरा क्षेत्रक लोक मे नहि अछि। हमरा लोकनि अपन गाम सँ बहराइ छी तँ सभ सँ पहिने अपन भाषा छोड़ै छी, थोड़े दिन बाहर रहि ली तँ अपन संस्कृति कें छोड़ि दैत छी आ जँ कतहु बाहर बसि जाइ तँ अपन पहिचान धरि कें मेटा लैत छी। ई हमरा लोकनिक कुल-पुरखा सभक आ राजा-महाराजा सभक देन थिकनि, जकर एकाग्र मोनें हमरा लोकनि निर्वाह करैत छी। सांस्कृतिक अस्मिताक प्रति ई हीनता-बोध, 'लोक-संस्कृति'क सनातन अवहेला सँ उत्पन्न भेल अछि, जकरा मिथिलाक पण्डित-समाज, हज्जार बर्खक अपन कट्टर उद्यम सँ मजगूत बनौलनि। मिथिलाक सारस्वत अवदान जे रहल हो, एकर सारस्वत अभिशाप अवश्य एहि ठाम देखल जा सकैत अछि।

जँ सघन सांस्कृतिक निजता-बोध होइत 'मैथिल जाति' मे, आ तकर एक सुस्पष्ट व्यापक पहिचान काएम भेल रहैत तँ मैथिली गीत-संगीत अपन मूल स्वभाव मे जेहन अछि, ताही रूप मे एकर स्वीकृति आ प्रसारक

संभावना भ' सकैत छल। मुदा ऐतिहासिक आ सामाजिक कारण सभ सँ जें कि से नहि अछि तँ एकर बादक संभावना सभ पर विचार कएल जेबाक चाही।

किछु बर्ख पहिनेक बात थिक जे भागलपुर-परिसरक गीत-संगीतकार विनय बिहारी आ छैला बिहारीक गीतक कैसेट सभ बजार मे आएल। कोनहु कारण नहि छल जे ओकरा मैथिली गीत नहि मानल जाय। ओ गीत सभ बहुत लोकप्रिय भेल आ मैथिली-भाषी क्षेत्र सँ बाहरो, सुदूर धरि प्रसार पौलक। ओ कोन गीत सभ छल? सामान्य लोकक जीवन मे, ओकर विधि-व्यवहार आ पर्व-त्योहार मे गाओल जाइबला ठेठ लोकगीत सभ वा लोकगीतक पुनर्रचना। ओकर लोकप्रियताक कारण छल ओकर द्रुतता, जे कि गीतक विलम्बित केन्द्रक सँ चहुँ दिस छिटकैत छल। ओना बाद मे, आर्थिक लाभ-लोभ मे ओ गायक लोकनि लोक-तत्त्व सँ हँटि क' द्वयर्थी पाँति जोड़ि-जोड़ि यौन उत्तेजनाक गीत गाब' लगलाह आ अन्ततः गुमनामी मे बिला गेलाह।

एहि दृष्टान्त द्वारा हम कह' चाहैत छी जे तथाकथित 'शास्त्रीय मिथिला' सँ बाहरक जे क्षेत्र अछि, आ ओहि ठामक सामान्य जन-जीवनक व्यवहार मे जे गीत सभ अछि, तकर संगीतक मूल स्वभाव थोड़े भिन्न अछि। ओहि मे श्रमजीवी संस्कृतिक सौम्य मिठास आ ओजस्वी त्वरा अछि जे आजुक युगधर्मक हिसाबें कदाचित सम्भ्रान्त जनक संगीतक तुलना मे युगक चुनौती स्वीकार करबा मे कतहु बेसी ठठि सकैत अछि। एहि गीत-संगीत कें जँ मुख्यधारा मे आनल जाय तँ व्यापक प्रसार पेबाक अभियान कतहु बेसी सफल भ' सकैत अछि। दोसर बात हम ई कह' चाहैत छी जे उच्छृंखलता आदि विजातीय तत्त्व जँ मैथिलीक द्रुतहु गीत-संगीत मे आनल जाएत, तँ ओकर नाशे करतैक। आ जँ एकरा विलम्बित गीत-संगीत मे आनल जाय, जेना कि आजुक गायक लोकनि आनि रहल छथि, तखन तँ ओकर कथे कोन? एहन गीत स्वयं अपन उपभोक्तोक लेल क्षणजीवी होइत छैक तँ एकरा सँ संस्कृतिक उपकारक आशे व्यर्थ।

हमरा लोकनिक देखैत-देखैत विदापत सन कतेको लोक-नाच मिथिला सँ लगभग लुप्त भ' गेल। अनेको कलारूप लुप्त हेबा पर अछि। सम्भ्रान्त

समाज ओकरा संरक्षणक योग्य नहि मानि रहल अछि। जनिका लोकनिक जीवन-व्यवहार मे ओ कलारूप सभ अछि, से लोकनि स्वयं ओकरा महत्त्व सँ बेसोह बनल छथि। प्रचलित सांस्कृतिक मंच पर भोगवादी ढंग सँ अनुकूलित पठरू सभक वर्चस्व अछि, जनिका लग विचार-शक्तिक घनघोर अभाव अछि। लोक व्यापक परिप्रेक्ष्य मे सोचबाक अभ्यासी नहि छथि। जेना, कर्नाटक मे शिवराम कारन्त सनक साहित्य-महारथी अपन विलुप्त होइत लोक-संस्कृति आ कलारूप कें प्रतिष्ठा आ व्यापकता देबाक लेल साहित्य-सृजन सँ कतहु बेसी एही क्षेत्र मे अपन प्रतिभा आ श्रम झोंकलनि, तेहनो लोकक अपना ओतए अभावे अछि।

तखन जे कामना करैत छी जे अखिल भारत मे, अखिल विश्व मे मिथिला-संस्कृतिक अपन पहिचान हो तँ से कोना हएत?

(2006)

मिलि क’ सोचब कते पैघ बात थिक!

मैथिली भाषा-साहित्य एखन एक जटिल दौर सँ गुजरि रहल अछि। जटिलता दू तरहक छैक। एक दिस तँ हमरा लोकनि देखैत छी जे सभ कथूक व्यवसायीकरण-बाजारीकरण भ’ रहल छैक, जकर बाजार मे कोनो मोल नहि, तकर संसार मे सेहो कोनो मोल नहि। स्वाभाविक जे एहना मे सम्वेदनाक लेल, साहित्य आ कलाक लेल जगह घटि रहल छैक। एकर मारि सभ भाषा-साहित्य पर पड़ि रहलैए तँ से मैथिली पर सेहो पड़ि रहलैए। मुदा मैथिलीक संकट एहि सँ आरो अधिक जटिल छैक। हमरा लोकनिक समाज युग-युग सँ एक ‘बन्द समाज’ रहल अछि, जाहि मे नवाचारक लेल एक तिक्ख उपेक्षा पाओल जाइत रहलैक अछि। ई पण्डित लोकनिक द्वारा अनुकूलित समाज थिक। पण्डित लोकनि देवभाषा संस्कृत छोड़ि क’ आर ककरो सत्साहित्य मानताह कोना? मुदा युग-प्रवृत्ति पण्डित लोकनिक मर्दन क’ क’ आगू बढ़ैत गेल। विश्व इतिहास मे आधुनिकताक उदय जतय सँ होइत छैक, लोकभाषाक उदय सेहो ततहि सँ होइत छैक। मुदा, मिथिलाक पण्डित-समाज बड़ पिच्छड़। सम्पूर्ण पूर्वोत्तर मे ‘देसिल बयना’क प्रथम उद्‌गाता भने हमरे विद्यापति भेल होथि, मैथिली मे लिखब कें ई लोकनि ‘रजनी-सजनी’क कोटि मे रखैत रहलाह। कहबी छै जे सौंसे जनम जँ बाघ कें ‘बकरी-बकरी’ कहैत रहियौ तँ ठीके ओ बकरी सन भ’ जाइए। सैह भेलै। मैथिली मे किछु लिखि दियौ, ओ भ’ गेलै साहित्य। मैथिलीक दुनियाँ तते छोट छैक जे प्रसिद्धियो जल्दिए भेटि जाइत छैक।

एहि सभक प्रतिफल ककरा भोग' पड़ैत छैक? मैथिली कें राष्ट्रीय भाषाक गरिमा देल गेल छैक, आ एकरा लेल चहुँदिसक बाट खुजि गेलैक अछि, हमरा लोकनि चिन्तित होइत रहैत छी जे अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक लेखनक तँ बात छोड़ू, राष्ट्रीयो स्तरक लेखन केनिहार लोक हमरा भाषा मे कते गोटे छथि?

आइ, जतबो बाजार साहित्य लेल बचल अछि, ताहू मे टिकल रहबाक लेल उच्च स्तरीय लेखन चाहिऐक। से सृजनात्मक लेखन हो तँ ताहू मे, आलोचनात्मक लेखन हो तँ ताहू मे। आइ आवश्यकता अछि जे जे किछु उच्च स्तरीय मैथिली लेखन आइ धरि भेलैक अछि, से सभ अंग्रजी मे अनूदित भ' क' आबौ। ताहि सँ हमरा साहित्य कें राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय व्याप्ति भेटत। आइ आवश्यकता छैक जे जे क्यो मानक साहित्य लिखि पेबा योग्य क्षमता आ अनुभव अपना मे पाबि रहल छथि, से 'प्रोफेशनल दक्षता'क संग एहि दिशा मे सक्रिय होथु। कोनो कृति आजुक गंभीर वैश्विक पाठक कें कोन गुणक बल पर सन्तुष्ट आ मुग्ध क' सकैत छैक, तकरा अर्जित आ विकसित करबाक तकनीक आ कौशल अपनाबथु। खुशीक बात थिक जे किछु गोटे एहि तरहें सोचि रहल छथि मुदा दुखक बात थिक जे कुल मिला क' मैथिली-संसारक माहौल घोर नकारात्मक छैक। एतए नीक लिखला पर निन्दा होइत छैक, बेसी नीक लिखला पर बेसी निन्दा होइत छैक। सबजना भोज कें 'अहो-अहो' कहल जाइत छैक आ 'टैलेंट-हंट' (प्रतिभाक खोज) कें चेला मुड़नाइ। कारण की थिक? वैह 'रजनी-सजनी'--मनोवृत्ति, जे बाघ कें बकरी मे परिणत क' चुकल अछि। बाहरक लोक लेल ई स्थिति 'सुटेबुल' छैक, कारण ओ लोकनि मैथिली कें हिन्दीक बोली मानबा सँ बढ़ए नहि चाहैत छथि। आ घरक लोक लेल? मिथिलाक जे गंभीर पाठक छथि से अंग्रेजी-हिन्दी पढ़ैत छथि, मैथिलीयो मे पढ़' योग्य किछु छैक, से मानब हुनका कठिन भेल रहैत छनि। कारण मैथिलीक नाम जपैत रजनी-सजनी-प्रजाति सँ हुनका भेंट भ' चुकल रहैत छनि।

एहि स्थिति पर हमरा लोकनि कें मिलि क' सोचबाक चाही। मुदा..

.दुख अछि जे एहिठाम हमरा 'मुदा' लगब' पड़ल अछि। 'मिलि' क' सोचब' एक आधुनिक मूल्य थिक। आ, मैथिली-समाजक एतबा आधुनिकीकरण एखनो धरि नहि भ' सकल अछि जे हमरा लोकनि मिलि क' सोचि सकी। एहिठाम प्रत्येक मैथिल एसकरे अपन ब्रह्मा-बिष्णु-महेश होइत छथि। अपन पुस्तक 'संवाद'क भूमिका मे भने तँ अशोक कहलनि अछि जे मिथिला मे 'संवाद' (दू व्यक्तिक बीच विमर्श) नहि होइत अछि, 'समाद' (दोसर व्यक्ति द्वारा तेसर कें अक्षरशः तथ्य प्रतिवेदित करब) होइत रहल अछि। एखन, एक बातक चर्चा मैथिलीक दुनियाँ मे बहुत बेसी अछि। ततेक बेसी अछि जे आब हिन्दीक दुनियाँ सेहो एहि 'ताजा खबर'क खूब आनन्द ल' रहल अछि। ई नव बात थिक--गुटबाजी। जकरा देखू तकरा, यैह कहैत भेटत जे मैथिली मे गुटबाजी बहुत छैक। किछु गोटे तँ बजाफ्ता एकर विश्लेषण प्रकाशित करौलनि अछि। हेतै गुटबाजी, तें तँ लोक कहैत छथिन। हमही अपना कें पछुआएल मानै छी जे राति-दिन अपन काज मे व्यस्त रहबाक कारण एहि सामान्य ज्ञान सँ वंचित छी।

मुदा हम एकटा बात धरि जरूर कहब। एकरा हमर व्यक्तिगत विचार बूझल जाय। किछु पारखी विद्वान चाहथि तँ एकरा हमर 'दलित-चिन्तन' सेहो बूझि सकैत छथि। हम कहब जे जेना 'मिलि क' सोचब' आ कि 'संवाद करब' एक आधुनिक मूल्य थिक, ठीक तहिना गुटबाजी करब सेहो एक आधुनिक मूल्य थिक। गुट बनत कखन? जखन एक सँ दू हएत। अपना मिथिला मे तँ युग-युग सँ लोक एसकरे ब्रह्मा-विष्णु-महेश होइत रहलाह अछि। एहना मे क्यो दू-चारि गोटे संग बैसथि, स्वतंत्रता, समानता आ बन्धुत्वक भावना रखैत अपना मे संवाद करथि, योजना बनाबथि आ तकरा कार्यरूप देथि, एहि सँ नीक बात आर की भ' सकैत अछि? दुनियाँ उत्तर-आधुनिक भ' चलल अछि (आब तँ तकरो ढलान शुरू छैक) आ हमरा लोकनि एतबो तँ आधुनिक होइ! 'गुट' एक राजनीतिक शब्द थिक। गुट जँ अछि तँ ओकर कोनो विचारधारा (खाली 'विचार' नहि अपितु 'विचारधारा') सेहो हेतैक। ओकर सिद्धान्त आ कार्यप्रणाली हेतै। से गुट कतय अछि? हमरा तँ कतहु देखार नहि पड़ैए। जँ वास्तव मे एहन दू-चारि गुट हो--कोनो उग्रवादी तँ कोनो समतावादी, कोनो जनवादी तँ कोनो

समन्वयवादी--तँ मैथिलीक शापित वर्त्तमान बदलि जेतैक, भविष्य तँ निश्चिते। मुदा वस्तुस्थिति तँ एकर विपरीत अछि। जे क्यो कतहु आइ उल्लेखनीय काज क' पाबि रहल छथि से हुनक व्यक्तिगत निष्ठा आ प्रयासक फलस्वरूप भ' रहल अछि। एहि मे कोनो समूहक वा गुटक योगदान हो, तकर कोनो दृष्टान्त नहि अछि। मैथिलीक संस्था सभ तँ एखन धरि अपन कोनो गुटीय पहचान काएम कइये नहि सकल अछि, व्यक्तिक तँ बाते छोड़ू। एहि अर्थ मे मैथिलीक रंग संस्था सभ कदाचित सभ सँ आगू अछि, जकर अपन निजता सामने एलैक अछि। एहि सँ हमरा लोकनि कें सबक लेबाक चाही।

असल मे भ' ई रहल छै जे अहाँ नीक काज करू तैयो, अधलाह काज करू तैयो, लोक अहाँक निन्दा करताह। यैह मैथिल चरित्रक पुश्तैनी निजता थिक। चाही तँ एकरा प्रधान मैथिल अस्मिता कहि सकै छी। आब बात छै जे निन्दा एसकर तँ भ' सकैए नहि, एहि लेल दोसर-तेसर समानधर्मा तँ चाहबे करी। अहाँ चाही तँ एकरा गुटबाजी कहि सकै छी।

मुदा, हम तखनहुँ प्रसन्ने हएब। कारण, गुटबाजी एक आधुनिक जीवन-मूल्य थिक आ मिथिलाक 'बन्द समाज' कें कनिञो-मनिञो खुलबाक लेल, आधुनिक हेबाक लेल, दोसरो कें किछु मानि देबाक अर्थ मे एकर खगता छै।

(2007)

• • •